रामबिलास रामायण

अर्थात्

बाल्मीक कृत रामायण का भाषा उल्था

जिसमें

रामावतार के सम्पूर्ण चरित्र जन्म से वैकुण्ठ बास पर्य्यन्त और रामाश्वमेधादि की कथा विस्तार पूर्व्वक वर्णित हैं ॥

जिसको

महा महोपाध्याय विद्वद्वृन्दशिरोमणि त्रिपाठि वंशोद्भव अवध मण्डलान्तर्गत पीरनगर निवासि ईश्वरी प्रसाद शर्म्मा ने दोहा चौपाई आदि सुललित छन्दों में वर्णन किया है

उसको

विद्या रसामृतस्पर्धियों और हरि भक्तों के मनोरञ्जनार्थ

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यंत्रालय में छपवाया ॥

जून सन् १८७६ ई०

श्रीगणेशायनमः

अथ रामविलास

प्रारभ्यते॥

कवित्त॥

लहतसकल रिधि सिधि सुख संपदऊ विद्या बुधि सुमिरि गणेश गौरी नन्दनै। सिंधरबदन सुठि सोहत तिलक लालचंद्रवाल भाल नैनदेतहै अनन्दनै॥ एकदन्तभुजगविभूषण परशुपाशि चारि भुज अभयकरत दासद्वन्दनै। सुन्दरविशाल तनईश्वरी सभारमन दयाघन हरण विघन दुख द्वंदनै॥ १॥ अरुण कमलदल दुति पदतल कल पद-न नखऊ जनु नखत सुभावते। विमल तुषार सम सोहत शरीर सुठि आनन अनूप नैनखंजते सुभावते॥ धवलमराल पैसवार श्वेतपटसजि अंगअंग भूषण अमित छवि छावते। करन पुस्तकवीण ईश्वरी प्रवीण कविबाणी रूपध्यान धरिहरि यशगावते॥ २॥ सोहतकिशोर अंग कुन्दइंदु कंबुरंग गौरीअरधंग गंगजटा जूट पैहसै। भूषण विभूति ब्याल सिति कंठ मुंड माल ओढ़े गज छालभाल वाल चंद्रमा लसै॥ दासनके दोषदुखदारिद करत दूरि महादानि दयाखानि वेदगावते यसै। ईश्वरी त्रिनैन वरवदनप्रसन्न भजुधन्य सोई नरहर जाके हिर दैबसै॥ ३॥

पंचक॥

कैटभमधुमद दारनिकारनि महिषसदलकी छयकारी। धूम्राक्षै जारयौ कोपानलतें चंडमुंड खंडनवारी॥ रक्तवीज रक्तौघपानकै शुम्भ निशुम्भ भूप मारी। जय ईश्वरी द्विज देव सुखद हेरम्ब अंबकी बलि-हारी॥ ४॥

झोलना ॥

जैतिहिमि बालिका असुरकुल घालिका कालिकापालिका सुरस हेतू । कुमुख हेरंबकी अंबजगदंबिके प्राणप्रिय बल्लभा वृषभ केतू ॥ सिद्धि औरिद्धि सुखखानि धनधान्यकी दानि शुभगांगना सुतनिकेतू । भुक्ति मुक्ति प्रदबाणि महराणि तव प्रणत ईश्वरी पाहिशरण देतू ॥

दोहा ॥

सुमिरि गजानन शिव शिवा बाणीरमा रमेश ।
रामायण भाषाकरौं किये चरित अवधेश ॥ ६ ॥
भाषा रामायाण करन उर उपजत अह्लाद ।
हरिप्रेरित सावरणिहैं शिवाशंभु संवाद ॥ ७ ॥
सनक शाप लहि जयविजय दैत्यभये बलबीर ।
रसारसातल लैगयो हिरण्याच्च रणधीर ॥ ८ ॥
ताहिमारि महिथापि पुनि ह्वैबराह भगवान ।
अपर कनक कश्यपभयो देव दुखदबलवान ॥ ९ ॥

द्रुतविलंबिता ॥

तनय तासुभयो प्रह्लादजो । हरि कथा रसमो अह्लादजो ॥ गुरु दुलारतनीति पढ़ावते । निदरि ताहि रमापति गावते ॥ १० ॥

तोमर ॥

इकदिवसलै पितु गोद । पढ़ु पुत्र देमोहि मोद ॥ तिन रामको यशगाय । सुनि क्रोध भूरि बढ़ाय ॥ ११ ॥

भुजंगप्रयात् ॥

तवैराज संडामरै देखि कोप्यौ । अरेदुष्ट मेरे कुलौरीति लोप्यौ ॥ सदा शंभुसेवा पियारी हमारे । पढ़ायोसुतै शत्रु नामैकहारे ॥ अहो जू कहो नेकमानै नमेरो । पढ़ै आपुहीयों हठी पुत्र तेरो ॥ सुतै सो रिसान्यौ तवैते न मान्यौ । तवैभूप आपनमहा शत्रु जान्यौ ॥ १२ ॥

दोहा ॥

मारै भूप अनेक विधिमरैन सुतप्रह्लाद ।
रामनामकी टेकदृढ़ हृदय न नेक विषाद ॥ १३ ॥

कवित्तचंद्रकला ॥

गिरिनगिराय सांदि समुदबोराय फिरि पावक जरायपीर नेकहू

नपाई तहा। गजनगंजायसांप बोछिनडसाय चास कोटिन देवायपै मरो नमारतै रहा॥ ईश्वरी कहत प्रह्लादको प्रचारि आपु दैत्य राजखङ्ग खैंचिकह्यो तेरो राम कहा। जनके जवाबह्नते जलदीजनम धारि खम्भ फारि ताहिमारि ह्वैकै नरसिंह महा॥ १४॥

चौपाई।

यहिविधि दैत्यराज प्रभु मारा। जनप्रह्लाद सुयश विस्तारा॥ राम भरोस होइ दृढ़जाही। सपनेहोइ कलेश किताही॥ हिरण्याक्षभ्राता युत सोई। रावण कुम्भकरण भेदोई॥ ते पापिन तिहुंलोक सतायो। महाभार पृथिवी जबपायो॥ रोवत गई कमलभवतीरा। करिप्रणाम सुनावनिजपीरा॥ तवविधि सुरनसहित करिआसा। तुरतैगये छीर निधिपासा॥अस्तुति करत वेदवरबानी। गदगदगिरा प्रेमरससानी॥ सुनिप्रकटे हरि दीनदयाला। जलजारुण वर नैन विशाला॥ शोभा-धाम श्याम तनसोहै। इंदीवर तमाल मनमोहै॥ पीतांवर निषंग कटि राजै। कर सरसह सारंग विराजै॥ चक्र गदादर निसित कृपाना। प्रवल चारि भुज सोहै अजाना॥ कर कंकण पहुंची सुंदरीवर। अंगद चारि लसै शोभाधर॥ कुण्डलश्रवण किरीटसुभाला। स्वर्णजनेउ सोह मणिमाला॥ १५॥

दोहा।

गरुड़ोपरि सन्मुख लख्यौ सियासहित सुखधाम।
विनयकरत सुरसिद्ध विधिपूरे मन अभिराम॥ १६॥

चौपाई॥

जैजैति कृपाला दीनदयाला हैंशरणागत आयों। जैजैति मुकुन्दा आनन्दकंदा सुरनबहुत दुखपायो॥ जैमुनि मनहंसा वेदप्रशंसातुम निजजन सुख कारी। यहविनय सुधारी सुनु असुरारी भंजौ विपति हमारी॥ १७॥

मालिनी॥

सुनिविनय सुभाये हर्षिबोले कृपाला। विधिनिज हितभाषौसो करौंमैंउताला॥ प्रभु भटदशशीशा सर्व पृथ्वी सतायो। सकल सुर मुनीन्द्रै धर्म संकेत पायो॥ तेहि वधसुर साईं रक्षमां दीनबंधो। महिसुर सुरगाई पालियेधर्म सिंधो॥ प्रभु विधिहिसुनायो मारिहौं मैं सुरारी। मनुज तनधरौंगो सर्व दुःखौघहारी॥ १८॥

दोहा ॥

पूरब कश्यप अदिति अतिकीन्हो तप ममहेत।
तिनके गृहभीतरंगे अंशनशक्ति समेत ॥ १९ ॥
सोई दशरथ कौशिला ह्वैहैं अवधभुआल।
ममसहाय हित सुरसबै होउजाइ कपिभाल ॥ २० ॥
अस आयसुदै तुरतही प्रभुभे अन्तर धान।
देवभये कपिभालु सबमहाकाय बलवान ॥ १२ ॥

चौपाई ॥

अवविशेष यहकथा अनूपा। अवध भये दशरथ जब भूपा॥ सब प्रकार सुखसंपति साजा। राजत मनहुं अपर सुरराजा ॥ तेजप्रताप बुद्धि बलवाना। शूर सुजान सुधर्म निधाना॥ तेहि समान भूपति जगमाहीं। सुत बिहीन यहदुख मनमाहीं॥ एकबार गुरुपद धरि शीशा। अपन मनोरथ कहा महीशा॥ जेहि सुत लहैं सो करिय उपाई। सुनिमुनि बोले गिरासोहाई॥ सुनुन्टप तवह्वैहैं सुतचारी। लोकपाल इवयथा मुरारी॥ शृंगीऋषिहि बोलि करियागा। अनल प्रकटि हवि दीन्ह विभागा॥ कौशल्या केकई सुमित्रा। खाई हवि जेहिहोइ सुपुत्रा॥ गर्भसहित बीते दशमासा। रामजन्म कर समय प्रकासा॥ २२॥

प्रज्ज्वलिया ॥

चैचे शुक्ले तिथि नौमि गाइ। कुज अदित नखत मध्याह्न आइ॥ लग्ने कर्के गुरु सहित चन्द। चौथेजूके उच्चे सुमन्द॥ सतये मकरे मंगलविराज। नौमेमीने सित केतुराज॥ दशयेंमेष पूषनि सोहाइ। लाभेट्टष बुध कन्या शुभाइ॥ यहिभांति पंचग्रह उच्चजाहि। त्रिभुवनपति तेहि कहिये सराहि॥ इकछत्र अकंटक करैराज। भूमंडल जनु सुरपति विराज॥ २३॥

हरिगीत ॥

जोब्रह्म अजअद्वैत अकल अनीह आदिअनामयं। जेहि बेद नेति निरूपनित्यअनूप श्रीकरुणामयं॥ जेहिध्यान शिवसनकादि ऋषियन अगम अतिहि जनावहीं॥ सो आइ दशरथ भवन प्रकटेकवि सुकीरति गावहीं॥ २४॥

कवित्त ॥

सोहत किशोर तनश्यामल कोमल घन अरुणचरण तलकुलिसा-दिरेखहै । प्रबल प्रचण्ड भुजदण्ड नाग शुण्डसम आयुध समेत बाजू भूषण विशेषहै ॥ शरदेंदु मुखसुख सीवग्रीव हारमणि कुण्डलकिरीट छविसरनै किशेषहै । कमल नयन मृदु वयन पियूष निधि पीतपट चितचोरै शोभा सो अलेखहै ॥ २५ ॥

चौपैया ॥

इन्दीवर श्यामा अति अभिरामा कौशल्या जबदेखा । भुजचारि प्रबलवर शंखचक्रधर माथेमुकुट विशेषा ॥ कुंचित सिरअलकैंकुण्डल झलकैं कोटिनसूर्य प्रकासा । श्रुतिअधर नासिका रूपराशिका मधुर मनोहर हासा ॥ २६ ॥

मालिनी ॥

तन मन बरबाणी प्रति सोहर्षि रानी । त्रिभुवनपति जानी भक्ति सानी बखानी ॥ तुम जगपितु माता विश्वविख्यात गाथा । सुरमहि सुरत्राता सर्वनाथाधिनाथा ॥ २७ ॥

नराच ॥

नमोस्तु देव पाद पद्म बारबार शीशते । अजादि शंकरादि बन्दनीयतौन ईशते ॥ अनाथ नाथ मोहिपै प्रसन्नह्वै कृपा करौ । समस्त भक्त मोदहेतु बाल रूपकोधरौ ॥ २८ ॥

दोहा ॥

सुनि कौशिल्याके वचन श्रीपति श्रीभगवन ।
ह्वैशिशु सुन्दर श्याम बपु द्वैभुज परमसुजान ॥ २९ ॥

तोमर ॥

शिशु रूप सुन्दर नैन । सुनि रोदनै मन चैन ॥ दशरत्थ सो सुनि कान । सुख ब्रह्म के अनुमान ॥ गुरु संगगे निज गेह । लखि पुत्र भा अति नेह ॥ बर केकई सुत जाय । उर मोदभो अधिकाय ॥ ३० ॥

दोहा ।

भये सुमित्राके तबै द्वैसुत सुन्दर गौर ।
शरदकमल निन्दकनयन त्रिभुवनके शिरमौर ॥ ३१ ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

करै सर्व गन्धर्व रागावलीहैं । नचैं किन्नरी औनरी जे भलीहैं ॥

लखैं वृन्द वृन्दारका व्योमछाये । करैं वृष्टि पुष्पावली प्रीतिलाये ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

नांदी मुख नृप श्राद्धकरि जातकर्म सबकीन्ह ।
छठी बरहा आदिते द्विजन दान बहुदीन्ह ॥ ३३

नराच ॥

महा अनन्द भूनरेन्द्र बोलि बिप्र वृन्दनै । हजारग्राम हेमरत्नगो समूह को गनै ॥ पटम्बरादि भोजनै समस्त खाद सासनै । दिये प्रपूजि प्रीति सो अशीश लैजनैजनै ॥ ३४ ॥

हरिगीतिका ॥

त्रैलोक रमण विचारि मनचर अचर जलथल मैं महा । तेहिराम नाम पुरारिप्रिय अतिहृदय गुणिगणि गुरुकहा ॥ जगभरण पोषण शक्तिजेहितेहि भरत असभाषत भये । लखिसकल लक्षणधाम राम सप्रेमते लक्ष्मण लये ॥ जेहि सुमिरि शत्रुननाश तेहि सुनि शत्रुहन नामै कहा । राम लक्ष्मण भरत रिपुहन पाय सांस सुसंग गहा ॥ सुन्दरमनोहर युगल जोरी श्यामगौर बिराजई । कलधौत मरकत लखत लाजतनृपति मंदिर भ्राजई ॥ ३५ ॥

त्रिभंगी ॥

खेलत अगनैया चारिउ भैया निरखत मैया हरषाई । झगुली तनपीली परम रंगीली केहु केहु नीली पहिराई ॥ सुन्दरपग पैंजन नयन सुखञ्जन रञ्जित अंजन सुखदाई । मानौ चहुचंदा शिर ससि बिंदा बिहरैं अनंदा महि आई ॥ ३६ ॥ तोतरि मृदु बोला लखित कपोला कुण्डललोला छबिभारी । करकड़ा बिराजै अंग दराजै पहुंची भ्राजै अतिप्यारी ॥कठुला गजमोती हरिनख सोती मणिगण ज्योती मनभावै ॥ किंकिणि कटिकलधुनि पग नूपुर सुनि थकि कबि गुणि गुणिकिमि गावै ॥ ३७ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

भोजनहित नृपति बोलाव साथ । नहिं आवत शिशु तजि बाल गाथ ॥ जननी धावत चहै गोद लेन । भाजत प्रभुकहि तोतरे बैन ॥ फुसिलाइ लाइ बैठारि संग । सुखमेलि कौर कछु लपटिअंग ॥ चित चपलचटकि पुनि चलैपराइ । कौतुक लखिदम्पति मनसिहाइ ॥ ३८ ॥

चौपाई ॥

एक समय बशिष्ठ मुनि आये । जटा मुकुट तप पुंज सोहाये ॥ कौशल्या सुनि पुत्र समेता । बंदिचरण लैगई निकेता ॥ सुतसनमुनि पूजा करवाई । दीन्ह अशीश शीश करलाई ॥ सिंहासन बैठे मुनि राई । रामहि गोदलिये हरषाई ॥ सुनत सुमित्रा सुतन समेता । गुरुपद परीकीन्ह अतिहेता ॥ मंगल आशिषदै निज पासा । बैठारे दोउ तनय हुलासा ॥ सुनि कैकई चली हरषाई । सुत कर गहि सब साजबनाई ॥ दासी विपुल चमर सिर ढारैं । व्यजन करैं कोउवसन सुधारैं ॥ मंदमंद चलिमुनि पदलागी । पुनहि चरणमेलि बड़भागी ॥ कुशलरहैं तव तनय अनूपा । धरम सहित सेयो निज भूपा ॥ ३९ ॥

सोरठा ॥

तुम्हरी कृपा कृपाल । कौशल्या करजोरि कह ॥
रविकुल सकल भुवाल । श्रामंगल कबहुन लहा ॥ ४० ॥

चौपाई ॥

सपन एक देखा महि स्वामी । राम चतुर्भुज अहि अरि गामी ॥ चक्रादिक आयुध कर लीन्हे । पीतांबर किरीट सिर दीन्हे ॥ कहा सुमित्रा सुनहु सुनीशा । लषणहि मैलखि साहस शीशा ॥ रिपुसूदन शत सूर्य समाना । सपन सुदर्शन के अनुमाना ॥ कहा कैकई शंख सरूपा । भरतहि मैं देखा मुनिभूपा ॥ अपर राज रानिन असदेखा । रामरमापति सुन्दर बेषा ॥ सुनि रानिनके वचन सुहाये । मुनिधरि ध्यानदीख सचुपाये ॥ येभूभार उतारन कारण । रावणादि निशि-चर संहारण ॥ आविर्भूतभये नृप गेहा । बिहंसि कहा ऋषि सहित सनेहा ॥ सुनहु रानिये राम सुजाना । हरिसम गुण गणतेन निधाना ॥ ४१ ॥

दोहा ॥

विष्णुपारषद सरस सब सुत येपरम विशेष ।
तेहि तेदेखा सपन अस यथातथ्यबर बेष ॥ ४२ ॥

चौपाई ॥

पुनि रानिन मुनिसन बरमांगा । रक्षिय बालककरि अनुरागा ॥ खेलत अजिरि दृष्टिकर दोषा । भूतप्रेत डाकिनी कुरोषा ॥ मारि-

कादि राक्षस उतपाता । सबसन रक्षाकरु मुनि त्राता ॥ कह मुनि बालन रक्षाहेतू । दिनप्रति आउब राज निकेतू ॥ असकहि गुरुनिज भवन सिधाये । धन्यमातुपितु जिन सुतजाये ॥ धन्य अयोध्यापुर नर नारी । जिन देखा दशरथ सुत चारी ॥ धन्यधन्य मैं प्रोहित रूपा । परब्रह्म देखा नरभूपा ॥ रक्षाहेतु आव मुनि दिनदिन । राम दरश लालसा क्षणहि क्षन ॥ अपर कथा अब कहौं सोहाई । मातु गोद क्रीड़त रघुराई ॥ धात्री तहां सुधन्या नामा । आई अति सुन्दरी ललामा ॥ भूषण सकल अंग अंग साजै । छबि बिलोकि तेहि रति मन लाजै ॥ ४३ ॥

दोहा ॥

रामचन्द्र तेहि गोदमें आये करत बिनोद ।
देखततुरत उछंगलै धन्या अतिमनमोद ॥ ४४ ॥

चौपाई ॥

धन्या कहा रानि सुनिलीजै । यहिऔसर मोहि आयसु दीजै ॥ भरत मातु यह राजत राजा । लावौं अबहि देखाइ समाजा ॥ कौशल्यातब कह मुसुकाई । लाउ देखाइ जोतुव मनआई ॥ भूषण बसन राम अंग साजे । गै लवाइ जहं राज बिराजे ॥ केकइ भवन मनोहर ताई । द्रब्य समाज कहैको गाई ॥ बाज मृदंग आदि बर बीणा । नृत्यकरैं अप्सरा प्रबीणा ॥ दंतीदन्त पलंग नृपराजै । निकट रानि केकई बिराजै ॥ लालत सुतहि गोद कर लीन्हे । हास बिलास करत मन दीन्हे ॥ इंदीबर कोमल तन रामा । धात्री गोदलिये अभिरामा ॥ नृप रानिहि प्रणाम करवायो । देखत तुरत राजउर लायो ॥ ताततात कहि करत दुलारा । पुनिरानी लैकीन्ह पियारा ॥ राजन राम मोहि यश भावैं । तसन भरत मम मन असआवैं ॥४५॥

दोहा ॥

तबै लषण रिपुसूदनहि लाई धाई धाइ ।
देखिमगन सुखसिंधु नृपमनौ अपर सुरराइ ॥ ४६ ॥

चौपाई ॥

रानी सब आईं हरषाई । सुत खेलत लखि सुख अधिकाई ॥ नृप केकई कहा समुझाई । पूजौ सब सौतिन गृहआई ॥ चंदनकमल

लाल अरुबीरा । सींचासब गुलाबके नीरा ॥ मधुरवचन कहिकहि परितोषी । रानी सकल खुशी अति चोषी ॥ कहा राजमैं द्विजपद सेवा । पाये सुवन चारि जनु देवा ॥ ममकुल कीर्ति बढ़ावन वारे । प्राणहुते मोहि अधिक पियारे ॥ यहसुनि रानिन कहन्टप पाहीं । तुम सम पुण्यसिंधु जगनाहीं ॥ हमसब पुण्य धाम वरवामा । जाइन सहित पाव सुत रामा ॥ अब हमरे मन परम उछाहू । कब देखब रघुबीर विवाहू ॥ कब होइहि तव कृपा समाजा । रामचन्द्र ह्वैहैं युवराजा ॥ ४७ ॥

दोहा ॥

सुनत मंथरा दुखित ह्वै केकइ सन अरगाइ ।
कहीकथा सबव्याहकी चढ़ि प्रसाद परजाइ ॥ ४८ ॥

चौपाई ॥

एक समय नारद बिज्ञानी । आयेदशरथ की रजधानी ॥ पूजान्टप वर आसन दीन्हा । कहां ते गमन नाथ तुम कीन्हा ॥ ब्रह्म भवन ते न्टप मै आयों । बसुन्ध राघरथ रनम क्रायों ॥ केकै भूप सुता सम रूपा । त्रिभुवन नहिं असि नारि अनूपा ॥ तेहि करमैं देखा बर रेखा । अवध भूप रानीमन लेखा ॥ तासुतनय होइहि गुण सागर । बिष्णु भक्त तिहु लोक उजागर ॥ करसो यतनब्याहि घरआनू । भूप होइ तव बड़ कल्यानू ॥ असकहिगाइ नारद विधि गेहा । गयेन्टपति मन भै संदेहा ॥ तेहि औसर योगिनि एक आई । न्टपहि पूछिमन का दुचिताई ॥ साढ सातसै तवबर नारी । रतिते अधिक रूपउजियारी ॥ ४९ ॥

दोहा ॥

तवप्रताप बल सुनतही देवन विसमय होइ ।
किमि सोचत न्टप दीनवत् मोहि सुनाइय सोइ ॥ ५० ॥
मोसन मुनि नारद कहा केकइरूप बखानि ।
मोहिमिलै सो करु यतन निजबुद्धि विद्या ठानि ॥ ५१ ॥

चौपाई ॥

कह योगिनि सुनु न्टपति प्रवीना । यह जग सब मेरे आधीना ॥ जो छलकरि मैलावो ताही । नरकहोइ कोउभल नसराही ॥ सोकरि

है। अवही मैंजैहौं। केकैसुतै ब्याहि तोहि लैहौं ॥ गै योगिनि तुव पुरी सोहाई। सरलखि तहां समाधि लगाई ॥ पुरजनलखि सबकरैं बड़ाई। बड़िसिद्धिनि तापसि एक आई ॥ तुमसुनि मोहि संगलैतहं जाई। योगिनि मिलि मन हर्ष बढ़ाई ॥ देखत केकइ रूप अपारा। योगिनिनिज मनकीन्ह विचारा ॥ सुतासांगु मोसनबरचाही। पैहौ तस निज भाग सराही ॥ तबतुम कहगुण ज्ञान निधाना। रूपशील निधि सब जगजाना ॥ ५२ ॥

दोहा ।

विद्या विपुल प्रताप निधि त्रिभुवन जाहि सिहाइ ।
अस अवनीसको भूमितल कहुमोहि मातु बुझाइ ॥ ५३ ॥

चौपाई ॥

कह योगिनि मैं त्रिभुवन देखा। स्वर्ग पताल महीस विशेखा ॥ तुमसम रूपवती जगमाहीं। देखामैं कतहूं कोउनाहीं ॥ सर्व भौम-पतितव भरतारा। देखातवकरपरी उदारा ॥ मन्द हासकरि तुमनिज गेहा। लाइताहि बहुकीन्ह सनेहा ॥ तुव जननीलखि दीन्ह सुवासा। निजमन्दिर सबभांति सुपासा ॥ योगिनिसेवा तुममन दीन्हा। तोहि खवस सबभांति न चीन्हा ॥ तबदशरथकी कीन्ह बड़ाई। बलप्रताप तन सुन्दर ताई ॥ विद्याशील सकल गुणआगर। विष्णु भक्त त्रैलोक उजागर ॥ अवधनरेशसुरेश समाना। अपरभूप पृथिवीनहिं आना ॥ जो विवाह दशरथ सन ह्वै है। नतरु बादि तव जन्म गवैहै ॥ सुनि केकई कहा सुनु माता। नारद हू भाखी असि बाता ॥ जेहि विधि पावों अवधनरेशा। मातु मोहि सो करु उपदेशा ॥ उदासीन रहु सुता बनाई। सौनीभूख पियास बिहाई ॥ सोइकीन्हा केकईप्रवीना मलिन बसन तनमन अति दीना ॥ स्वास ऊर्ध करि नैनन आहू। कोउ कछु कहैं न बोलै ताहू ॥ ५४ ॥

दोहा ॥

देखिदशा असिसखिन तबमाते खबरि जनाइ ।
विकृत सुता तबभई अति जबते योगिनि आइ ॥ ५५ ॥

चौपाई ॥

माते आइ सुतासन भाषा। पुत्रीतव मनका अभिलाषा ॥ कवनि

व्याधि उपजी अंगतोरे । किमि निसिदिन मन राखत ढोरे ॥ कछु अभिलाष न मोमन माई । व्याधिन एको ममतन आई ॥ तबरानी योगिनि ढिग आई । हाथजोरि पूछा मनलाई ॥ योगिनि कहानमैं कछु जानौ । लोकवारता मनहिनआनौ ॥ पूछासुतैमोहि एकबारा । कवन श्रेष्ठ जगबीच भुवारा ॥ मैंदशरथ कर कीन्ह बखाना । अवध नाथ सुरपति जनुआना ॥ तबरानी निज मन्दिर आई । शयनहेत बर सेजबिछाई ॥ कन्यागति भूपति सनगाई । अवधनाथकी करीबड़ाई ॥ वेगि विवाह करो नरनायक । लोकदापि दशरथ बड़लायक ॥५६॥

दोहा ॥

सोकरिहैं जोकहातुम कन्यामन रुचिजानि ।
प्रातन्हाइ भूपालमणि बैठसभा निजआनि ॥ ५७ ॥

चौपाई ॥

आयेसब मंत्रीअरु योधा । बिपुलभूप नानाबर योधा ॥ मंत्रिनबोलि राजअस भाषा । सुताब्याह मैंअस अभिलाषा ॥ अवधराज की कही कहानी । भलेनाथ मंत्रिन कहिबानी ॥ एकनकहा वृद्ध नरनाहू । कत कन्याकर करबबिवाहू ॥ एकनकहा बहुत जेहिरानी । तहंबिवाहकी कामति ठानी ॥ तहां गर्गमुनि जगबिख्याता । मैंशिवशंकर सुखमुनि बाता ॥ धनपति यक्ष सांझ सबआये । देव पितर गन्धर्व सोहाये ॥ रावण डरसब करैंघनेरा । तब शिवशंकर असकहिटेरा ॥ दशरथ अवधनाथ भूभारी । ताकेमहिषी तीनिपियारी ॥ कौशल्या केकईसुमित्रा । तिनते ह्वैहै चारिसुपुत्रा ॥ जेठराम पितुआयसुपाई । जैहैंबन सुरमुनि सुखदाई ॥ सोरावणहिं कुटुम्बसमेता । मरिहै नरसब होउसचेता ॥ ५८ ॥

मधुभार ॥

सुनिसत्यबात । नृपहर्षिगात ॥ कहगुरुहिजाउ । राजहिसुनाउ ॥ ममसुतातनै । सोराजभुनै ॥ यहकरकरार । तौतिलकसार ॥ नतुघूमिद्वार । आयोसवार ॥ सुनिनृपतिबैन । गुरुगयेचैन ॥ ५९ ॥

दोहा ॥

यहवृत्तान्त सुनिकेकई जोगिनिते कहजाउ ।
मोरिदशा अवधेशसो भ्राता प्रथमसुनाउ ॥ ६० ॥

चौपाई ॥

जोगिनि आइ कथा सबगायो । नृपदशरथ मुनिमोदबढ़ायो ॥ प्रातकाल आयो मुनिगर्गा । जगबिख्यात द्वारजहं सर्गा ॥ सरयून्हाइ कीन्ह तहंवासा । मुनि नृप द्विजन सहित गयोपासा ॥ चरण बन्दि बहुबिनय सुनाई । पूजिभवन लायो मुनिराई ॥ देखिसिया नृपकी सुन्दिराई । विस्मयकारक सबप्रभुताई ॥ भोजन हित नृपकह मुनि नाहै । करियद्विजन सह जोचित चाहै ॥ नृपहि प्रशंसि कहासुनिज्ञानी । पठयो मोहि केकय गुरनानी ॥ तौनिआस पूजौ ममआजू । हेरघुकुल मणि राजनराजू ॥ सुनिमुनिगिरा कहामहिपाला । कहौ तौन करिहौ यहिकाला ॥ काश्मीर भूपति असचाहा । निजकन्यै तबकरनबिवाहा ॥ ६१ ॥

दोहा ॥

पैसोकन्या पुत्रजो होइतौन यहराजु ।
समयपाइ पावैसोई देउबचनये आजु ॥६२ ॥

चौपाई ॥

तबदशरथ गुर सम्मत लीन्हा । करबसोइ मुनिसन कहि दीन्हा ॥ भोजनकीन्ह गर्गमुनिज्ञानी । पुनिबिबाहकी बिधिसबठानी ॥ संचिहि राजसौंपि तेहिकाला । काश्मीरगे अवध भुआला ॥ केकयभूपकीन्ह सनमाना । कंन्या ब्याहिदीन्ह जगजाना ॥ दाइज लैपुनि अवधहि आये । सुखसमेत बहुदिवस बिताये ॥ सोसुधि रानिकहा धरि राषा । सौतिन रामतिलक अभिलाषा ॥ सोईबातै तुम्है सोहाई । भरतराज भूपतिहु भुलाई ॥ सुनिमंथरा बचन जबरानी । चेरिनीचकहि बहुतरिसानी ॥ तोहिराम अप्रिय किमिआही । अतिप्रियमोहि भरतते चाही ॥ काटैनाककान सिरतोरा । पापिनि किमिकहु बचनकठोरा ॥ ६३ ॥

मधुमार ॥

भैघरिकवार । भूपति बिचार ॥ रिपुदवनजाउ । केकइहि लाउ ॥ गेतुरतधाइ । करगहिउठाइ ॥ सुनुबातमाइ । तोहिबोलराइ ॥ धरिबसनकोर । मंथराजोर ॥ सुनुबातमोर । तबतजौठौर ॥ रिपुहनरि

साइ । हनिगे दधाइ ॥ गिरिभूमि आइ । कहिहाइहाइ ॥ गहिमातु पाणि । बहु हसतजानि ॥ तबन्टपहि आनि । पुनि मिलीरानि६४ ॥

दोहा ॥

भरताडतनिजमंथरान्टपढिगगिरी हहाइ ।
मोरि सुमित्रा सुअन लघुतोरी रीस सोहाइ ॥ ६५ ॥

चौपाई ॥

नहिंरहै। मैअस्तन भारा । असिगति कीन्हीतनै तुह्मारा ॥ बहुरि सुमित्रै कहा रिसाई । तवसुत मोहि मारावरि आई ॥ सोसब यह मतिअहै तुह्मारी । कहा सुमित्रा कहुन विचारी ॥ शिशुनखीभरोवै की मारै । और नकछु बलहृदय विचारै ॥ तहा सुधन्याधाई आई । कहै वचन रानी रुषपाई ॥ अहोमंथरा बालक दोषा । हृदय आनु जनि करसिन रोषा ॥ बालक कंदुक फूलसमाना । बज्रघात समख-सत निदाना ॥ पापिनितै ममकरु परिहासा । न्टपहि रिझाउ मोरि हृगनासा ॥ जासु घात टूटी मम देहा ॥ ताहि कहतहठि बालक येहा ॥ तब चेरिहि न्टप कहा बुझाई । बहुबेदन तौ करिय उपाई ॥ कहै। हरिद्रा बाटि थोपावों । नतरु बैद्यकौ गुणी बोलावों ॥ अहो राजवंचत कतमोही । याकर फलदेहै। मैतोही ॥ सुनिमंथरावचन कैकेई । दुरि आयो बहुगारी देई ॥ ६६ ॥

दोहा ॥

विहरत केकइ भवन न्टप आय सुलैलै बाल ।
गवनी निज निज मंदिर नमहा मोदतेहि काल ॥ ६७ ॥
चारिउ भाइन प्रीति लखि सुर मुनिसकल सिहाइ ।
जोन रामपद रति चहैवादि जन्मतेहि जाइ ॥ ६८ ॥

चौपाई ॥

अवधआइ लोमसयक बारा । पुरबासिन माहरष अपारा ॥ चरण बंदि कीन्हा बहुसेवा । नायकहै। कुवरी करभेवा ॥ तुमटकाल दरसी जग जाना । अपरन असगुन ज्ञान निधाना ॥ जीव चरा चरजे जग माही । प्राणहुअधिक रामप्रियताही ॥ केहिकारण यहिबैरबढ़ावा ॥ हरषि मुनि खरसकल सुनावा ॥ पुरुबदेवा सुरसंग्रामा । सुतप्रह्लाद बिरोचब नामा ॥ ब्राह्मण भक्त कर्म मन बानी अतिउदार असभयो

न दानी ॥ तेसुरपुर हठि सकल छडायो। देव नराजहीन दुखपायो। देवराज गुरुसन कहजाई। जेहि दुखमिटै सोकरिय उपाई ॥ कह गुरुसुनौ संचट्टढ़ येहा। द्विजह्वै जांचुजाइ तेहि गेहा ॥ मागेउ आयु सादै ततकाला। आन उपाउ नहोउ निहाला ॥ ६९ ॥

दोहा ॥

कहा कीन्ह सुरराज तब मागी भिक्षानाइ।
दैत्यराजनिज प्राण तजिकपट द्विजहि हितलाइ ॥ ७० ॥

चौपाई ॥

देवराज निजपद पुनिपायो। भूपनिधन सुनि असुरडेरायो ॥ भूप सुता संथरा कराला। दैत्यन धीर दीन्ह त्यहिकाला ॥ पुनि सुरारि देवतन प्रचारा। लरिभागे मंथरै पुकारा ॥ जाइ मंथरा सुरनबिडारा। पाहि पाहि तिन हरिहि पुकारा ॥ गदा चक्रधर गरुड़ सवारा। आयेहरि सुरकाज सवारा ॥ प्रभु सुरपतिहि कहारण माहीं। नारि वधेकछु पातकनाहीं ॥ गेसुरपति मंथरैप्रचारा। बज्रपातकरि अवनि पछारा ॥ पुनिहरि चरणगहे सुरराई। देवसकल तवपदसिरनाई ॥ कहहरि सुरकुल रक्षा कारण। धरतरहौ मैवहु अवतारण ॥ वहां मंथरै भिवका घाली। गृहते गयो अपर जहआली ॥ ७१ ॥

दोहा ॥

कहामंथरा त्रियन सो तुमरे पति हित काज।
बज्रघात रणसह सह्यौ परिहरि निज कुललाज ॥ ७२ ॥

चौपाई ॥

त्रियन कहा जलपत कतआई। देखन गइउं देव सुघराई ॥ अपर कहैनिज उरुज उतंगा। देखै सुरव्रत छूट अभंगा ॥ अपर कहैअव रन सहजाई। आवोजीति देववरि आई ॥ अपर बैठिढिग बचन सो कहई ॥ स्त्रीप्रबल नीकनहि अहई। खीझ मंथरा सुनि त्रियबानी ॥ वड़पापी सुरपतिहि बखानी ॥ जेहि स्त्रीहति लाजन आई। यहिते अधिक नजग अघमाई ॥ पुनिकह सुरपतिहु नहिमोखा। विष्णुकहा रनहते न दोखा ॥ कीन्हहाइ समत नहि अनैसा। करत सदा हरि ऐसहि ऐसा ॥ भृगुपतनी कहसुना पुराना। हता ताड़कै सब जग जाना ॥ दयासिंध पतनैनसायो। इन्द्रैरति तेहिपतिहिमरायो ॥ ७३ ॥

दोहा ॥

हरिकर कारण जानि कह सुनिये सकल सुरारि ।
जीहै देहै फलतिनहि मरैअपर तनधारि ॥ ७४ ॥

चौपाई ॥

सुनि पुरजन पुनि बचन प्रकाशा । भयो ताहि किमि अवध नि-वासा ॥ कवनि पुण्य सोकहु मुनिराई । अति पापिनि सोहरि गृह-आई ॥ कहमुनि कल्पवृक्ष भगवाना । बैरभरत हरिसन अतिठाना ॥ जोमनसा करितजै सदेहा । सो फलपावै बिनसंदेहा ॥ मरी मंथरा हरि मन लाई । कुटिल मनोरथ बैर बढ़ाई ॥ जनमी कासमीर पुर जाई । दासी ह्वै केकई सगआई ॥ पूरुव भाव मिटै नहि कबहू । बैर करत तेहिते सठअबहू ॥ अवध प्रभाव राम मुखदेखा । यहौ पाइहै मुक्ति बिशेषा ॥ सुनि लोमस के बचन सोहाये । पुरजन मुनि पद शीस नवाये ॥ रामदरस हित लोमसज्ञानी । गये तहां भूपति सह-रानी ॥ ७५ ॥

कवित्त ॥

विदित शशांक यसउदित प्रतापरवि सुकृत समूह की सुहात राज धनिया । सुरपति सरस सिहात जासु भूरि भाग बरनि कि शकत सहसद्वै रसनिया ॥ जाके राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सुवन सकल गुननिधि सुखदनिया । इश्वरी त्रिलोक तिहुकाल न भयो कबहू दश-रथसों नरेश कौशिलासी न रनिया ॥ ७६ ॥ नीलजल जातगात मंद मंद मुसुकात आनन लखात सुरदेंदु सुख दनिया । ललित सोहै कपोल कानन कुण्डल डोलनैन कंज खंजलोल तोतरी वचनिया ॥ नासिका अधर बरसिर केसमन हर भ्रकुटि असन सरछोटी सीद शनिया । अंगअंग इश्वरी भूखितपट भूषण न मोद भरी गोद लिये दशरथ रनिया ॥ ७७ ॥ रतन सिंहासन विराजै राज राजमणि देश देश के महीस शीसपद नावते । दशौ दिगपाललोकपालउ प्रहारलै लै भेटहित दिनप्रति अवधहि आवते ॥ मोद भरे गोद मे विराजै शिशुरूपरामशिव चतुरानन विलोकि सुखपावते । उदित प्रतापयश विभव त्रिकाल जग दशरथ सम कविकबहू न गावते ॥ ७८ ॥

छप्पै ॥

कुलिस विंदु धनुध्वजा अर्द्धरेखा रुचिराजै। अंकुश अम्बुज कुंडवस्त्र जंबूफल छाजै ॥ मानुष मीन महेंद्र चाप चक्रादि विशेषा। अष्टकोण षटकोण त्रिकोणादिक वररेषा ॥ स्वस्तिक शंख हिमांशुत नघट जव जलजसुवज्ञवर। चौवीसचिन्हश्रीरामपदसुमिरतसाधुनमुक्तिकर७९ ॥

दोहा ॥

देखत मुनिपद पंकरुह पूजि नरेश विशेष।
आसन असन अनूप दै गुरु वशिष्ट सम लेष ॥ ८० ॥
दशरथ प्रभुता राम शिसुलीला विविधि प्रकार।
देखनहित मुनि लोमस आवत बारंवार ॥ ८१ ॥

प्रज्वलिया ॥

पुनि अपरकथा कहि सूतगाइ। जो बालमीक ब्यासहि सुनाइ ॥ सुरपति ब्रह्मादि देवचढ़ि निजबिमान। आवैं अवध सरजू नहान ॥ सुरपति रचि बिधि स्यंदन बहुवस्तुधारि। खगसृग मणिमय छत्रिमसवारि ॥ रचि बिधि उपायन रामहेत। गन्धर्व पितर दिगपति समेत ॥ शिव नन्दी चढ़ि गिरिजा अधंग। गवनै अवधहि लैगणनसंग ॥ सरजू नहानबनिबि- प्रवेष। श्रीराम दरस लालच विशेष ॥ ८२ ॥

कवित्त अनंगधर शेषर ॥

लसैअनूप गौर गात कुन्दइंदुहू लजात पाद पद्म बारिजाततै सु- लालरंगहै। भुजंग कंकना दिहार कंठ न्यकपार धार चन्द्रभाललार औजटा कलाप गंगहै ॥ विभूति लाइ अंगमे सुभंगके तरंग मे चढै वृषेसपै गमे उमेलिये अधंगहै। हरौपि विष्णुवा सरेन न्हान सारजू लरेसु रामदर्श आसरेग नौघसिद्ध संग है ॥ ८३ ॥

नराच ॥

स्वयं भुवो अरूढ़ हंस स्वेत रूपवा मसा। नहान सारजू जलैस्व रामदर्श लालसा ॥ ऋषीश नारदादि संग ब्रह्म राग रागते। महा अनन्द मग्नह्वै सुअवध ग्राम आगते ॥ ८४ ॥

प्रमाणिका ॥

विनाकौ मात नै। समस्त विघ्नको हनै ॥ त्रिनैन चन्द्र भालहै ॥ कराल व्याल मालहै ॥ महा बिसाल गातहै। सुजान भूप जातहै ॥

समूह हिय संगलै। नहान सारयू जलै ॥ ८५ ॥

मालिनी ॥

सुरमुनिगण सबीमाथ लीन्हे खबामा। चढ़ि गजरथबोरि आवते औधधाम ॥ मगहरि यशगावैं इन्दबाजै म्रदंगा। नटिसुख उपजावैं अप्सरी भूरिरंगा ॥ ८६ ॥

चौपाई ॥

यहिप्रकार तप सत्य निवासी। जनओमहर्लोकके बासी ॥ ऋषि ध्रुवलोक स्वरग सुरसगरे। पृथिविबिच सुमेरु परबगरे ॥ स्वरनपुहुप समभूमि बिलासी। ऊंचोरहस चारिऔ आसी॥ चन्द्रलोक रविलोक सम्भावत। सुरगंगाजल शीशचढ़ावत ॥ रविकर तापनकाऊ सतायो। बायुबेग सब अवधहि धायो ॥ भरतखण्ड लखि शीश नवायो। देखि सची बिस्मय अतिपायो ॥ पूछा पतिहि कहौ प्रभुभेवा। नमत कवन देवहि सबदेवा ॥ तबसुरेश निजप्रियहि बुझायो। भरतखण्डप्रभाव सब गायो ॥ पुण्यक्षेत्र शुभ कर्मनसाधै। बसै सुरालय सो निरबाधै ॥ मैंशत यज्ञकीन्ह यहि धरणी। भयेउ सुराधिप सोवर करणी ॥ तुम यहि धरणि पुण्य करि भारी। भइउ आइ बिदशेश्वरनारी ॥८७॥

दोहा ॥

जगन्नाथ ये घपे बिधि जग उधारन हार।
यहकाशी विश्वेश्वरहि प्रणयो बारम्बार ॥ ८८ ॥

चौपाई ।

गंगागया प्रयागहिआवै। कोटि जन्मकर पाप नशावै ॥ चित्रकूट विकटेश्वर नाथा। वैरामेश्वर नावाऊमाथा ॥ द्वारावति मथुरा वृन्दा-बन। कृष्णजहां क्रीड़त धरि नरतन ॥ देखु अयोध्या पुरी सोहाई। नमस्कार करुप्रेम बढ़ाई ॥ जनमे जहां रमापति रामा। सुनतसची उठिकीन्ह प्रनामा ॥ अपरअपस रागंधप नारी। सिरनवाय जैजयति पुकारी ॥ सची अयोध्यहि माथ नवायो। सावित्री लखि बिधिहि सुनायो ॥ कवनदेश तीरथ सुरयेहा। नमत जाहि सुरबधू सनेहा ॥ कह बिधि अवधपुरी हरि धामा। यहै ताहि उठि करौ प्रनामा ॥ बिंध्या हिमगिरि मध्य सोहाइ। पुण्यक्षेत्र पृथिवी श्रुति गाई ॥ ब्रह्म द्रवसरयू गंगा सरि। न्हाइनाइ पितरन समेत तरि॥ ८९ ॥

दोहा ॥

महिमा सरयू अवधकी मुनिबिधि बहुबिधि गाइ ।
सावित्री बहु बार तब करिप्रणाम हरषाइ ॥ ९० ॥

चौपाई ॥

अवधपुरी नर नारिविशेषा । सुर सुरबधून तिनसम लेषा ॥ भाग रूप सब भांति बड़ाई । रम्भादिक सुनिरहीं लजाई ॥ तब बिधि तट स्वयंभु मनुभूपा । जानलाय करि प्रश्न अनूपा ॥ तुम प्रभु कहा अवध नरनारी । देव न इन समान तनधारी ॥ जन्मम्रत्यु अरुजरा सतावै । सो किमि सुरन बराबरि पावै ॥ मलमूत्र मूत्र देह दुरगन्धी । शोक दुःख व्याधिन संबन्धी ॥ सुनि नृप वचन देव ऋषि कहेऊ । सो सुनि सकलसुरन सुखलहेऊ ॥ राजन कह्यौसत्य सबसोई । तदपि सुनौयह कारण होई ॥ स्वरग विचुत सो महितल जनमै । जरा म्रत्यु बहु व्याधिन भरमै ॥ महिसुकृती धरि बिष्णु सरूपा । लहै परमपद परम अनूपा ॥ ९१

दोहा ॥

ऊर्द्ध गमन सन्तान सुखलहि बैकुंठ अनूप ।
अवधपुरी नर नारिसब बिष्णु लक्ष्मी रूप ॥ ९२ ॥
ताते स्वर्गते अधिक सुख कोशलपुरी प्रभाव ।
जो बैकुंठै जायकै बहुरिन महितल आव ॥ ९३ ॥

चौपाई ॥

यहिबिधि बरनतहरि यशनाना । तवलगि अवधनगर नियराना ॥ देखामणि कलधौत निकेता । सुन्दर छबि मै गगन उपेता ॥ बसै धनिक लक्ष्मी जहंपूरी । वनउपवन शोभा अति रूरी ॥ प्रफुल्लित हरित नमित फल भारे । जे सुरतरुन लजावन वारे ॥ नदी पुलिन मणिमय सो पाना । उतरे सुरगण सकल बिमाना ॥ बिधिवत करि सरयू असनाना । पुलिनआय पहिरेपट नाना ॥ नित्यक्रियाकरि द्विजन बोलाई । दिये दान मणि गण समुदाई ॥ तेहि औसर नृप सासन पाई । गहेवशिष्ठ पिता पदजाई ॥ भुजभरि बिधि उठाय उरलायो । स्वागत पूछि निकट वैठायो ॥ हैं दशरथ नृप सुतन समेता । कुशल कहो मम आनन्द हेता ॥ ९४ ॥

दोहा ॥

कुशल भूपनिज सुतन सहतव पद दर्शन हेत ।
आवतहैं आनंद भरे सुनिये कृपा निकेत ॥ ९५ ॥

रूपमालिनी ॥

तब कहा बिधि धर्मसु नृपजेहि हरिभयो सुत आय । तुम जाय कहिये सुरन सहमैवहैं मिलिहौं आय ॥ ममइष्ट रामकृपाल दर्शन करब सब सुख पाय । जिन नाभि कमलोत्पन्न यह तन सोभयो नर आय ॥ पितुगिरा सुनिमुनि आय बरन्यौ भूपते अतिहेत । तब सुत बिलोकनआवते बिधिशंभु सुरनसमेत ॥ तेहिसमय देवसमस्तभूपहि जयति वचन सुनाय । हमआय तुह्मारे भवन आयसु दीजिये सुख पाय ॥॥ ९६ ॥

चौपाई ॥

ममपुर राज्यभवन यहतोरा । निजगृह आवत काहि निहोरा ॥ उठे बरासनते लिय रामहि । बिधिके निकट गयो निज धामहि ॥ सुत समेत पदसिर धरिभूपा । सिंहासन बैठारि अनूपा ॥ तथा इन्द्र गणेश गौरीशा । बैठारे पद बन्दि महीशा ॥ बिधिवत पूजि सबहि सबरीती । बिनय कीन्ह भूपति अतिप्रीती । अबकृत कृत्यभयों कह राजा । आयो ममगृह देव समाजा ॥ धन्य धन्य ममभाग अपारा । सुनि नृपबचन कहा करतारा ॥ सत्यभाग भूपति तबभारी । जाके रामसरिस सुतचारी ॥ युगयुगकी रतिरही तुह्मारी । असनहिंकोउ त्रिकाल तनधरी ॥ और कहांलौं करौं बड़ाई । तबसुत हरि समान चऊभाई ॥ ९७ ॥

हरिगीतिका ॥

तेहिसमय दशरथ अंकराजत रामछबि अति देखिकै । तनपुलक गदगद गिरा नारद बिनयकरत विशेखिकै ॥ प्रनमामि राम रमेश विभुयोगीश जन सुखदायकं । सुरश्रेष्ठ ज्ञानानन्द ज्ञान स्वरूप अज सुरनायकं ॥ तपफल दातार तपमय तपोधन तापसबरं । बरद-बरेण्यं ब्रह्म ज्योति स्वरूपिणं त्रिगुणं परं ॥ कन्दर्पकोटिन शुभग तन रुचिश्याम इन्द्रमणि प्रभं । श्रीबासुदेव खरारि राम दशावतार धर शुभं ॥ ९८ ॥

दोहा ॥

मच्छकच्छ बाराह नर हरि बामन बपुधारि ।
परशुराम श्रीराम ह्वै कृष्ण बौध म्लेच्छारि ॥ ९९ ॥

चौपाई ॥

यहि प्रकार मुनि हरि गुण गावा । वेदहु जासुकर पार नपावा ॥ सकुचि मुनिहि नृप वचन सुनाये । ममसुत ब्याज विष्णु गुणगाये ॥ जस मुनिबर तुम कहा बखानी । तैसहि सदा कहैं सबप्रानी ॥ अब मुनि मंचन रक्षा कीजै । शिशुतन सब बाधा हरिलीजै ॥ तब नारद मुनि करि चतुराई । सिरते अंगछुये हरषाई ॥ शिशुपद परसिभाग निज जानी । गयेतुरत मुनिवर बिज्ञानी ॥ ब्रह्मादिक लखिमुनि चतुराई । विहसिमनहि मनरहे सिहाई ॥ यहइतिहास पढ़ै मनलाई । बालक राम कृपात रिजाई ॥ जन्म कोटि अघताहि नशाई । बसि बैकुंठ परमपद पाई ॥ लक्ष्मीसदा बसै तेहि गेहा । लहै सरब सुख हरि पदनेहा ॥ १०० ॥

दोहा ॥

गयेजबै देवर्षि तबनृप बिधिते करजोरि ।
हरिबासर सुरफल असनकरै मनोरथ मोरि ॥ १०१ ॥

प्रज्वलिया ॥

तबब्रह्मा कह सुनुनृप सुजान । हरिबासर यह भोजन विधान ॥ दिन हरिकीरति निशि जागि गाय । हमसहपित सबै तव दर्शपाय ॥ पुनि भूप कहा सुनु स्वामि बात । करुरक्षा जेहि चिरजीव तात ॥ सुनि नृपतिगिरा बिधिकहि सहेतु । तबवचन सत्य रघुवंशकेतु ॥ २ ॥

चौपाई ॥

तब मन कीन्ह बिचार बिधाता । येप्रभुहैं त्रिभुवन के त्राता ॥ ते मानुषलीला बपुधारी । करिहैं सफलअशीश हमारी ॥ यह बिचारि बोले गणनाथै । तुमफेरौ रघुबर सिर हाथै ॥ तुमशिव शिवा सुकृत कीढेरी । कौनकरै सुरसरबरितेरी ॥ सबबिधि सबलायक केताता । विष्णुभक्त तिहुंपुर विख्याता ॥ बिधिआयसु तेगणपशुजाना । कीन्हो रामानाम करगाना ॥ शुण्डादण्डफेरि जब भाला । देखत प्रभुरोये ततकाला ॥ तब गणनाथ फेरि करलीन्हा । बिधिहरि निकट गवन

तब कीन्हा ॥ आठौ नयन दीख चतुरानन। प्रियलागत यशतस निज प्राणन ॥ रच्छाहित कर धरि हरि भाला। अधिक कुटिलमुख कीन्ह कृपाला ॥ ३॥

दोहा ॥

निज आसन फिरि आइ बिधितब शंकर सुखपाय।
इन्दीबर द्युति श्यामतन रामहिं निरखि बनाय ॥ ४ ॥

चौपाई ॥

पन्द्रहनयन शंभु अवलोकै। प्रकटि नसकत प्रीतिमन रोकै ॥ हे बालक निजजन प्रतिपालौ। ममउर बसौ गञ्जन उरकालौ ॥ तदपि न राम नेक मुसुकाने। बैठे शिव तब निज अस्थाने ॥ पुनि षटमुख मनप्रेम अपारा। द्वादशनयन नजायनिहारा ॥ बालक तुमगजमुख- हिंडेरान्यौ। षट्मुख मोहिंलखि अतिभयमान्यौ ॥ शिवसमीप सुनि बचनभवानी। बोलीगिरा प्रेमसनआनी ॥ येदशद्वदनकु नाहिंडेरा- ही। षट्मुख कौने लेखेमाहीं ॥ देवसभा सबहंसे ठठाई। हंसेराम तवन्टप सुखपाई ॥ देवपितर गन्धर्ब अरुयच्छा। कीन्हा सबहिंन हरि कीरच्छा ॥ यह कौतुक लखि सभा अनन्दा। न्टपमुनि अरु वृन्दारक वृन्दा ॥ ५ ॥

दोहा ॥

बालराम छबिराखिउर ब्रह्मादिक सुरसर्ब।
निजनिज धामहिंजातभे यच्छपितर गन्धर्ब ॥ ६ ॥

चौपाई ॥

तब दशरथ कौशल्या गेहा। गयेरामलै अंक सनेहा ॥ कौशल्या रामहिं लैगोदा। अस्तनपान करावतमोदा ॥ न्टपब्रह्मादि आगमन कहेऊ। गणपषमुख जिमिशिशु भयलहेऊ ॥ रानीसुनि बिस्मयमनलाई। गुरुवशिष्ठकहं तुरत बोलाई ॥ मंत्रन शिशुरच्छा करवायो। सहसगऊ सुतहाथ दिवायो॥ स्वर्ण सहस्रकोकई लीन्हा। रामहाथ धरि बिप्रनदीन्हा ॥ यहिप्रकार रघुबीर बिनोदा। लखिन्टप रानिन उपजत मोदा ॥ जानुपाणि धरिचारिउभाई। बिचरत मणिमयन्टप अंगनाई ॥ कबहुंक निज प्रतिबिम्ब निहारत। दूसर बालक मनहिं बिचारत ॥ कबहु उताहिल कबहुंकधीरा। न्टप मंदिर खेलत रघु

बीरा ॥ पगनूपुर कटि किंकिणि बाजत । झीनपीत झंगुलि तन भ्राजत ॥ ७ ॥

दोहा ॥

चलन सिखावत पाणिगहि कबहुंमातु हरषाय ।
अरबराय गिरिपरत कहुं जननि लेतउरलाइ ॥ ८ ॥

चौपाई ॥

भालतिलक मसि बिंदीराजैं । सिरनटोप नरकसी बिराजैं ॥ कर कंकन कुंडलश्रुति लोला । अतिसुन्दर नासिका कपोला ॥ अधरअरुण रतनारे नयना । सुनतहरत मनतोतर बैना ॥ सुखनिधानछबि मयन्दप ढोटा । मरकत कनक बरण बरजोटा ॥ अरुण चरण कुलिशादिक रेखा । नखसिखते छबिरासि बिशेशा ॥ निजआश्रमते दरशन आसा । भक्तभुशुण्ड आव हरिपासा ॥ खेलत खात सष्कुली लीन्हे । देखिकाग प्रभुकह नरचीन्हें ॥ येकिमि ब्रह्मनाहि श्रुतिगायो । भयोमोह मनतर्कबढ़ायो ॥ प्रभुभुशुण्डमनगति सबजाना । खेदातेहि सरूप सोआना ॥ जहंजहं गयाभुशुण्ड उड़ाई । पाछे ताके कररघुराई ॥ सप्त भुवन लौ काग उड़ाना । निकट देखि प्रभु भुज भयमाना ॥ ९ ॥

नराच ॥

गयोपतालशेषअंक रामबालक्रीडते । फिरो बहोरि अग्रह्न सोई स्वरूपपीडते ॥ बिलोकि अग्रपृष्ठमेभयाकुलो भयोमहा । बलातइन्द्रके गयोशिशु सुसेवते तहां ॥ बहोरिबन्हि अन्त्त कोपिनैरितेपि धामहीं । गयो बिलोकि सेवतेदिगीश सर्बरामहीं ॥ भयातुरोपि जाइसोजलेसवायुकेघरै । तहांसिंगासनै असीनकैबिनैसियावरै ॥ ११ ॥

चौपाई ॥

तबसोभागि गयोशशितीरा ॥ भोजनकरततहांरघुबीरा । फेरिभागि कैलाशहि आयो । प्रणत शंभुशिशुसो दरसायो ॥ उरधपलाइ गयो सुरधामहिं । तहौंदेखि सुन्दर शिशुरामहिं ॥ सत्यलोक चतुरास्य समीपा । जायदीख तहंरविकुलदीपा ॥ बंदत ऋषिगण बिधिऊसमेता । आयो महिनिज उरपि निकेता ॥ आपन रूप देखितहं आई । पाछे डरपावत रघुराई ॥ तबकीन्हे बिचारमनमाहीं । रामहिंमोहिकछुक

6520.

भयनाहीं॥भयोपरवताकार भुशुण्डा।अतिकराल भयदायकतुण्डा॥ जंघाताल्लवृक्ष उपमाई। गजअंकुश समनख कठिनाई॥ उभैपक्षजनु परवत छावा। यहिप्रकारनिज देह देखावा॥ १२॥

दोहा॥

तब प्रभु गरुडै सुमिरि मन आयो सो ततकाल।
घोरयुद्ध करि बायसै उरचढ़ि कियो बेहाल॥ १३॥

नराच॥

खगेश्वरै अरूढ़ राम बायसै कहा तबै। बताउ तोहि काकरौं कियो सोईलहौ अबै॥ भुशुण्डह्न भयातुरो प्रणाम कै बिनय ठयो। नमामि बालरूप राम मोहि मोह सोहयो॥ १४॥ नमो नमःकृपा समुद्रराम बालरूपहे। नमोनमःअजादि शंकरादिकेपितामहे॥त्वमेव बिश्वआतमा त्वमेव बिश्व रूपहौ। त्वमेवजाग रत्स्वपुत सुखप्नह्न अनूप हौ॥ १५॥ त्वमेव ज्ञानयोग भक्ति योगज्ञान दायकं। अरूप ज्योति रूपव्यापिकोपि देवनायकं॥ त्वमेव लोकपालब्रह्म शंकरादि शेषत्वं। दशावताररूह्रतं अजंबिभुं रमेशत्वं॥ १६॥

दोहा॥

यहि बिधि बायस बिनयकरि रामचरण अनुरागि।
सुनिदयार्द्रह्वै गरुड़ तबदीन्ह तुरतही त्यागि॥ १७॥

चौपाई॥

तब भुशुण्डहरि पदधरि माथा। भयो आजु सबभांति सनाथा॥ तव पद परसि मोह मम गयऊ। कृपासिंधु अब अति सुख भयऊ॥ अतिहि प्रचण्ड देवतव माया। छूटै ताहिकरो जेहिदाया॥ माया मोहि नसतावै सोई। तुह्मरे भक्तन कर संगहोई॥ निज पद भक्ति निश्चला दीजै। कृपासिंधु ममहित यह कीजै॥ सुनिबोले हरिकृपा समोई। कह्यौ काग जसतस सबहोई॥ सो मायाकबहूं न सताई। मम यहरूप हृदय तवआई॥ अबिरल भक्ति होइ अबतोहीं। भजौ निरन्तर निशिदिन मोहीं॥ असकहि प्रभु भे अन्तर ध्याना। निज आश्रमहि गयो हरि याना॥ हरषि भुशुण्डगयो निजगेहा। करत राम पदपदुम सनेहा॥ १८॥

दोहा ॥

बरषै पंचभशुराड शिवबसे अवध द्विज देह ।
निरखि राम शिशु चरित बरतनगवनै निजगेह ॥ १९ ॥

चौपाई ॥

यहिविधि बालमीक लोमसप्रति । बरन्यौबालचरित्र महामति ॥ अपरकथा अब सुनु मुनिराई । जेहि प्रकार क्रीड़त रघुराई ॥ कबहुँ पानिगहि चलन सिखावत । कबहुं उछंग लाय पयप्यावत ॥ रूपराशि सुत बदन निहारी । परमानन्द मगन महतारी ॥ कौशल्या रामहिं मनलायो । खानपान सज्जा बिसरायो ॥ एकसमय कौशल्या गेहा । लालत रामहि न्टपति सनेहा ॥ तेहि औसर केकई सुमित्रा । सुतन सहितआईं सोतत्रा ॥ अपरराज रानी तहंआईं । बाल चरितदेखत हरषाईं ॥ लालत न्टपति सुतन अति मोदा । बार बार एक एक लै गोदा ॥ १२० ॥

पज्झलिया ॥

तहं विश्वावसु गन्धर्व आव । सहबधुन न्टपहिजैजै सुनाव ॥ तेहि दशरथ न्टपबोले रिसाय । बिनबोले किमि रनिवासआय ॥ गन्धर्व कहा सुनुभूप बात । मैआयों निजगुण गौरवात ॥ असभाषि म्टदङ्गा-दिक मुचंग । बीनादिविबिध बाजा तरंग ॥ नटरगगान करिबिवि-धि रंग । नाचत अपसर गति ताल संग ॥ सुनि मोहे न्टपरनिवास ट्टंद । पशुपच्छीजड़ चैतन्यमंद ॥ सहभाइनभो रघुबरहि मोद । उठि गयो तुरत गंधर्वगोद ॥ तबविश्वावसु कियोबंद गान । लालतरामहि निज भाग मान ॥ २१ ॥

चौपाई ॥

सो लखि भूपति हरष बढ़ायो । राग महा तम जात न गायो ॥ जो सुनि बालक वस भे आई । युवा ट्टद्ध की का चलि भाई ॥ बार बार कौशिला बोलावैं । आउ लाल पय तुम्हैं पिआवैं ॥ नहिं आवत तजि गंधव कनियां । विसमित होत सकल लखि रनियां ॥ २२ ॥

पज्झलिया ॥

लखि प्रीति कौशिला कह्यातासु । ननि भवन जाउ इत करौ बासु ॥ मैं देव राज आज्ञा बिहाय । किमि रहौं मातु तव भवन

आय ॥ पुनि कहा कौशिला तात जाउ । सुरपति आयसु लै तुरत आउ ॥ सुनि बचन केकई कह रिसाइ । किमि विश्वावसु सुरलोक जाइ ॥ हे धूर्त बालकन्ह मोहि गाइ । अब चहत देव लोकहि पराइ ॥ जोदेवराज बरजै विशेष । छीनौ सुर पुर अबही अशेष ॥ यह कहि शरधनु दै नृपहि जाइ । इषुबांधि पत्र इन्द्रहि पठाइ ॥ ज्यौं रहै विश्वावसु अवधधाम । सो करिय देवजेहि मोदराम ॥ केकई बचन नृप करि प्रमाण । लिखि पत्र बांधि पठयो खबाण ॥ सुरसभै सभय करि गिराबान । दशरथ प्रेरित सब भरम जान ॥ पढ़ि धीरजधरि सुरपति सुजान । केकई कोप कारण बखान ॥ गन्धर्ब निषेध न कबहुं कीन्ह । मोहि दोष अजानत रानि दीन्ह ॥ २३ ॥

दोहा ॥

मोहि दशरथ मनप्रीति अतिरानी तौननजान ।
परुष वचन लिखि पठै बिन अपराधै अज्ञान ॥ २४ ॥
सोफल पाई केकई प्रेरित बानी बात ।
कहिलेहै जग अयशबड करिहै राज विघात ॥ १२५ ॥

मालिनी ॥

इमि सुरपति रोषीबात देवन सुनाई । चरचतुर बोलाये कोशलै जाउधाई ॥ तिन नरपति आगे देव राजा कहानी । बिधिवत सब भाषी प्रीति सोनम्रबानी ॥ हम सुरगण सबी अप्सरा औरदारा । सबतव पुरबसिये देउआज्ञा भुवारा ॥ नतुजसितव प्रीतीतौन दीजै निदेशा । ममतुम अतिमैत्री जानते सर्बदेशा ॥ २६ ॥

तोटक ॥

सुनि दूत मुखै वरबात सबै । हंसि राज कहा उतजाउ अबै ॥ नति मोरि कहौ सुरनायक सो । इत आइरहै बिसुवावसुसो ॥ मम बालन पै करुणा करिये । सबपोषण तोषनकै भरिये ॥ तुवशत्रुखशत्रु, हमारसदा । अरु मित्र खमित्रअपार सुदा ॥ मम तोहिनभेद कछू कबहूं । नसि प्रीतिअखण्ड सदाअबहूं ॥ खइ चारनइन्द्रहि जाइ कहा । अवधेश नरेशक प्रेम महा ॥ २७ ॥

दोहा ॥

सुनि सुरेश बिश्वा वसुहिरामहि अर्पण कीन्ह ॥
गाइ रिझाइ सुरेश्वरहि जन्म लाभतेहि लीन्ह ॥ २८ ॥

चौपाई ॥

अपर कथा पुनि सूत बखाना । शौनकादि मुनि मन सुखमाना ॥ कौशल्या रामहिं लैगोदा । चढ़ीमहलपर उरभरिमोदा ॥ गईबिपुल संगधाई धाई । बिबिधि भांति सुखसाज बनाई ॥ रामहि दुलरावत पयप्यावत ।कौशल्या सुखकहिकेहि आवत ॥ तेहिआवसर भूपतिसुख मानी । गयो सुमित्रा की रजधानी ॥ लखि रानी आरती उतारा । रुचिपर्य्यंक भूपहि बैठारा ॥ भूपजानु बैठे दोउभाई । लषण शत्रुहन सुखअधिकाई ॥ तेहिआवसर कौशल्याधाई । सुन्दरिनाम काजकछु आई ॥ दुलरावत सुतन्टप अरुरानी । हसत परस्पर लखिसकुचानी ॥ निजकारजकरि सोवहधाई । बहुरिकौशला तहं चलिआई ॥ २९ ॥

दोहा ।

इत कौशला खेलावती राम लषण रिपुहंत ।
बहुरि जाइ देखा सोई लालत सुत महिकन्त ॥ ३० ॥

चौपाई ॥

बहुरि कौशला ढिग सुत सोई । जाइ भूप पहंलखा सो वोई ॥ पुनि पुनि इत उत आवत जाई । दुहु दिशि सुत लखि बिस्मयपाई ॥ आईगई बार बहु धाई । तब भूपतितेहि निकट बोलाई ॥ कोहित पुनिपुनि आवतजाई । सुन्दरि कातवमन दुचिताई ॥ सुन्दरि कहा अभै मोहिकीजै । तब सम्यक वृतान्तसुनि लीजै ॥ कह न्टप हरसिन कछु मन भावा । तस चरित सुन्दरी सुनावा ॥ लषण शत्रुहन जेवत कनियां । लालत तिनहिं कौशला रनियां ॥ इहां उहां दुहु दिशि सुत देखा । तब भै मोहि संदेह बिशेखा ॥ तेहि संग भूपहु दीखग-बाछे । राम साथ खेलत सुत आछे ॥ इत उत पुनि पुनि न्टपहु निहारा । कौशल्या मागधी अगारा ॥ ३१ ॥

दोहा ॥

दुहुं दिशि लक्ष्मण शत्रुहन खेलत लखि महिपाल ।
बिस्मय सहितवशिष्ठको बोलि लियो तेहिकाल ॥ ३२ ॥

चौपाई ॥

कहालषण रिपुदमन चरित्रा। जिमि लालत कौशिला सुमित्रा॥ सुनि मुनि निज मन कीन्ह बिचारा। ये अवतरे हरण महिभारा॥ विष्णु पारषद इच्छा चारी। का आचरज उभै तनुधारी॥ शिमुन प्रताप मुनीश छपावा। गंधर्प माया नृपहि सुनावा॥ सुवन सुमित्रा के निज गेहा। खेलत रहे न कछु संदेहा॥ यह कौतुक बिश्वावसु केरा। सुनि नरेश गन्धर्बहि टेरा॥ देखानृप बिश्वावसुआये। लषणा-शत्रुहन कन्ध चढ़ाये॥ तहां सुमित्रा सुवन निहारा। मुनि नृपतेहि कौतुकी बिचारा॥ नृप प्रबोधि गुरु निज गृह आये। भूप सुमित्रा निकट सिधाये॥ गंधर्प माया बरणि सुनाई। जेहि प्रकार भूपहि दरशाई॥ ३३॥

रूपामलिनी॥

तबते सुमित्रा सुवन निज प्रातहि जगाइ पठाय। तुमजाय सेवहु राम भरतहि पदपदुम मनलाय॥ सुतलषण रिपुहनको कौशिला केकई दुलराय। पालतयथा निजपुत्रनैसा प्रीतिकेहि कहिनाय॥ ३४॥

चौपाई॥

अपर चरित्र राम कर गाई। सूत कहा शौनकहि बुझाई॥ रामहि गोदलिये एकबारा। परमानंद ठाढ़ नृपद्वारा॥ सुन्दरश्याम मनोहर अंगा। छबिलखि लाजत कोटि अनंगा॥ करकंकणअंगदबर सोहै। काननकुण्डल मुनिमन मोहै॥ मसिबिंदी सोहै सुठिभाला। सुकाछबि नासिका बिशाला॥ अलकैंललित कपोलनराजैं। नयनन मीन खंजलखि लाजैं॥ कटिकिंकिणि पगनूपुर बाजै। पीतझीनझंगुलि तनभ्राजै॥ हरिनख युत सिंधुरमणि माला। सोहत उरपर बाहु बिशाला॥ ढोरतचमर ब्यजन बहुदासा। अपर भीरसोहतचहु पासा॥ दशरथ अनुज बीरसिंहनामा। रतकला तेहिनारिललामा॥ रामरूप देखा तेहि काला। महल झरोखन तैसोइ बाला॥ प्रीति अपार पुत्र अभिलाखी। गिरी अवति तन सुधि नहिंराखी॥ ३५॥

दोहा॥

दासिन्हब्यजनन बायुकर उठीचेति सोलजाय।
तदपि परीपर्य्यंकसो खान पान बिसराय॥ ३६॥

तोमर ॥

मन राम रूपहि लाग । सुखवस्त्र भूषण त्याग ॥ कबराम लैमय गोद । सोहिहोइगो मनमोद ॥ सुनि बीर सिंहकराय । सुदवावैद्य बोलाय ॥ सुनिदुःखसो भूपाल । निजभौनगे तेहिकाल ॥ अनुजाय हाल सुनाय । तब कौशिलौ बिलखाय ॥ चढ़ियान रामसमेत । गवनीसो तासु निकेत ॥ करिबीरसिंह प्रणाम । लखिकैउठी स्वद्रूवाम ॥ पर्य्यंक आसन दीन्ह । बहुतै बिनय सोइकीन्ह ॥ ३७ ॥

दोहा ॥

दम्पति पूजा कौशिलै पान सुगन्ध लगाय ।
रत्नकला निज गोदलै रामहि प्रेम बढ़ाय ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥

अतशिशुमन तनश्यामल कोमलकल अंग अंगभूषण विविधिछबि पावही । बीरसिंह बाम अभिराम राम उरलाय सुखचूंबि सिरसूंघि गोदलै खेलावही । अनमोल रतन अनूप शिशुहाथ धरि पूरेमन काम तौनकौन कविगावही । मन अभिलाष असमुत मिलै सोहि अब कोटिकल्पटच्च सम हरिहि मनावही ॥ ३९ ॥

दोहा ॥

कौशल्या बहु बिनय लखि बहुबिधि प्रीति बढ़ाय ।
सुतसमेत निज मन्दिरहि आई अति सुखपाय ॥ ४० ॥

चामर ॥

रत्नकेलि बीरसिंह जायताहि भाखेज । रामपुत्र हेत जौन चित्त चाहिराखेज ॥ सम्पतो वनायकै बशिष्ठ पायपैपरे । पूछिदम्पतीगुरू कहा मनोरथै करै ॥ ४१ ॥

दोहा ॥

पूछत सोकहि सकौंनहिं तुम सर्वज्ञ सुजान ।
रतनकलाकी मनोगति जाना मुनिधरि ध्यान ॥ ४२ ॥

मालिनी ॥

सुनि तियमत जाना प्रेरणा राम चंदै । हरिसम सुतयाचै बाललीला अनंदै ॥ करुतप कठिनाई दम्पती तैएकांतै । अभिमत फल

पैहैं सत्यकै द्वापरान्तै ॥ सुनि गुरुबरबाणी बीरसिंहःसबामा । पुनि मुनि पदबंदे घूमिआये स्वधामा ॥ द्विजविपुल बोलाये सम्पदासर्व दीन्हा । तब न्टपपहं जाई बंदनापाद कीन्हा ॥ ४३ ॥

मञ्ज्वलिया ॥

तप हेत चहैं मैं बनहि जान । आयसु दीजै मोहि न्टपसुजान ॥ मुनिसभा सहित दशरथ बखान । रघुबंश रीति तुमसर्व जान ॥ जब जराआय तब बनहि जाय । तपकै हरिपद पावै सुभाय ॥ जोतीर्थ जात बरजै अयान । परैपितर सहित नरकै निदान ॥ ४४ ॥

दोहा ॥

भजोजाइ भगवन्त पद मनबच कपट बिहाय ।
मनबांछित फलपायहौ मुनि दम्पति हरषाय ॥ ४५ ॥

चौपाई ॥

सत्य वचन तवहोइ भुवाला । चरणबंदि गवने ततकाला ॥ बिदा कीन्ह कछु मग पहुंचाई । घूमेन्टप मन करत बड़ाई ॥ गयेबद्रिका-श्रमहरषाई । दम्पति परमतपहि मनलाई ॥ जपतपध्यान तीर्थ अस्ना-ना । राम जनमनौमी ते नाना ॥ कायक्लेश दम्पति अति कीन्हा । वर्षानिर्ज्जल असन बिहीना ॥ हिमि जल शयन ग्रीष्मतप आगी । करै कठिनतपहरि हित लागी ॥ एकादश बरषै यहिभांती । हरि हित तपकीन्हा दिन राती ॥ प्रकटे राम प्रसन्न कृपाला । नीलजल-जतनश्याम तमाला । बरंबूहि प्रसन्नमैंताता ॥ सुनिदम्पति उरसुखन समाता । मानौ टृषित अमृत सरिपाई ॥ तिमि दम्पति सुनि गिरा सोहाई ॥ ४६ ॥

दोहा ॥

जोप्रसन्न प्रभुमोपर तौमनरुचि वरदेहु ।
सुतह्वै एकादश वरष ममगृहरहु करिनेहु ॥ ४७ ॥

चामर ।

एवमस्तु भाषिबीर सिंहवाम युक्तते । देहत्यागि जाउवासमोर धामउक्तते ॥ द्वापरांत गोकुलायशोदनन्द होंयगे । कृष्णरूप तोरहो बवैन मानि दोउगे ॥ ४८ ॥

दोहा ॥

तेपिस्वर्ग बसि लक्ष्मणा द्रोणाधर भे आय ।
बिधि आयसुते महततपकीन्हो तिनपुर जाय ॥ ४९ ॥
ब्रह्मातिनको बरदियो सुतपैहौ हरिरूप ।
तेपि जाय गोकुलभये यशुदा नंद अनूप ॥ ५० ॥

भुजंगप्रयात् ॥

भये गोकुलौ तेइ नंदौ यशोदा । पिता छाड़ि कृष्णौ कियो गोद मोदा ॥ कहा शौनकै सूत लीला बखानी । सुने रामकी भक्ति पावै सुप्रानी ॥ ५१ ॥

प्रज्झटिया ॥

पूछा सूतै पुनिमुनिन वृन्द । माधुर्य्य चरित अतिरामचंद ॥ सुनि अमृत सरसमन नहिं अघाय । शिशु लीला अब कछु कहौ गाय ॥ इकबार राम भाइन समेत । अरु अपर सखालै निज निकेत ॥ खेलैं कूदैं हंसिरूठि गाय । लखिजननी सुखपावै अघाय ॥ एकवृषभ कन्ध प्रियसखा नाम । तेहि कन्धचढ़े हरषाय राम ॥ अस अपर सखनके कन्धजाय । चढ़े भरतलषण शत्रुहन धाय ॥ कोउव्यजन चमरकोउ छत्रसाज । करैंकौतुक कहि राजाधिराज ॥ अलकैं लटकैं शोभित कपोल । झलकैं अति कुण्डल ललित लोल ॥ अंग अंग बिभूषण सब सजाय । पहिराय बसन सुसुगन्ध लाय ॥ कहंतात जननिमोहि दे बताय । कहसखन गयेसरयूनहाय ॥ कहिरामचलौ जहपितुहसार । चढ़िसखन कन्धगवने दुवार ॥ नरनारि निरखि पावत अनंद । चले सखा अनुजलै रामचन्द ॥ चढ़े कन्धपानि सिर छत्र सुलात । मारै चल बेगिन कहै बात ॥ प्रथमै चारनभूपहि सुनाय । आवत रघुबर सरयू नहाय ॥ सुनि हसे राजनिरख्यौ समाज । भाइन समेत रघुबर बिराज ॥ सब निकट जाय उतरे सुभूमि । नृपराम गोदलै सुखहि चूमि ॥ कहनृपति करौ सरयुहि प्रणाम । साष्टांग दण्डवत कीन्ह राम ॥ पुनिभरत लषण शत्रुहन और । सब करत प्रणामहि ठौर ठौर ॥ ५२ ॥

मालिनी ॥

सुत करगहि राणा जाय सरयू प्रवेशे । सब सखन बोलायो न्हाय

आवो निदेशी ॥ तबन्दप बरबाणी जोरिकै युग्म पानी । बहु बिनय बखानी देबितैं मुक्ति दानी ॥ तोहि ऋषिगणसर्वाब्रह्मरुद्रादि देवा । यशबिमल बखाने लावते नित्यसेवा ॥ जोइ हरिनयनोत् पन्न देवी तुम्हारै । दरश परशमज्जै मातु गर्भौनपारै ॥ एइसुत सबतेरे आयऊ दर्श हेतू । लखिकरुण कटाक्षै रक्षिये सर्व येतू ॥ तबहरषि भुवाला लक्ष स्वर्णौं मंगाई । सुतकर पराखी ब्राह्मणेभ्यो देवाई ॥ ५३ ॥

दोहा ॥

सुनि दशरथकी बिनयबर राम दरश हितजानि ।
धरे मनोहर वेषतब प्रकटी सरयू आनि ॥ ५४ ॥

चौपाई ।

सुतन सहितप्रणाम करिभूपा । आशिषसरयूदीन्ह अनूपा॥रामहि गोदलीन्ह हरषाई । मुक्तामाल गरेपहिराई ॥ सिरसूंघा अतिकीन्ह पियारा । भूपति तेतबबचनउचारा ॥ यहबालक ममगोद निवासी । इष्टदेव सब उरपुर बासी ॥ तवकृत बिनय जौन नरगैहै । स्नानसर्व तीरथ फलपैहै ॥ रामहि लखिसरयूकी गोदा । बिस्मय सहितन्टपति मनमोदा ॥ करि प्रणाम कह रघुकुल केतू । सुनि इतलाय स्वयंभुव हेतू ॥ निजउतपत्ति कहौ महारानी । कहसरयूबर न्टपपहिचानी । बिष्णु नाभि कमलोद्भव भयऊं । हरि आयसुते तपमन दयऊं ॥ कीन्ह महातप बिधि बहुकाला । प्रकटेहरि तब दीनदयाला ॥ बिधिदण्ड-वत्कीन्ह लखि जबही । हर्ष आंसूहरिके गिरे तबही ॥ लैब्रह्मास्व-कमण्डल राषा । चारिउ मुखनबिनय बहुभाषा ॥ सुनिबिधि बिनय दीन्ह बरदाना । भये तुरतहरि अन्तर्ध्याना ॥ राखि कमण्डल जल बहुकाला । भयेअवध इक्ष्वाकुभुवाला ॥ तबबशिष्ठ सरयूहितलागी ॥ तपकै ब्रह्मासो बरमांगी ॥ लाये अवध मोहि मुनिज्ञानी । वाशिष्ठी मम नाम बखानी ॥ ५५ ॥

दोहा ॥

हरि नयननते भइउं मैंअब हरिको लियो गोद ।
जोगावै पावैसइ भुक्ति मुक्ति अतिमोद ॥ ५६ ॥
तबतपसाते प्रकटभे परब्रह्म भगवान ।
असकहि सरयू भूपसों भई सुअन्तर्ध्यान ॥ ५७ ॥

मधुभार ॥

सरयू संयोग । सुनि अवधलोग ॥ नृपसुकृत खानि । सब कहैं ब-खानि ॥ लैसुतन साथ । तब अवधनाथ ॥ निज भवनआइ । उर सुख बढ़ाइ ॥ यह चरित गाव । पापन छुड़ाव ॥ हरि पदहि पाय । बैकुण्ठ जाय ॥ ५८ ॥

दोहा ॥

अपरकथा मुनिगण सुनौ कहा सूत हरषाय ।
रामबाल लीला कहत मम मन तृप्ति न पाय ॥ ५९ ॥

छप्पै ॥

भरत लषण शत्रुहन प्रतापी अपर बीर हन । प्रतापाग्नि जयबिज यजुधीर दीर्घ कीर्त्तिभन ॥ सुसिर सुकंठ सुशील सुकर्मा सुष्टरूप कहि । शत्रुनाश श्रीशील बिक्रमी चारुचंदलहि ॥ भानु सबल रिपु वारनौ अभिजत गज गामीरहे । अश्वहरिंद्र मनोहरौ रामचन्द्र के सखा ये ॥ ६० ॥

मालिनी ॥

दिनप्रतिसुखमानी आवते राजगेहा । षटरस मधुमेवा कौशिला कैसनेहा ॥ सव सखन जेवावै रामसे सर्व जानी । सब सबल समीने बुद्धि मां सर्वज्ञानी ॥ सबसुवर सुमार्गी भूषणाद्य प्रकासी । सबसुमति सुशीलेबाललीलाविलासी ॥ तिनसंगसबभाईरामलै द्वारजाई । लखित पनहिंसोहै स्वर्णछत्रै सिंयाई ॥ पगन घुंघुरु बाजै किंकिणी जाल राजै । सिरमणिन मुक्ता मंजरीसर्वभ्राजै ॥ करकमलन गेंदैं बालका सर्वखेलैं । एकएक तकिमारैं एक एकै ढकेलैं ॥ एकउरध उछालैएक गोंचैं खपानी । इक विपुल बढ़ावै एक लावै खआनी ॥ एक एक नछिनावैं एकबोलैभलीना । एकचुपि थकि बैठे एक खेलै मलीना ॥ एहिविधि सववीथी रामक्रीड़ा मचाई । लखिपुर नर नारी धामकामै बिहाई ॥ असि रघुबर लीलासंग खेलानिदेखा । तेहिसुकृत विशेषा शेषहूका अलेखा ॥ ६१ ॥

दोहा ॥

यहि प्रकार बहुखेल कै आवैं भूपतिपास ।
हरषिगोदलै सूंघि सिर पितुउर परमहुलास ॥ ६२ ॥

तोमर ॥

जबभवन अपनेजाय । जननी उठैहरषाय ॥ सुखचूमि दूधपिआय । वहुगयो लाल भुखाय ॥ घरहू अनेक प्रकार । लीला करै विस्तार ॥ उठिचलनि बैठनियानि । बोलनिहसनि मुसकानि ॥ चितवनिकटाच्छ विलात । भ्रू कुटिल दंत प्रकास ॥ केयूर कुण्डल हार । भूषण अनेक प्रकार । लसैझीन झंगियापीत । जरकसी टोपसरीत ॥ पदत्रानमणिन जराय । मसिबिंद केशबनाय ॥ नीलेंद्र मणि वरश्याम । अंगअंग अति अभिराम ॥ करतल अधरअरुणाय । पदतलनखहु मनभाय ॥ नासिका मुक्ताभ्राज । आननअपर द्विजराज ॥ शोभा सकल मनभाय । पैक-हत शेष लजाय ॥ ६३ ॥

दोहा ॥

निशिप्रति मातु प्रयंक रुचिबिशद तुराइ बिछाय ।
पौढ़ारत सुतलाल करि मणिन प्रकाश कराय ॥ ६४ ॥
निशिदिन प्रति रानिन सहित फणिमणि इव सुतपाल ।
महाअनन्द समुद्र मन मगन रहत भूपाल ॥ ६५ ॥

तोटक ॥

उठिप्रात सखा सब आय नितै । रघुनन्दन बंधु समेत तितै ॥ सुख देखि अनन्दलहैं सगरे । सुखशील सुजान सुबुद्धि भरे ॥ रघुनंदनबंधु समेत लिये । धनुहो लघुतीर प्रमोद हिये ॥ सरयू तट जाय विनोद करै । मतिएक बनाय सुलच्छि धरै ॥ कह रामलखौ हम मारतहैं । अबतो मोहि वेगिहि पारतहैं ॥ शर जोरि सिकोरि सुखै धनुहीं । कसिकै बलसों करषै गुनहीं ॥ ६६ ॥

दोहा ॥

भरत लषण रिपुहन अपर सखनसहित रघुबीर ।
करिविवाद सब परसपर छाड़त निज निज तीर ॥ ६७ ॥
यहि विधिखेलत बालसब भोजन समय बिसारि ।
सुखी होइ नरनारि पुर रघुबर चरित निहारि ॥ ६८ ॥

प्रज्झलिया ॥

मध्याह्न पाकशाला भुवाल । रानिन कहवेगि बोलाउ बाल ॥ निज बैठरहैं हरि भोगलाय । पुत्रन बिहाय भूपतिनखाय ॥ शिविका चढ़ि

मातुबोलाव जाय । नृपजेंवत नहिं सुततुम बिहाय ॥ धनुबाण सौंपि दासन बहोरि । आवैं मन्दिर आगेसादौरि ॥ पदधोइ पितुसंग खाय । भाइन समेत रघुबंशराय ॥ सबसखन जेंवावत सहित भाव । रमहि बोले तहंहरषि राव ॥ ६९ ॥

चामर ॥

पूछि भूपराम लक्षबेध नीक जानऊं । जोहसैं सिखाउ ताततौ प्रमाणमानऊं ॥ अस्त्रशस्त्र सर्वरीतिमैंतुम्है पढ़ाइहौं । भरतलक्ष्मणौ सुशत्रुसूदनै बताइहौं ॥ ७० ॥

मधुभार ।

सुनिभूप बैन । सुत भयेचैन ॥ उठिअचैजाय । तांबूलखाय ॥ यहि बिधिउदार । लीला अपार ॥ करैंरामराया । पितुमोद दाया ॥ नृपपौढ़ चीन्ह । उपनय नकीन्ह ॥ गुरुगृह पठाय । विद्या पढ़ाय ॥ ७१ ॥

चौपाई ॥

असकहि सूत और इतिहासा । शौनकादि मुनिवरन प्रकासा ॥ राज भवन राजै बहुधाई । कहा परस्पर बचन सोहाई ॥ राजकुमार अखेटहिजाहीं । दिवससमस्त रहतवनमाहीं ॥ करिसमत धनुबाण कृपाना । धरा चोराय मातुनहि जाना ॥ जबधनुबाण कृपाल नपैहैं । तबबन आपुहि नेकनजैहैं ॥ प्रातजागि करि सुच रघुराई । कौशल्या कछु मधुर खवाई ॥ तेहि अवसर पुरबालक वृन्दा । गेजहं रघुकुल कैरवचंदा ॥ लियेसकल धनुबाण कृपाना । रघुनन्दन मनकरिअनुमाना ॥ लषणहमार तूणधनुबाणा । लावो वेगि समेत कृपाणा ॥ गे लक्ष्मण आयुध नहिंपाये । ढूंढ़िघूमि रघुपतिहि सुनाये ॥ ७२ ॥

दोहा ॥

रसिक शिरोमणि रमापति प्रमदनदेन विनोद ।
गये आपुउठि तिनहिकहि भरेमहा मनमोद ॥ ७३ ॥

चौपाई ॥

आयुध देउहमार बताई । सोहंसि कण्ठ लीन्ह लपिटाई ॥ पुनि पराइकह हमनहिं जाना । कहातुम्हार धनुषअसिबाना ॥ औरहि कहासोकह्यो तुम्हारे ॥ भृकुटि नयन धनुबाणहमारे ॥ एकन बहुरि कहा रघुराई । आयुध हमरे देव बताई ॥ ताहिकहा हम और न

जानै । उरज हमार लेउमनमानै ॥ अपर पकरिकह रामसुजाना । देउहमारे तुम धनुबाना ॥ तीन वचनबोली मुसुकाई । कटिपट बिच नहिंलीन्ह चोराई ॥ ताहि छाड़ि अपरै कहजाई । ते अपने संग लीन्ह लवाई ॥ पाइ एकांत लीन्हउरलाई । बरबस ताहिछुड़ाइ पराई ॥ पूछाबहुरि मंथरै आई । धनुसर असिमम देवबताई ॥ ७४ ॥

दोहा ॥

खूल्हे नरै तुम्हारसर क्रोधसहित तेहि माथ ।
सुनतमंथराके बचन लछ्मण मन अतिमाथ ॥ ७५ ॥

चौपाई ॥

ताहि रिसाय दीन्ह दुरियाई । गइसो केकइ भवन पराई ॥ तब हंसिसखिन दीन्ह धनुबाना । सर्वजुठि अतिअसित कृपाना ॥ राम लषणले सरयूतीरा । लक्षि निपातसिखत सबबीरा ॥ तेहि अवसर एकधीवर आयो । करि प्रणाम असबच्चन सुनायो ॥ महिषबहूहांएक रहत जुझारा । मगआवत बहुतेन तेहिमारा ॥ सुनि धीवरके बचन कराला । महिष समीप गये तेहि काला ॥ सुनि रव बहुबिधि धनु टंकोरा । महिषा प्रबल आवतेहि ओरा ॥ महिषनि सिर झिकि सन्मुख धावा । बालकगण जितिततहि परावा ॥ महाप्रबल रघुपति परधावा । मस्तकपर हति अवनि गिरावा ॥ महिषदेहतजि गन्धप रूपा । भयोतुरत सबभांति अनूपा ॥ ७६ ॥

दोहा ॥

चित्रनाम निजकहा तेहिपरो राम पदआय ।
बहुबिधि मागसराहि पुनिअस्तुति करतसोहाय ॥ ७७ ॥

नराच ॥

नमोनमःकृपासमुद्र लछ्मणा ग्रजेतदा । नमोधिराज राजइन्द्रपिट कारिणे मुदा ॥ नमोस्तुब्रह्मदेव रावणांतकाय ते पदं । समस्त भक्त ईप्सितंबिमुक्ति दंश्रुतिंवदं ॥ ७८ ॥

चामर ॥

चित्रकी बिनयसुने प्रसन्न सर्व बालभे । पूछिताहि माहिषंशरीर तैंकहा लभे ॥ कारणं वदास्मिते श्रुतंसमस्त चित्तकै । रूपगान मान मोहि सर्वजीत नित्तकै ॥ ७९ ॥

चौपाई ॥

सतयुग बैवस्वत मनुभूपा। यज्ञकीन्ह कुरुक्षेत्र अनूपा॥ तहांदेव ऋषि मुनि गन्धर्वा। आये भूपति बनिबनि सर्वा॥ तेहिसमाजमहं मैं प्रभु जाई। गन्धर्वन जीत्यौं बरियाई॥ नारद मोहि जीतन हित लागी। बीनबजाइ दिव्यगति रागी॥ सोमोरे मननेक नआवा। तब मुनिपरम क्रोध कहंपावा॥ कहाहोसितैं महिष कराला। मैं मुनि पदपरसा ततकाला॥ शाप अनुग्रह करौ मुनीशा। कहचेतादशरथ अवनीशा॥ तासुतनय सरयू सरितीरा। खेलन नित ऐहैं रघुबीरा॥ तुव सिरबाण बेधिहैंजबहीं। निजगति तुरतपाइहौ तबही॥ सोमुनि शापपरम हित जाना। तव दर्शन लहि कृपा निधाना॥ ८०

दोहा ॥

कहा राम गन्धर्व सन मांगुरुचिर बरदान।
अतिअमोघममदर्श फलबहुरि नयाचै आन॥ ८१॥

चौपाई ॥

कहा बिल्व मम हृदय अनूपा। बसौ सदातुम बालक रूपा॥ यहि अस्थान शंभुथापनकरि। जगबिख्यात नाम बिल्वहरि। एवमस्तु कहि राम कृपाला। समीचीन सुखलहौ बिशाला॥ दुर्लभ तुम्हैन जो चित चहिहौ। अक्षयमोक्ष अन्तमहंलहिहौ॥ रामसखा देखत रहेसर्वा। चढ़िबिमान गवन्यौगन्धर्वा॥ प्रभुआयसु स्वरूपउरलाई। निजपुर बिल्वगयो हरषाई॥ तेहिअस्थान बिल्व हरि नामा। शंकर थापनकरि अभिरामा॥ जो बैशाख मासतहंजाई। सोनर पापरहित होइजाई॥ पितरन सहित स्वर्गकरि वासा। सुनत मुनिनलहि परम हुलासा॥ भाइनसहित रामघर आये। देखि मातु पितु अति सुख पाये॥ ८२॥

दोहा ॥

कहमुनीश अब अपर सुनु राम चरित मनलाय।
बहुरिसखा भाइन सहित काननगे रघुराय॥ ८३॥

प्रमानिक ॥

शशा बराह माहिषं। मृगाहते चलेइषुं॥ सखा समस्त संगलै। गये द्वितीय जंगलै॥ ८४॥

भुजंगप्रयात् ॥

तहांएक बांबीलखी रामजाई । नराकार सर्वांग मानौ बनाई ॥ महा सर्पनिर्मोकतामेंकईहैं । घनेरी कुसौं कांस मानौ बईहैं ॥ लखौ सिवबल्मीक अद्भुद्विशेखी । नराकार ऐसीसुनी औ न देखी ॥ तबैराम कीन्होकरस्पर्श सोई । भयोपुरुष सौंदर्य्य ऐसोनकोई ॥ ८५ ॥

चौपाई ॥

सुन्दरबदनचारु पीतांबर । कुण्डलकीटशीशशोभाधर ॥ किंकिणि रुचिकेयूर विरजै । हारगरेपग नूपुर बाजै ॥ रामहि लखिपरि पायन धाई । पुलक गात उर सुख अधिकाई ॥ कहा राम कारण निज कहहु । बांबीतन धरि बनकिमि रहहु ॥ सुनु सर्वज्ञ प्रणत अभि-रामा । मैंकिरातडिंडिरि असनामा ॥ बसौंहिमालयकर धनुधारी हिंसारत परमांस अहारी ॥ एक दिवस अखेट बन जाई । मोहि बिलोकि म्टगचले पराई ॥ तेहूस योजनलौं संगधायों । निशानिरखि निराशह्वैआयों ॥ गिरेउंअवनि अतिशय श्रमपायों । तेहिमगतहां साधुबहु आये ॥ मोहि खवाइ गयो एकग्रमा । तेहिनिशि तिनसंग कार विश्रामा ॥ ८६ ॥

दोहा ॥

प्रातहोत सब साधुजन बिधिवत् करि अस्नान ।
सालिग्रामार्चनकियो पुनिहरि रूपहि ध्यान ॥ ८७ ॥

चौपाई ॥

मोहिदरशचरणोदक दयऊ । ममसनशुद्ध तुरतही भयऊ ॥ मोहि बिलोकि परस्पर भाषे । यमपुर लहै अधम संग राषे ॥ तब मैंबहु बिधिबिनती कीन्हा । तिनसंगमैं तीरथ मनदीन्हा ॥ पुनिइत आइ पुलिन सरयूके । ध्यानलगाइ बैठहरिजूके ॥ अपर देहतजि शुभगति पाई । मैंतप करत रह्यौं रघुराई ॥ आजु कृतारथ भोपद देखा । तव प्रसाद लहि देह बिशेखा ॥ तुम भूभार उतारन कारण । राव-णादि निशिचर संहारण ॥ सुरमहि सुर सन्तन हित हेतू । धरौ बिविधि तन कृपा निकेतू ॥ जग उतपति पालन लयकरहू । बिविधि भांति लीला बिस्तरहू ॥ तुम ब्रह्मादि जनक जगरूपा । परब्रह्मसब भांति अनूपा ॥ ८८ ॥

भुजंगप्रयात् ॥

नमःराम भद्रायपादारबिन्दं । नमःसर्व भूतंनिवासी मुकुन्दं ॥ हमै केकृपानाथ आज्ञा खदीजे । वहैंजोपदय सर्वदा सोनकीजै ॥ कह्या रामजैये सदातू सुहाये । सुरेशालयेसत्य लोकौवताये ॥ चहोजाउ बैकुण्ठ आज्ञाहमारी । किरातो गयो विष्णु को रूपधारी ॥ ८९ ॥

दोहा ॥

हरिपद पाइ किरातगोदीख बालजे साथ ।
पुनि पितुमात नदीन्ह सुखआइ भवन रघुनाथ ॥ ९० ॥

भुजंगप्रयात् ॥

पुनःशौनका दीन कहासूतगाई । सुनो रामकी और लीला सो-हाई ॥ उठेप्रात सैनात् शुचिःसर्व कैकै । किये भोजनै पान खायो अचैकै ॥ बोलाये सखा खेटकेहेतु नाना । सुआये सबै साजिकै बीर बाना ॥ लिये बाण चापै भुशुण्डी कृपाना । गजाश्वे चढ़े द्वारठाढे सुजाना ॥ ९१ ॥

छप्पै ॥

प्रतापाग्नि सबलाश्व बीरभद्रादिक आयो । नीलरत्न हरिदश्व शोणनख सहितगनायो ॥ चन्द्रचारु बलवान चंद्र आनन्द रिपुवारन । शत्रुञ्जय से अपर महाबल साथ हजारन ॥ भद्राश्व महामति जय विजय अरु जयंत से बहुसखा । शस्त्रास्त्र साजि गजवाजि चढ़ि राज द्वार लोचन लखा ॥ ९२ ॥

चामर ।

श्वानसेन पाल बोलिब्याल धारिहू तवै । सिंह भालुपाल औ कुलंग पालसे सवै ॥ जेसमस्त खेटके विधान रीति जानते । ते समूह राजद्वार आइगे विधान ते ॥ राम साजि खड्ग तूण चाप वाण हाथले । मातु तातसो नियोग मांगि बंधु साथले ॥ वेग वाण वाजिनै सवार भे चहूंभले । संग लै सखा समूह राज मार्ग में चले ॥ ९३ ॥

दोहा ।

देखत पुर प्रमदा विपुल छबि समूह रघुबीर ।
धरत न मन धीरज कोई उपजत मनसिज पीर ॥ ९४ ॥

चौपाई ॥

गुह निषाद पति भूप बोलावा । राम संग खेट कै पठावा ॥ पांच सहस्र दास तेहि संगा । जे आयुध विद्या रण रंगा ॥ आइ कीन्ह रघुवरहि प्रणामा । अति आनंदलह्यो लखि रामा ॥ कह रघुपति मोहि शिक्षा दीजै । जेहिते ममतन रक्षा कीजै । कह गुहतुम सब भांति सुजाना । तुम्हैं को सिखवै खेट बिधाना ॥ श्याम वाजि भूपति इक साजा । रतन हार तेहि कंठ बिराजा ॥ तेहि चढ़ि ध्वज धारी छबि छावा । वेगवंत तेहि अग्रचलावा ॥ तेहिपाछे निषाद पति यूथा । तेहि पाछे दुंदुभी बहूथा ॥ अश्व वारतेहि पाछे धाये ॥ तिन पाछे रथ अवलि गनाये ॥ तेहि पाछे गज यूथ सुहाये । पदचर सैन चली सुख पाये ॥ ९५ ॥

दोहा ॥

जेहि प्रकार सरिता अगम धाराबहै कराल ।
तेहि समान रघुवीर संगसेनाचली बिशाल ॥ ९६ ॥

चौपाई ॥

लैनिषाद आय सुदपाई । तमसा तट वन घेराजाई ॥ सुनिदुंदुभिरवजीव पराने । मांडविमुनि आश्रमहि लुकाने ॥ मुनि दयाद्रगे जह रघुराई । लखि वाजिन उतरे सब भाई ॥ करि प्रणाम भाइन सहरामा । मुनिवर आशिषदै अभिरामा ॥ बनफल मधुरदीन्ह निज हाथा । लैरघुनाथ लगायो माथा ॥ पुनिमुनि कह सुनुकृपा निधाना । मम आश्रित इतजीव निदाना ॥ तिनहि त्यागि गोमति सरितीरा । वनविशाल सोहत रघुवीरा ॥ तहां अखेटकरौ तुमजाई । सुनिमुनि वचन चले सिरनाई ॥ कौतुककरै विदूषक नाना । बन गुणगनवहु करैं बखाना ॥ गोमति सरि समीप वन घेरा । गये राम लैसैन करेरा ॥ ९७ ॥

दोहा ॥

तहंक्रीड़त रघु वंशमणि भाइन सखन समेत ।
सन्मुख आववराह इक हतिशर कियो अचेत ॥ ९८ ॥

पज्झटिका ॥

पुनि आगे चले रघुवंश चंद । साहैं चतुरंगिणि सैनवृंद ॥ लखि

महिष एक सन्मुख कराल । धावत ही योधनहति उताल ॥ सुनि सैन घोर गजबाजि चिंघ । धायो कराल ततकाल सिंघ ॥ कहराम ताहि मारिवे हेत । कोसुभट जौन अवपान खेत ॥ ९९ ॥

दोहा ॥

झपटि सोलीन्ह निषादपति बीररघुपति पानि ।
तुरत मारिहौं सिंहमैं मारा शर सिरतानि ॥ १०० ॥

तोमर ॥

महिमेपरा करि सोर । पुनि धाव सन्मुख जोर ॥ एकमित्र नाम प्रतापि । तेहिहता सरवर चापि ॥ तब आइ कीन्ह प्रणाम । हंसि उर लगायो राम ॥ गुह सखै अति करि प्रीति । बहुद्रब्य दै कहि नीति ॥ १ ॥

मालिनी ॥

तहं पदचरआयो राम चन्द्रै सुनायो । बनहरि बरभारी देखतैमैं परायो । सुनिभरत कह्योयों मोहि आज्ञा सुदीजै । ममकरि अरियुद्ध आपुहू देखिलीजै ॥ २ ॥

दोहा ॥

कहा राम जानौ तुम्है सूरशिरोमणि भ्रात ।
सुभट संगलै जाइयेकेसरि करौ निपात ॥ ३ ॥

मधुभार ॥

सुनिभरत जाय । गजचढ़ि धाय ॥ सिंहै पुकारि । मारा प्रचारि ॥ धरिविष्णु रूप । अतिशय अनूप ॥ सुन्दर सुवक्त्र । चष कमल पत्र ॥ लसैभुजाचारि । निजअस्त्रधारि ॥ भूषण विराज । पटपीतसाज ॥ परि भरतपाय । बिनतीसुनाय ॥ कहिभरत ताहि । तैंकौन आहि ॥ ४ ॥

चौपाई ॥

सोकहि पूर्वजन्म करभेवा । मैंकलिंग बासी महि देवा ॥ करौं कुकर्म कुसंगति पाई । और नजानौं कछु रघुराई ॥ एक समय मैं आइ प्रयागा । भरद्वाज मुनि जहंकरै यागा ॥ घृतसक्कर पायसफल नाना । करैहोम ऋषिसहित बिधाना ॥ मैं सुनीशसनकरि परिहासा । अनल हिदहि घृतकियेविनासा ॥ मोहि देउमैंखाइ मोटाऊं । सिंहसमान बली ह्वैजाऊं ॥ सुनिमम बचन क्रोध करि भारी । सिंह

होसितैं खलबन चारी॥ तब मैं विनय कीन्ह करजोरी। नाथ मुक्ति किमि होइहि मोरी॥ चेताहरि ह्वैहैं नररूपा। भरत अर्जुन तेहि होइ अनूपा॥तोहि तारिहैं है बैकुण्ठा। ऋषिके बचननभयेअकुण्ठा॥ आयसु निजदीजै पुनि भाषा। मोहि रामदर्शन अभिलाषा॥ ५॥

दोहा॥

असकहि पदपरि विनयकरि बहुरि बचन येभाष।
निज आयसु दीजै हमैं रामदर्शअभिलाष॥ ६॥

मधुभार॥

तेहि भरतकहा। सबसंगतहां॥ तुमचलौविप्र। यहिसमयक्षिप्र॥ प्रभुपास जाय। बंदेसुभाय॥ तब सखन गाय। हरिविध बनाय॥ ७॥

दोहा॥

आज्ञा प्रभुकी पाय सो नाय राम पदभाल।
चढ़ि विमान अति हर्षयुत स्वर्ग गयो तेहिकाल॥ ८॥

प्रज्ज्वलिया॥

प्रभुकह निषाद सुनुवचन मोर। मैसैन अमित दिन रहा घोर॥ खगमृग पशुनिज निज भवनजाय। निसिबसौ गोमती तटसोहाय॥ मेधावीऋषि तेहि समय आय। लखि बाजिन उतरे चहुंन भाय॥ मुनिचरण वन्दि पाई असीस। आश्रमहि लाय प्रभुकह ऋषीस॥ करिपूजादै फल फूलमूल। सबसैन टिकाई सरितकूल॥ मुनिआयसु लै संध्या सुबन्द। तब सखन बोलि रघुबंश चन्द॥ पकवान विविधि भारन भराय। पाकै कौशल्या दियोपठाय॥ सोजेंवतभे सबसखाटन्द। भाइन समेत रघुबर अनन्द॥ ९॥

दोहा॥

अपरसैन बांहन सकल भोजन सबन कराय।
ठौर ठौरयपिपाहरू छत्तन दीपधराय॥ १०॥

चौपाई॥

असबनाव करि दृढ़ श्रीरामा। सैनसमेत कीन्ह विश्रामा॥ चौथे पहर शत्रुहन जागे। सजि धनुवाण बैठअनुरागे॥ तेहि अवसर बनगज एक आवा। सैनकरिन बन्धान तुरावा॥ भयो कुलाहल सैन

मझारी। सुनिशत्रुघ्नहिमइ रिसभारी॥ पूछाहस्तिपाल एकभाषा। बन करि मत्त युद्ध हितमाषा॥ सोसैना गजदंत विडारे। उठेशत्रु-हन चापसुधारे॥ पूछा कहां मत्त गज आयो। हस्ति पाल लै जाइ देखायो॥ देखिभीर शत्रुहन समीपी। सन्मुख धायो जंगल दीपी॥ भागे संगलोग चहुंपासा। कीन्हा शत्रुदमन बड़िहासा॥ माराशर शत्रुहन रिसाई। सिरप्रवेसि गुदनिकसानाई॥ ११॥

दोहा॥

छाड़िप्रान सोअपर तनपायो दिव्य सरूप।
चारिभुजा भूषण वसन यथा विष्णु अनरूप १२॥

मालिनी॥

अचरज मनआयो देखिकै शत्रुहंतै। गजतन किमिपायो ताहि पूछातुरंतै॥ तेइसब निजकरनी पूर्वजन्मादि गावा। महिषमति पुरी मैविप्र कीदेह पावा॥ मधुपियत सदाई मत्तघूमौ विशेषी॥ करतर-हत निन्दाविष्णुको भक्तदेखी॥ यकसमय सुदर्शन्नाम भूदेव आयो। हरिपद अतिसेवी तालमे जाइ न्हायो॥ बहुविधि प्रभुपूजा धूपदीपै सोकीन्हा। धुनिकरि दर घंटा अर्पि मिष्टान्न दीन्हा॥ सुनि गज वत वानीहास्य कैमैं घनेरी। मुनिकह गजकीसो होइगी देहतेरी १३॥

दोहा॥

जोहरिहर सुरसाधु द्विजनिंदा मनहूंलाव।
सोयम पुरजैहै सहीदुख अपारसो पाव॥ १४॥

चौपाई॥

तबमैं चरणगहे अकुलाई। साप अनुग्रहकरु मुनिराई॥ कहमु-नित्रेतायुग अवतारा। हरिधरि हैं भंजन महिभारा॥ राम लखन अरुभरत शत्रुहन। चारिउभाइ अखेटहेतु बन॥ आइतोहि मरिहैं रिपुहंता। गतिविशेष पाइहै तुरंता॥ सोसब आजुभयो मुनिभाषा। पायोंगति जोगिन अभिलाषा॥ जोतब चरण सुमिरि मनलाई। सो संकट नसदा बचिजाई॥ चक्ररूप तव चरण नमामी। गयो परंपद जहं हरि स्वामी॥ सहित निषाद शत्रुहन आये। राम पदारबिंद सिरनाये॥ गुहगज मोक्षकथा सबगाई। अनुजहि उरलगाय रघु-राई॥ तातनिशा सोवत सबसैना। गजते रक्षनकरि बलऐना १५॥

दोहा ॥

जाके तुमसम अनुजहै अपरसु सखा निषाद ।
ताको जगमहं घरबनौ परै नकबहुं विषाद ॥ १६ ॥

चौपाई ॥

प्रातै उठिगोमति अस्नाना । पातक हरनि सकल जगजाना ॥ संध्याकरि शिवसेइ बहोरी । मुनिसन विदामागि कर जोरी ॥ रतन जटित रथचढ़ि रघुवीरा । सैनसमेत चलेमतिधीरा ॥ बहुअखेट करिपुनि रघुराई । बनजीवन मारे समुदाई ॥ रामहिरथ अरूढ़ मृगु देखा । कीन्हा कपट मृगा को भेषा ॥ कबहु अकाश कबहु महि आवा ॥ प्रगटत दुरत फिरत बन धावा । तब रघुनाथ सूततन ताको ॥ मृगपाछे ममरथ अतिहाको । बायुवेग रथचला उड़ाई । रथ आगे मृगचला पराई ॥ स्यंदन बायुवेग अधिकारी । सोनदीख सबभूमि मझारी ॥ जोवन अग्रदीव सो पाछे । कौतुक करत कृपानिधि आछे ॥ १७ ॥

दोहा ॥

निज पौरुष दरसाइ तेहि रघुबर परम सुजान ।
बिप्रजानि नहिंछाड़िसर कृपासिंधु भगवान ॥ १८ ॥

चौपाई ॥

रविरथ सरस वेग अति भारी । धूरि पूरिदि विलोक मझारी ॥ देखा । सारथि परम प्रवीना । निजअंगदउतारि तेहिदीन्हा ॥ जसजस मृग पलात अधिकाई । पाछे सैनसहितरघुराई ॥ राम प्रभावजानि मनमाही । हरिसन छलकीन्हेभलनाहीं ॥ धरिनिज तन मुनि बचन उचारे । महा दोषये मृगकेमारे ॥ देखितुम्है स्यंदन आरूढ़ा । लीन्ह परिछा मुनि मति मूढ़ा ॥ देखि बालखिल्यन रघुराई । रथतेउतरि चरणशिरनाई ॥ छमियचूकमैं कीन्हअयाना । मुनिविशेषकहं मृग करि जाना ॥ अनजानतनदोष रघुनाथा । तुमईश्वरनाथनके नाथा ॥ मरजादा पालकतुमरामा । सदा अधर्महिरहतबिरामा ॥ १९ ॥

दोहा ॥

अबहमारि आशिष सुनौ जनकराजके धाम ।
चारिसुता चहुंबन्धु तुम ब्याहिचल्यौ रघराम ॥ २० ॥

प्रभु आयसु लैगे तुरत भृगुमुनि निज विश्राम ।
सैनसहित आगे चले बिहसि हृदय तब राम ॥ २१ ॥

भुजंगप्रयात् ।

तवै रामशृंगी ऋषैकी कुटीरा । चलेसाथ भाई सखासैन भीरा ।
वजैदुंदूभी बाजिदन्ती सुगाजै । सुनेशब्द सोजंगली जीवभाजैं ॥ २२ ॥

नाराच ॥

बराह सिंहव्याघ्रआदि बानरादि लैसबैं । भृशा शृगाल माहिषौ मृगा परातभे तवै ॥ महा प्रतापवान शृंगिदेखि जीवनैकहा । करै सुनीश अग्निहोत्र यज्ञशांतया महा ॥ २३ ॥ प्रपच्छ शिष्यआपने लहा मतेक्ष आयऊ । सोजासुनास पाईजीव जंगली परायऊ ॥ तुरन्तजाव वर्जिये मृगार्थिनै विशेषिकै । गयेसुनीश आयसुं कहा सोरामदेखि कै ॥ २४ ॥ प्रणाम कै महा मतिं समेत बंधु रामजू । प्रवर्तते सुनीश शृंगि आपने सुधामजू ॥ कहा करै सुअग्निहोत्र शांतया समेत सो । सुनाय राम आगमै पुनस्तपै निकेत सो ॥ २५ ॥ उतारि पंचचाप ते समूह बाहनौ तजे । समेत बंधु रामचन्द्र औसखा समस्तजे ॥ गये सुनीश आश्रमै विलोकते सहोदरै । पदार्घ दै सुखार विन्द पोछि देनु आंचरै ॥ २६ ॥

दोहा ॥

शृंगीऋषि आये तहां मनप्रमोद अति कीन्ह ।
परसेपद प्रभु अनुज यत मुनिबर आशिष दीन्ह ॥ २७ ॥

भुजंगप्रयात् ॥

हृदय लाय शृंगीऋषै फेरिरामै । सखावंधुसंयुक्त लायो स्वधामै ॥
गजाश्वादि बाहनस सैनाटिकाई । हृदय प्रेरिसिद्धीसुभोजनकराई ॥
पुनर्योगिनी प्रेरिसेनामभ्कारी । करै सर्वसेवा यथा व्याहि नारी ॥
गईसर्वरी सर्व काहू अनंदै । सवै न्हाइ प्रातेऋषीशाय बंदै ॥ २९ ॥

पज्ज्वलिया ॥

तवएकविदूषक पानिजोरि । परिपायन कहि ऋषिसोंनिहोरि ॥ निशिसैनसंग सोईजेनारि । भगिनीमाताकोहै तुम्हारि ॥ सुनिहसत राम भाइन समेत । तवमुनिऊ विहसि कहएवयेत ॥ तवरामकहा मोहि अवधजान । आयसु दीजे मुनिबर सुजान ॥ सुनिकहा राम

तुमतबै जाऊ। मारीसरि दारुन बसैग्राऊ॥ सुनिगये राम सरिसरय तीर। भरचापहाथ संग सखाभीर॥ सुनिकोलाहल भ्रषआव धाय। हतिबाण ताहि सुरपुरपठाय॥ रामहि मुनीशवर लाइलीन्ह। बज्ज आशिषदै पुनिबिदा कीन्ह॥ २९॥

दोहा॥

गजबाजिन असवारह्वै संग सैन गम्भीर।
अनुज सहित मुनि पदपरसि चलेपुरहि रघुबीर॥ ३०॥

हरिगीतिका॥

बाजै दुंदुभी गजऊ गाजै रथनवपूरी महो। हयहीस बिपुल मही महीस न सकैकबि कहिजसिरही॥ यहिभांति श्रीरघुबंशमणि सह सैन्य पुरढिग आयऊ। नरनारि बालक वृद्धयुवासमेत देखनधायऊ॥ नारी निहारत चढ़ि अटारिन कुंवरबर अवधेशके। तेहिसमय सुख किमि कहिसकै रसना सहस ह्वै शेषके॥ पितुमातु श्रीरघुबीर दरशन हेतउरजसि लालसा। सोअकथ बानिऊ अगम मनमह जानशंकर बालसा॥ ३१॥

सवैया॥

अतसी सुमनोपम श्यामसुआनन कानन कुंडललोललसै। अलकैं लटकैं सुकपोलनपै श्रमसीकरकी छवि चित्तबसै॥ पटपीत शरासन बानलिये अति आनंद सो गजपै बिलसै। संगबंधु मनोहर वृंदसखा पुरलोग लखैंमनमें हुलसै॥ ३१॥

दोहा॥

यहिबिधि पचयें बासरै पुरलोगन सुखदेत।
अनुज सखासब साथलै पहुंचे राजनिकेत॥ ३३॥
आयेअकनि महीपमनि सभासहित हरषात।
द्वारहि भेंटिलगाइ उरपरे चरण चहुंभाय॥ ३४॥

तोटक॥

रघुनाथ तबै गुहकी करनी। बहुभांतिनते नृपसों बरनी॥ तेहि भूपतिहू बड़मान कियो। कलधौतकी मूठिकपान दियो॥ पुनिमातनके सब पायपरे। चहुबंधु मनोहर रेनुभरे॥ सुख पोछत चूंवत लायहिये। करिआरति बिप्रन दानदिये॥ ३५॥

दोहा ॥

यहिप्रकार लीलाअमित करत रहत रघुबीर ।
पढ़ै सुनै मनलाय जोताहि मिटै भवभीर ॥ ३६ ॥
देवपितर सूर्यादिग्रह ताहिसदा अनकूल ।
भुक्तिमुक्ति सोपाइहै सबदिन मंगल मूल ॥ ३७ ॥

प्रज्झलिया ॥

अबअपर कथासुनु चित्तलाय । तपमूरति विश्वामित्र आय ॥ मन समुझि निशाचर बधनहेत । हरिप्रकटे दशरथ नृपनिकेत ॥ सुनिहि-जन ढूंढ़लै नृपतिजाय । पदपूजिभवन आयेलवाय ॥ करिबिनै कहा पुनिजोरि हाथ । आयसु दीजेसो करौंनाय ॥ कल्याण होइतव नृप सुजान । दीजेमोहि रामहि कछुनआन ॥ गुरसंमतकै एकांतजाय । मनआवै तौकीजेबनाय ॥ नृप शोचसहित गुरुसों सुनाय । कल्याण मोर किमि होइआय ॥ गुरुकहा शोचजनि करियभूप । एरामविश्व आतमा रूप ॥ महिभार हरन बिधिवैन मानि । भेप्रकट कौशिला कोखिआनि ॥ तुमकश्यप अदितिहौ पूर्वदेह । बहुबर्षकीन्ह तपहरिसनेह ॥ बरमांगु कहाहरि प्रकटआय । तुमजांचि पुत्र मम होहु आय ॥ सोसांच कीन्हप्रभु बचनमानि । येलषणशेष अवतरेआनि ॥ येभरतशंख शत्रुहनचक्र । महिभार उतारैं मारिबक्र ॥ जग जननि जनकगृह प्रकटिआनि । सीतैसुयोग माया बखानि ॥ सीता श्रीराम विवाह हेत । कौशिकमुनि आशेतव निकेत ॥ यहगुप्तबात जनिकरु प्रकाश । सुनिगुरुबचन नृपभेहुलास ॥ ३८ ॥

चौपाई ॥

निजकृतकृत्य जानि महिपाला । रामलषण बोलेततकाला ॥ हृदयलाय सिर सूंघ्यौदोऊ । दीन्हअसीस सीखप्रियसोऊ ॥ परमानन्द सहित नृपज्ञानी । सौंप्यौ ऋषिहि भाषिम्दुबानी ॥ सजिअसिधनुष बाणतूनीरा । मुनिसंगमुदितचलेदोवीरा ॥ दैअसीसहियहर्षबढ़ाई । चले मुनीश साथ रघुराई ॥ कछु मग चलिदो बीर बोलाई । महाबली बिद्या सोपढ़ाई ॥ छुधाप्यास जेहिलहे नलागै । बाढ़ैबलप्रताप दुखभागै ॥ गंगउतरि ताड़कावनगयऊ । बिश्वामित्ररामसनकहेऊ ॥

यहै ताड़का मुनि दुखदाई। हतौ रामबिचार बिसराई॥ सुनिगुरु गिरा धनुषटंकोरा। चलीताड़कौ प्रभुपर घोरा॥ ३९॥

दोहा॥

मारा राम हृदय शरगिरी अवनि भहराय।
दिव्य देहधरि बिनयकरि गईस्वर्ग सुखपाय॥ ४०॥
विश्वामित्र अनन्द ह्वै रामहि लैउर लाय।
सर्व अस्त्र सरहस्य युत मंत्रन दीन्ह पढ़ाय॥ ४१॥

चौपाई॥

तेहिनिसि तहांकीन्ह विश्रामा। मुनिनसहित सुखपायो रामा॥ प्रात होत सिद्धाश्रम गयऊ। राम ऋषीशहि पूछत भयऊ॥ कहा अधम राक्षसन देखावो। तबहितमीचचमू चलिआवो॥ बर्षतअस्थि रुधिरकी धारा। देखि मुनिन दुख भयो अपारा॥ राम मरीचहि सायक मारा। शत योजन सागर महंपारा॥ दूसरसर पावक रघु-बीरा। जारा तुरत सुबाहु शरीरा॥ छनमहं बरषि बाण बरधारा। लष्मण निशाचर कटक संहारा॥ देखिबंधु दोउ सुर अनकूला। दै दुंदुभी करत झरिफूला॥ तबमुनीश मनभयो उछाहू। पूजा राम लषणकी बाहू॥ तीनिदिवस तहंबसि भगवाना। करैंयोग जप मख मुनि नाना॥ ४२॥

दोहा॥

चौथे दिन मुनिबर कहा सुनौ भानु कुलकेतु।
चलिये बेगि विदेहपुर सिया स्वयंबर हेतु॥ ४३॥

सोरठा॥

तबकौशिक के साथ। गंगासरि उतरत भये॥
पूछाश्री रघुनाथ। शिला देखि गौतम घरनि॥ ४४॥
मुनिबर सकल सुनाय। सापअनुग्रह कथा सब॥
कृपाकरौ रघुराय। तव पदरज जांचत परी॥ ४५॥

कबित्त॥

पाहन परीथी पापसापसो भरीथी उरग्लानि सोंगरीथी पतित्याग दुख मारीसो। निर्जल निदान हिमसीत औनिदाघभान आतपन आनकोऊ जीव जंतु झारीसो॥ ऋषिकी रजाय पाय आय रघुराय

तहां कृपाकरि गौतम पियारिहि निहारी सो। परसि पुनीत पाय शिलाह्वै सलोनीनारि नायसिर हर्षिभरि अस्तुति उचारीसो ॥ ४६ ॥ जैजैरामचन्द जगबन्ददशरथनन्द आनंदकेकन्दद्वन्ददेखिदुख हरयौहै। शेषश्रुति सारद औनारद बिरंचि सुरसिद्ध शिवसेब्य पदआय शिर धरयौहै। अहोभाग मेरेघनेरे कोबखानि सकैनाथज्ञत तेरे कौन तरै औतरयौहै। ईश्वरीगुणगाय रुषपायकै अहिल्या धायजायपति अंक मेनिशंक सुखभरयौहै ॥ ४७ ॥

तोटक ॥

बहु भांति अनंदभयो सबहीं। कहि रामहि गाधितनै तबहीं ॥ चलि गंगतरौ जनिदेर करौ। गवने मुनिआयसु शीशधरौ ॥ ४८ ॥

मालिनी ॥

मुनिहमहि सुनैयेसर्वव्याख्यानगंगा।परसि दरसिजाकेहोतपापौघ भंगा ॥ केहिहित महिआई स्वर्गपातालचारी। कुशिकसुत बखान्यौ रामचन्द्रै बिचारी ॥ हिमगिरि गिरिराजा मेरुजाता सुबामा। तिन भवयुग कन्या गंग देवीति नामा ॥ अपरलघु उमाख्या जन्नकेदुःख हारी। तेहिहिमवत दीन्हा शंकरै मोदकारी ॥ ४९ ॥

चौपाई ॥

मन भावती प्रिया शिव पाई। दिब्यवर्ष शतरमत बिताई ॥ तब देवन मनकीन्ह बिचारा। उमा कीन्हतप कठिन अपारा ॥ जोशिव शिवा सुअत सुतहोई। महातेज सहि सकैकि कोई ॥ बिनय आय शंकरै उचारी। तुमत्रिकाल त्रिभुवन हितकारी ॥ करियसोई अब दीनदयाला। जेहिते त्रिभुवन कर प्रतिपाला ॥ सुरन मनोरथ शंकर जाना। बोले मधुरबचन भगवाना ॥ जासुतेज डरलहि सुर नाना ॥ सोमहि सहिकहि कृपानिधाना ॥ अस कहि वीर्य्यखसा भगवाना। तपत स्वर्ण द्रुवकूट समाना ॥ ताते कार्त्तिकेय सुत भयऊ। ताड़क असुर समर जिमहयऊ ॥ ५० ॥

दोहा ॥

ब्रह्मा सुरसेनपकियो यशबल निधि गुणधाम।
जोगावै सोपायहै षटमुख पुर अभिराम ॥ ५१ ॥

मालिनी ॥

लखिचरित उमायह क्रोधकीन्ह । सुरगणसमूह कहंशाप दीन्ह ॥ सुतहित पतिसेवन चित लगाय । अनहित जमदेवन कीन्ह आय ॥ तातेसुर तियसब बांझहोंय । अब प्रसव सोद पावैन कोय ॥ येउमा वचन अप्रिय अपार । देवन सबसललहि दुःखभार ॥ ५२ ॥

चौपाई ॥

मैना हिमिहियाचि सुरनाई । गंगैदीन्ह सोदउरछाई ॥ गईसुर-पुरहि इच्छाचारी । गंगात्रिभुवन पावन कारी ॥ ५३ ॥

पज्झटिया ॥

सुनुअपर कथा रघुवंश केतु । आवनमहि महिउल गंगहेतु ॥ अव-धेश सगर रानिन समेत । सुतहित तपकरि भृगुमुनि उपेत ॥ ऋषि कहाभूपवर सागुजानि । सुतदेउं तियन रुचिकह प्रमानि ॥ केशि-नी यांचि एकसुत उदार । जेहिबंश दृद्धिकी रतिअपार ॥ दूजेसहस्र षष्ठीप्रमान । सुतदेव ऋषे बलके निधान ॥ भृगु एवमस्तु कहिबिदा कीन्ह । नृप अवधआय निज राजलीन्ह ॥ कछुदिन गतसुत केशिनी जाय । असमञ्जस जिनकरनामआय ॥ तिनपुर बालकतरनी चढ़ाय । सरयू अगाध जलमें बोराय ॥ सुनि भूपतनय देशैनिकास । तबप्रजन कीन्हनिज भवनवास ॥ सुमतिं प्रसूततुंबरी एक । सुतभये कहेकरि सुनि जेटक ॥ ५४ ॥

नराच ॥

विचारि भूप चित्त एक अश्वमेध मैं करौं । लहैं सुकीर्ति नक्रमें समस्त दोषनैहरौं ॥ समेत पुत्र संत्रिपौत्र अंशुमान सायलै । हिमेश विंध्यमध्य जाय देखि उत्तमस्थलै ॥ ५५ ॥ कियो प्रचार यज्ञको ऋषी-सनै बोलाय कै । लखा विशेष मेध इन्द्रवाजिलै चोरायकै ॥ हवाल पाय भूपपुत्रषष्ठि साहसै तहां । बिलोकि भूपताल स्वर्ग अश्वलाइये कहां ५६ ॥ चलेवली समस्त भूपताल स्वर्ग देखिकै । नअश्व कोलहा कह्रखनै मही विशेषि कै ॥ सबै सुयोजनं प्रयन्त एकएक खोदते कलेश लेशनाकेह्न भडे महान मोदते ॥ ५७ ॥ डरे बिलोकि देवता गये पितामहा जहां । प्रणम्य षष्ठि साहसंहवाल दीनह्वे कहा ॥

अभैप्रदान दै तिन्है विधा निवाक्य उच्चरा । अवश्य कर्दमात्म जंवि रोधकै चहै मरा ॥ ५८ ॥

छप्पै ॥

यहिविधि खोदत भूमि रसातलपहुंचेसगरे । पन्नगादिजलजंतुहते योधावल अगरे ॥ पूर्वादिक सब दिशा शोधि बाजिन्हिनहिं पावा । महि दिग्गजन विलोकि प्रदक्षिण शीश नवावा ॥ तेजाय कपिलमुनि के निकट हय लखिपरुष बखाने । यहचोर भूप मखभंगकर जल्पत सकल अयाने ॥ ५९ ॥

दोहा ॥

सुनत कुटिल बाणीकपिल क्रोधवन्त तजिध्यान ।
हुंकारी दैतैभये भस्मसकल बलवान ॥ ६० ॥

नराच ॥

इहांचिरं व्यतीतकाल जानि भूपशोचहीं । बोलाइ अंशुमानपौत्र जाउ अश्वखोजहीं ॥ चलेतेकार्मुकं सुधारि हासि तूणबांधिकै । पितृव्यमार्ग पूछते न्पात्म यासुकाधिकै ॥ ६१ ॥

छप्पै ॥

बसुधा सकल बिशोधि गयो न्पतनय पतालै । करिदिशि करिन प्रणामपाइ तिनतेसबहालै ॥ कपिलाश्रम तबजाइ चरतमखबाजिहि देखा । पुनि पितृव्य न देह भस्मउर शोक बिशेखा ॥ पितु मातुलहि बिलोकि तहंखगनाथहि पूछत भयो । निज आइ बताइ जलाशय षष्टि सहसकहं जलदयो ॥ ६२ ॥

मञ्जुलिया ॥

तब गरुड़कहा सुनुवत्सबात । येषष्ठिसहस कहंनरक जात ॥ तुमकरौजाइ तपअतिहि घोर । गंगैलावौइ भस्मठौर ॥ तिनवारि परसि येपाव स्वर्ग । यशहोइ तुम्है नाना पवर्ग ॥ हयलेउ करौ न्पयज्ञ पूरि । कीरति महिमंडल होइभूरि ॥ ६३ ॥

सोरठा ॥

गरुड़ कहातस कीन्ह । अंशुमान न्पपौत्रवर ॥
हयलै भूपहिदीन्ह । विधिवत् कीन्हो यज्ञ तिन ॥ ६४ ॥

चौपाई ॥

तीससहस वरषै भूपाला। सगर राजकरि पुनिभा काला ॥ सुर-पतिभवन जबहिं नृपगयऊ। अंशुमान तबभूपति भयऊ ॥ नीतिधर्म महि मंडल छायो। प्रजन सबहि मनमोद बढ़ायो ॥ ताहि दिलीप पुत्र सुखकारी। दीन्हराज नृपप्रौढ विचारी ॥ आपुजाइ हिमगिरि वर शृंगा। कीन्ह तपहि महि आवहि गंगा ॥ बत्तिस सहस बरष तपकीन्हा। भयोम्रतक सुरपुर सुखलीन्हा ॥ सुनिदिलीप दुख हृदय अपारा। भगीरथहि शिरतिलक सवांरा ॥ जाइगंग हित तप बन-साधा। तनतजिगे सुरपुर निरबाधा ॥ इहां भगीरथमन असआयो। दिनबहुगये नपितु सुधिपायो ॥ संचिहि राज्यसौंपि तेहिकाला। तपहितगे गोकरण भुवाला ॥ ६५ ॥

सोरठा ॥

ऊरध भुजा उठाइ। निरखन अगिनि प्रज्वलितकरि ॥
कठिनतपहि मनलाइ। भगीरथीनृप गंगहित ॥ ६६ ॥

हरिगीतिका ॥

हिमिशयन जलग्रीषम अनलतपि सहस बरष बिताइयो। लखि-आइविधि वरले महीपति रुचिर बोलन भाइयो ॥ सुनिहरषि कीन्ह प्रणाम नृप करजोरि वरबानी कहा। सोहिंदेउ हिमवतसुता गंगा तरण हित प्रपितामहा ॥ जेसगर सुवन प्रसिद्ध षष्टिसहस्र मुनिरोष-हिजरे। ते तरहिं पावहिं स्वर्ग सुख ममवंश दृढ़ करौपरे ॥ कहि एवमस्तु बिरंचिबिन शिवगंगतेज को धारही। असभाषि विधि निज लोक गेनृप शंभु हित तपसाचही ॥ ६७ ॥

प्रज्वलिया ॥

पद अंगुष्ट महितल करि अधार। शिव शिव निशि दिन बाणी उ-चार ॥ संवत विलीतहर प्रकटआइ। बरमांगु भूपजोतोहि सुहाइ ॥ हिमि कन्याजेठा गंगवेग। दुःसह सहिसकै नसुर अनेग ॥ तेहि सहौ रहैमहि गंगआइ। कहिएवमस्तु शिवसुखहि पाइ ॥ ६८ ॥

चौपाई ॥

पुनि भूपति गिरि सुतै मनावा। चली धार धरनी करि धावा ॥ जाउं रसातल शंभुसमेता। कहि नजाइ मन अहमितजेता ॥ गिरी

शंभुशिर जटा भुलानी । संवत गया ब्यतीत बिललानी ॥ पुनि भूपति शिवबिनती कीन्हा । जटा निचोरि बूंद एक दीन्हा ॥ ताते भईं सात बरधारा । ह्लादिनी पावनी अपारा ॥ नलिनी अपरशिव जला नामा । गंगात्रिभुवनकी अभिरामा ॥ सिंधुगमनि सुचक्षु औसीता । दरसिपरसि जनहोत पुनीता ॥ चलाभूपस्यंदन असवारा । आगेपाछे सुरसरि धारा ॥ मग मुनि जह्नु यज्ञ बिस्तारा । बोरनचली गंगनिज धारा ॥ देखि चरित मुनि मन मुसुकाना । सत्वर धाय धार करि पाना ॥ ६९ ॥

दोहा ॥

वहुअचरज सुर मुनिनभो नृपअति विनती भाषि ।
कन्याकहि मुनि दीन्हतब नाम जाह्नवी राषि ॥ ७० ॥

कवित्त ॥

आवत बिलोकि धारा धाय न्हात गंगाजीमें पतिन समेत तिहु तापनको खोवती । मलयज न्रगमद कुंकुम कपूर युतकेशरि सुरांग नारिअंगनते धोवती ॥ तेरही प्रतापदाप सहतन दोषनकी अर्थधर्म काम मोक्ष आपुही भेजोवती । ईश्वरीदरश औ परस जल नेक भये ताके पाप पर्वत पलमें बिलोवती ॥ ७१ ॥ सोहत बिमल धारा धरा पर गंगाजीकी मानहु पावनपथ सुरलोक की बनी । सुन्दर सोपान वीचीपंक्तिन बिलोकियत अद्भुतगतिनहिं बरनिसकैफनी ॥ एकही केपरसत भवनिधि पारहोत अपर बिलोके मुक्तिलहत महा धनी । ईश्वरी प्रणत धन्य नर न महान भागजाहि केहूकाहू तबपाई जलकी कनी ॥ ७२ ॥ माधव मुकुन्द पदद्वन्द धोय बिधि निजआपने कमण्डल में भराभरि भावते । तपकरि भगीरथलायेमहिमण्डलमें जह्नुमुनि के प्रभाव जाह्नवी सुनावते ॥ सगर सुवन सुरभवन पठाये सबजग उपकार प्रणमन हर्षावते । ईश्वरी प्रणत पाहि गंगमातु तोहि चाहि ताही भवसागर उतारो वेदगावते ॥ ७३ ॥

चौपाई ॥

गयोन्रपति सागर वरतीरा । पाछे गंगधार गंभीरा ॥ सगरसुवन जेसाठिहजारा । दग्धभसम जल परसत बारा ॥ भैनिपाप सुरपुर सब लहेऊ । तबबिधि आय न्रपति ते कहेऊ ॥ सगर सुवन सब टपित

भुवारा । भयो पूर संकल्प तुम्हारा ॥ जबलगि सागरमें रहै नीरा । स्वर्ग बसहिं सब देवशरीरा ॥ हिमितनया गंगाये ज्येष्ठा । भागीरथीनाम यहश्रेष्ठा ॥ सागर मिली महासुख पावा । गंगासागर नाम कहावा ॥ गई रसातल इच्छा चारी । गंगा तिहुंपुर पावन कारी ॥ यहसंवाद सुनै औ गावै । गंगप्रसाद देवपुर पावै ॥ अस कहिविधि निजलोक सिधाये । अतिअनन्द भूपति गृहआये ॥ ७४ ॥

सोरठा ॥

गंगाचरित अनूप । गाधिसुवन विधिवत् कहा ।
सुनि अस्ततद्रूप । लहामुदित दोउबंधुवर ॥७५ ॥

तोमर ।

गुह देखत रामहि पायपरो । मुखव्यंग कहै उरप्रेम भरो ॥ पद धूरिप्रभावतरै तरनी । घरजाय कहा कहिहौं घरनी ॥ हमतै पद धोवन नाथकहै । तुमगंगनदी उतरा जोचहै ॥ लहि आयसु पाय पखारि पियो । निजसाथ कुटुम्ब कृतार्थकियो ॥ ७६ ॥

दोहा ॥

नावमंगाय उतारि तब मुनिन सहित दोउभाय ।
तासुप्रीति उरसमुझिसबनिहंसे मुनि सुखपाय ॥ ७७ ॥

चौपाई ॥

करिअस्नान पूजिनिजदेवा । भोजनकीन्ह मधुरफलमेवा ॥ तबमुनि संगभानुकुलदीपा । गयेनगर जहंजनक महीपा ॥ मुनिसुनि आवन नृपवर ज्ञानी । करिदण्डवत पूजि पदआनी ॥ सब प्रकार नृप करि पहुनाई । रामलषण लखिसुख अधिकाई ॥ पूछामुनिहि राम छबि देषा । केहि सुकृतीके सुवनविशेषा ॥ जिनस्वरूप सब दिशाप्रकासे । रवि शशि सम जगबीच बिलासे ॥ नरपुंगवकी हरि अवतंसा । यहि प्रकार नृपकीन्ह प्रशंसा ॥ सत्यवचन मुनिकह नृपतोरा । येदशरथ अवधेशकिशोरा ॥ ममहितआयताड़कै मारा । सुभुजआदिनिशिचर संहारा ॥ मारीचैसागरपठावा । ममआश्रमबसियज्ञकरावा ॥ ७८ ॥

दोहा ॥

मगगौतम पतिनारिही गतिदायक श्रीराम ।
देखन आये धनुष मख ममसंग राउरग्राम ॥ ७९ ॥

चौपाई ।

सुनि मुनि वचन महीप अनन्दा । पूजे विधिवत रघुकुल चन्दा ॥ पांचसहस योधनबोलवाई । विश्वनाथकर चापमंगाई ॥ मुनिकरखपाय दिखाइसरासन । जोत्रिभुवन वरन्टप बलनाशन ॥ पन्द्रहबर्ष रामवय आनौ । वर्ष छइक जानकी बखानौ ॥ शुभ संयोग विचारि अनंदै ॥ बारबार न्टपमुनि पदबंदै ॥ कहामुनिहि न्टपवचन बहोरी । जोहर चाप रामसकै तोरी ॥ तौसीता रघुबीर बिवाहू । करिहौं मै करि अमित उछाहू ॥ जासुदेखि त्रिभुवन बल हारा । सुरनर असु रन कीन्ह विचारा ॥ बाण बली मानी लखि शंका । रावणकुली परान्यौ लंका ॥ अपर सुरासुर भटजग जेते । हरधनु कीन्ह मान बिन तेते ॥ ममप्रणभंग भयो कहराऊ । रहै जोअब तव पुण्यप्रभाऊ ॥ तब कौशिक रघुनाथहि भाषो । तोरि पिनाक जनक प्रण राषो ॥ उठेराम गुरु आयसु पाई । परिकर दृढ़कसि मन हरषाई ॥ ८० ॥

दोहा ।

सुकृतमनावैं नारिनर रानिन सहित नरेश ।
हरधनु तोरैं राम अवपूजै गौरि गनेश ॥ ८१ ॥

छप्पै ॥

कटिपट पीत सुधारि धारि सारंग कन्धपर । करदुषडारि निषंग झारि भुज दण्ड चण्डवर ॥ झपटि खण्डिको दण्ड चौकि चण्डीओ चण्डौ । भरोशब्द ब्रह्माण्ड कम्प वसुधानव खण्डौ ॥ परसत पिनाक रघुनाथ के दिग्दन्ती दबिबलरखरे । सहिसकै नभार कूर्मकरक से शशीझुकिझुकि परे ॥ ८२ ॥

हरिगीतिका ।

करकराइ उठाइहरधनुलियोहरिबिधरक । करधरत गोधनुटूटि धुनिसुनि गई सिय हिय खरक ॥ करखगावत बंदि मागध जयति जय रघुबरक । करबराहचिकारशेषझुसिमटि कूरुमकरक ॥ ८३ ॥

प्रज्वलिया ॥

धनुखंडि खंडद्वै धरणिडारि । नरनारिउठे जैजैपुकारि ॥ सुरसुमनवरषि दुंदुभिवजाय । नाचैंनभसबअप्सरागाय ॥ लखिजनक तुरत रघुवरहिधाय । आनंदउमगिउरलैलगाय ॥ रानीसुनिबिसमयलहि

हअपार । सियभाग सराहत बारबार ॥ मणिमय सुवरण जयमाल हाथ । सीतै पठयो बहु सखीसाथ । द्युतिस्वर्ण वर्ण आभरण साजि । कंकण कुण्डल नूपुर बिराजि ॥ केयूर हार मुंदरी सुहाय । चिचिल दुकूलरचिरचिबनाय ॥ अस्मितआनन सरदेन्दुनिंद । गइरास निकट लैसखिनवृन्द ॥ ८४ ॥

सवैया ॥

श्याम स्वरूप अनूप सुआनन कानन कुण्डल लोल सुहाये । नैन मनोहर मीनकु खंजन कंजनहू लखिकै सकुचाये ॥ देखिसिया मन मोदभरी गुरुलोगन लाजन घोषनवाये । जायअली सुभली बिधिसों रघुनन्दन पंकज पायपुजाये ॥ ८५ ॥

हरिगीतिका ॥

पहिराइ तबजयमाल जानुकिराम उरहरषाइकै । सुरसुमन बरषैं बिनयकरि नाचत अपसरा गाइकै ॥ रनिवास परमहुलास बस झांकत झरोखन आइकै । पुरनारिनर आनंदउमगिमंगलकरतसब धाइकै । खलभूपमलिनसुभावबिलखत निजसुखनमसिलाइकै । लखि लषण प्रबलप्रताप निजपुर गवहिंजात पराइकै ॥ जेसाधुनृप तेराम सुखनिरखत महासचुपाइकै । पुनिकुंवरि लैगजगमनि सुन्दरिभवन गईलवाइकै ॥ कौशिक महाउत्साहकरि रामहिंलियेउरलाइकै । मिथिलेश परमानन्द मुनिपद परसि औलि बढ़ाइकै ॥ चरचतुरपठये पत्रलिखि जोअवध नृपहि जनाइकै । दूतआइ करैं विवाह रघुवर बरबरात बनाइकै ॥ ८६ ॥

मधुभार ॥

लैगयेपच । अवधेशयच ॥ नृपआपुबांच । मनजानिसांच ॥ अति भयोसुक्ख । मिटिगयोदुःख ॥ मंचिनबोलाय । सबकरि बनाय ॥ बर रथसजाय । निजगुरु चढ़ाय ॥ सजिअपर यान । नानाबिधान ॥ गज रथहयान । चढ़िचलेआन ॥ शिविकासजाय । रानिनचढ़ाय ८७ ॥

नाराच ॥

गजादि स्यन्दनादि बाजिसाजि रंगरंगके । भरत्त शत्रुहासखा ससस्त्रराम संगके ॥ भयेनृपौ सवारसाथ सैनलैभयंकरै । गुरूगिरा गणेश औ मनाय गौरिशंकरै ॥ ८८ प्रपूजि बिप्रदान मान औबिधान

कैभले । बजाय दुंदुभीमृदंग शंखपूरिकैचले ॥ भ्रगालिदक्षिणेमिलेश पुस्तकं द्विजंद्वयं । दहीसमीन सम्मुखे सुवाभमंगलंग्रयं ॥ ८९ ॥ उहां बड़ेरिचारगे बिदेह सोकह्यानबै । सुनेहु कोशलेशकी बरातश्रावतै सबै ॥ सुनेश्रनंद पायभूप दुंदुभी बजायकै । रचाबितानस्वर्गम बड़े गुनीबोलायकै ॥ ९० ॥ कहूंकहूं मनीघनीलगायनीलपीतकी । सपन्न खंभकेदली छियावनी हरीतकी ॥ सफूल पद्मरागके लगाय मोतिनै लरै । बिरंचिहू लखेश्रचर्य चित्त आपने करै ॥ ९१ ॥ बोलाय सर्व ग्रामके धनीगुनी बनीनको । रचौबजार द्वारधाम देवनै मनीनको ॥ गयेसमस्त हर्षसे रचाय शोभधारिकै । रचीगलीगलीभली विचित्रता सवांरिकै ॥ ९२ ॥

चामर ॥

वापिका तड़ाग कूप भांतिभांति के रचे । बाग बाटिकादि आल बाल रतमैंखचे ॥ धामधाम द्वारद्वार चौकमोतिनै बनी । दीपवाह्य भीतरौ मनीजड़ी घनीघनी ॥ ९३ ॥

प्रमाणिका ॥

सबैधनी गुणीबसैं । कुबेरहू कजेहसैं ॥ सबैसुखी सुशीलहैं । सबै उदारशीलहैं ॥ सबैसुधर्मभावते । प्रमाणके कहावते ॥ सबै स्वरूपवानसे । मनौ स्वपंचबाणसे ॥ सबै पतिव्रता नरी । लखैलजै सुश्रप्सरी ॥ न दुःख देखिये कहूं । न दुष्ट पेखिये तहूं ॥ जहां स्वजन्मि इंदिरा । तहांकि क्योंकहै गिरा ॥ सऋद्धि सिद्धि दारिका । भई सिया प्रचारिका ॥ ९४ ॥

दोहा ॥

यहिबिधि पुरशोभा निरखि विधिहू मनसकुचात ।
निजकृतकृतहु नदेखही घरघर एकौबात ॥ ९५ ॥

चामर ॥

आवती बरात जानिसीय औधग्रामते । ऋद्धिसिद्धिको पठाय सर्व सुःखधामते ॥ बासबास सो हुलास दीन्ह लोग नैघनै । मर्म जानना कोऊ विदेहकीर्त्तिको भनै ॥ ९६ ॥

पञ्झटिया ॥

मिथिलेश नगर आई बरात । पितुमिलन चलेउठि दोउभ्रात ॥ परे

पाइपाइउर लाइभूप । सिरहुंधिरामसुख लखिअनूप ॥ तेहि समय जनक आगमन आय । पदपूजि भेंट दैवास जाय ॥ सबभोग सहित अति रुचिनिकेत । तहं सुखीभूप रानिन समेत ॥ ९७ ॥

दोहा ॥

सुदिन सुलगन बिचारि द्विजन्पपहि सुनायो आय ।
ब्याहरीति क्रमते सकल करनलगे हरषाय ॥ ९८ ॥

मधुभार ॥

तब हर्षिराज । बहुद्रव्य भ्राज ॥ गजबाजि साज । पठई समाज ॥ प्रभु तिलक कीन । श्रुति विधि प्रवीन ॥ बहुदान दीन्ह । जग सुजसु लीन्ह ॥ ९९ ॥

तोमर ॥

बहुभांति धाम बनाइ । वर मंडपै बिरचाइ ॥ ध्वज तोरनादिक केतु । सजिसो सुमंगलहेतु ॥ गिरिजा गणेशहि थापि । बहुभांतिराग अलापि ॥ कुलरीति लौकिकरीति । सुखसोंकरो करिप्रीति ॥ १०० ॥

प्रज्झलिया ॥

चित्रावलिकी छबिअति बिलास । झहरै झालरि जनुकाम पास ॥ राजै विचित्रशोभा वितान । जनुइन्द्र धाम भूतलहि आन ॥ कै धौं मिथिला पुर सुख समाज । इत आइरहा शुभजानि राज ॥ कैबिधि त्रिभुवन आनंदसकेलि । इतआयकीन्ह ढेरीअकेलि ॥ प्रतिखम्भसुरन प्रतिमा बिराज । छलसों जनुदेखत सुखसमाज ॥ सीताहरित्रिभुवन नाथजानि । जनुमंडप प्रथमै छुचतानि ॥ १ ॥

हरिगीतिका ॥

द्वौराज रानि समाजकरि हरषाय शुभमंगल करौ । मयनादिते लकिरीति विधिवत जागरन कैसुखभरौ ॥ शुभलगनदिन गजबाजि साजि अनेक स्यंदन रचिभले । चढ़िन्‌प कुमार अपारतिन परलेन अगवानी चले ॥ लैवस्तु अमित प्रकारबहु उपहार आदि बनाइकै । पदपूजि दशरथ राइके दैभेट अति हरषाइकै ॥ बरबरात लवाइआइ सुद्वारचार कराइकै । करिप्रीति लौकिक रीतिसों सबसुखि मंग-लगाइकै ॥ २ ॥

दोहा॥

आरति आरत हरनकी कीन्ह्योराज सुजान।
चरण कमल पूज्यौबहुरि जनमसफल निजजान॥ ३॥
सबप्रकार उत्सव अमित बाजैगगन निसान।
रंभादिक नाचैंहरषि करैंविविधि विधिगान॥ ४॥

भुजंगप्रयात॥

पुनःसुक्ख शाला वराते टिकाई। सुदुर्गी जनेऊ दियो फेरिजाई॥ लखेऔध नाथैविभौ सुक्खसाजा। अतीतुच्छ जासी लगैदेव राजा॥ विनैकै चहूबंधुलै औध नाथै। दियेपावडे मंडपै लायसाथै॥ कियो आरती अर्घपाद्यार्घ दैकै। दियेदिब्य सिंहासनै प्रीतिकै कै॥ ५॥

दोहा॥

ब्रह्मादिक सुरसकल मिलि धरिधरि विप्रनरूप।
आये भूपति भवन सबदेखन व्याह अनूप॥ ६॥
विश्वामित्र वशिष्ठसम नारदादि मुनिवृंद।
पूजिदिये आसन सबहि तिरहुतिपति आनंद॥ ७॥
विप्रन आयसुते तवैसीता मंडप लाय।
वरकन्यै गुरदुहुन मिलि गणपति गौरि पुजाय॥ ८॥

तोटक॥

करिहोमहि वेदविधान तवै। जेहिभांति विवाह कीरीति सवै॥ वरविप्रन शांतिपढ़ी जवहीं। गठिबंधन भांवरिकै तबहीं॥ पददंपति धोइ सिया वरके। दुहुंलै अपने सिरपै छिरकै॥ कर सीयकुशो दक पाणिलियो। विधिसों रघुनाथहि अर्पिदियो॥ ९॥

भुजंगप्रयात॥

पुनः उर्मिला लक्ष्मणै व्याहिराजा श्रुतीकीर्त्ति भर्तैं दईकै समाजा॥ दईमांडवी शत्रुहंतै सुदेखी गुरूआज्ञया पाइकै सो विशेषी॥ भय दारसंपन्न चारोउ भाई लसैंलोक पालेव शोभा बड़ाई॥ भरा मंडपौ रत्नहेमांवरानै। लहानेगिनौको कहांलौं बखानै॥ १०॥

चौपाई॥

तव विदेह आपनि अभिलाषा। विश्वामित्र वशिष्ठहि भाषा॥ यज्ञक्षेत्र विशुद्ध के कारण। मैंलांगलहि कीन्ह कर धारण॥ कछुक

भूमिविदीर्ण भैजबहीं । प्रकटी सुभग कन्यका तबहीं ॥ मैंपुत्रीकहि रच्यो हेतू । दीन्हारानिहि लाइनिकेतू ॥ एकसमय नारदमुनि आये । बीन बजावत हरिगुन गाये ॥ पूजि तिनहिं आसन बैठारा । मुनिकृपाल मोहि बचन उचारा ॥ सुनु महीप निजउदै प्रकारा । भक्तहेत हरिधरि अवतारा ॥ परमातमा सुचारिउभाई । प्रकटअवधदशरथ गृहआई ॥ येलक्ष्मी सीतातव धामा । पैहैपतिरामहिं अभिरामा ॥ नारद कहासत्य करिजाना । धनुष भंगप्रन मैंतब ठाना ॥ बिनरघुवीर कौनसकैतोरी । कोत्रिभुवन भटकर सुखमोरी ॥ तबमैं रामहि देहौंसीता । सदाप्रिया यहहरिहि पुनीता ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

रावणादि निशिचरन हति हरिहैं पृथिवी भार ।
जगवत्सल सुर काजहित लीन्हमनुज अवतार ॥ १२ ॥
त्रिपुरदाहि पुरारि दूतनिमिहि सौंपि धनुदीन्ह ।
सीताराम बिवाहहित जानिमहुं प्रणकीन्ह ॥ १३ ॥

चौपाई ॥

सुनि तव कृपाभंजि धनुरामा । भयो मनोरथ मम अभिरामा ॥ जन्मसफल अबभयो विशेषा । आसन एक रामसिय देखा ॥ जेहिचरणोदक शिव अजशीसा । धराभयो स्वचराचर ईशा ॥ बलिकु सलिल सोइ शीस चढ़ावा । दिविजाधिप पद लहा सुहावा ॥ पदरज परसि अहिल्या नारी । ह्वैपुनीत पतिपास सिधारी ॥ जेपदरज सुर सुनि उरलाये । तेन कबहुं भवबंधन आये ॥ जासुनाम सुमिरतदुख भागै । धन्यजीव सोजो अनुरागै ॥ १४ ॥

भुजंगप्रयात ॥

विनैयों बखानी तवै राजरानी । गहेपाद पानीकही दीनवानी ॥
सदानाथमोपैकृपाको करीजै । लखौदास दासीनिजैभक्तिदीजै ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

धामधरनि धनधेनु बहुदाइजदै अतिभूरि ।
विविधि कनक भूषण वसन रहासु मंडपपूरि ॥ १६ ॥

कवित्त ॥

चांदिहि की पाटी अरुपावहु सोहाये चारिचारु परयंक पाट

होरिन बिनायो है। ताहूपै गुलगुले गलीचहू बिचित्रचित्र ताहूपै सखमलकी तोसक बिछायो है॥ ताहू परसेत पटपावन बिराजमान मानौंपय फेनुसम बिसद सोहायो है। ऐसेरचे पलका जिन्है लखे मन ललका तौन प्रथमै कोशल का साज भूपति पठायो है॥ १७॥ बटुवा परात थारी गड़ुवा गरुव भारीसब सुखकारी चारु चांदी अरुसोनके। खोरा आबखोरा गनगगरा गनावैकौन मनिन कराही को सराही मतिकौन के॥ नृपअवलोकि चितचौंकि चौंकिरहे और औरन कोतांजिव हूनदिये एककोन के। ईश्वरी जनकये भराइ भूरि भारनपै प्रथम बरातहू ते कोशलहि गौनके॥ १८॥

हरिगीतिका॥

बहड़ोर बिबिधि पटोर पावन रजत कंचन मैबनी। सारी किनारि नसोजरी दुकुकोर मुक्ता बखि घनी॥ अति कलित कटिपट ललित कंचुकिचारु चादरिराजही। जनुबेनि अतिसुख देनिबीचि बिलास बहुबिधि भ्राजही॥ १९॥

दोहा॥

बहुप्रकार भूषण बसन बिरचित जड़ित जराइ।
मिथिलापति कोशल पुरहि प्रथमै दियो पठाइ॥ २०॥

प्रज्झलिया॥

करिब्याह रीति मैहर दुवार। लहकौ रिखा तसुखभो अपार॥ सीता रघुबीरबिवाह गाय। द्विजने गिन द्रब्य अनेक पाय॥ २१॥॥

हरिगीतिका॥

जेवनार बविधि प्रकार रचि सुचि चारि बिधि षटरस बनी। व्यंजन अमित हित लखत लागत बिदित स्वादनसों घनी॥ बरबर बरात बोलाइ पायधोवाइ आसन दैसबै। पनवार छ्वैपोदन प्रथम परसाइगो घृतकोतबै॥ २२॥

प्रज्झलिया॥

पुनि बिबिधि भांति भोजन कराइ। जनु सुधासानि बिरची मिठाइ॥ अरुनारि छन्दसुख गारि देत। हसै अवध नाथ मुनि गण समेत॥ यहिबिधि दिनप्रति आनंद होइ। कहिसकै न शेषकवि और कोइ॥ कल्याण हेतुहरि ब्याहनानि। संक्षेप कछू इमुरीबखानि॥ २३

कुण्डलिया ॥

शिविका रुचिर सवांरिकै सीता हरिहि चढ़ाय । दासी दाससमूहदै विदाकीन्ह तबराय ॥ बिदाकीन्ह तबराय भरत लक्ष्मण रिपुहंतै । श्रुतिकीरति उर्मिला मांडवी सुतन तुरंतै ॥ श्रुति कीरति उर्मिला जिन्है सुखलखि शशि दुतिका । ब्याहि उछाह समेत चले चढ़िचढ़ि सब शिविका ॥ २४ ॥

दोहा ।

अतिआनंद बरात तब सजि सजि निजनिज जान ।
मिथिला पतिसों विदाह्वै चले बजाइ निशान ॥ २५ ॥

भुजंगप्रयात ॥

तबैव्योममें भूरि भेरी बाजावै । नटैअप्सरी कोकिला कण्ठगावै ॥ पढ़ैवंदि बिदावली विप्रवेदै । सुनेचित्त हर्षै हरैसर्व खेदै ॥ २६ ॥

दोहा ।

अयुत नागदश अयुत हैरथौ पचीस हजार ।
दीन्हदशरथै जनक पुनिमणि गणस्वर्ण अपार ॥ २७ ॥
बिश्वामित्र वशिष्ठपद पूजिजनक बहोरि ।
दान मानसों बिदाकै बहुप्रकार करजोरि ॥ २८ ॥

हरिगीतिका ॥

कीन्हो पयान बजाय दुंदुभि अवध पति सुखपायकै । पहुंचाय भूमिबिदेह नृप बहुबार आयसु पाइकै ॥ त्रैयोजनांतर दशरथैअस गुण लखे भयदायकै । पूछा वशिष्ठहिसो कहा परिनाम हर्षबढ़ायकै ॥ मृगमाल दक्षिण देखुभूप समस्त शोच नसावनी । कहतै महा निल धूरियुक्त चली सुलोक भयावनी ॥ पुनिलख्यौ सन्मुख सरूपभृगु बर कुटिलवेष भयकरा । अर्घादि पूजाभूलि भूपहि चाहि चाहिति उच्चरा ॥ मदगलित गज बदबद गिरै हय चपलता तजि भय भरे । सब सूरबीरन डारि धनु अरि टेकि सिर महि गिरिपरे ॥ कटितून कठिन कुठार करशर चापशीश जटाधरं । जलदाभ तनश्यामल पृथुल जनुकाल मृत्यु द्वापरं ॥ २९ ॥

मालिनी ॥

कटिपट मृगछाला कंठ रुद्राक्षमाला ॥ उर नयन बिसाला बाहु

दण्डौकराला ॥ एकइसबर छोनीछीनि कीन्हा निछत्री । प्रतिभटजग माहीं दीखना औरऋचो ॥ सबकुटुम्ब संहारी कार्तवीर्य्यप्रचारी ॥ रुधिर सरहि भारी तर्पि पित्रन् सो तारी ॥ कहि कटुक कुबानी भूपते क्रोधसानी ॥ तुमभयऊ गुमानी जर्जरो चापभानी ॥ ३० ॥

दोहा ॥

यह हरि धनुलीजै सगुन सद्यकरौ कि न आइ ।
नाहितौ सैनसमेतहति यमपुर देउं पटाइ ॥ ३१ ॥

तोटक ॥

असकोपि कहा भृगुनाथ जबै । तुरतै महिमंडल हालि सबै ॥ सुनतै रघुवीर सुधीर महा । सुनितै धनुलै शरसाधि कहा ॥ सुनुब्राह्मण लच्य बताउ हमैं । जेहिपै यहबान अमोघ गमैं ॥ लखिरामप्रताप सुज्ञान लहा । परमेश्वर जानि मुनीश कहा ॥ सुनुराम रमेश पुरातुमहीं । निजतेजहि अर्पन कै हमहीं ॥ तेहितै तवआयसु मानि किया । अवअंश तुम्हार तुम्है सोदियो ॥ अबदीन दयालदया करिये । निजअंघ्रिहिये हमरे धरिये ॥ बहु भांतिनसों विनती मुनिकै । रघुनाथ प्रसन्नभये सुनिकै ॥ बरमांगु द्विजेंद्र जोभाव तुम्हैं । अति दानि शिसरोमणि जानिहमैं ॥ सुनुनाथन और पदार्थ चहौं । अनपावनि मैंतवभक्ति लहौं ॥ ३२ ॥

नराच ॥

एवमस्तु रामचन्द्र रामसों कहा जबै । नाइशीशगे मुनीमहेन्द्रपर्वतै तबै ॥ कोशलेशभे अनन्दपुत्र अंकलायऊ । स्वस्थचित्तहू भयो पिनेच जान्हवायऊ ॥ ३३ ॥

दोहा ।

पुनिहय गज गाजतभये शंख निसानबजाय ।
सजि सुभटन तबगवनकै अवधराज सुखपाय ॥ ३४ ॥

मधुभार ॥

तब अवध आय । मंगलबनाय ॥ परजनिकराय । बरदुलहि लाय ॥ मयहरदुवार । कुंवरिहु कुमार ॥ कुलरीतिसार । सुखकैअपार ॥ ३५ ॥

सवैया ॥

जादिनतै हरि व्याहउछाह भयो तबते महिमा अधिकानी ॥

तादिनते दिनही दिनदून बढ़ै मुदमंगल सम्पति खानी ॥ ज्यौं अम-रावतिमे सुख कश्यप आदिति इन्द्रशची महरानी । त्यौं अवधेश सदारसपुत्र सपुत्रवधू अवधै रजधानी ॥ ३६ ॥

दोहा ॥

ईश्वरी सो सुखक्यों कहै जेहि शेषहु सकुचाय ।
जो गावै यह राम यश तेहि मंगल अधिकाय ॥ ३७ ॥

इतिश्रीमद्रामायणे ईश्वरीद्विजभाषाकृतेबालकांडःप्रथमःसमाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथरामबिलास
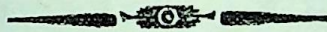
अयोध्या काण्डः ॥

दोहा ॥

सुमिरि बिनायक करिबदन शंकर गौरि प्रसाद ।
ईश्वरी द्विज भाषा करत शिवा शंभु संवाद ॥ १

प्रज्झलिया ॥

मनिलै सिंहासन रुचिनिकेत । तेहिबैठराम सीतासमेत ॥ अंगअंग पट भूषण अति सुहात । छबिकोटि कामरति लखि लजात ॥ सीता करकमलन चमरढार । करैमोद परस्पर अति अपार ॥ तेहिसमय नारदहि गगन देष । शरदेंदु आव जनुमहि विशेष ॥ उठि सिया सहितश्रीरामधाय । दण्डवतकीन्ह महिशिर लगाय ॥ करजोरिराम सुनु मुनि उदार । हमगृहहिंग दर्श दुर्लभ तुम्हार ॥ कृतकृत भयों मैं देखिपाव । आयसु दीजै सोकरौं धाय ॥ किमोह मोहि कहौ सत्य राम । जगकारण माया तव सुवाम ॥ चैलोको गृहतौ है बखान । ताते गृहस्थबानी प्रमान ॥ तुम बिष्णु सिया लछमी रूप । तुमशिव सीताहै शिवारूप ॥ तुमब्रह्मा सियवाणी बखानि । तुमसूर्य जानकी प्रभा मानि ॥ तुमदिग्पति दशइन्द्रादि जान । शच्यादि सिया गृहनी बखान ॥ स्त्रीवाचक सब सियारूप । पुन्नाम सकलतुमहौ अनूप ॥ अस्थावर जंगम जड़चैतन्य । सब राम सिया कछु है न अन्य ॥ तव नाभिकमल बिधि ह्व प्रसूत । मैं पौनतोर ब्रह्माको पूत ॥ मैंकिंकर तव जनिकरिय मोह । निजजानि नाथ मोहिकरिय छोह ॥ २ ॥

चौपाई ॥

असकहि प्रभुपदपरयौ मुनीशा । पठवाबिधि मोहिसुनुजगदीशा ॥ रावणबधि उतारि महिभारा । पूर्वनाथ संकल्प तुम्हारा ॥ मुनिहि रामबोले मुसुकाई । ऐसेकरबन देव डेराई ॥ सुनिआनन्दद देवऋषि भयऊ । करिदण्डवत भवन निजगयऊ ॥ एकबार महिपाल अनंदा ।

जाइ वशिष्ठ गुरूपदवंदा ॥ जोरिपाणि नृप मुनि सनभाषा । रामहिं राज देनअभिलाषा ॥ ज्येठश्रेष्ठ सबबिधि रघुनायक । सैंतनहूइभजन केलायक । जोकृपाल आयसुनिजपावों ॥ तिलकवस्तु समूहमंगवावों ॥ पै शत्रुहन भरत घर नाहीं । यह बिशेष चिन्ता मन माहीं ॥ कह्यु सुनि राम तिलक के हेतू । रचौ बितान पताका केतू ॥ ३ ॥

दोहा ॥

षोडश गज चहुं दंत के तीरथ सलिल मंगाइ ।
द्विजकन्या आभरण युत श्वेत छत्र मनि लाइ ॥ ४ ॥
बिप्र बरण सहसनकियो शिवदुरगार्चन मानि ।
मंगल कुशल निवाहिये राम तिलक सुखखानि ॥ ५ ॥

चामर ॥

ग्रामदेव पूजियेबली भलीबिधानसों । विप्रनैबोलाय तोषि पोषि मान दानसों ॥ द्रव्य अंबरादि ब्याघ्र चर्म तीनि आनिये । नर्तकी बोलाय सर्वराग रंगठानिये ॥ ६ ॥ राजहू सुमन्तको बोलाय आयसु-न्दियो । जौनजो गुरूकहै चहैसो तौनहीं दियो ॥ आपुमौन गौनकै जहांसुरानि कौशिला । जायकैसुनायऊ समस्तचित्त हौंसिला॥७ ॥

नाराच ॥

गयोबशिष्ठ रामधाम शिचया सुनावनै । स्वदेखतै परेकपा समुद्र आय पावनै ॥ सिया सुबर्ण पात्रपाणि आनि चर्ण धोयलै । चढ़ाय शीश आपने हजून तौन तोयलै ॥ ८ ॥

भुजंगप्रयात् ॥

कहा रामजू धन्यहैं भागमेरे । धराशीश प्रक्षाल्य पादाब्ज तेरे ॥ कहा यों ऋषीसोपि त्वत्पादपानी । धराभाल ईसौ निजै धन्यमानी ॥ इदानीं तुम्हौभाषसे लोकशिक्षा । परात्मा नराकारकै आपु इच्छा ॥ बधार्थं सुरारीसुरानमोदकारी । जनंदुःखहारी स्वलीला पसारी ॥ मह्यूं जानतो प्रोहितो निघ्नकारी । परात्मा रघूवंश मेंदेह धारी ॥ सुनाऐं पितातेलही राखि कांक्षा । गुरूमैंगुरू के भई सिद्धिवांछा ॥ ९ ॥

तोमर ॥

अवतोहिं रामकृपाल । शिषदेन मोहिं भुवाल ॥ पठयो सुनोरघु नाथ । व्रत धारुजानुकि साथ ॥ भुविशैन इन्द्रिन जीति । अभिषेक

हितकरु प्रीति ॥ तबप्रात भूपति तीर । तुमआइयो रघुबीर ॥ १० ॥

मधुभार ॥

गुरुबैनमानि । प्रभुग्रतठानि ॥ पुनिगेबशिष्ठ । जहंन्टपसरिष्ठ ॥ सब कथागाय । निजभवनआय ॥ पुरफैलिबात । सुनतैसोहात ॥ कौशिला मात । सुबकहि नजात ॥ दै द्विजनदान । करि हरिहिध्यान ॥ ११ ॥

भुजंगप्रयात् ॥

तबैदेव राजाबिनय आय बानी । अयोध्येपठायो करोराजहानी ॥ हियेहर्ष विस्मय धरेग्राम आई । खड़ मंथरै प्रेरिकै युक्ति लाई ॥ गृहद्वारपै लोगनै पूछिधाई । कहौ आजुग्रामै वजैका बधाई ॥ सुना रामराज्या भिषेकै समाजा । खयेसर्वउत्साहसाजा सुराजा ॥ महा दुःख सो भौन आई बहोरी । कहाकैकईते अमौ बुद्धि भोरी ॥ चहो कौशिला रामको राजदैना । न्टपैलू पियारी सुनापै अबैना ॥ सुना रामराज्या भिषेकै सुरानी । दियोरत्नमैं नूपुरं हर्षठानी ॥ निजैपुत्र ते रामहैं मोहिं प्यारे । कहा शोचतोबैन बोलै संभारे ॥ सबै राम माता लखै एकरीती । हमैंकौशिलासों रहैभावप्रीती ॥ सुना येहमैं रामको राज्य काल्हि । जोपै सत्य तौ मांगु दैहौं खआली ॥ १२ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

तबभावीबसरानिकु भुलानि । पूछै पुनि पुनितेहि सुहृद जानि ॥ कछु कहसि नतै निज हृदय षेद । मोहि रामदुखदख बताउ भेद ॥ तवराम सुवन तुमराम मातु । मैं अजसहेत किमि कहव बात ॥ प जियत सदा तुम्हरे जियाय । ताते अनहिंत तवनहिं सोहाय ॥ १३ ॥

मालिनी ॥

ममवचन सुनौजू जोतुम्है चित्तआवै । तवबिभव विलासै सौतिनै नासोहावै ॥ लखिन्टपबस तोरे घातपाई नएकौ । कछुक बक्रचली नायत्नकीन्हीं अनेकौ ॥ रचिविविधि प्रपंचै जानसोऊ नरौरे । भरत सहित भ्रातै भेजि दीन्हो नन्यौरे ॥ अब न्टप अपनाई राम राज्या भिषेकौ । करत करि बनाऊ आपु नानान नेकौ ॥ १४ ॥

दोहा ॥

अबहूतव हित होतहैसुनौ मोरिसिख सोय ।
सौतिन होयविशेष दुख राज भरतकी होय ॥ १५ ॥

तोमर ॥

दुइभूप सों बर तोर । लहिहौसि पुत्र कि ओर ॥ बन राम भरतै राज । किनसाधु आपनकाज ॥ सोहि सुद्धिनाहिं बताउ । बनिजाय तैसकराउ ॥ १६ ॥

भुजंगप्रयात ॥

पुरायुद्ध देवासुरौ घोरकीन्हा । कहेइन्द्रके राजहू साथदीन्हा ॥ रथै कीलटूटी तहां औधनाथै । पतिप्राण रक्षादिये तैंसहाथै ॥ तबैदा नवा सर्व भूपालमारे । तहा देवता आइ जैजै पुकारे ॥ प्रिया हाल्थे देखी लहीविख्याताई । हृदय हर्षि राजा लियो कंठलाई ॥ बरैमांगु द्वैसोहिं जोचित्त भावे । समय पायलेहौ नृपैतैं सुनाये ॥ ख्ये जाय लोजैकरौ चित्त चाही । पढाई सिषैक्रोध आगार ताही ॥ १७ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

गइकोप भवन रानी अयानि । लहिनीच संगभूलीसयानि ॥ तुरतै अंग भूषनसो उतारि । महिपरी मलिन अंबर न धारि ॥ जोपै बन रामन काल्हिजाइ । मरिजाउं नृपहि दूषन लगाइ ॥ कल्याण तोर तबहेसु रानि । निश्चै करकहि चेरी परानि ॥ १८ ॥ नहिं धीरवीर दशरथ समान । गुणगण विद्यानीतिहु निधान ॥ सुन्दर सुशील करु-णा निधान । निशिदिन हरिचरनन रहतध्यान ॥ द्विजपालक घालक असुरवृन्द । जेहिबल बसै सुरपतिअति अनन्द ॥ सहिसकत असित असिबज्र बान । तेहि सुमन सरन तियलीन्ह प्रान ॥ रघुवीर तिलक हित साजकाज । मंत्रिन निर्देशि गृह गे भुवाल ॥ सुनि कोपभवन केकई बास । तुरतैगत तनहितिमन हुलास ॥ भयसहित निकटतेहि गयो भूप । महिलीन कैकई लषि कुरूप ॥ करपरसि पूंछि का हाल तोर । लखिभयो जाहिमन बिकल लोर ॥ सकौं आजु तोर अरिअ-मरमारि । सहतीराजन देसन निकारि ॥ मनबांछित फलबिन अम हि देत । रिसकीन्ह कुर्लाच असिकौन हेत ॥ करि राम सपथ का और आन । तवहेत छांड़ि सकौं अपनप्रान ॥ सुनि राम सपथ रानी कठोर । बरदेन कहेसो दे उमोर ॥ चौदह वरषै बनराम जाइ । कर भरतराज निज भवन आइ ॥ जो प्रातराम अब बननजाइ । मरिजा उं तुरत मैं करि उपाइ ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

सत्यसिंधु महिपाल तुम देउ न सुकृत नसाइ ।
मेरेमन ऐसैरुचै औरन नेक सोहाइ ॥ २० ॥

चौपाई ।

सुनि केकई बचन दुखदायक । मुरछि पारौ अवनी नर नायक ॥ पुनि धीरजधरि उठिनरनाथा । कहा केकइहि पदधरि माथा ॥ सदा कहसि मोहि रामपियारे । आजु कुटिल किमिबचन उचारे ॥ करैपूततव राज बिशेषो । दे मोहिराम जियों जेहि देषो ॥ मिथ्या बचन भूप किमि गावो । सत्य छाड़ि अति नरकहि पावो ॥ जो न रामसुनिवेष बनाई । वेगिन जाइ मरौ बिषषाई ॥ सुनिकेकई बचन नरनाथा । मृतक समान गिरि धुनि माथा ॥ अरुणोदय सुमंत सब साजा । जो प्रथमै भाषाऋषि राजा ॥ चारिउ वर्ण आइ नृपद्वारे । ऋषि कन्या गजवाजि संवारे ॥ चमरछत्र दासन के । हाथा बारबधै गायक गण साथा ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

आये भूपति द्वारसब रामराज्य अभिलाषि ।
सुनिरवदासिन पठैतवबरजि केकई माषि । २२ ॥

चामर ॥

गेसुमन्त्र राजधाम सोमनो भयावना । चित्रशाल भूतज्यौं परै अगार पावना ॥ जाइ दीख भूमिपाल भूमि पै गिरेपरे । कोप वान केकई समीप देखतेडरे ॥ २३ ॥ जैति जैतिकै सुमंतशीशनाइकै खड़े । पूछि केकईहि क्यौं भुवाल शोक से बड़े ॥ राम राम टेरिसर्व शर्वरी बितायऊ । जाउवेगि रामलाउ मैं न मर्म पायऊ ॥ २४ ॥

नराच ॥

सुमन्त्र वैनजानि भूपदेखिनैन खोलिकै । कहाकि जाउबेगि राम चन्द्र लाउ बोलिकै ॥ गयो सुनाइ आयसुं रथै चढ़ाइ लायऊ । पितै प्रणामकीन्ह तातकण्ठमें लगायऊ ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

रामराम रघुवंशमणि हा ममप्राण अधार ।
असकहिभूपति मृतकइव परेधरणि दुखभार ॥ २६ ॥

प्रज्वलिया ॥

लखिदशरथ गतियुवती बरूथ। जिततित रोवैंसब यूथयूथ ॥ सुनि कोलाहल पुरभयो भारि। सिरधुनत देत केकइहि गारि ॥ कह राम मातु पितु दुःख हेत। सो करिय यत्न जेहि होइ चेत ॥ केकई कहा तवहेततात। दुखमगन भूप भाषत लजात ॥ मोहिंदेनकहे बरदान दोइ। जो नीकलाग मनलीन्ह सोइ ॥ करिसकौं तातता करौ सोइ। नरक जायत पितुपुत्र सोइ ॥ किमि मातुबचन मोहिकहैा येह। पितुहेत तजौंसिय जननि गेह ॥ बनजाउं राज तजि पिताहेत। पितु आयसुकृत सो जस निकेत ॥ २७ ॥ रघुवीर बचन सब सत्यजानि। केकई कहा पुनि कपट सानि ॥ चौदह बरषै बन राम जाउ। मुनि बसन असनफल कंदखाउ ॥ इतआय भरतपुर करैं राज। इतने सुत करु निजपिता काज ॥ नहिं और कछू दूसरीबात। तुमते भाषत भूपति लजात ॥ पुरराज करैंमम अनुज आय। मैंजाबबनै मुनिके बनाय ॥ इतनै हितकिमि भूपै सकोच। कछु कारण और सो मोहि सोच ॥ सुनि रामबैन न्रूपउठे चेत। राजीवनैन देखा उपेत ॥ लियो हृदय लाय करिरुदन भूरि। मोहि छाड़िताात बनजात दूरि ॥ २८ ॥

कुण्डलिया ॥

तब रघुनाथ अनेक विधिपितै कहा समुझाय। बहु पुराण सुनि साधुमत निगम नीति समुदाय ॥ निगम नीति समुदाय भरत करैं राज विशेषी। मैंआयसु धरिशीश जननिके पुनिपद देखी मैंआयसु धरिशीश पहरि बलकल मुनिपट सब। तबपद बन्दि बहोरि जाइहौं कानन को तब ॥ २९ ॥

तोमर ॥

एहिभांति भूपहि राम। कहिगे स्वमातहि धाम ॥ सुतहेत बैठि एकान्त। धरिध्यान उरहरि शान्त ॥ दिय भूरि विप्रन दान। जेहि रामको कल्यान ॥ प्रभुते मनावत मौन। नहिंदीख राजिवनैन ॥३०॥

भुजंगप्रयात ॥

सुमित्र कहा कौशिलै प्रेम पागे। विलोकौन रामै खडे आपु आगे ॥ तबै नैनखोले लखाश्याम रूपै। शरदचन्द्रवारौसुखैपै अनूपै ॥ करस्पर्श गात्रैलियो गोदलाई। कछू बत्सखैये सुधासी मिठाई ॥ कबै

लग्नराज्याभिषेकै सुहाई । सबै औधवासी लखैसुःख आई ॥ ३१ ॥

हरिगीतिका ॥

मोहि दीन्ह राजरजाय बनको मातु अब किमिखाइये । चौदह वर्ष मुनिवेष धरि फलमूल असन विताइये ॥ केकईपाये बरदोजनिज तनै राज देवाइये । मोहि देव जननि अशीष मंगल सहित जंगल जाइये ॥ ३२ ॥

मधुभार ॥

सुनिनृप रजाय । कछुकहि नआय ॥ तन सुधिभुलाय । गिरिमूर्छि जाय ॥ पुनि उठि संभारि । निज उर विचारि ॥ तुम बिना राम । किमि जियब धाम ॥ ३२ ॥

तोमर ॥

दयकैकई बरदान । कुलरीति लोपि निदान ॥ भरतै कियो युव-राज । तुमकीन्ह कौन अकाज ॥ केहि औगुणैनृपचीन्ह । जेहि हेतु कानन दीन्ह ॥ पितुगिरा गरूजरूर । नहिं मातु आयसु पूर ॥ ३३ ॥

दोहा ॥

पितु आयसुबन जानकौ मैंबरजत रघुवीर ।
जोकदापि नहिं मानिहौ प्राण देउं यहितीर ॥ ३४ ॥

मालिनी ॥

सुनि लछिमण कोपे रामचन्द्रे कहाहै । तियबस उनमत्तोभूप ह्वहै रहाहै ॥ तेहि वचन नमानौ राजकीजेविशेषा । तिलकवि घन कर्त्ता मारिहौं मैं अशेषा ॥ ३५ ॥

पज्झटिका ॥

लषि लषण कोप रघुवर अपार । उरलाय सराहत बारबार ॥ तुम शूर शिरोमणि काज जान । ममहित रततन मनसहित प्रान ॥ यै औसर नहिं मन करु विचार । मिथ्या यह जगकर सुःखसार ॥ का राज्य धरनि धन धाम बाम । पितुमातु बन्धु बन्धन निकाम ॥ का देह गेह है पुरिष मुत्र । सेवक समूह का मित्र पुत्र ॥ अज्ञान संग्रहै सुःख स्वल्प । छीजै क्षण क्षण नर आयु अल्प ॥ क्रोधादि करै कैवल्य भङ्ग । ज्ञानी त्यागै इनकर प्रसङ्ग ॥ नन्दनबन सम स-न्तोष जान । अरु शांति कामधुक अधिकमान ॥ देहादिक इन्द्रिन

आत्म भिन्न। पैसङ्गति माने होत. खिन्न॥ जाके उर असि आवै विचार। संसार दुःखौघ होय पार॥ यहि भांति राम लक्ष्मणहि गाय। बहुवार बहुरि माते बुझाय॥ चौदह बरषै बीततन बार। दै आशिष आयसु तजि अवार॥ ३६॥

दोहा।

तब कौशल्या लाय उर आशिष दै बहुवार।
जाउ बनै ब्रह्मादि सुर रच्छा करैं तुम्हार॥ ३७॥

चामर॥

मातु पाद पद्म बन्दि राम जू चले जबै। दीन छीण लक्ष्मणै पिपायनै परे तबै॥ नाथ मोहि साथ लेउ त्यागिये न दासको। प्राण सङ्ग जाय हैं रहै न और आसको॥ ३८॥

नराच॥

चलो वनै सुबंधु वेगि मातकी रजायलै। सहूसिये प्रबोधि हौं कि साथही लवायलै॥ गये सुधाम रामजू पखारि पाय जानकी॥ कहै। तुम्है सुराज लग्न है कबै प्रमाणकी॥ ३९॥

दोहा॥

किमि सुमन्तहू भस्म सहित लैगे राजा पास।
छत्रमुकुट बिनसैन बिन किमि घूमउ निजवास॥ ४०॥

चौपाई॥

बिहसि कहा तब रघुकुल दीपा। हमें दीन्ह बनराज महीपा॥ तुम्है सीष हित इतपगु धारा। वनयात्राकी होत अबारा॥ मम हित सासु ससुर सेवकाई। किहेउ प्रिया जेहि दुःख भुलाई॥ सीता भीता वचन उचारा। केहि कारण वन दीन्ह भुआरा॥ कैकइ नृपहि लीन्ह वरदाना। भरतहि राजहमैं वनजाना॥ बरष चतुर्दश मुनिवर वेषा। नृपआयसु प्रति पालिबिशेषा॥ ऐहौंभवन बहुरि अनयासा। प्राणप्रिया जनिहोसि उदासा॥ नाथ चलै वन तुमते आगे। रहौंन भवन कोटि सुखलागे॥ जो कदापि परिहरि घरजैहौ। मोहि जियत फिरि नाथन पैहौ॥ सुनि रघुपति बनके दुखगाये। व्याल टकादिक दुष्ट सुभाये॥ व्याघ्र सिंह रजनीचरघोरा। मनुज अहार करत बरजोरा॥ ४१॥

दोहा ॥

असन बसन विनहीन तृण महि वरषा तपशीत ।
यहिप्रकार बनबास दुख सुनतहोतमन भीत ॥ ४२ ॥

प्रज्वलिया ॥

सुनुप्राणनाथ करुणा निधान । बनबिपति कही सो सर्वजान ॥ पै प्रतिब्रतन पतिसङ्ग सुक्ख । भोगाढ्य भवनपतिहीन दुःख ॥ राउर समीपको भुवन जोर । जो दुष्ट दृष्टि तकैमोरिवोर ॥ तवचरण चापि फल जूठखाइ । सुखसङ्ग रहवमहिकुश बिछाइ ॥ अरु रामायण मुनि बहु सुनाइ । मैं बिनबन तुमको करबजाइ ॥ जोनाउ बनैमोहिछाड़ि गेह । तौ तुरत तजौंमैं अपनि देह ॥ सुनि सियावचन साचे प्रमा-न । कहराम करौ ममसंग पयान ॥ ४३ ॥

भुजंगप्रयात ॥

तबैराम सीताबिनै साथभारी । दियोरुंधतै सर्व भूषणउतारी ॥ अयोध्या पुरीबासिनै बिप्रबोली । गऊवृन्द सङ्कल्पि दीन्ही अमोली ॥ पुनःस्वर्ण रत्नादि दीन्हो घनेरा । लखेजाहि लाजै सुरेशौ कुवेरा ॥ सबैमातु केटेरिलै दासदासी । दईसंपदा भूरिकीन्हे सुपासी ॥ ४४ ॥

दोहा ॥

पुरबासिन परितोष करिलीन्ह जानकिहि साथ ।
गवनेतबै निकेतते सुमिरि भवानी नाथ ॥ ४५ ॥
लक्ष्मण सौंपि सुमित्रै कौशल्यै बिलखाय ।
धनुशरलै मारग मिलेराम सियै सुखपाय ॥ ४६ ॥

कवित्त ॥

अतसीसुमन समश्यामल कोमलकल अंगअंग अमित अनङ्ग छबि वारिजात । करवर सोहत शरासन सुभग शर साथ पाय सुवरण द्युति मिथिलेश जात ॥ चरण तलन लखि शरदसमय भवतरुण अरुण अति बारिजात हारि जात । ईश्वरी बिलोकि मुनिपुर नरनारि तब शिर धुनिधुनि सबजित तित बिलखात ॥ ४७ ॥

प्रज्वलिया ॥

तब बामदेव मुनिबर प्रवीण । लखिराम शोकपुर लोगछीण ॥ तब पूर्वकथा सबहिन सुनाय । येरमाविष्णु सियराम आय ॥ येलषणजानु

शेषावतार । सियराम ब्रह्म वाणी विचार ॥ ये उमादह्न प्रलयान्त कार । ह्वै मीनमही कृतनाव धार ॥ मथिसिंधु पीठिनिज धरि पहार । ये रामकूर्म रतनन निकार ॥ हिरण्याक्ष गयोलै कूपताल । तेहि मारियापि महि पुनिकृपाल ॥ नरसिंह भयो प्रह्लाद हेत । बावन ह्वै बलिछलि बसिउपेत ॥ छितिछीनि दुष्टक्षत्रिन संहारि । भेपरशुराम महिभार हारि ॥ सोइ राम रावणै बधनहेत । चले बिपनि लक्ष्मण सीतासमेत ॥ ४८ ॥

तोटक ॥

रजनीचर धारि संहारसबै । पुनिराजकरैं पुरआय तबै ॥ महि भार उतारन नारदही । बनजान कह्यो रघुनाथ तही ॥ नहिकेकइ रानहि दोषअहै । नरमुक्ति लहै जोय रामकहै ॥ प्रभुतौन करै जब जौनचहै । कलिकाल विशेष जोनाम गहै ॥ न्टपकी तपसाफल सिद्ध कियो । हरिआपुहि मानुषरूपलियो ॥ पुरलोग नबातसुनी जबही । निजजन्म कृतार्थ लखा सबही ॥ ४९ ॥

भुजंगप्रयात ॥

सियायोगमायासदारामकेरी । सृजैसृष्टिपालैसंहारैघनेरी ॥ कही गोप्यलीला जबै बामदेवा । मिटीसर्व संदेह जानाधिदेवा ॥ ५१ ॥

तोमर ॥

तबस्नात सीय समेत । गयराम भूपउपेत ॥ कहकेकई सनजाय । हमतौनिज जनआय ॥ अबमातु आयसुहोय । गवनैवनै जेहिसोय ॥ सुनतै उठी हरषाय । मुनि चीर दीन्ह सुआय ॥ स्वइसीय लक्ष्मण राम । पटबेष्टि कीन्हप्रणाम ॥ लषिरोवतीं सबनारि । नहिं अंगरुकै सह्मारि ॥ ५२ ॥

नराच ॥

कहा महीप मंत्रि सोरथै चढ़ाय राम को । बनौ देखाय लाइयो बहोरिवेगि धामको ॥ बिलोकि दैतनै सियासमेत भपभूपरे । कहैन आवबैन नैननीरसो कहीभरे ॥ ५३ ॥ पिते प्रणाम रामकै मेतजान की चले । उभैकृपाणतूणसार्ङ्ग लक्ष्मणोपि लैभले ॥ चढ़ेरथै गमेबनै गुरूगिरीश ध्यायकै । पहुंचबेगि तामसा नदीनगीच आयकै ॥५४॥ जलंप्रपास्य दृक्षमूल सोय सोनि यारहे । सुधारिबान कार्मुकै सुबैठि

लक्ष्मणोगहे ॥ समस्त ग्रामलोग बालवृद्ध संग लायकै । कछुक दूरि लौटिके बियोग राम पायकै ॥ ५५ ॥

चामर ॥

अर्द्धरात्रि राम जागिसाजिगे निजैरथै । सोहिहेतु ग्रामलोग दुःख पावते ह्यथै । शृंगवेरके समीप गंगतीर ठाढ़भे । पायनै परौ निषाद आयप्रेम गाढ़भे ॥ ५६ ॥

दोहा ॥

राम लषण सीता सुमति सहित नहाये गंग ।
बैठे शिंशुप तरुतरे निरखत बिमलतरंग ॥ ५७ ॥
इत पुरवासी प्रातउठि लखान लक्ष्मण राम ।
इतउत खोजिन पावजव घूमेदुख युतग्राम ॥ ५८ ॥

नराच ॥

बिनयकरी निषादआय रामसों बनायकै । करौपुनीत मोरधाम नाथ आजु जायकै ॥ सखाहमै पिताररजायदैन ग्राम जानकी । चतुर्दशैव वर्षलों मुनिमतै प्रमाणकी ॥ ५९ ॥

भुजंगप्रयात ॥

बटैक्षीर मांगासखा वेगिलायो । जटा शीशपै बंधुदूनौ बनायो ॥ जलंप्राश्य सीता सिया नाथकै कै । कियो सैन रात्री त्रिनौघ डसैकै ॥ ६० ॥ तवैबाणचापासि सौमित्रलीन्हा । सबैशर्वरी जागिरक्षा सुकीन्हा ॥ लखा राम सीतै मही सैन कीन्हे । निषादाधिपौ केकई दोष दीन्हे ॥ कहा लक्ष्मणौ दोष दीजेन काहू । करै कर्म सुक्खैघ दुःखौघलाहू ॥ निशासर्व बीती उठेरामसीता । कियोस्पर्श गंगाजलै सो पुनीता ॥ ६१ ॥

मालिनी ॥

प्रभुगुहहि बोलायो नावलावो उतारौ । तुमभवनिधि तारौ नाम लैहोतपारौ ॥ तदपि प्रभुकरौं मैंआजु आज्ञा तुम्हारी । मोहि तोहि यहनातो फेरि बारी हमारी ॥ ६२ ॥

दोहा ॥

कीन्ह सुमंतै बिदाप्रभु बहुबिधि करि मनुहारि ।
नईनाव मंगवाय गुह गंगादीन्ह उतारि ॥ ६३ ॥

सोरठा ॥

गंगहि विनयसुनाय। सीतापति देवर सहित ॥
तवपद पूजौं आय। मातु मनोरथ करु सफल ॥ ६४ ॥

प्रज्झटिका ॥

गुह कहा सुनौ करुणा निधान। संगलेउ मोहि नतुतजौ प्रान ॥ सुनुसखा चतुर्दशवर्ष बीति। तोहि मिलौं आइपुनि सहित प्रीति ॥ असकहि रघुबरउरलाइलीन्ह। समुझाइ विविधि तेहिविदाकीन्ह ॥ कछु दूरिजाइ फल कंद लाइ। रुचि सहित रामसिय लषणखाइ ॥ तरुतर सोयेसुख सहितराम। उठिप्रात न्हाइगे त्रिवेणीधाम ॥ वटु एक पठै सो ऋषिहि गाइ। इत रामसिया लछिमण आइ ॥ सुनि भरद्वाज मुनिदीखजाइ। सियराम लषणगृह पूजिलाइ ॥ बैठारिसुभग आसन विछाइ। अमृतसमसुन्दर फलखवाइ ॥ तबविनयकरत जलनैनपूरि। गदगद बानीउर प्रेम भूरि ॥ जै रामचंद आनंद कंद। जैसीतापति माधो मुकुंद ॥ जैजानत जोतुम करनहार। विधि प्रार्थन तेनर देह धार ॥ महिभार हरण बनगवन कीन्ह। चाहत सुर ऋषियन सुक्ख दीन्ह ॥ ६४ ॥

दोहा ॥

आजुतपस्या फललह्यो भयोंकृतारथ नाथ।
बहु प्रशंसि मुनिभाग निज तव दर्शन रघुनाथ ॥ ६५ ॥

चौपाई ॥

जापर कृपाकरौ मुनि ज्ञानी। तेहि समवड़जग कोउनप्रानी ॥ कुल वंश हमतव पददेखा। को सुकृती तेहि सरस विशेषा ॥ यहि विधि करत परस्पर बातैं। उठेरामसिय लषण प्रभातैं ॥ मुनिहि दंडवत् करि रघुराई। लीन्ह साथवटुवृंद बोलाई ॥ तिन यमुना सरि दीन्ह उतारी। प्रभुहि बतायो सुमगबिचारी ॥ पुरपुर प्रतिमगदेतअनंदा। पहुंचे चित्रकूट रघुचंदा ॥ बालमीक आश्रम शुभदेखा। मुनिन वृंद वरविटप विशेषा ॥ मुनिहि देखि लछमण सियरामा। महिलगाइ सिर कीन्ह प्रणामा ॥ राम लषण सियरूप निधाना। देखत मुनि त्रिभुवन पतिजाना ॥ परमानंद सहित मुनिराई। सहसाउठि भेंटेउ दोउभाई ॥ ६६ ॥

दोहा ॥

पूजनीय संसारके पूजा ऋषिहित जानि।
आसन सुचिफल मूलरुचि भोजन दीन्हे आनि ॥ ६७ ॥

चामर ॥

पानि जोरि रामचंद्र बाल्मीक तैं कहा। भूप की रजाइ मोहिं दंडकै चहो रहा ॥ आश्रमै बताउ यत्र सीय संग सुक्ख से। बास कीजिये कछू दिनै बिहाइ दुःखसे ॥ ६८ ॥

नराच ॥

सुनासु रामबैन बाल्मीक सस्मितै कहे। त्वमेव सर्वलोक बास लोकहू तुम्हैं रहे ॥ जलं थलं सुजंगमं जडं समस्त देखिये। शिवादि कीटलौं तुम्हैविनान और पेखिये ॥ ६९ ॥

तोटक ॥

रघुनाथ विशेष जो बास चहौ। बरनौं तितही तुम जाइ रहौ ॥ समदृष्टि अदोष सुशांतजनं। तेहि जौन भजै वसुताहि मनं ॥ सब धर्म अधर्महि त्यागकिये। त्वहिजौन भजै वसुताहि हिये ॥ शरणागत ह्वैतव संत रटै। निरद्वंद अकांक्षि विकार मिटै ॥ अरु कांचन लोह समानगनै। सियराम बसौतिन शुद्धमनै ॥ लघुलाभहूते संतोषसदा। शुभकर्म समर्पहि तोहिमुदा ॥ खल संगतजै सतसंग गहै। तिनके उरराउर धामअहै ॥ ७० ॥

छप्पै ॥

निसिदिन तव उर ध्यानधरै षटहरै विकारै। शिव प्रनाम सुख नामकरन पूजा विस्तारै ॥ चरणन चलितुव धामनैन दरसन अभिलाखी। पटप्रसाद करिपहिरि जियत जूठनि तवचाखी ॥ प्रभुहेतकरै जपयोग व्रतकरम बचन तनतव शरण। सिय लषण सहित रघुबंश मणिबसौ बिमल तिन हिय घरन ॥ ७१ ॥

चौपाई ॥

सुनौराम निजनाम प्रभाऊ। कहिकिमि सकैगिरा अहिराऊ ॥ पूरुव महूं किरातन संगा। करौं विपुल जीवन तन भंगा ॥ जनममात्र ब्राह्मण तनमेरा। शूद्र आचरन करौंघनेरा ॥ शूद्रिनपुत्र बहुत उपजायो। चोरन मिलि चोरीमन लायो ॥ लै धनुबान जाउवन-

माहीं। जीवनबधौं दयाकछु नाहीं॥ सप्तऋषिन देख्यों इकबारा। रविसमान तनतेज अपारा॥ लोभविवस तिनघेरेउ जाई। पूछासुनि मोहिंको तेंआई॥ तबअसकह्यों कुटुंब बहुमेरे। विकल बुभुच्छित रहैंघनेरे॥ तिनपालन हितकानन आई। छीनिलेत मैंदरबि पराई॥ पूंछिआउ कुटुंबिन निजसोऊ। तवकृत पापन सामिल वोऊ॥७२॥

दोहा॥

जबलगि तुमदूत आवनहिं तबलगि जावन अंत।
निहचै लखिमुनि वरबचन मैंगृहगयौं तुरंत॥७३॥

चौपाई॥

पूंछि कलत्रहि पुत्रन जाई। ममकृत पापन तुम समिलाई॥ तिन मोहिं कहाकरौ जो पापू। करिहौ भोगसबै तुमआपू॥ निज निज कृतफल देइविधाता। कहसि दुष्टतैं किमि असिबाता॥ सुनि असबचन गयौं अकुलाई। सुनिदरशन विशुद्ध मति आई॥ तुरत तबै धनुबान फेंकायौं। सुनि दयाद्र पहं आतुर धायो॥ परो दंडवत ऋषिन अगारी। रक्षमोहि निरनार्नव भारी॥ उठुउठलोरभयोकल्याना। सत संगति प्रभाउ अनुमाना॥ देव तुम्हें उपदेश विशेषा। पैहौ जाहि मुक्ति की रेषा॥ असकहि सब मिलि कीन्ह बिचारा। मरा मंत्र तैंकरसि अधारा॥ जपसि निरंतर कपटबिहाई। जब लगिफिरि हम इतैन आई॥७४॥

दोहा॥

मोहिं उपदेशि मुनीशगे दिव्यदरश सुख खानि।
मैंएकाग्र लगाइ मन जपौं परम हित मानि॥७५॥

नराच॥

विहीन संगनिश्चला समाधि लाइकै जपौं। सहौंसमस्त वारिवात सीतग्रीष्म मैंतपौं॥ बबूर सर्व अंगढापि जापचित्त लायऊ। जुगौहजारबीति गेतबैरिषीस आयऊ॥७६॥

तोटक॥

उठु ब्रह्मऋषे हरषाइ अबै। तब सिद्ध भयो जप जोग सबै॥ सुनि के वर बैन उठ्यो सुनतैं। जनु सूर्य प्रकाश कियो घनतैं॥७७॥

तोमर॥

वल्मीक संभव जानि। मुनि बालमीक बखानि॥ धामनगेसु-र धाम। तवते लह्यौ अभिराम॥ उलटा जपे तवनाम॥ लषि आजु सीतहि राम। सहलक्ष्मनौअभिराम॥ कमनीय शोभा धाम॥७८॥

चामर॥

एक बार देवराज पर्वते सुआयऊ। गंगके समीप है कुटी विचित्र छायऊ॥ बालमीक राम सोंकहा चलौ देखाइये। जानकी समेत तत्तसर्व सुक्खपाइये॥७८॥ गयेवसेख आश्रमै सुखीरहै तहांसदा। जथा सची जयन्त संगदेव राज है मुदा॥ समस्त बेलि वृक्षयत्र कल्प वृक्ष से फरे। प्रपूज्य बालमीक आदि नित्यही मुनीश्वरे॥७९॥

प्रमाणिका॥

पुरै सुमंत आयऊ। उरैस सोक छायऊ॥ मुखै पटै लपेटेऊ। नृपैसु आय भेटेऊ॥ जयेति जैसुनावते। कहा सुराम आवते॥ न आयको गयेवनै। नरेश शोकसों भनै॥८०॥

मालिनी॥

बहुविलपत राजालक्ष्मणै रामसीतै। अति दृढ़ व्रतनेसै धर्म कर्मौ पुनीतै॥ जिनकुटिल निदेशै मानिकै दुःखपायो। छुगछुग समबुद्धिं नारिविश्वास आयो॥८१॥

दोहा॥

रूपशील गुण बुद्धिबल सुयश प्रताप सुभाउ।
रोयरोय शिरमहि धुनत हृदयविसूरत राउ॥८२॥

नराच॥

तौ सुमंत पानिजोरि पाइलागि कै कही। नरेशधीर आनिये जो शोकपार कोचही॥ गयोचढ़ाइ रामसीय लक्ष्मनै जबैरथै। सखाभल्यो निषाद आयशृंगबेरके पथै॥८३॥ प्रनामकै फलादि मूलआइपास लैधरे। नयाद्य कीन्हराम तैानप्रीतिसों छुयेकरे॥ हमैंकहा कह्यौ नृपै नशोक भार कीजिये। बिताइऔधि आइहौं सुप्रौध को पतीजिये॥८४॥

भुजंगप्रयात॥

सबैमातनै मोरिभाख्यौ प्रनामैं। सोई कीजिये दुःखभूपै नजामैं॥ हमैकाननै सुक्ख साकेतदूनो। करैनाकोऊ नेकहू चित्तऊनो॥८५॥

दोहा ।

प्रातहोत बटछीर लै केशन जटा बनाइ ।
तबसुरसरि उतर न लियेचढ़ नावपर जाइ ॥ ८६ ॥

तोमर ।

सियमोहि काहन चाह । कछुवैन सोलखि नाह ॥ तबराजको रुख पाइ । केवट सुनाव चलाइ ॥ हमदेखि जीवत आइ । बरना सोतुम्है सुनाइ ॥ कहिमंचिरहा चुपाइ । सुनतै नृपौ मुरझाइ ८७॥

भुजंगप्रयात ।

तबै कौशिला भूपको दीन देखा । चहै शोकते प्राण छांड़ो विशेषा ॥ अहोनाथधीरैधरौ कैविचारै । गयो जोचहै शोकसासुद्र पारै ॥ मिलैंज्यौं तनैद्वै सियासाथ आई । समौ जानिकै कीजिये सोउपाई ॥ सुनौ रानिमै पूर्वही साप पाई । मरौ पुत्रके शोक ते भूप जाई ॥ गयों जौबने जंगलै मैं अखेटै । पठायो तपीनीर के हेतुबेटै ॥ सुनाकुम्भ शब्दै जबैबूडपानी । निशैाना विलोका करी घोर जानी ॥ हन्यौं शब्दवेधी शरैसैं कठोरा । गिराबागतै विप्रकै घोरघोरा ॥ विना दोषके दुष्ट लैप्राण मेरे । सुना संकिकै मैंगयों ताहिनेरे ॥ ८८ ॥

चौपाई ।

सुनुस्वामीमैं निपट अयाना । अनजानत मारा तोहि बाना ॥ मैंदशरथ सा.तभुवाला । चाहिमोहिसुनि परमकृपाला ॥ असकहि चरन पर्यौंअकुलाई । गदगद कण्ठन कछुकहि जाई ॥ कह मुनि डरमिन अवध नरेशा । ब्रह्मदोष तोहिं होइन लेशा ॥ ममपितु मातु दृषित चखहीना । तिन्हैदेउ जल नृपतिप्रवीना ॥ नतु कोपी जो पिता हमारा । तुम्है छनहिं में करिहैं छारा ॥ ताहि बिशल्य देहमैं कीन्हा । जललै तुरत दम्पतिहि दीन्हा ॥ कहांअन्ध सुतदेर लगायो । चिन्ता विपुलहमैं करवायो ॥ तबमैं चरण पर्यों कहि पाहीं । मैंदशरथ तुम्हार सुतनाहीं ॥ तिनपूछा मैं कहबिस्तारा । धोखे जेहि तापस सुत मारा ॥ रोये दम्पति सुनत अधीरा । मम संगगये पुत्र के तीरा ॥ कर परसातिन पुत्र शरीरा । बिलपतनिस बीती गंभीरा ॥ ८९ ॥

दोहा ।

प्रात चिता बनवाय मोहिं दम्पति पुत्र समेत ।
जरे महानल तुरतही पहुंचे देव निकेत ॥ ९० ॥

प्रज्वलिया ।

कह अन्ध नृपति तैं सुत बियोग । मरिहौ निश्चय यह मम नि-योग ॥ सोय समै प्राप्तमोहि भयो आय । सियराम बिरह नहिं सहो जाय ॥ हाराम लषण सीता समेत । हा जगन्नाथ सब गुण निकेत ॥ हाराम राम सिय लषण राम । तन तजि भूपतिगे देव धाम ॥ ९१ ॥

भुजंग प्रयात ॥

सबै कौशला औसुमित्रादि रानी । उरै ताड़तीं रोवती दीन बानी ॥ सुमन्तादि मंत्रीवशिष्ठादि आयो । भस्योतैलद्रोणी नृपैगाच नायो ॥ बोलायो महावेगदूतै सिखाई । गुरू आज्ञया भर्त्त आवैं सभाई ॥ हयारूढ़ह्वैपौनकी गौनधाई ।युधाजिन्नृपैभर्त्त कोशीशनाई ९२

दोहा ॥

गुरु आयसु सानुज भरत अवधहि आवैं दौरि ।
चले बंधु दोउ तुरतही बातन पूछी औरि ॥ ९३ ॥

हरगीतिका

नांघत सरित सरशैल कानन अवध पहुंचे आइ कै । लखि भ-ष्ट शोभा जन न बोलत ह्वै रहे कुम्हिलाइ कै ॥ चिन्ता करतगे राजमन्दिर देखि लाग भयानकै । लक्ष्मी बिहीन मलीन निर्जन मनहुं भूमि मसानकै ॥ ९४ ॥

नराच ॥

लखी भरत्त केकई अकाश ने बिराजई । हृदय बिषाद दूनभो बिहीन पार्श्व राजई ॥ कियो प्रणाम मातको उठी सुतै बिलो-किकै । हिये लगाय शीष सूंघिनैन नीर रोकिकै ॥ ९५ ॥ प्रपच्छ च्छेम नैहरै सुखी स्वमात तातहै । बधू समेत दारिका कुमारयुक्त भ्रातहै ॥ प्रजा समेत पुत्र पौत्र है खुशी सबै धनी । गजाश्व बाह-नो अनेक है बनी अनी घनी ॥ ९६ ॥

प्रमाणिका ॥

सबै खुशी स्वनैहरै । कहौ सुच्छेम मेंघरै ॥ कहां पिता बिराजहीं ।

सुभ्रात पुत्र भ्राजही ॥ तुह्मै बिना न राजह्न । विराजते समाजह्न ॥ इहान देखिये कह्न । एकान्त बैठि क्यौंताह्न ॥ बताउ बेगितातह्न । हमैं न चैनहै कह्न ॥ कहा सुरोइ केकई । सुनौ सुपुत्र जो भई ॥ महान भावशीलजे । सदा गोबिन्दजी भजे ॥ अनेक बाजिमेधने । गतिंगयो तज्यौ तनै ॥ सुना नवै पिता मरे । सशोक भर्त भूपरे ॥ पुकारि तात तातहो । नसौंपि मोहि भ्रातहो ॥ ९७ ॥

चामर ॥

मातु पुत्र गोदधारि अंग झारि भाषेऊ । मैं तुह्मै लिये सुधारि बात सर्ब राखेऊ ॥ तात क्यौं मरे सुनाउ केकई बतायऊ । राम सीय लक्ष्मणै सुभूप शोक पायऊ ॥ ९८ ॥

प्रजुलिया ॥

कहां रहे राम कछु मोहि सुनाइ । केहि कारण भूपति शोक-पाइ ॥ तुव पिता चहा रामाभिषेक । मैं बिघन कीन्ह करि कठिन टेक ॥ मोहि दीन्ह पूर्व बरदान दोइ । एक मांगि भरतको राज होइ ॥ दूसर मुनि बनिबन रामजाइ । चौदह बरषै फल मूलखाइ ॥ नृप सत्य व्रत तोहि राज दीन्ह । तुरतै रामज्ञ बन गौन कीन्ह ॥ पतिव्रता सियासुनि साथलागि । लक्ष्मणौ बंधु संग गयो भागि ॥ तिन शोक भूपरटि राम राम । सिय लषण टेरिगे देवधाम ॥ सुनि गिरे भरत सुधि रहि न गात । जनु पतत भूमि द्रुम बज्र-पात ॥ ९९ ॥ पुनि पुत्रहि केकइ कह बुझाइ । किमिशोकत मह-तो राज पाइ ॥ किमि पापिनि जल्पत असभाख । तवतन भवतनसो करो खाख ॥ असिलाइ मरौं कि गरलखाइ । पितु बंधु बिमुख ह्वग जियत्र धाइ ॥ जैहसितैं कुंभी पाकघोर । पतिघातिनि अति तव उर कठोर ॥ १०० ॥

दोहा ॥

तेहि गलानि दै भरत तब दीख कौशिले जाइ ।
बिलपतदीन मलीन कृशपरी धरणि अकुलाइ ॥ १ ॥

भुजंग प्रयात ॥

गिरे मातुके भर्त्तह्न पांइ रोई । ह्रदै कौशिला देखतैलाइसोई ॥ कहो मातु मोसी अघीहै न कोई । तिह्नलोक मेमैंलखा सर्बजोई ॥

जिन्है कारणै सीय रामौ सभाई । बनैगे मरे भूपह्न शोक पाई ॥ किये कैकई कर्म नेकौ जो जानौ । कहौ जौनमैं मातु सो सत्य- मानौ ॥ लगै ब्रह्महत्या गुरूगाय मारे । कछू छैपह्न सम्मतो जो ह्मारे ॥ २ ॥

दोहा ॥

भरत शपथ सुनि कौशिला कहतुम शुद्ध सुभाय ।
तुम्है प्राणसम रामसिय तुमप्रिय अति रघुराय ॥ ३ ॥

नराच ॥

वशिष्ठ वामदेव आदि प्रातहीत आयकै । सुमन्त्र से समस्तलोग भर्तको बोलाय कै ॥ पुराण ज्ञान सम्मते सुनीश सो सिखाय कै । अशोककै कुमारदोउ हृदैप्रबोध लायकै ॥ ४ ॥

दोहा ॥

गुरु आयसुते भरत नृपक्रियाकर्म सबकीन्ह ।
धरणि धेनुधन बिविधि बहुमहि देवनको दीन्ह ॥ ५ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

नहिंशोच योग दशरथ भुवार । असभयोनहै नहिं होनहार ॥ जगयश प्रताप जेहिरह्यौ छाय । श्रीराम सरिस सुत चारि पाय ॥ कियोबिपुलयज्ञ दियोअमितदान । लहिसर्वसुक्ख सुरपति समान ॥ जेहि सत्य प्रतिज्ञा जगत जान । निज वचन हेततजि पुत्रप्रान ॥ ते वचनवत्सकीजे प्रमान । जेहिसुखलहैनृप सुरपुरनिदान ॥ बनगयो रामजे वचन मानि । तुमकरौ राजतजिकै गलानि ॥ ६ ॥

कुण्डलिया ॥

सुनि मुनिबानी हृदयगुणि भरतजोरि युगहाथ । मनसा बाचा कर्मणामैंसेवकरघुनाथ ॥ मैंसेवकरघुनाथ प्रातकाननहिंसिधारौं । सीतालषण समेत रामपदपद्म निहारौं ॥ सीतालषण समेतराम राजा ह्वैहैंपुनि । मैंआयसु अनुसरौं भये आनन्द सबैसुनि ॥ ७ ॥

मधुभार ॥

सियलषणराम । बनसहैकुराम ॥ मैंअवधधाम । रहिहौंअराम ॥ यह भरत जानि । उर करि गलानि ॥ दृढ़ मंच आनि । बन गवन ठानि ॥ ८ ॥

मालिनी ॥

यहमोहि वरदीजै काननै भोरजैहैं। सियलक्ष्मण रामैं औघघामैं पठैहैं ॥ मुनिव्रत फलखाई मैरहौं तत्रजाई । जोहविधि कुटिलाई मातजांमोरि जाई ॥ कहिवचन चुपाई नैननीराधिकाई । तबकरौंप नबडाई भर्त्तको भूरिगाई ॥ अस मत करि प्रातै गौनकै बंधुदोऊ । पुरजन सब माता कौशला आदि सोऊ ॥ सुन गुरु सबसेना लै सुमंतै सिधाये । सुरसरि बरकूले श्रृंगबेरै सुआये ॥ सुनि गुहतब भर्तै आयऊ सैनसंगा । करिमनहिबितर्कै रोकेऊ घाटगंगा ॥ ९ ॥

नराच ॥

सबैसखा बोलाय नाउनाउलै पुकारि कै । रह्योसचेत अत्र सर्व अस्त्रशस्त्र धारिकै ॥ गयोकृपाणबाणबांधि लोगलै निषादह्व । लख्यौ भरत्तको समीपकै हृदय बिषादह्व ॥ १० ॥

भुजंगप्रयात ॥

घनश्याम शोभा जटाजूट धारी । लसै नैन राजीवनीराधि कारी ॥ कटिंवल्कलं बेष्टितं चीरचारुं । रटैरामनामैहिये शोकभारुं ॥ निषा- दौ धरी दूरिते भेंटआगे । करीदण्डवत् नामलै प्रेमपागे ॥ गुहैनाम सुन्तै सखाराम चीन्हा । उठैभर्त्त ताको हियेलाय लीन्हा ॥ ११ ॥

हरिगीतिका ॥

हियलाय ताहिप्रशंसि पूछतरामलक्ष्मणजानकी । कहभेटतोहि देखाउ मोहि जहं शैन कृपानिधानकी ॥ गुहसाथभरत तुरन्तगवने गंगतट सिंसुपतलं । कुशतरन सिय आभरण सुबरण बिंदु अंकित भूतलं ॥ सियसैन लखिबह्योनैन नीरजनीरहिय अतिदुखभरे । धिग मोहि केकई सुतसमान नपाप निधिबिधना करे ॥ येरत्नमणिमंदिर प्रजंकन रुचिर कोमल बिष्टरे । तेराम सिय ममहेत महिअबडासि कुशकासनपरे ॥ धनिधन्यलक्ष्मण जन्मबन प्रभु कमल पदसेवत मुदा । घरबनहुसन्तत दिवसनिसि संगरहत ज्यौं फनिमणिमदा ॥ कहुसखा कहसियराम मोहि नियाउ पददरशाय कै । गुहजानि शुद्ध सुभाव भरतहि कही कथा बुझायकै ॥ १२ ॥ हेदेवतुम अतिधन्य जेहिमन रामपद पंकजरहै । पुनि चित्रकूट निवास मन्दाकिनि निकट सोसब

कहै । मुनिबालमीक समीप आश्रमराम लक्ष्मण जानकी ॥ निवसत सुखेनसमेत मुनिगण कृपाऽरुपा निधानकी ॥ १३ ॥

नराच ॥

प्रभातभर्त्त आज्ञया गुहै। न नेक वारकै। मंगाइ नावपंचसै ससैन गंगपारकै ॥ गयेप्रयाग मौनिराट आश्रमै सुदेखिकै। पधारि सैनदूरि दै कुमारगे विशेषिकै ॥ १४ ॥ लसे स्वआश्रमै मुनीश ज्यौं द्वितीय पावकै ॥ कियो प्रणाम बंधु दोउ महान भक्ति भावकै ॥ विलोकि दै अशोष औधरान पुत्र जानते॥ प्रपूजिपूछि मंगलै असीनकै सुमानते ॥ १५ ॥

भुजंगप्रयात् ।

तुम्है भूप कीन्हा अयोध्याधिराजा। किमेतंजटा वल्कलै अंगसाजा॥ कहा भर्त्तहू रोयकैदीन वानी। कियोकैकई रामकीराजहानी॥ पठै दण्डकै सीयरामै सभाई॥ कहौंसत्य तव पांयकी सौंहखाई॥ विना जानमेरे कियो मातुऐसी। गहैग्लानिनै आयदेखा अनैसी॥ १६ ॥

प्रज्ज्वलिया ।

तुमजानत सबकाकरौं बखान। जिनसम त्रिकालदरशी नआन॥ श्रीनाथराम अछत नरेश। मोहिकौन राजपद होतलेश॥ मैकिंकर आयसुलहि अघाउं। अबदेखन बनप्रभु चरणजाउं॥ सम्भार तिलक करलै अनेक। गुरु करिदै बन रामाभिषेक॥ लावो बहोरि सिय पतिहिजाय। यहिहेत नाथसैं करिउपाय॥ सुनिभरत वचनमुनिउर लगाय। शिरसूंघिकोन्ह बहुविधि बड़ाय॥ तुम ज्ञानबान अति ज्ञान दृष्ट। श्रीराम चन्द्रके भक्तश्रेष्ट॥ तवसुयश विमल विधुकियो प्रकाश। पूरणदिशि दिशि विमलहि अकास॥ अब सैनसहित फलखाउमोर। सियराम लषण पहंजाउ भोर॥ सुनि गिरा गरुवतब भरत मानि॥ प्रथमै वशिष्ठ ऋषि पूजिआनि॥ १७॥

दोहा ।

तपवल सुरधेनुहि प्रठैटपित कियो सहसैन।
सुधासरस भोजन दियो सैनदियो रचिऐन॥ १८॥
अतिअनन्द सोयेसकल अवधहु अधिकनिवास।
मुनि प्रभाव सुरपुर सरस कीन्होभोग विलास॥ १९॥

भुजंगप्रयात ॥

उठे भर्त्त शत्रुघ्न लै सैनप्राते । भरद्वाजको वंदि गवने तहाते ॥ गये चित्रकूटै पयादे सभाई । गजाश्वादि वाहनरहे कोतलाई ॥ टिकायो तहां साथ की सैनदूरे । सुमन्तौ गुहौबंधु दोउ प्रेमपूरे ॥ गये राम शाला समोतै तपस्वी । बतावो कहां राम सीता यशस्वी ॥ गिरिस्य-स्त्रिमेगंगकें सौम्यशाला । तहां राम सीता महा तेजमाला ॥ तिन्है लक्ष्मणोसेवते सानकूलै । फरेदृक्षज्यौं पारिजातौन तूलै ॥ २० ॥

कवित्त ॥

सुरतरुके समान विविधि विधान तरुवेलिन वितानतने शोभासर-सावते । ऋतुअनऋतु सबफूलफरे भारभरे मण्डितसुगन्ध स्वादसुधा को लजावते ॥ वयर विहीन खगम्रग हन्दविचरत मुनिगण ध्यानधरे ब्रह्म सुखपावते । तहां रामसीता पदलालत लषण लाल भरतदरशि उरआनन्द बढ़ावते ॥ २१ ॥

हरिगीतिका ॥

सियरामपदअंकित अवनि कुलिशादिरेख सुहावनी । सोइचीन्हि रजसानुज भरत शिरधरत निजनिज पावनी ॥ यहिभांति करिदण्ड-वत् सम्मुख जायप्रेमातुर महा । लखिलीन्ह हृदय लगाय क्रपानिधान दोउ भाइन तहा ॥ २२ ॥

नराच ॥

पुनःपुनःभरत्तह उठोचहै नपावते । हृदयलगायबारबार रामचन्द्र भावते ॥ मिले बहोरिसीयके पदारविन्द शीशसे । दियोदोऊ कुमार नै सनेहसे अशीषसे ॥ २३ ॥ चलीसमूह कौशिल्यादि रानि पुत्रनै मिलै । विसारिसुद्धिदेहकी टषार्तगो यथाजलै ॥ दयाद्र रामलक्ष्मणौ सुधायधीरत्यागिकै । मिलेसमस्त मातनैसप्रेमपाय लागिकै ॥ २४ ॥

मधुभार ॥

लखिगुरुहि आय । श्रीरामनाय ॥ लक्ष्मणसमेत । पदपरि उपेत ॥ निज धन्य मानि । बहुबिधि बखानि ॥ गुरु अपन जानि । करि क्रपा आनि ॥ २५ ॥

हरिगीतिका ॥

हैतातकुशल समेत जेहि उरमेरशोक अपारहै । सुनिराम वचन

विनीत मुनिचुप साधि करत विचारहै ॥ पुनिकह्यौ सकुचि वियोग तवकहि रामलक्ष्मण जनकजा । हाराम रामपुकारि सुरपुर गयोनृप निजतन तजा ॥ सुनिशूल समवाणी अहित नहांतात तात पुकारि कै । गिरेअौनि लक्ष्मणरामसीता रोइततनसम्हारिकै ॥ बहुभांति करतविलापरानिन सहित पुरवासी तबै । उपदेशि ज्ञानपुराण मत समुझाय गुरुज्ञानी सबै ॥ २६ ॥

बरवै ॥

रामलषण मन्दाकिनिगंगनहाय । नृपकोदीन्हतिलांजलिसुनिरुख पाय ॥ २७ ॥ इंगुदि फलपिन्याकहि मधुहिमिलाय । दीन्हा पितरहि पिण्डा अस्मृतिगाय ॥ २८ ॥ भयेशुद्ध पुनिन्हाये लक्ष्मणराम । नयन नीरभरि आयेनिज विश्राम ॥ २९ ॥ तेहिवासर व्रतकीन्हा सहित समाज । प्रातन्हाय सबबैठे जहंरघुराज ॥ ३० ॥

हरिगीतिका ॥

तब भरत कहकर जोरिरामहि हेतुलै सम्भारही । सब तिलककै राज्याभिषेक सुनीय तुमहिसवारही ॥ तुमज्येष्ठ श्रेष्ठ पितासमान निदानमहिपालन करौ । यह क्षत्रि धर्म महान दीनप्रजान दारिद दुख हरौ ॥करियज्ञबहु यशलैविपुल उत्साहपुत्रहिराज्यदै । तबआय पालिरजाय पितुकी बास बनकीजेमुदै ॥जोमातुकृत औगुणविचारौ तौशरणलायक नहौं । भरतपरि अकुलाय पायनदइव कहि पाहि हौं ॥ ३१ ॥

नराच ॥

उठायराम अंकलाय प्रीतिसों बुझायऊ । कहौखतौ नहीं कर विशोच एक आयऊ ॥ चतुर्दशैव वर्षभूप मोहिदीन्ह काननै । तुम्हैं स्वराज अर्पिसत्य राखि त्यागिप्राणनै ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

हमतुम दोऊ बंधुमिलि कीजैपिता रजाय ।
सोजीवतते मृतकभयजोहठि नरकैजाइ ॥ ३३ ॥

सोरठा ॥

भरत कही यहजानि । इस्त्रीजित उन्मत्त नृप ।
हृदयभ्रान्तिकहिबाणि । तासुवचन किमिमानिये ॥ ३४ ॥

प्रज्ज्वलिया॥

कह राम सुनौ मम वचन भ्रात। नहिं दूषीजित उन्मत्त तात॥ अतिसत्यसिंधु सुनि पूर्वबात। दैबर असत्यनर कहि डेरात॥ कह भरत बहुरि सुनिये खरारि। मैं बसौं विपिनि मुनि वेषधारि॥ तुम अवध जाय कीजे खराज। सिय लषण सहित सजि सुख समाज॥ पुनिराम कहा उलटा नसत्य। पितुवाक्य यथातस करौ सत्य॥ पुनि भरत कहामोहि लेउसाथ। सेवौंलक्ष्मण दूव चरण नाथ॥ नतुतजौं देह तव निकट आय। बैठे दृढ़मत दर्भन बिछाय॥ लखि भरतहि बिस्मित भयो राम। चुपरहे सकल गुणज्ञान धाम॥ ३५॥

दोहा॥

कमलनयन सैनहि तबैगुरुसन संज्ञाकीन्ह।
भरतहि जाय एकान्तलै अति प्रबोधतिन दीन्ह॥ ३६॥

भुजंगप्रयात॥

सुनौ वत्समैं तोहि गुप्तौबखानौं। नराकाररामै रमानाथजानौ॥ सियायोग माया नरीभूलिमानौ। फणीनाथहै लक्ष्मणौचित्तआनौ॥ पुराब्रह्मकी प्रार्थना भूरिमानी। चलेरावणै मारिवेचक्रपानी॥ हरै भूमिभारै पुरैफेरिऐहैं। तबै देवता पित्रहू सुक्खपैहैं॥ चलेदराइकै केकई बाकब्याजै। स्वइच्छा सबारैसदादेवकाजै॥ करौरामआज्ञा तुम्हैतौन नीका। चलौघूमिग्रामै तजौशोच जीका॥ ३७॥

मालिनी॥

सुनिगुरुबरबाणी भर्त्तबिस्मय सुमानी। प्रभुपद गहिपानी प्रार्थना भूरिठानी॥ तुमसब उरज सीपादुका मोहिदीजै। जिनदिनप्रतिपूजौं धैधिलौंजाहि जीजै॥ ३८॥

दोहा॥

वचनसुनतही पादुका दीन्ही त्रिभुवनईश।
भक्तिसहित हरषाय उरभरत धरीनिज शीश॥ ३९॥

हरिगीतिका॥

शिरनाय कीन्ह प्रदक्षिणा रामहि भरत अकुलाय कै। दशचारि वर्षवितीत ह्वै दिनएक रहिहै आयकै॥ जोभवन नहिंऐहैा कृपाल तौजरौं अनलहि जायकै। यहिभांति कहि प्रभुपद परशि पुरचले

हरि लखपायकै ॥ सहसैन्य गुरु मतुहन माता मिलियथोचित सब चले । केकई प्रभुहि एकान्त पाय स्वविनय करि भरि चख जले ॥ हे रामतव माया विमोहित राजतव मैं विवन कौ । छलिये सो दुष्ट सुभाउते अपराध कीन्ही अगनकौ ॥ तुमविष्णु पुरुषोत्तम परात्मा विश्वरूपचराचरं । हेजगन्नाथ कृपानिधे अखिलेश्वरं कमलावरं ॥ हे दयसुतवित लोककार असनेह दारुनपासिका । यहखेद छेदन दच्छ देमोहि ज्ञाननिज निसि तासिका ॥ ४० ॥

चौपाई ॥

छलविहीन सुनिकैकइ बानी । विहँसे कृपासिंधु सुखमानी ॥ जो कछु कह्यौ सत्य सबसोई । अल्पऊ दोषतोर नहिं होई ॥ मम प्रेरित बानी सुखतोरे । कहादेव सुनि काज निहोरे ॥ मैं समदृष्टि लखौं सबकाहू । भजैभजौंतजै तजिहौं ताहू ॥ भयोज्ञान उतपन्न तुम्हारे । बाधिनसक करम दुखभारे ॥ जाउभवन सबशोच विहाई । सुमिरेऊ मोहि सदा मनलाई ॥ सुनिरघुबीर वचन कैकेई । चलीबंदिपरदनिन देई ॥ पुरजन सैन्य सुनिऊ अरुमाता । आयेपुर चिन्तत हौ भ्राता ॥ निजनिज गृहनिवसे सबलोगा । रामहेत साधे जपयोगा ॥ मातन सवन भवनपहुंचाई । नन्दिग्राम गये दौभाई ॥ ४१ ॥

दोहा ।

सिंहासन परपादुका थप्यौ भरत तबजाय ।
राम सरस पूजै तिन्हैं प्रीतिसहित मनलाय ॥ ४२ ॥

नराच ।

करैसमस्त राजकाज पादुकान्निवेदई । जटाकलाप शीशकै सही रहै सखेदई ॥ फलादि खाय बल्कलादि वेष्टिकैरहै तनै । कबौंपिराम आयहैं अवद्धिबासरैगनै ४३ ॥ दोहा ।

रामविरह सानुज भरतदिन दिनप्रतिदुव रात ।
सियाराम लक्ष्मण रटत यशप्रताप अधिकात ॥ ४४ ॥

इतिश्रीमद्रामायणे उमामहेश्वरसंबादे प्रथमचरित्रांतरगतअयोध्याकांडःईश्वरीद्विजभाषाकृतसमाप्तःशुभंभूयात् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथरामविलास

आरण्यकाण्ड ॥

छप्पै ।

अनल अनिल आकाश आपआतमा अवनिवर। आपजात आदित्य रूपवसुबर निवेदहर ॥ सकल मण्डलाकार व्याप्त परिपूर्ण चराचर। प्रणतदेव द्विजसुखद हंसहरि हृदय मानसर ॥ जैब्रह्म विरज अजस-गुणवपु दुश्वरी बंदततबचरण। जैचन्द्रभाल गिरिजारमण आरतहर अशरण शरण ॥ १ ॥

छंदप्रज्झलिया ॥

उतराम लषण सीता समेत। बसैंचित्रकूट मुनिगण उपेत ॥ दिन प्रति आवैंतहं अवधलोग। श्रीराम लषण सीता वियोग ॥ लखिरहत भीर आश्रमहि त्याग। तबगये तुरतदंडक विभाग ॥ सुरकाज करब करितच बास। यहचिन्ततगे मुनि अत्रिपास ॥ २ ॥

हरिगीतिका।

आसीन मुनिनिज आश्रमै तपमूर्तिमानकृतनधरे। लखिराम लक्ष्मण जानकी निजनाम कहिपायनपरे ॥ सुनतैमुनीश अशीषदै हरि जानि हृदय लगायऊ। अति भक्ति पूजा कीन्ह आसन दीन्ह फलन खवायऊ ॥ ३ ॥ मुनिकहा रामहिघरनि ममअनसूय नामप्रसिद्धहै। तेहि देखि आवै अबहि सीता तमवसो अतिवृद्धहै ॥ रघुबीर आयसु पाइजानकि जायकीन्ह प्रणामहू। लखि महाआनन्द सहित हृदय लगाइलियो मुनि वामहू ॥ दियदिव्य कुण्डल द्वैदुकूलहू परमसुन्दर निर्मले। रचि अंगराग सुहाग के पहिराय सीतहि सुखभले॥ पुनि पतिव्रत उपदेशि दीन्ह अशीष तुम सुखपायहो। बसिविपिन देवर पतिसहित कुशली सुनिज गृह जायहो॥ बैठारि परमपुनीत आसन

रामलक्ष्मण जानकी । तबकीन्ह विनतीविविधि मुनि करजोरिशोभा धामकी ॥ हेराम तुमअखिलेश पूरणब्रह्म मायाजानकी । जगहजत पालतहरत पुनिरचि सृष्टिविपुल विधानकी ॥ जोचिरज अज निर्गुण निरंजन निराकार निरामयं । सोसगुण बपुधरि करत लीला गाइ जनहरै भवभयं ॥ जेरावणारि खरारि रामरमेशजन सुखदायकं । मम हृदयकंजनिवासकरु सियलषण सहरघुनायकं ॥ ४ ॥

दोहा ॥

सुनिमुनि विनती प्रीतिलखि कीन्हतहां विश्राम ।
प्रातन्हाइ मांगीविदा लषण सहित सियराम ॥ ५ ॥

प्रज्झलिया ॥

करौ आयसु ममसंग शिष्य जाय । दण्डक मारग आवै लखाय ॥ मुनिकहा सर्वमारग विशेख । जानत असको जेहि तुम नदेख ॥ पै लोकरीति आवहु बताय । चलेआपु साथ शिष्यन लवाय ॥ अतिहि फेरोरघुबंशकेतु । बटुविपुलगये पहुंचावहेतु ॥ अधयोजन परसरिदीख जाय । उतरे सुदृढ़ नौका मंगाय ॥ अभिवन्दिभूमि मुनिवर किशोर । सियराम लषणगयो विपिन घोर ॥ झिल्ली झकारन उठतचिंघ । नाना मृग वृक व्याघ्रादि सिंघ ॥ सेवित रजनीचर करैं कर्ष । मुनि सुभटन तन उठे रोम हर्ष ॥ कह राम तहां लषणहि बुझाय । चलौस युगबाण चापहि लगाय ॥ करिमध्य जानकिहि दोउ बीर । पहुंचे एकरुचिर तडागतीर ॥ राजीव कुमुद फूलेप्रपुञ्ज । जलखग कूजै अलिवृन्द गुञ्ज ॥ ६ ॥

नराच ।

पियो सतल नीर राम सीय लक्ष्मणौ तहां । क्षणं सु वृक्ष छांहतिष्ठ दीखराक्षसं महां ॥ करालदन्त दन्ति पंक्ति भक्षणौ करे मुहे । त्रिशूल वाम कन्धपै समूह मानुषौ पुहे ॥ ७ ॥ चढ़ाय चाप बाणराम लक्ष्मणौ सुनायऊ । बिलोकिये महाकराल यातुधान आयऊ ॥ रहौरुचेत कार्मुकै सुधारि ठौर ठाढ़हो । डरौ न नेक चित्तमें बढ़ोरिसीय सोकहो ॥ ८ ॥ बिलोकि राम लक्ष्मणौ समेत सीय कोतहां । हंरा ठठायकाम कौन काननै तुम्है कहा ॥ धरे सुचाप बाण वल्कलादि वेष्टि गातमें ॥ सबै सुआजु खाइहौं परे हमारि घातमें ॥ ९ ॥

दोहा ॥

आयो कानन काम मम पितु आयसु उरधारि ॥
जैहौं तवमैं धामको तुमसे खलगण मारि ॥ १० ॥

मालिनी ॥

सुनि रघुवर बाणी खलखै कोपि धायो । सिय गहि निज पाणी यातुधानी परायो ॥ सरहति भुजकाटी राम ताकी गिरायो । पुनि खल सुखवायो वेग सो दौरि आयो ॥ तब प्रभु भुज शीशौ काटि पृथ्वी गिरावा । निशि चर तन त्यागीदेव को रूप पावा ॥ सिय पद लपिटानी हर्षसो भूरि पायो । सुर नभ यशगावैं पुष्प वर्षा मचायो ॥ ११ ॥

प्रमाणिका ॥

निशाचरौ तनय तज्यौ । सुदेव ह्वै हरिभज्यौ ॥ अतीव सुन्दरा कृतं सुवर्ण भूषणं धृतं ॥ बिमान पै अकाशही रविर्यथा प्रकाशही ॥ नमामि श्यामसुंदरं भवार्णवं सुमंदरं ॥ प्रणम्य पद्म लोचनं अघौघ मे समोचनं ॥ कृपा करं सियावरं । नमामिते सभ्रातरं ॥ अनन्यभक्त संगितं पदार विंद मेमितं ॥ त्वमेव नाम कीर्तनं । करै हलेश मेमनं ॥ कथा श्रुतं करौसदा । स्वकर्ण संपुटेमुदा ॥ वरं बिशेष दीजिये । स्वदास मोहि कीजिये ॥ १२ ॥

दोहा ॥

यहि विधि प्रभुकी विनय करि विद्याधर वर पाय ।
दुर्वासा को शापगत गयो भवन हरषाय ॥ १३ ॥

तोमर ॥

सिय राम लछ्मण संग । गययत्र ऋषि सरभंग ॥ सुनिदेखि अस्तुति कीन्ह । पद पूजि आसन दीन्ह ॥ फल कंदमूल खवाय । अति भक्ति बैन सुनाय ॥ बहुकाल मैं तप कीन्ह । तव दर्शनै मनदीन्ह ॥ अवरा सपद अभिराम । लखतै भयों सुखधाम ॥ तप सिद्ध भा सब मोर । सियराम दर्शन तोर ॥ १४ ॥

दोहा ॥

जप तप संयम नेम व्रत सो सब रघुवर लेउ ।
नाथ कृपा करि मोहि अब भुक्ति मुक्ति सुख देउ ॥ १५ ॥

हरिगीति ॥

यहि भाँति कहि सिय राम लछ्मण हृदै मूरति राखिकै । सर भंग सहित सनेह प्रभुसों विविधि विनती भाषिकै ॥ तब अनल प्रगटि स्वदेह दहि पुनि पाय दिव्य शरीरही । तुरतै परं पद लहि गयो उरराखि सिय रघुबीरही ॥ १६ ॥

दोहा ॥

तब लछ्मण सीता सहित रामहि लखि सुखधाम ।
मुनि समूह जहं तहं मिलै सहसा करै प्रणाम ॥ १७ ॥
शिरन समूह विलोकि तहं पूछा मुनिन निकाय ।
जानत हौ ये ऋषितपिन नाथ निशिचर न खाय ॥ १८ ॥

भुजंगप्रयात ॥

तबै राम कीन्हा प्रतिज्ञा विशेषा । सबै मारिहौं राक्षसों मैं अशेषा ॥ सुन राम के वैन गा दुःख भारी । भये दण्डकारण्य वासी सुखासी ॥ १९ ॥

अनङ्गधर शेखर ॥

अगस्त्य शिष्य भक्त है सुजान जान जक्त है स्वरागहू बिरक्त है प्रधान नाम गानई । सुनाकि राम आवते उठे तुरन्त धावते मिले महानभावते सुप्रेम को बखानई ॥ सुतीक्षणौ महामतिं विलोकि तै रमापतिं लछ्म सिया अतिं प्रपूजि गेह लायऊ । सुआसनै असीनकै विनै सुभक्ति भीनकै फलादिकंद मूलमीठ भोजनौ करायऊ ॥ २० ॥

हरिगीति ॥

प्रणमामि राम निरन्तरं जन कमल रबि सुखदायकं । अज शम्भु मनमानस बिमल तुम हंसवर रघुनायकं ॥ तव माय या त्रिगुणात्म रूप विरंचि हरिहर जानिये । जग सृजत पालतलय करत असखिल वेद बखानिये ॥ हे ब्रह्म अज अद्वैत निर्गुण सगुण वपुधारण कियो । निज इच्छाया लीला बितरि निजजनन चाहत सुख दियो ॥ तुम एक जीव अनेक नै भासित घटंजल इव रविं । माया बिमोहित बिपुल तुमहि विलोकि त्यौंगावत कविं ॥ जैराम शोभा धामकाम अनेक छबि मद मोचनं । इंदीबर द्युति स्याम तन राजीव दल कललोचनं । हे राम रमा निवास सीता लषण सहबसु मम हिये । मुनि विनय सुनि करुणा निधेमन वांछितै फल तेहि दिये ॥ २२ ॥

दोहा॥

प्रातै उठि रघुवंश मणि सुनिहि कह्यो हरषाय।
ऋषि अगस्त्य पहं जाइहैं मारग देवनताय॥ २३॥

तोटक॥

रघुवीर चलौ मोहि संग लिये। नहिं दीख गुरैवहु वर्षगये॥
हसि साथ लियो सुनिको तबही। युगयाम गये पहुंचे सबही॥ २४॥

नराच॥

अगस्ति बंधुको मिले सुभ्रात रामजानकी। प्रपूजिकै सोऊ विनै करीकृपा निधानकी॥ सुतीक्ष्णहू समेत भावसों फलं खवायऊ। प्रभातह्वै विदाप्रभू अगस्ति गेहआयऊ॥ २५॥ फरैसुवृक्ष भारही महीभुकै सवैतहां। मृगालिपक्षि वृंद बैरहीन ह्वैचरैंतहां॥ सुनीन्द्र ब्रह्मचर्य देवसेवितं सभावरं। विभाति सर्वभांति ब्रह्म लोक सद्दवा परं॥ २६॥ गयेसुतीक्ष्ण शीघ्रनाथको निदेश पाइकै। प्रणामकै गुरुं सुराम आगमं सुनाइकै॥ पियूष तुल्यवैन ज्यौंपरे अगस्ति कानही। अनंदभे महानब्रह्म सुष्यके समानही॥ २७॥ गच्छ गच्छ शीघ्रतात रामसीय लावऊ। लक्ष्मणै समेत अत्रआश्रमै सुआऊ॥ आपुहू उठे ऋषीश मंडली सवैलिये। रामदर्श लालसा बढ़ै प्रमोदहू हिये॥ २८॥ गयोसु तीक्ष्ण रामतीर पाणि जोरि क कहा। हमैंगुरू पठाव आपुपाउ धारियेतहा॥ अगस्ति सोंपितत्र आइ रामसीय देखते। सबंधु दंडवत् परे सप्रेमहू विशेषते॥ २९॥

चामर॥

कुम्भजौ उठाइ लाइ रामहीय हर्षते। रोमठाढ सर्वअंग नैननीर वर्षते॥ आश्रमै लवाइ पूजि आसनै दियो मुदा। रामसीय लक्ष्मणै फलैखवायऊ तदा॥ ३०॥ कुंभजात पाणिजोरि रामसों विनैकरी। आगतोसि दंडकै स्वसर्व जानिऊहरी॥ ब्रह्मपार्थनार्थ रावणादिमारिवेलिये। तापसी सुनीशनै कृतार्थ आइकैकिये॥ ३१॥

बर्वे॥

ह्वैविराट रघुनंदन त्रिभुवन येह। जो देखिय जलथल सवतव यह देह॥ रजगुण ह्वैविधिरचि यहसब संसार। देव असुर नरखग पशु त्रिजग अपार॥ ३२॥ सतगुण ह्वैहरि यहजग पालन कीन्ह। पृथ्वी

भारउतारत जनसुख दीन्ह ॥ ३४ ॥ रुद्रतमो गुणपृथ्वी करै संहार । यहिप्रकार तवमाया गुणविस्तार ३५ ॥ जाग्रत् स्वप्नसुखुप्ती तुम गुण वान । साक्षी चिन्मय अव्यय पुरुष पुरान ॥ ३६ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

द्वैविधिमाया तवप्रबल राम । विद्यापठवै बैकुंठ धाम ॥ अरु अपर अविद्या बंधहेत । जेहिवस नरहैलहि यमनिकेत ॥ विद्यालहि उप-जत भक्तिज्ञान । तातेअतिशै विद्या प्रधान ॥ तवभक्ति मोक्षप्रद वेद-गाइ । नरहोत सुखीतव तुमहिपाइ ॥ हेराम जौनतव भक्तिहीन । ते भवबंधन परिरहत खीन ॥ अवसफल जनमअतिशै हमार । रघुनंद न दरशन लहि तुम्हार ॥ बहुकाल कीन्ह जोतप अपार । सो सफल भयो सबविधि हमार ॥ सियलषण सहित श्रीरामचंद । संततवसो ममहृदयारविंद ॥ ३७ ॥

दोहा ॥

पुनिमुनि रामहि विनयदै अक्षय भरततूणीर ।
इंद्रधनुष असिनिसित जेहि बधै निशाचरधीर ॥ ३८ ॥

नराच ॥

अगस्त्यकै विनैसिया समेतरामलक्ष्मनै । कियोखमंच जाहिरावणादि ज्ञातिकोहनै ॥ दियोमहेंद्र चापवान अक्षयंतु णीरह्व । निमीतखड्ग पाइभे प्रसन्न दोउवीरह्व ॥ ३९ ॥ मुनीशकी रजाइलै चलेसु पंचबाटिकै । सरासनै सुधारिवाण खड्गतूण ठाटिकै ॥ विलोकिमार्ग गीधताहि योंकहा सुडाटि कै । अयंनिशाचरै महो गिराउ शीस काटिकै ॥ ४० ॥

भुजंगप्रयात ॥

सुनीराम वाणीहृदै शंकमानी । खनामैवखानीकही दीनवानी ॥ तुम्हारेपितै औ हमै मैचताई । रहीहै यथासो कथा सर्वगाई ॥ सुना दंडकैआइहैं रामसीता । महू होइहौं दर्शनाये पुनीता ॥ इहांमार्ग बैठे तुम्हारी निहारौ । वसेअच वर्षैबिताई हजारौं ॥ करौंमैंसदा सीयकी अवरक्षा । तजौ देहतौ हेत लीजे परीक्षा ॥ कहारामगीधै तुम्है साधु जाना । रहौतात मेरेसमीपै निदाना ॥ ४१ ॥

दोहा ॥

रहत गृद्धके सनमानकौ सीता लखन समेत ।
पंचवटी गौतमी तटपञ्चे कृपानिकेत ॥ ४२ ॥

भुजंगप्रयात ॥

रचीपर्नशाला तहां दैसुहाई । बसेसर्वदात बमोदौघ पाई ॥ रसा-लादिद्रुमौ फरैंसानकूले । जिन्हैइंद्र उद्यानह्न सोनतूलैं ॥ ४३ ॥

पज्झलिया ॥

सेवैंसिय रामहि लषनलाल । निसिदिन राखत जिमिमनि नहिं व्याल ॥ फल मूलकंद नित मधुर लाइ । अति भक्ति सहित भोजन कराइ ॥ सजि वानसरासन बैठिजागि । निसि दिन रच्छै उर प्रेम पागि ॥ सियउभै मध्यअतिशै अनंद । रुचि राखत छन छन रामचन्द ॥ लालत लषणहिंदम्पति कृपाल । निसि दिन फणि मणि इवसर्व काल ॥ यहि भांति मुदित बनकरैं वास । शतअवध सरिस मनमो ऊलास ॥ ४४ ॥

कवित्त ॥

एक समय पञ्चबटी कुटीमें विराजैं राम नील जल जात गात सुन्दर सुभायकै । शीशह्न जटा मुकुटकटिलसै मुनिपट राजिवनयन गुणनिधि सबलायकै ॥ पाइकै एकान्त शांतउमा कान्त यथातथा लक्ष्मण आयगहे पदचित चायकै । रागह्न विराग ज्ञान भक्तिह्न विभाग युतनाथ करि कृपामोहि कहौ समुझायकै ॥ ४५ ॥

हरिगीतिका ॥

सुनुतात हरि माया प्रबलजोशिव अजहि भ्रम कारिनी । क्षिति जल अनल अनिलह्न गगन करि पञ्चजग विस्तारिनी ॥ सुरअसुर नरपशुखग निकरकीटादि जीवनरचिघने चैतन्यजड़ जङ्गमह्नअस्थिर जौन कछु देखेसुने ॥ विद्या अविद्या भेदद्वैतिन गुणसुनौ विलगाय कै । बाधैअविद्या जीवनै धनसुतकलत्र देखायकै ॥ कामादिषटजाके सुभट तेवसकरत हरषायकै । असकौन जोबांधेन इनकेभत मुनिन बरियाइ कै ॥ अब सुनौ विद्यागुण विमल सात्विक सुभावहि रुचि सही । जपतप नियम सञ्जम व्रतन योगादि आचरतै रही ॥ का-

मादिमल खलखटतजै बेदान्त अर्थहि संग्रहै । तनमन वचनबाहेरऊ भीतर शुद्धहै सतगुण गहै ॥ सुतदार औसंसार संगविहीन विषय बिरागही । अपमान मानन मनधरै निंद्या अस्तुतिऊ त्यागही ॥ जगजीवनै लखिब्रह्ममय चैतन्यजड़ सचराचरं । असिबिरति बरनेहि उरबसै तेहि कहियज्ञान बतांबरं ॥ ४६ ॥

चौपाई ॥

सुनौतात अबभक्तिनिरूपन । जोलहि भक्तपरै भवकूपन ॥ संतत सतसंगति जिनकीन्हे । विप्रचरण सेवत मनदीन्हे ॥ छलबिहाय मम पदरतिजाही । मनवांछित गतिदेहौं ताही ॥ हृदयधरै ममरूपहि ध्याना । रसना गुणगण करै बखाना ॥ चरणन चलि मम धामहिं जाई । पूजाकरन करै चितलाई ॥ नयनन सदादर्श अभिलाषै । कथा श्रवनन ममस्तुतिपुटराषै ॥ ममदासहि लखिमाथ नवावै । सबते अधिक मोहिंसो भावै ॥ जेसंतत मोमेंमन राखत । ममगति छांड़िन कछु अभिलाषत ॥ ते प्राणी मोहिं प्राण समाना । दृथा न कहौं मोर यह बाना ॥ क्रिरि कर्मन अरपन मोहिं करई । तेप्राणी भवसागर तरई ॥ ४७ ॥

दोहा अन्य ॥

जेधर्महि जानत नहीं केवलमम पद भाव ।
ताहिं उधारौं नर्कते कहौं सत्य पतिआव ॥ ४८ ॥
दयाधर्म जेहि उरबसै त्यागे सकलबिकार ।
शांत शुद्धजे भक्तमम ते मोहिं अधिक पियार ॥ ४९ ॥

तोमर ॥

ममभक्ति जेहि अनुराग । सद्द पाव ज्ञान विराग ॥ लहि तौन पद निर्बान । जगमें उपाउ न आन ॥ जेभक्ति विनगहै ज्ञान । पशु तेपिविना विषान ॥ सुनि रामके बरबैन । परेपाय लछिमन चैन ॥ अबसुनौ दीनदयाल । ममभिटा मोहकराल ॥ मैंलहा ज्ञानविराग तब चरण दृढ़ अनुराग ॥ ५० ॥

दोहा ॥

यहि विधि द्वादश वर्षगत मास आठनव और ।
सूर्पनखा आई तहां गौतमि तट शुभठौर ॥ ५१ ॥

भुजंगप्रयात॥

लखा राम पादांकितं भूमिभूरी। ध्वजावज्रपद्मांकुशं चिन्हरूरी॥ गईसामुहे सीयनाथै विलोकी। सकी आपने चित्तको सोन रोंकी॥ कहेवैन कामार्त ह्वै संगमेरे। रमौतौ सबै सुक्ख पैहौ घनेरे॥ कहा रामहै जानकी बाम मेरे। पठै दुष्टको लक्ष्मणै जायप्रेरे॥ घुमाई तिन्हौ रामपै दौरिआई। कईबारताको पठाईघुमाई॥ तबैराक्षसी क्रोधकीन्हो अपारा। सियासंकमानी जबैरूपधारा॥ कहालक्ष्मनौ रामचन्द्रौ बुझाई। विनानाककानौ कियो ताहिधाई॥ चलीमाहि के रक्तकी तीनि धारा। मनौशैलते छूटगेरू पनारा॥ ५२॥

प्रज्वलिया॥

गै सूर्पनखा षरत्रिशिर जोय। कलपत जलपत कहि कथा रोय॥ अवधेश तनै लक्ष्मण राम। बसिपंचबटी संगसोह बाम॥ तेचाहत महि निसिचर संहार। अपराध न मोहिं दुख दै अपार॥ सुनतै षर षरतर क्रोध कीन्ह। चौदहसहस्र संगसुभट लीन्ह॥ धाये धरि आय विविधि घोर। गयो पंचबटी गौतमी ओर॥ सुनि सोर राम लक्ष्मण बुझाय। जानकिहि जाउ कन्दर लवाय॥ जनि उतरु देव सुनुबचन मोर। गयोलषण सिया कन्दरैघोर॥ सजिखड्ग तूनधनुसर लगाय। यहिभांति रामरण भूमि आय॥ ५३॥

मालिनी॥

खलदल चलि आयो देखतै रामचंदै। शर शिखिरि प्रहारै शक्ति शूलादि द्वन्दै॥ धरुधरु धरि बाँधौनारिलीजै छुड़ाई। यहिविधि जड़ जल्पैअल्प बुद्धि:तुलाई॥ ५४॥ दोहा॥

लीलहि सर संधानिप्रभु अरिआयुध सबकाटि।
चौदह सहस निशाचरन मारे रणमहिपाटि॥ ५५॥

कवित्त॥

ईषुधि छ्वतइषु एकहीके दशहोत करहि करत सतगुणसरसातु है। चापहि चढ़तते ऊ चौदहसहस लगुमारग चलततबलक्ष दरसातु है॥ लक्षलक्ष लगत कोटिबधि सकै अर्वषर्व यहिविधि रामवाण बढ़ तहि जातुहै। ईश्वरी कहत शतपात्र द्विजै दान यथादीन्हे दिनदिन प्रतिफल अधिकातु है॥ ५६॥

दोहा ॥

खरदूषण चिशिरा सहित बधे निशाचर नीच ।
अर्द्ध पहरके अन्तरहि पठै सुरालै बीच ॥ ५७ ॥

मालिनी ॥

तबलक्ष्मण सीतै आयरामै मिलाई । करपरसत गातै अस्त्रपीड़ा मिटाई ॥ निशिचर महिलोटै चित्तकै विस्मिताई । पुनिसुखयुत बैठे पर्णशालै सुनाई ॥ ५८ ॥

पद्धलिया ॥

लखिसूपनखा निशिचर संहार । रोवत गै जहँरावण भुवार ॥ ते पूक्काकेत्वहिं दुःखदीन्ह । हठिचहत यमालय बास कीन्ह ॥ बरुणेन्द्र धनद अरुअपरजक्त । समबल बिलोकि सगरे अशक्त ॥ अरु अपरभूप कोट प्रमाण । केहि लीन्ह चहसितैं आनुप्राण ॥ तब सूर्पनखा सब कहि सुनाय । अवधेश सुवन बनबसे आय ॥ जल जारुनदल लोचन विशाल । रणजीति सकैं कालऊ कराल ॥ अतिसुन्दर दोउ लक्ष्मण राम । त्रिभुवन सुन्दरि संग सोहै बाम ॥ तव हेत गईमैं ताहिलेन । श्रुतिशानहीन मोहिं कीन्हतेन ॥ खरदूषणलै चौदह हजार । संघसुभट मोरिलागे पुकार ॥ तेराम सरनहति परेभूमि । वैपंचबटी बसेजाय घूमि ॥ ५९ ॥

दोहा ॥

सुनिरावण क्रोधितभयो विस्मयलही अपार ।
चौदहसहस निशाचरन मारेमनुज कुमार ॥ ६० ॥

नराच ॥

सहोदरै प्रबोधि लंकनाथ मन्दिरैगयो । परीनरैन नीद चित्तहू गभीरही भयो ॥ विहाय विष्णु और कौन दूषणै खरैहनै । विरोध कै मरेबनै भजेन तामसी तनै ॥ ६१ ॥ विचारि पुष्टचित्तकै प्रभात होतजाइ हौं । जुपै मनुष्यतौ छड़ाय नारि तासु लाइहौं ॥ कदापि विष्णु जो सुरार्थ देहधारि मारिहैं । कुटुम्बयुक्त मोहिं तौ विशेष कै उधारिहैं ६२॥ उठोरथै सवार ह्वैमरीचपासआयऊ । मनोरथै सुनाय सोपि नीकना बतायऊ ॥ सुनोहमैं फिकाय बान संग सागरांतही । सतेपि रामसों विरोधकै भलोनहैकही ॥ ६३ ॥ अनादरै सुताहिकै

बनाय कै म्टगा छली। मणीसुवर्णमैं बनी सुदेह ताहि की भली॥ गयो तुरन्त दण्डकै जहां विदेहकी लली। चरैं सुपत्र पत्र तत्र धायकै गलीगली॥ ६४॥ इहांसमस्त हालजानि रामसीयसों कहा। छली म्टगाबनाय राक्षसेंद्र आयऊइहा॥ त्वमेवपावकैबसौ संहारिराक्षसे सबै। विहाय वर्षएक सोहिं आयकै मिलौतबै॥ ६५॥

चामर॥

मानि रामको नियोग सीयपावकै रही। मायासरूपको बनाय थापितचही॥ लक्ष्मणौन भेदजानि जौनकीन्ह जानकी। भीतबैम्टगा प्रतक्ष छांड़ि आश प्राणकी॥ ६६॥ सोम्टगा विचित्रता सियाबिलोकतैं रही। छालताहि लाइये कृपानिधान सों कही॥ रामहू कटि प्रदेश बांधिखड्गभायही। दक्षिणे करैनराच चापवाम हाथही॥ ६७॥ सौंपिसीय लक्ष्मणै अनेक भांतिसों कहा। मायवी निसाचरी फिरैं सुदण्डकै महा॥ बाणचापपै चढ़ाय अचठाढ़ही रह्यौ। यौं सिखाय आपहू कुरंग मार्गको गह्यौ॥ ६८॥

हरिगीतिका॥

भाग्यौकुरंग विलोकि रघुबर तुरत प्रकटत छलकिये। फिरिफिरि विलोकत मधुरमूरति प्रेमसंकहि करि हिये॥ यहि विधि गयोलैं दूरितबहरि जानि निशिचर सरहना। महिपरि पुकारयौ लक्षिमणै हरराम पुनि धरिनिज तना॥ तेहितेज प्रभुमुख प्रविसि तुरतैसुरन लखिविसमय लहा। अतिनीच अधम निशाचरौ तेपाय दुर्लभ गति महा॥ सुनिकपट निश मुखवचनवत रघुनाथमन चिन्ता धरी। पग मग उतालन परतजनु जानकिहि लख निसिचरहरी॥ ६९॥

मालिनी॥

निशिचर छलबाणी जानकी कान आई। कह लक्ष्मण जैये वेगि भ्राता सहाई॥ त्रिभुवन भटजेते जोलरैं एकवारी। तबहुं नमनलैये राम लो शाधिकारी॥ सुनि लक्ष्मण वाणी जानकी कोप कीन्हा। कहिकटुक कुवानीशूलसी षेददीन्हा॥ तबमहि करिरेखा आस्रमै सोंघुमाई। रघुपति पहंगौने चित्तचिंता धिकाई॥ ७०॥

नराच॥

ततोतरं विलोकि भिक्षुरूप रावनैधरा। अकेलिसीय कौविचारि

आइयाचना करा ॥ प्रनामकै सुतापसै फलादिदेत भावतै । टिकौ खुसी तुम्हैं करैं सबंधु राम आवते ॥ ७१ ॥

हरिगीतिका ॥

कौनितुम सुंदरि सुलोचनि कौनतव पतिगाइये । केहिहेतु कानन आइ निवसेहमैं सर्व सुनाइयै ॥ कहजानकी अवधेश पितु आयसु अकनिवन आयऊ । मम सहित ममपतिबंधयुत चौदहवरसमबनपायऊ ॥ तुमकौन मैं रावन विदितत्वहि लेनआयों काननै । रेदुष्टवचन विचारि कछुजनि प्राणदेहरि वाननै ॥ करिक्रोध निजरूपहि प्रकटि दशशीस औविंशति भुजा । महिरेख करन मिटाइ रथहिचढ़ाइ हठिलीन्ही कुजा ॥ ७२ ॥

पज्झ्वलिया ॥

सुदिमाघचतुर्दशि तिथिगनाइ । अरुष्टन्द महूरत समैपाइ ॥ छल करि माया सिय हरीमूढ़ । लैगयो गगन करिरथ अरूढ़ ॥ हाराम लषणकहि वारवार । रोवतसीता भययुत अपार ॥ सुनिदीन बचन सीतै सुजानि । धायो जटाइ मनक्रोध आनि ॥ ७३ ॥

दोहा॥

काटाधनु रथकरि विपुलयुद्ध जटाईघोर ।
सीतहिलीन्ह छुड़ाइ हठिचला न रावन जोर ॥ ७४ ॥

पज्झ्वलिया ॥

खिसियाइ निशाचर खङ्गलीन्ह । गीधै प्रहारि विन पच्छ कीन्ह ॥ पुनि अपर रथैसीतै चढ़ाइ । गवन्यौ उताल उरभय बढ़ाइ ॥ हा राघवमोहि लीजैछुड़ाइ । रोवतसीता अतिशोक पाइ ॥ हालछमन मैं अज्ञान कीन्ह । विनदोष तुम्हैं अपराध दीन्ह ॥ ७५ ॥

दोहा ।

तब अकाशते जानकी गिरिपर कपिन निहारि ।
रामचीन्ह हित आभरन दीन्हेतिन परडारि ॥ ७६ ॥

भुजंगप्रयात ।

गयोलंक राजानिजै राजधानी । टिकाइ सियैबाटिकै मातुमानी ॥ करैराच्छसी भूरिरच्छा विशेषी । दिवा रात्रिहूजेन लावैनिमेषी ७७ ॥

नराच ॥

विरंचिको नियोगपाइइंद्र आइसीयसो । प्रबोधि हव्यको खवाय गे नजानतोय सो ॥ सदैव रामनामही जपैसुध्यानलाइकै । कृशांगदीन मौनह्वै रहीसशोक छाइकै ॥ ७८ ॥ इहांकृपाल रामहू छली म्रगा संहारिकै । चले निजाश्रमैसुमाग लच्छनै निहारिकै ॥ मलीनदीन रूपहीन शोकसोतिन्है कहा । सियाश्रकेलि छांड़िश्रव आइकैकियो कहा ॥ ७९ ॥ कहासुरोइ लच्छणौ पदारविंद पर्सिकै । पठाइ मोहिं जानकी कठोर भाखि भर्सिकै ॥ सचिंतनीय राम भ्रातरौ तुरंत आयऊ । विहीनसीय आश्रमैविलोकि दुःखपायऊ ॥ ८० ॥

तोटक ॥

सजिवान सरासन बीरदोऊ । सियढूंढ़त बेलिन कंदरऊ ॥ लखि घायल गीधपरासु तहां । सियचोर वृत्तान्त समस्तकहा ॥ ८१ ॥

कवित्त ॥

देखिरघुबीर पीरगीधकी अधीरह्वैकै हाइकहि धाइ उरलायलीन्हों जाइकै । छतज समूह जोइछत सबरोइधोइ करुनासमोइ नैननीरसों न्हवाइकै ॥ ऊनोभयो जानकीको विरह विशेष जौनदूनो दशरथहूते शोक सरसाइकै । ईश्वरी कहत ऐसीपीर जाहि दासनकी ताहि मन भजुक्यौं नकपट बिहाइकै ॥

दोहा ॥

मृतकगीध तनदाहकरि अपरकर्म सबकीन्ह ।
सुरपुर पठयो तुरतही वासपिता ढिगदीन्ह ॥ ८३ ॥

चौपाई ॥

पुनि जानकी विरह रघुबीरा । कहंत बचन मनधरत नधीरा ॥ सहित जोपैजियत प्रियानहिं पैहों । त्रिभुवन सबछन माहनशैहों ॥ सुनि लच्छमनभयो कंपितगाता ॥ डोलोधरा सिंधु उच्छलई । भूधर जितजित खसि खसि परई ॥ शिव चतुरानन लोकपालन करिघाता । सुनत डेराने । कमठ वराहशेष अकुलाने ॥ तबलच्छमण प्रभुपद धरि शीशा । नाथ चराचर के तुम ईशा ॥ मान्धाता सगरादि महीपा । अंबरीक रघुअपर दिलीपा ॥ भगीरथौ अजदशरथ ताता । पालिप्रजा जकिसुत पितुमाता ॥ तिन कुलकीर्ति बढ़ावन वारे । राउर योगन

बचन उचारे ॥ बचन सुनत लज्जित प्रभु भयऊ। अनुज हटाइ लाइ उर लयऊ ॥ ८४ ॥

दोहा ॥

अतिउतंग गिरि शिखर चढ़ि गह्वर गुहन मझाय।
सीतै खोजतही भयो बसकबंधके आय ॥ ८५ ॥

नराच ॥

कह्यो लक्ष्मणै रामजू ईशमाया। मुखोपादहीनो लखौभूरिकाया ॥ प्रचण्डै भुजा योजनान्तर घुमाई। सबै जीवनै बेष्ठिकै बेगिखाई ॥ अयें राक्षसै मारिबे युक्त जानौ। कहा लक्ष्मणौ दोउ भुजाबेगि भानौ ॥ तबैखड्गलैदाहिनी रामकाटी। रहीताहि भ्रातैमर्हीछांटि पाटी ८६॥

हरिगीतिका ॥

निसितासिलै भुजदण्ड खण्ड प्रचण्ड भूतलसो पर्यो। धरि दिव्य रूप विमान चढ़ि प्रभु बिनय बहु भांतिन कर्यो ॥ मैंपूर्व गंधर्वरूप गर्वित अष्टबक्र मुनिहिंहंस्यौ। तिनकह्यो निशिचरहोसि तबमैंपाय परिमन सह्चस्यौ ॥ पुनिकह्यो मुनि रघुबंशहरि अवतंश ह्वैबन आइ हैं। तोहिमारि देहैं सुगति शुभ सबबोध सकल नशाइहैं ॥ विधि दीन्हवर रघुबीर बिन तैं अपरभटन अवध्यहै। सुरपतिहु मारे नहिं मरौ शिरपद कियो धरमध्यहै ॥ ८७ ॥

दोहा ॥

विधिवर मुनिवर शापहू भयो आजु सुखधाम।
प्रभुपद कमल बिलोकिमैं मुक्तिलह्यो अभिराम ॥ ८८ ॥

चामर ॥

त्राहित्राहि भक्तनाथ मायया समाजते। सोन मोहिं बांधई कृपा समुद्र आजुते ॥ चापतून बांधि श्यामगौर राम लक्ष्मनं। ज्यौंमहेश मानसैबसौ तथैव मेमनं ॥ ८९ ॥ एवमस्तु रामचन्द्र ताहि सों कह्यो तबै। जाउ बत्समे पुरैजहां अनन्दहै सबै ॥ जो कदापि नेकहू सिया दृतान्तजानहू। तौहमैं विशेषिकै विधानसों बखानहू ॥ ९० ॥

दोहा ॥

जैयेसेवरी भवन प्रभु कहोसो सिया हवाल।
चरण बन्दि गन्धर्वगो पुरबैकुण्ठ निहाल ॥ ९१ ॥

हरगीतिका

पुनि सीयखोजत फिरत जहंतहं द्रुमलता मुनिबर थली। सेवरी निकेतसमीप सुनि आनन्द उठिमनसोभली॥ परिपाय लाई भवनहीं अरघादि दै आसन दियो। फलमधुर विविधि खवाय भाव समेत पङ्कनादिकियो॥ मैंमंदअधम कुजाति प्रभुतवकौनि विधि अस्तुतिकरौं। हे दीनबंधु कृपानिधान सो करौ तवपद अनुसरौं॥ सतसंग कथा प्रसंग सेवत गुरुहि मम गुण गावही। जप मंत्र भजन खमनद म सज्जन स्वधर्महि भावही॥ हरिमय लखै जग चराचर संतोष मोर भरोसही॥ छलहीन नवमें एकहू जेहि होइ सोप्रिय मोहिकही। स्त्रीपुरुष कुल अकुल कोऊ जीवउर असआवई॥ संसारकूप विहाय प्राणी तौन मोकहं पावई॥ ९२॥

तोमर॥

तेहिदीन बंधु कृपाल। निजभक्ति दै ततकाल॥ सिय शोधतें कछु पाव। तेइ रीकमूक बताव॥ सुग्रीव सचिव समेत। त्यहि मिलौअति करिहेत॥ सोइसीय सोध लगाइ॥ सब भांतिकै सेवकाइ। अबसुनौ राम रमेश। मैंकरौं अनल प्रवेश॥ तबलौ रहौ रघुवीर। मिलौंतोहि छाड़ि शरीर॥ ९३॥

दोहा॥

असकहि योगानलजरी निरखत लक्ष्मण राम।
सुनि दुर्लभगति पाइसोगई तुरतहरि धाम॥ ९४॥

इति श्रीमद्रामायने पूर्वचरित्रांतरगत ईश्वरी द्विज

भाषाकृते आरण्यकांड तृतीय समाप्तः॥
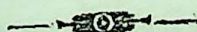
श्रीगणेशायनमः ॥

अथरामविलास

किष्किन्धाकाण्ड ॥

दोहा ।

सुमिरि भवानी भवगनप रामलषण बरबीर ।
सियखोजत गिरि द्रुम लता विपिनि महागम्भीर ॥ १ ॥

चौपाई ॥

तेहिनिदेस पंपासर तीरा । आये अनुज सहित रघुवीरा ॥ करि अस्नान ध्यान विश्रामा । सकल मुनिवरन कीन्ह प्रणामा ॥ पूछामग तिनदीन्ह देखाई । रीकमूक गिरिरह नियराई ॥ करको दंडबाणवर साजे । महारौद्र बरबीर बिराजे ॥ देखि कपिन मनशंक बढ़ावा । पवनज करि बटुरूप पठावा ॥ निकट जाय पूछा भगवाना । तन मन विमल भयो हनुमाना ॥ परे चरण अतिहर्ष बढ़ाई । हृदय लगाय लीन्ह रघुराई । पूछा कपिचरणन शिर नाई ॥ केहिकारण बनफिरौ गोसाई । तब रघुनाथ कथा सब गाई । बनविचरन कारन समुदाई ॥ समाचार सब हनुमत पाये । पृष्ठि चढ़ाइ तुरत लै आये ॥ २ ॥

नराच ॥

बिलोक तै कपीसहू सरूप राम लच्छनै । त्रिलोक नाथ जानियो विशेष आपने मनै ॥ उठे सुकंठ पादवंदि पात आसनै दियो । पर-स्परं खपूछि प्रीति भाव भूरिकै हियो ॥ ३ ॥

अनंगधरशेखर ।

नियोग नाथ पाइकै सुलच्छनौ बनाइकै सुआदि तेलगाइकै सुकंठहो सुनाइकै । बर प्रदान केकई भरत्तराज ज्यौं भई षरादिनै कियो त्तई बनै स्वराम आइकै ॥ यथा मृगाछली हयो सियावियोग ज्यौं भयो जटायु मोचहू लयो कबन्ध गोसुरा लयं । मिलाप सेवरी

वताइ दीक मूक दीख आइ बातजात अच्छाइ भक्तहेतते भयं ॥ ४ ॥

नराच ॥

प्रिया वियोग जानि भूरि वानरेंद्रह्न कहा । विहायसै लखामह्न विलाप तीरघै महा ॥ विलोकि पर्वतै हमैं खडारि भूषनंदियो । प्रवस्य राक्षसेंद्र गैसुदच्छिनैंदुखी हियो ॥ ५ ॥ दिये सुकंठ भूषनौ ख-चीन्हि रामजू तथा । सिया सिया पुकारि भूरिरोय प्राकृतो यथा ॥ प्रबोध कीन्ह लक्ष्मणं खधीर चित्त धारिये । सिया छड़ाइ लाइये रिपुं प्रचारि मारिये ॥ ६ ॥

भुजंगप्रयात ॥

तबै भाषि सुग्रीवकै कै प्रतिज्ञा । सिया लाइ देहौं करौ मोहिं आज्ञा ॥ रणंरावणं मारि सेना समेतं । हिये धीर आनौ महाकाज येतं ॥ ७ ॥ तहां बातजं अग्नि साक्षी कराई । मिले राम सुग्रीव कै मैत्रताई ॥ कहा रामहू भीरु क्यौं मित्र मेरे । कहौ सो हरौं सर्व दुःखौघ तेरे । तबै सर्व सुग्रीव वृत्तान्त गायो । मयावी महा दैत्यसै ग्राम आयो ॥ ख वैयुद्धयांचा कपीसै प्रचारा । महाक्रोध कै बालि मुष्टिप्रहारा ॥ गयो कंदरै भागिभै भूरि पाई । बधै हेतु ताके गयो बालिधाई ॥ मह्रं मोहते भ्रातको साथ दीन्हा । घप्यौद्वार आपै गुहै गौन कीन्हा ॥ भयो युद्ध मासोईलौ ताहि मारा । तहां तेवही रक्त की घोर धारा ॥ मह्रंसंकि द्वारै दवायो पहारा । कहा आइ ग्रामै गयो बालि मारा ॥ ७ ॥

दोहा ।

मंत्रिन बिन नृपदीख पुर मोहि कीन्ह कपि ईस ।
रिपुहति आयो बालि गृह मारा मोहिं करि रीस ॥ ८ ॥

तोमर ॥

मोहिं दीन्ह देशनिकारि । हरिलीन्ह स्त्री अरुनारि ॥ जगघूमि सर्व मझाइ । यहिते रह्यौं इतआइ । ऋषि शाप बालिहि येह । गिरि देखि छूटिहि देह ॥ अब राम पद अभिराम । लखि भयो पूरन काम ॥ ९ ॥

दोहा ॥

सुनतै प्रभु प्रन कीन्ह यह भोरहि मारौं बालि ।
तबकपीस देखरायौ दुंदुभि सिरतालालि ॥ १० ॥

भुजंगप्रयात ॥

सु सौमित्र ना बालिसों वीर कोई । इन्हें जो विदारै बधै ताहि सोई ॥ महा दुंदुभी दैत्य को जाहि मारा । बिलोको सिरै ताहि को ज्यौं पहारा ॥ तबै रामपादांगुठा ते उड़ायो । दशं जोजनांतर्गिरो भूमि आयो ॥ पुनः चाप लै बान मारा कराला । गिरे साप दग्धा हिलै सप्त ताला ॥ तबै हर्षि सुग्रीव कै राम पूजा । भरोसा भयो आग मोसों न दूजा ॥ पठायो सखै दूत दै जाइ गर्जी । भिरो आइ बाली महावीर तर्जी ॥ परस्पर लरै हारि मानो न घोऊ । न छांडो सरै एक रूपैइ वोऊ ॥ तबै भागि सुग्रीव गे राम पासा । महाराज आपै करैं मोरि हासा ॥ करस्पर्शि मित्रांग पीड़ा मिटाई । अभकै गरे पुष्प माला मेलाई ॥ सदृश्या दोऊ भ्रात ताते न मारा । पठायो बड़ो बोध कै सो पुकारा ॥ ११ ॥

दोहा ॥

सुनत बालि क्रोधित भयो तब समुझायो नारि ।
तदपि न मान्यौ जाइ सो मुष्टिक हनी प्रचारि ॥ १२ ॥

मधुभार ॥

द्वौ लरत बीर । अति प्रबलधीर ॥ मुष्टिक प्रहार । मानैं न हार ॥ रघुनाथ लखा । अमपाइ सखा ॥ हति कठिन बान । लियो बालि प्रान ॥ पुनि उठि संभारि । सन्मुख निहारि ॥ रघुबीर रूप । अति गो अनूप ॥ अनुचित खरारि । किमि मोहिं मारि ॥ अस्तुति उचारि । सुर पुर सिधारि ॥ १३ ॥

दोहा ॥

सुनि तारादि विलाप युत आई बालि समीप ।
तिनहिं प्रबोधा ज्ञान कहि बहुबिधि रघुकुल दीप ॥ १४ ॥
पुनि अंगद सुग्रीव मिलि म्रतक कर्म सब कीन्ह ।
लोकबेद विधि देश मति दुजन दान बहु दीन्ह ॥ १५ ॥

भुजंग प्रयात ॥

तबै आइ सुग्रीव पूरे अनंदे । सिरस्पर्श कै राम पादार बंदे ॥ कृपा कै किये मोर सबीप कारा । हरे सर्व दुःखं बली बालि मारा ॥ १६ ॥

दोहा ॥

अब चलिये पुर कृपा निधि राज्य श्री सब लेउ ।
करौ राज मोहिं लखत तब निजपद सेवा देउ ॥ १७ ॥

प्रज्वलिया ॥

तब बिहसि कहा करुना निधान । तोहि मोहिन भेद कछु सखा आन ॥ चौदह बरषै पुरमैं न जाउं । पितु आयसु बन फल कंद खाउं । तुम जाउ तात अपने निकेत । करौ राज सुखी अंगद समेत ॥ पैसिय खोजब तन मन लगाइ । मैं बसब प्रवर्षन गिरिहि जाइ ॥ प्रभु आयसुलै लछिमण सुजान । सुग्रीव सहित पुर करि पयान ॥ तिन आइ सखै भूपाल कीन्ह । अरु अंगद को युवराज दीन्ह ॥ १८ ॥

नराच ॥

पुरा गुहासवांरि देव राज चित्त तावनी । जलाशयं लगाइ भांति भांति रंग कीमनी ॥ यपेसुबेलि वृक्ष यत्तत्र तेहरे रहैं । सुगन्ध स्वाद युक्त सर्व सर्वदा फरेरहैं ॥ १९ ॥ तहां सुरासलक्ष्मणौ निवास कीन्हजाइकै । जलं ऋतुं बिताइ चारि मास सुःख पाइकै ॥ कहै पुरान ज्ञान भक्ति सर्व चित्त लाइकै । सिलार्चनं बिधिं कहा कृपा समुद्र गाइकै ॥ २० ॥ उठै प्रभात जो सुधीसु भक्ति शौच कै सबै । नहाइ शुद्ध आसनै असीन होइ सो तबै ॥ सुरान् पितृन् सुतर्पि संध्यह्न करै बिधानसों । प्रतिज्ञया करै सुपूर्व ज्ञानके प्रमानसों ॥ २१ ॥ निजं गुरुंप्रपूज्य आदि बिष्णुरूप जानिकै । परं करै शिलार्चनं पदार्थ सब गानि कै ॥ नहाइ बस्त्र यज्ञसूत्र चन्दनं चढ़ाइ कै । सुगन्धपुष्प तूलसी सधूप दीपचाइकै ॥ २२ ॥ अगस्त उक्त पूजिये दशौ अवर्न भक्तिते । हविष्य अन्न पाय संमधुर्य धासु शक्तिते ॥ वेद्य दैनि राज नं करै हृदै प्रमोदते । लवंग पान युक्त दै बिनै करै बिनोद ते ॥ २३ ॥ नमोनमः कृपा समुद्र सर्व जक्त कारणं । नमोस्तु भक्त मुक्तिदं समस्त दोष दारणं ॥ नमोस्तु रामचंद्र कोशलेन्द्र जानकीपते । बिशुद्ध ज्ञानदं बिभो नमोस्तुते महामते ॥ २४ ॥

मालिनी ॥

यहि विधि नित भाई जो करै चित्त लाई । खइमम पुर जाई

मोक्ष साजोज्य पाई ॥ सुनु अपर स्वहाई मानसी रीति ऐसी । जिमि प्रति महि पूजै भाव सो ध्यान तैसी ॥ ज्वइ घट भव गाई पाइकै बुद्धि तीक्ष्णौ । अतिबिमल बिवेकी रामसेवी सुतीक्ष्णौ ॥ रघुबरपरमूर्तिंचिंतये ध्यानलाभं । कमलबिसद नेत्रं श्यामइन्दीवराभं ॥ ममउर जलजातं कर्णिकारं पुलीतां । ब्रवरणसह राजौ राम सौमित्रिसीतां ॥ मनबच अरुकाया कर्ममेजे घनेरे । स्वइसब अबलीजे रक्षमां पाहितेरे ॥२५॥

दोहा ॥

जन्मपाइ दिनप्रति किये कोटिन मैं अपराध ।
पाहि पाहि तव सरन प्रभु तेनसकैं मोहि बाध ॥ २६ ॥
यहि बिधि शालिग्राम शिल पूजैनर करिभक्ति ।
अथवा पूजा मानसी करै सो पावै मुक्ति ॥ २७ ॥

भुजंगप्रयात ॥

उहांबातजातं कपीसेसुनायो । सियानाथको काजतैंक्यौं भुलायो ॥ तुम्हारे हितू बालिबीरै संहारा । श्रीराज संयुक्त राज्यं पधारा ॥ कृतघ्नो न कीजै करौ सीय शोधै । नतौ रामतोपै करै घोर क्रोधै ॥ सुनी सत्य बानी हृदय संक पायो । दिशा सर्व को कीश कोटिन पठायो ॥ २८ ॥

दोहा ॥

मासएक की अवधिदै सबहि कहा समुझाय ।
यहिविधि पवन कुमार तबपठवा भयदेखराय ॥ २९ ॥

तोमर ॥

इतराम नरइवभूरि । अतिशोच सियाबिसूरि ॥ निशिद्यौस हृदय गलानि । बधिबालि नीतिन जानि ॥ कपिराज सुधिन लीन्ह । सिय सोधकीन्हन कीन्ह ॥ कहराम लक्ष्मण नाय । तेहि लाइये डर पाय ॥ सजितून चाप कृपान । गयभ्रात तेज निधान ॥ लखि लक्ष्मणै अति क्रोध । परिपाय कपिकरि बोध ॥ ३० ॥

दोहा ॥

सहलक्ष्मण सुग्रीव तबपरे आय प्रभुपाय ।
जेचरणन कह सिद्धगण मुनिजन रहे लोभाय ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥

लच्छिनित लालति ललित करतल निजबारिज बरन सुदमंगल करन हैं । गंगजी के जनक अनंग अरिप्रिय अति द्विज चिय क्षणहू के पातकहरनहैं ॥ श्रुतियश्गावत लावतउर सुरसिद्ध शेषशिव ईश्वरी अतारण तरनहैं । बलिकेचरन दुखदोषन दरन हरि चरणसरणकह पोषण भरनहैं ॥ ३२ ॥

सवैया ॥

अतसीस मनोपम श्यामल गात मनोहर कोटिन काम लजावन । सुठिशोश जटाउर आयुतहै जलजारुनलोचन तापनसावन । बरबाहु अजान धरैधनु बाण सु आनन पूरण इंदु सुहावन ॥ इश्वरी लखि रूप सियावरको कपि राज परै पुनि पावन पावन ॥ ३३ ॥

चौपाई ॥

चहत निदेश नाय उर लायो । कृपासिंधु करगहि बैठायो । बहु प्रकार अङ्गद करमाना । करिबैठारा राम सुजाना ॥ भूतलरहेभाल कपिजेते । कपि पति आयसु आयेतेते ॥ श्वेतरक्त पिंगल नीलेतन । कोउकर्बुर स्थूलकोउ जन ॥ कोउमकरेभ समान विराजैं । कोउपर्वताकारतन राजैं ॥ पिंगलनयन अरुण मुखसगरे । वालधिमहि अकाश लौंबगरे ॥ सकलयुद्ध जयशीलकपीसा । रावणकहांकहैं करिरीसा ॥ पदुम अठारह सैनप सीवा । सैनसुभट अनगनत अतीवा ॥ दश दश कोटिगये दिशि सगरे । मही अकाश पतालौ बगरे ॥ मास अवधि करिगे सबबन्दर । जोनहिं आवसो दण्ड पावपर ॥ ३४ ॥

दोहा ॥

जामवंत नीलादि भट अंगद औहनुमान ।
लैआयसु गवने तुरत हृदय राखि भगवान ॥ ३५ ॥

तोमर ॥

दशकोटि संगभट कीन्ह । अरु औधि मासकि दीन्ह ॥ सिय खोज विनाजो आय । खड्गदण्ड मोसनपाय ॥ ३६ ॥

कुण्डलिका ॥

तब पयानके समय प्रभु पवनज निकट बोलाय । निजकर मुदरी ताहिदै सीतै दीन्हौ जाय ॥ सीतैदीन्हौजाय चीन्हिनिस्रय उरवैहैं ।

ममप्रतीतिके हेतु आपहु तोहि कछु दैहैं ॥ मम प्रतीतिके हेतुभाषि हैं पूर्वकथा सब । समाचार सोपाइ आइयो दूतहोको तब ॥ ३७ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

यहि काजहेतु तुम हनोमान । बलबुद्धि निपुन सबविधि प्रमान ॥ सगगच्छु तुम्है अतिशुभ निदान । प्रभुचरण बन्दिकपि करिपयान ॥ सियखोजत गिरि बन सब विशेष । तहं एक निशाचर प्रबल देष ॥ कहै रावण यहसिय हरीजाहि । करिघोर कपिन तबहता नाहि ॥ यहि विधि खोजत बनगयो आन । भेतृषित सकल सुखओमलान ॥ तहं दीख एक गिरि गुहा जाय । जलभीन निकसि पच्छी निकाय ॥ तेहि प्रविसे दृढ़मत करि बनाय । मनिमय मन्दिर तहं दीख जाय ॥ एक योगिनि हरिउरधरे ध्यान । करिविनय ताहिउर अतिडेरान ॥ तेहिपूछा तुमको कहौ गाय । केहि हेतु समागम धर्मआय ॥ कह हनोमान तेहि करि प्रणाम । अवधेश सुवन लछ्मण राम ॥ पितु आयसु बसिबन सहित बाम । कपटीमृगमारन गयेराम ॥ छलकरि रावण हरिनारि लीन्ह । तबराम सुकण्ठहि मित्र कीन्ह ॥ कपिपति आयसु सिय खोजहेत । वन फिरत तृषारत भे अचेत ॥ हमसकल विकल फिरैं जलउपाउ । तव चरणलखे दूतविधि बनाउ ॥ ३८ ॥

चौपाई ॥

तुमनिज समाचार कहुगाई । तबयोगिनि कहहर्ष बढ़ाई ॥ खाउ मधुर फल करि जल पाना । पूछहु तब मम कथा निदाना ॥ सुनि आयसुतिन रुचिफलखाये । करिजल पानबहुरि ढिगआये ॥ योगिनि तबनिज कथा सुनाई । प्रथमादिव्य निजनाम बताई ॥ मैंगन्धर्व सुता अभिरामा । विचरत रहौं सदा विधिधामा ॥ लखि विरंचि मोहिं करु तपजाई । पैहै मोक्ष दरशहरि पाई ॥ त्रेताब्रह्म होय नररूपा । तासुनारि हरि निश्चर भूपा ॥ तेप्रभु दूत आव तव आश्रम । सगदर-साय मेटि तिनको भ्रम ॥ मूंदौ नयन गुहा तजिजाहु । पैहौ सिया सुयशु जयलाहु ॥ मूंदिनयन तिनतुरत उघारे । ठाढ़े सबकपिसिंधु किनारे ॥ ३९ ॥

तोटक ॥

तब दिव्यप्रभा प्रभु पासगई । परिपायन निश्चल भक्ति लई ॥ प्रभु आयसु गै बदरी बनको । परधाम गईतजिकै तनको ॥ ४० ॥

मधुभार ॥

अंगदप्रवीन । उरशोच कीन्ह ॥ कन्दरभुलाय । भयेमास आय ॥ सियसुधि नपाय । काकहब जाय ॥ मोहिं शत्रुतनै । लखि भूपहनै ॥ असउरविचारि । भरिनयनवारि ॥ तबहनोमान । उपदेशि ज्ञान ॥ तुमप्राणप्रान । कसकहु अयान ॥ यहगुप्तबात । सोसुनौतात ॥ ४१ ॥

मालिनी ॥

सुततुम मतिमानौ राममानुष्यभेवा । त्रिभुवनपतिजानौं सर्वदेवाधिदेवा ॥ यहसिय नहिं नारी आदिशक्त्यावतारी । लछ्मण तनधारी शेष सो भूमि भारी ॥ ४२ ॥ हमतुम कपि जेते सर्व वैकुण्ठ बासी । अनुचर सुरसर्वे सर्वये पुण्य रासी ॥ हरिचरित अपारं जानि काहू नपावा । सुनि पवनज बानी अंगदै बोध आवा ॥ तब सकल महेंद्रा पर्वतै कूदि आयो । पवनज नलनीलं जांबवान् बालि जायो ॥ करि विविधि वितर्कें बैठ दर्भै विछायो । सुनिवचन कुलाहल दौरिसंपाति आयो ॥ दिनबहुतक बीते मैं मरौं बे अहारा । अबसब यहखैहौंआजही एकबारा ॥ सुनि सुभट डेराने अंगदं यों बतायो । धनि सुयशु जटाई रामके काम आयो ॥ रघुपति हित कर्नी सर्वगीधै सुनायो । सुनि वचन प्रतीते सौंह दै तीर आयो ॥ अब अनुजहि पानी दै महूं अचआवों । उर धरहु सुधीरै जानकी हालगावों ॥ असकहि निज भ्रातै बारि दैफेरि गायो । अवनिज जिमि लंकै रावणा दुष्टलायो ॥ जलनिधि भयकारी योजनौ सौ अपारा । तेहितट त्रिकुटाख्यंविस्तृतं सो पहारा ॥ ४३ ॥

नराच ॥

तहांसुवर्ण रत्नमैपुरी सुनामलंकहै । बसै निशाचरौघ युक्तरावणा निशंकहै ॥ अशोक तरुबाटिका विचित्र मध्यजानकी । समूह आस पास बैठितीय जातुधानकी ॥ ४४ ॥

दोहा ॥

भयेमास दस जानकिहि शोचसमेत बिताव ।
होइ पराक्रमजाहिसो देखिवेगि फिरिआव ॥ ४५ ॥
असकहतै तबगीधके भामेपर ततकाल ।
लखिविस्मय सबके भयोकहा सकल निजहाल ॥ ४६ ॥

बरवै ॥

हमदौ बंधु प्रथम बलगगन उडान । अनुज घूमसैं मदबस रवि नगिचान ॥४७॥ जरेपंख रवि तेजहिगिरयौं अचेत । देखि चन्द्रमुनि मोहिं तब कृपासमेत ॥ ४८ ॥ मम अभिमान छुड़ायो ज्ञान सिखाइ । जमिहैं परकतु निश्चय अवसर पाय ॥ ४९ ॥ त्रेता हरि अवतरिहैं हरैं महिभार । तासुनारि हरिलाइहि लंकभुवार ॥ ५० ॥ तासुदूत मिलि तुमतब सिय सुधिगाव । तनपवित्र ह्वै तुरतै पंखन पाव ॥ ५१ ॥

नराच ॥

लखौहमैं विशुद्धह्वै नये सुपक्ष पायऊ । अपारदृष्टि गीधकै सिया तुम्हैं बतायऊ ॥ करौ सुयत्न जाहि सिंधु नांघिपार जाइये । प्रबोधि जानकी बहोरि अबवेगि आइये ॥ ५२ ॥

चामर ॥

जासु नाम गावतै भवार्णवौ सुखात है । तासु दूतनै कहा समुद्र कौनि बात है ॥ कीशनै सिखाय गीधजातभो अकाशही । अंगदादि बीरनै सुने भयो हुलासही ॥ ५३ ॥

पज्झलिया ॥

तब अंगद कहबीरन सुनाय । को सुभट बारि निधि पार जाय ॥ जो जनकसुतै लखिकहै आय । यशलहै विपुलकपि कुलजियाय ॥ ५४ ॥ निजनिज पौरुष सबकहैं गाय । दशबीस तीस योजन बताय ॥ कह अंगद मैंसकौं जायपार । पैशोच हृदय घूमतीबार ॥ ५५ ॥ तुमसब-लायक कहजामवन्त । सोकिमि पठइय सबकपिन कन्त ॥ जबविष्णु त्रिविक्रम रूपलीन्ह । तेहिसप्त प्रदक्षिण महंदीन्ह ॥ ५६ ॥

दोहा ।

बूढ़भयौं अबबल घटो नत कतसिंधु अपार ।
लंकासहित त्रिकूटगिरिलै धरतिउं यहिपार ॥ ५७ ॥

इति श्री मद्रामायणे उमा महेश्वर संवादे ईश्वरी द्विज भाषाकृते किष्किन्धा काण्ड चतुर्थसमाप्तम् ॥
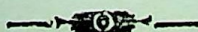
श्रीगणेशायनमः ॥

अथरामविलास

सुन्दरकाण्ड ॥

दोहा ॥

सुमिरि जानकी चरण पुनि रामलषण धरिध्यान ।
पवन पुत्र तब गवनकरि पवन समान उड़ान ॥ १ ॥

मधुभार ॥

सुनु हनोमान । तुमसम नहान ॥ बलबुधि निधान । कोउ हैन आन ॥ २ ॥

सवैयाभेद ॥

जन्मतननि कुच्छतेकूद्यौ प्रातरविहि सुखमेलाहै । कुलिस कठोर चोट दारुण अति ताहि चौंहसों ठेलाहै ॥ कौतुक श्रीहनुमान लला नभकला बालपन खेलाहै । राम कान करिबेके लायक तैं समरत्थ अकेलाहै ॥ ३ ॥ उठौतात जनि मौनगहै। अबनांघौ सिंधुअपाराहै। सीतै दर्शिबेगि आवो तुम यहै हेत तन धाराहै ॥ सुनिऋच्छेश वचन कपि पुलक्यौ भयो पर्वताकाराहै। मनौचिविक्रम अपररूपको कीन्हो अति विस्ताराहै ॥ ४ ॥ सिंहनाद कै कह्यौ वीरबर जायबारि निधि पारैमैं । रावण कुलसमेत संहारौं आनिसिया यहिबारैमैं ॥ कहै तौबांधि लावौं लंकेश्वर मानैं कहा तुमारैमैं । कहै त्रिकूटसमेत लंकगढ़धरैं। आय यहि पारैमैं ॥ ५ ॥

मालिनी ॥

सुनिपवनज बानी जांबवान्हर्षि बोले । जिमिलघुखग मध्ये बाजके नयनखोले ॥ अवसिय सुधिलैये रामचन्द्रै सुनैये । पुनिप्रभु संग जैये पौरुषौ सो देखैये ॥ ६ ॥

छन्दतोटक ॥

अगहन् दशमी सुधिपायसबै । हरिबासर को हनुमानतबै ॥ कपि

भालुन भेटि बुझाय कह्यौ । फल खाय इहां तुम सर्व रह्यौ ॥ हम सीय विलोकि फिरैं जबहीं । तुम साथ मिलैं प्रभुको तबहीं ॥ म्वहिं सोंबल रावण कोटि नहीं । अरु और सुरासुरहैं न कहीं ॥ रघुनाथ प्रताप चहौं स्वकरौं । नहिं दुस्तर कारज नाहि अरौं ॥ असभाषि तुरन्तहि मार्ग गह्यौ । जनु स्वर्ण सुमेर उड़ान चह्यौ ॥ ७ ॥

दोहा ॥

राम लक्ष्मण जानकी हृदय सुमिरि हनुमान ।
पवन समान प्रताप बल पवनसमान पयान ॥ ८ ॥

कवित्त ॥

झपटि झपटि जेहि कुधर धरत पग धसकि धसकि तेज धरनि छपायगे । सिकुरि शरीर सवजरध उठाय दृष्टिचटकि चकोट चापि चंचलै लजायगे ॥ ईश्वरीसमीर सुत धीरबीरताहीसमय सुवरण बरन भलीकसी लगायगे । उपमाअभूत कविखोजि खोजि हारिपाय अम्बरहि मानङ्ग पिताम्बर वोढ़ायगे ॥ ९ ॥

तोटक ॥

सुरबुद्धि विचारहि चित्तधरी । पठयो सुरसै मगजायअरी ॥ तेहि शांत कियो हनुमंत बली । स्वइआशिष दै सुरलोक चली ॥ १० ॥

नराच ॥

विलोकि व्यौमवातजै समुद्र बैन मानिकै । तिराय देत आसनै कपिं गिरीशजानिकै ॥ करागपर्शि ताहि श्रृंगमार्ग जातहीं तहां । सिया विशोधबे लिये हमैं अरामहै कहां ॥ ततोतरानि राहुमातु सिंहिका बसै जलै । उड़ात पच्छि छांह खैंचि खात जीवनै छलै ॥ अकर्षि बातजै सोउ विलोकि राक्षसी तहां । प्रचारि ताहि लात मारि बीरबज्रसी महा ॥ ११ ॥ प्रमाणिका ॥

गयोकपीश पारही । समुद्रहूउछालही॥दबोत्रिकूट पावसे । हलोसो षर्वनावसे ॥ दशाननौ सुखभरे । गिरो सिंगासनै तरे ॥ सभा सशंकही भयो । नजान कोउ काभयो ॥ १२ ॥

हरगीतिका ।

तहंनिरखि कपिबन बिपुल शोभा सकल नगर समीपके । अतिसै हरेफूलेफरे जनुबाग मदन महीपके ॥ पुनि लख्यौ लंका ललित छवि

कलधौत मणिमै धाम हैं। चित्रित मनोहरव्रात सब सुरपुर ऊते अभिराम हैं॥ १३॥

तोमर॥

कपिकीन्ह हृदयविचार। किमिकरौं पुरपैठार॥ लघुरूपसो निसि कीन्ह। सिय सोधनै मनदीन्ह॥ धरिनिस्चरीतन आय। कहलंकिनी रिसवाय॥ तुमकौन मौन सिधार। पुरचोर मोरअहार॥ कहिबात मारिसि लात। तबकीन्ह ताहि निपात॥ परि मूर्छि भूमि अचेत। पुनिबैठि कीन्ह सुहेत॥ १४॥

हरिगीतिका॥

जैजयति कपिपुरप्रविशि कीजैकाज निजहरषायकै। मोहिंकहा ब्रह्मा प्रथमही तोहिं कीश मारै आयकै॥ तब जानियो निशिचर समन सब रावणादिक पायहै। लहिसीय सुयशु समेत रघुबर कुशल कोशल जायहै॥ हनुमान ग्रामप्रवेश करिसब धाम सोधे जायकै। जहंतहं विलोके भीमभट अतिशै प्रबल भय दायकै॥ गजवाजिसार भंडार सैनागारहू सबदेखिकै। दशमौलि घटश्रुति मेघनादऊ भौन सकल विशेषिकै॥ १५॥

दोहा॥

चिंता युतकपि घूमिकह आतुर लंकैबात।
हमैं बतावोहै कहा तुरत जानकी मात॥ १६॥

नराच॥

कहाबहोरि लंकिनी कपीश यत्नजाइये। अशोकबाटिका विचित्र तत्र सीय पाइये॥ गयो तुरंत पौनपूत सूक्ष्म रूप धारिकै। ददर्श जानकी तहां प्रमोदभो विचारिकै॥ १७॥

हरिगीतिका॥

शिरजटा बेनी एककृशतन दीनबसन मलीनहै। उपवास निर्जल महिसयन रघुवीर विरह प्रवीनहै॥ भरे नील नीरज नयन ऊसुवन स्वास ऊरध छन छनै। हा राम रघुपति प्राणपति इतिबार बारहि सुख भनै॥ १८॥

मधुभारछन्द॥

लखि हनो मान। दुख लहि निदान॥ भो तब बिहान। तह दल

कृपान ॥ द्वादसि बिताय । पुनि निशा पाय ॥ दश मौलि आय । बहु नारि लाय ॥ १९ ॥

नराच ॥

भयो सचिंतनीय राक्षसाधिपं सनै महा । विलोकि स्वप्न रामदूत आय लंकको दहा ॥ उजारि बाग सैन मारि सो उठो कवाइकै । विसूरि राम को प्रताप सीय तीर आइकै ॥ २० ॥ कहै कठोर बैन साम दाम दंड भेद सो । बिलोकु मोहिं क्यौं न त्यागु सर्व चित्त खेद सो ॥ सुनी कुवाक्य क्रोध युक्त सीय ताहि सों कहा ॥ हरिं बिना हरे हमैं लजै न तैं धृगं महा ॥ २१ ॥

प्रमाणिका ॥

रनै जो राम रोषि है । सरै समुद्र सोषि है ॥ समेत सर्व राकसे । करैंगे तोहि खाखसे ॥ किये कुकर्म जौनहीं । लहौ फलै स्वतौनहीं ॥ तबै मनुष्य जानियो । यमालयं बखानियो ॥ २२ ॥

मालिनी ॥

सुनत परुष बानी रावणै खङ्गतानी । बरजि तबहि रानी नाहको नीति आनी ॥ तबबस सुरनारी मानुषीका विचारी । तजु समुझि दुखारी दीन शोकाधि कारी ॥ निशिचरिन बोलायो रावणैयों सुनायो । ममबस करि सीतैमास द्वैमध्य लायो ॥ नतु निजकर काटौं शीश याही कृपानी । असकहि पुनिआयो आपनी राजधानी ॥ २३ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

इत सीतै निशिचर वृन्दआय । दुखदेत विपुल विधि भयदेखाय ॥ कोउ खङ्गखैंचिमारन सिधारि । कोउ खान कहै निज मुख पसारि ॥ कोउ कहै जुवाकत दृथ खोउ । जसकहै राजतस करुनसोउ ॥ तिन मध्यएक त्रिजटा विशेष । तेहि कहा ऐसमैं सपन देष ॥ कपि एक आयसबलंकजारि । सोगयो तुरत सबकटकमारि ॥ पुनिराम लषण कपिसैन संग । आये निशिचर कुलकीन्ह भंग ॥ रावणैमारि यमपुर पठाय । कैभूप विभीषण सियलवाय ॥ निजवाम अंक आरोपिलीन्ह । सियसेवो हितनिज चहौ कीन्ह ॥ सुनिसपन सत्य निशिचरिडेराय । सोई सगरी जहंतहां जाय ॥ निजमरण जानकी सत्यजानि । गिरि मूर्छि अवनि उर राम आनि ॥ २४ ॥

तोटक छन्द ॥

सियसोच विलोकि कपीसतहां । रघुबीर कथातब सर्व कहा ॥ धनुभंग विवाह उछाह यथा । भृगु नंदनको जिमि मानमथा ॥ पितुआयसु दंडक बासकियो । खरसे खलनै जमलोक दियो ॥ इ-वबंधुगये मृगहेत छली । दशकंठ हरी मिथिलेश लली ॥ मृगमा-रितखोपुनि सून्यथली । सियखोजत ब्याकुल लीन्हगली ॥ पुनिगी-ध जटाइहि मोक्षदियो । जिमिगाय सुकंठहि मित्रकियो ॥ कपि भूषण दै प्रभु चीन्हिहियो । रघुनाथ प्रियाहित सोचकियो ॥ बधि बालि सुकंठहि राजदियो । क्रमते कपिसर्व बखानकियो ॥ बसिशै-ल प्रबर्षन बंधुदुऊ । सिय खोज पठैकपि गाइ सोऊ ॥ कपि भालु गयेदिशि देशसबै । मोहिं देखिदियो रघुनाथ तबै ॥ सुनु वायुतनै सुदरी यहलौ दरशाउ सियै जब तोहिंमिलै । इम आइ समुद्रहि नांघितै । कृतकृत्यभयों तवपायचितै ॥ विसमै सुनतैसियचित्तधरा । केहि बैन सुधासम श्रौनभरा ॥ रघुनायकथा जेहिंमोहि कही । प्रकटै किनआइ सोवेगि मही ॥ कपिआइ प्रनामकियो जबही । फिरिबैठि सियामन संकितही ॥ मोहिं मोहचहै दशशीस छली । चुपसाधि रहीमिथिलेश लली ॥ २५ ॥

भुजंगप्रयात ॥

कहीसीय सोसौंहकै पौनपूतं । करौसत्य विश्वासमैं रामदूतं ॥ दईमुद्रिका नाथसो हाथलीजै । चितैचीन्हि चित्तैरचै तैानकीजै२६॥

दोहा ॥

सीता श्रीरघुनाथ को मुदरीलीन्ही हाथ ।
नामांकित अच्छर निरखि चीन्हिधरी निजमाथ ॥ २७ ॥

पज्झटिया ॥

लखिदूरि ठाढ़कपि पानि जोरि । तेहिकहा जानकी बहुनि-होरि ॥ तुम प्राण हमैंसुत दियो आइ । यहि समै स्वामि मुदरी देखाइ ॥ अबकुशल कहौ भ्राता समेत । कहकौनि भांति करुना निकेत ॥ कह हनोमान सीतैसुनाइ । जबतेतब नाथबियोग पाइ ॥ तबते कृशतन अतिबिरह लीन । तोहिखोजत बनबन दुऊ दीन ॥ सुग्रीव कपीसहि सखाकीन्ह । तोहिढूंढन कोटिन कीसदीन्ह ॥

तिन कोटिन गनमह एक आय । देखा जननी तव जलज पाय ॥ अब मातु हमैंकछु देउ चीन्ह । निश्चय हितज्यौं रघुनाथ दीन्ह ॥ लखिजाहि संगकपि दलखरारि । लैजाइं तुम्हैंरावनै मारि ॥ पुनि कपिहि कहा जानकी बात । मम विपति तात्तुम लखेजात ॥ द्वै माससध्य जोप्रभुन आइ । तौजीवत मोहिं निश्चैनपाइ ॥ पैकिमि तरिहैं बारिध अपार । सुनिकहा बक्रिमारुत कुमार ॥ २८ ॥

हरिगीतिका ।

सकैकोटि बारिधि सोखिरघुवर एकसायक साधिकै । चहैपाटि गिरिन तुरंतहो चहैबान सेतुहिबांधिकै ॥ मोहिंदेउ आयसुचीन्ह जननी प्रभुहि लावौंधाइकै । तबदियो चूड़ामणि सिया अरु अपर कथा सुनाइ कै ॥ एकसमय बनधरि काक तन सुरपति सुवन तहं आइकै । ममचरण चोचहि मारितव प्रभुसींक सरहि चलाइकै ॥ भागोजरत सबलोक घूमत ब्रह्मशिव पुरजाइकै । पितुपास गो रच्छा न तेहितव शरणआयो धाइकै ॥ तजिएक नैनविहीन ताहिअमोघ रघुवर शायकै । केहिहेतु प्रभु नहिं आयऽत किमिरहे मन निठुराइकै ॥ सोदोष ममनैनन प्रबल प्रभु दरशहित ललचाइकै । नतु-छांड़िप्राणहिं प्राणपति ढिगसहे दुखडूत आइकै ॥ २९ ॥

तोमर ॥

सुनिवैन कह हनुमान । रघुबीर सोध न जान ॥ करि मैंसकौं रिपु नास । तोहि जाउंलै प्रभुपास ॥ नहिं दीन्ह मोहिं रजाइ । यहिहेतु रहौं डेराइ ॥ सुनि सीयकरि संदेह । कपिसर्व तू सम देह ॥ ३० ॥

झोलना ॥

सुनत मिथिलेशजा वचन हनुमान तब पूर्व तन प्रकटि दरसाइ सीतै । जाहिलखि सुरअसुर अपरगनती कहाखाइ सुखवेह कपत सभीतै ॥ कनकगिरि श्टंगसंकास मर्कट सुभटबिपुल रवितरुनतन तेज भ्राजै । पीन पर चण्ड भुजदण्ड अति अतुलबल आव जनुकाल निस्वर समाजै ॥ ३१ ॥

कुण्डलिका ॥

तव सीता आनन्द लखिबल बुधि बिपुल कपीस । अजर अमर

सुत होउ अब बल निधि मोरि असीस ॥ बल निधि मोरि असीस कृपा रघुबर सुनि करिहै। तब यश सुनत विशाल मोद शिव बिधि मन धरि है ॥ तब यश सुनत बिशाल छूट भव बंधन ते सब। वचन सुधासम सुनत परो पवनज पायन तब ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

सुत अबही तुम जाइकै रघुनाथै लै आउ।
रनरावनहिं संहारिकै प्रभुपद मोहिं दरसाउ ॥ ३३ ॥

सोरठा ॥

कह कपि जैसि रजाइ। सोई करिहैं मातुमैं ॥
दशमुख मर्दहिनवाइ। खाइफलन निश्चरनहति ॥ ३४ ॥

दोहा ॥

सिय आयसु लै तुरतही तेरसि दिन हनुमान।
फलखाये तोरे बिटप लंकेश्वर उद्यान ॥ ३५ ॥

मधु भार ॥

लखि कपि भयान। तब बाग वान ॥ लै धनुष बान। मारै अयान ॥ ३६ ॥

नराच ॥

कपीस कोपि छीनि एक शत्रुते गदा महा। समस्त सैन मारि आपु ठाढही रह्यो तहा ॥ बचेपराइ जाइ लंकनायको सुनायऊ। उजारि बाग राक्षसा संहार कीश आयऊ ॥ ३७ ॥ सकोपिरावनै पठै बली बरिष्ट अक्षसे। अपार सैन संगकै मनौ पहार पक्षसे ॥ बिलोकतै कपीश लोह खम्भलै उखारिकै। हने समस्त बीरनै पलाईमें प्रचारिकै ॥ ३८ ॥ गयो बहोरि दूतरावनै वृतान्त गायऊ। महान कीशनाथ रूपकाल आपु आयऊ ॥ सुना सशोक इन्द्रजीत आदि बीरनै पठै। देखाउ कीश पुछबांधि लाउ पुछहीसठै ॥ ३९ ॥

प्रमाणिका ॥

गयेति बीरबांकुरे। रनैन जे कबौं मुरे ॥ प्रचारि अस्त्र मारते। हतो धरो पुकारते ॥ ४० ॥

नराच ॥

अजै बरिष्ट बात जो बिशाल खम्भधारिकै। छनाइमें निशाचरी

अनी सबै संहारिकै ॥ हना बहोरि मेघनाद को रथाश्व चूरकै ।
गयो खसागि अंबरै मयावि पूर सूरकै ॥ ४१ ॥

मालिनी ॥

तब असुर कपीसै ब्रह्मके अस्त्रबांधा । अमरपति जितैया लाइ लंकेश राधा ॥ लखि दशमुख पूछा कोशतैं को पठायो । मम बन फलखायो हलक्यौं तोरि आयो ॥ बज्रकटक संहारे कौनि भै तोरि हानी । सुनि हनुमतसानी नीति सों बोलि बानी ॥ सुनु दशमुख मानीराम त्रैलोक स्वामी । पितु बचकृत आनीदगडकै राजधानी ॥ तेहि छिलकरि सुनेनारि आनेचोराई । तेहिप्रभु करदूतं दीखसीता-चआाई ॥ क्षुधित फलन खायों और ना मैं बिगारा । तब खल हठि मोपै अस्त्र शस्त्रै प्रहारा ॥ ४२ ॥ नराच ॥

जिन्हौं जिन्हौं हमैं हता तिन्हौ सबैसंहारिकं । बिरोध हद्विदेखि सर्बबाटिका उजारिकं ॥ तनै तुम्हार ब्रह्मअस्त्र बांधि मोहिंलायऊ । कचै हटै करौ खये स्वपुत्र शोक पायऊ ॥ ४३ ॥

सवैया ॥

सुनु रावनतू संग कोटिन कोहति मान पिनाकहि तोरितहा । भृगुसे विनगर्व कियेछनमें जिनसों भट भीमन दूजो रहा ॥ खर से खल खम्र किये सरएकहि बालि बधो अति बीर महा । रघुनाथ प्रताप सिखीन सिखातेहि चाहत पार पखेरु कहा ॥ ४४ ॥ रदश कंठ न बूझ अबौ जेहि केवलबारिध नांघिमैं आयों । मारि तमीच चमूअगनी फलखाइ अघाइ बगाति बिछायों ॥ ब्रह्मसरै लहिआइ दूतै उरलागि दया तेहि तोहि सिखायों । सौंपु सिया करुना निधिके पद पायन ह्वैं सरनागत आयों ॥ ४५ ॥

नराच ॥

सुना कपीस बैन कोपि रावना बधो चहा । समै सुपाइ मंत्रि लै विभीषनौ गयोतहा ॥ कहासुबन्धु पाइ बन्दि आनदण्ड दीजिये । बिरोध सों न दूत मारु राजनीति कीजिये ॥ ४६ ॥

दोहा ॥

सुनत विभीषनके बचन दशमुख कह हरषाइ ।
तेल तूलपट पूछनहि पावक देउ जराइ ॥ ४७ ॥

नराच ॥

नियोग नाथ पाइ लाइ तेल तूल धाइकै । घृतादि वस्त्र नारका समस्त लंकचाइकै ॥ रचा लंगूर फेरिग्राम बाननेबनाइ कै । प्रचारि पावकौ प्रचण्ड खण्ड खण्ड लाइकै ॥ ४८ ॥

अगिल्ल छंद ।

सुनि निशिचरनि बांधि लायो कपिइन्द्र जीत बलभारी । लखि लंकेश घुमाय लंकपुर पावक पूंछ प्रचारी ॥ सीतै भयो महा दुख दारुन सुमिरयौ राम खरारी । जौ मन तन ममसत्य पतिव्रत तौ जीतै बनचारी ॥ सीतल होय अनल हनुमानै नेकन तनतेहि वासा । अरिगण मारि जारि सब मेरो हाल कहै प्रभुपासा ॥ तेहि अवसर राक्षसी इन्दजे प्रथम सिये दुख दाइनि । कपिगति गाय रोय पायन परि रक्षिय हमैं गोसाइनि ॥ ४९ ॥

कवित्त ।

जरत विलोकि निज पुच्छ तुच्छ रूप ह्वैकै निपुकि कपीश कूदि गयोनाग फांसते । उपटि कनक खंभकरगहि मरदत निकरनिशाचर लुकात जासु वासते ॥ बाढ़िकै लगो अकाश गरजत अट्टहास दीन्हो आगि आसपास हृदयहुलासते । भभकि भभकि ज्वालमाल अतिसै करालपवन विशाल चलै सब सब आसते ॥ ५० भवनभण्डार गजबाजि सार हथियार विविधि बजार राजद्वार सब जरिगे । काञ्चन दिवारते वैकांच समपघिलत औटैबारबार हनोमानहाठ अरिगे ॥ जातुधानु नारीसे।तौ हितुन पुकारि भागींसूर बीरजाय सिंधुतीर डरि परिगे । रोइ रोइ रानिहु धिक्कारि कहै रावणहिं बांधे।अब कोशबीस बाहुबल हरिगे ॥ ५१ ॥

दोहा ॥

चतुर्दशी दिन दाहि पुर छांड़ि विभीषण गेह ।
न्हाय नदीशै आयकपि सियपदपरो सनेह ॥ ५२ ॥

हरिगीतिका ।

मोहिंदेव आयसु जननि अब हरिपद विलोकिय जायकै । कह जानकी ताहि देखिसीतल हृदय प्रभुसुधि पायकै । लइआयदशा बहोरि राखौं प्राणका समुझायकै । पुनिपवन पुत्र प्रबोधि सीतहि

रहौ धीरज पायकै ॥ सुनतै कृपाल समेत कपिदल आयहै इतआयकै । यहिभांति कहिकरि परिक्रमा कियोगवनपुनि सिरनायकै ॥ वारिधनिकट चढ़िगिरिवरै कूदे बलै अधिकायकै । गिरिगयो महिधसि आपु ऊपरतीस योजन जायकै ॥ गरज्यौ महाधुनि सुनतही कपि भालुउठि हरषायकै । तेहिसमै मारुतनन्दनौ गिरिसिखर पहुंचो आयकै ॥ मिलिभेंटि सबहि सुनाइ सीतैदेखि आयों जायकै । पुर जारि निशिचर मारि अरुलंकेश्वरै बतराइकै ॥ ५३ ॥

मालिनी ॥

सुनिपवनज बानी अङ्गदै जामवानो । उठिहित करि भेंटैबाहुबीजैं बखानो ॥ कपिदल सब कूदैंन्त्य मोदाधिकारी । जिमि जलनिधि राका रोहिनो सै निहारी ॥ ५४ ॥

दोहा ॥

पञ्चमिलो मारग रहे बातौ सकल सुनाय ।
षष्ठोदिन युवराज युत मधुबन पहुंचे आय ॥ ५५ ॥

पञ्झटिया ॥

सबक्षुधित भालु कपि अतिबनाय । संतुष्ट विलोकिय रामपाय ॥ यह सम्मतकै कपिभालु जाय । मधुबन प्रबेशि फलमूल खाय ॥ वन रक्षक दधिमुख बर्जि कीन्ह । त्यहि मारि कपिन बहिराइ दीन्ह ॥ तेजाय कपीशहि कहपुकारि । बनअङ्गद हनुमत करि उजारि ॥ सुनतै कपीश मनहर्ष आय । आयो हनुमत सियसोध पाय ॥ विन सियसुधि बन किमि सकै जाय । कपिनाथ हृदय दृढ़मति बनाय ॥ तेहिसमय कपिन सह वायुनन्द । सुग्रीवै मिलि अतिशै अनन्द ॥ सत्तमि दृतान्त सुग्रीव जानि । परस्यो रघुनंदन चरणआनि ॥ ५६ ॥

हरिगीतिका ॥

पूछत कृपानिधि कुशल कीशन भक्तबत्सल चातुरे । तेपरतपुनि पुनि चरण कमलनयन जलप्रेमातुरे ॥ कह जामवान सुजानजेहि जनजानि प्रभुतुम आदरौ । सो सुकृत सुयश सुभाग भाजन गुणाकर विजई बरौ ॥ हेनाथ तुम्हरी कृपा पवन कुमार सिय सुधि लायऊ । सुनतै कपिहि भुजदण्ड भरि रघुबीर हृदय लगायऊ ॥ कहुतात कहंकेहि भांति जानुकि कौन विधि जोवत रही । जेहि

भांति आयो देखि पवनज तौन सब विधि बतकही ॥ लैगयो लंकै दशबदन निशिचरिन सौंप्यौ नायकै। मैंदीख जाय अशोक बनहि सशोक रहि दुखराइकै ॥ हाराम रघुपति रटत निशि दिन दीन नयनन जलभरे। उपवासकरत लजियत दर्शन रावरे लगिहठकरे॥ लखिसमयमें निज नामकहि रघुबीर दूतबतायऊं। धनुभंग आदिक कथातव सबअन्त सरस सुनायऊं॥ मैंसानु रघुबर दास अबविश्वा-सहितसौंहैं कियों। तबचितै मातन तुरतही मुद्रिका तव कर पर दियों ॥ पहिचानि सुदरी शीशधरि हानाथ मोहिं बिसरायऊ। कहुकुशल अनुजसमेत कपिकेहि भांति लखितत आयऊ॥ मैंअपर कथा सुनाय मांगी बिदा प्रभुपहं जाइहैं। कछु चीन्हदीजै जननि जौनदेखाय नाथहिलाइहैं॥ मोहिंदीन्ह चूड़ामणि उतारिजयंत कथा सुनायकै। जोमास मध्यन आयतौ मम प्राणमिलि हैं आयकै॥ परिपाय विपतिसुनाय अनुजसमेत कपिदल लाइये। बधिरुकुलह-दलसमेत रावण मोहिं प्रभुदरसाइये ॥ ५७ ॥

पज्झटिया ॥

कछुकह्यौ लक्ष्मणहिं कटुकबात। सोक्षमऊ मोरि अज्ञतातात॥ अस कहि चूड़ामणि प्रभुहि दीन्ह। उरलाय राम अति शोच कीन्ह॥ ५८॥

तोमर ॥

पुनि रामचन्द्र कृपाल। कपिते कहा तेहिकाल॥ केहि भांति जारीलंक। हतिराक्षसा अतिबंक॥ कहहर्षि पौनकुमार। सुनि-ये सोऊ करतार॥ तुम्हरी कृपा सब कीन्ह। मोहिं नाथ गौरव दीन्ह॥ ५९॥

सवैया ॥

सुंदरी तुम्हरी करलै ड़गरोतबते तनतेज बढ़ोअगरो। सुनिगीध सुखे खुरबारिसे बारिध नांघि गयोछनमेंसगरो॥ सियबंदि उजारि उद्यान घनोरण जीति निशाचरनै भगरो। मथिमान ससैन्यदशानन कोपुनिजारिजराइजरोनगरो॥६०॥ कपिसै टनमोटनको कालसे अरुसिंधु उलीचिकै फेरिभरौं। अतिरङ्कहु होतधनेश तेदून धनेशहि रंकन रंकतरो॥ लघुजीव विरञ्चि समान प्रधान विरंचिहिलै जग

बीचधरै । जगनाथ तुम्है यह नीति सदा जब जौन चहौ तबतौन करौ ॥ ६१ ॥

पज्झटिया ॥

सुनि हनुमत कृत श्रीरामचंद । कपिहिय लगाइबाढ़ी अनंद ॥ उपकार तोर मोहिं होयलीन । प्रत्युपकारै नहिं होउ दीन ॥ मैं उऋनन जोग्रम कियो काज । नहिं पूजत दिय त्रैलोक राज ॥ सुनिवचन हर्षहिय हनोमान । परे चरण चाहि करुणानिधान ॥ निजभक्ति अचलमोहिं देवनाथ । जेहिपायभये अजशिव सनाथ ॥ तबएवमस्तु कहि रामचन्द । अतिहर्ष हृदयलहि वायुनन्द ॥ ६२ ॥

नराच ॥

कहा कपीश सेखरारि सर्व सैन लाइये । विजै महूर्त आजुहै पयान को कराइये ॥ निदेश मानि आय भालुकीश यूथपौ घने । प्रणाम रामकोकरैं प्रपूछि सो जने जने ॥ ६३ ॥

कवित्तअनंगशेखर ॥

महाकराल कालते समस्त कीश भालुते नगेंद्रते विशालते न खायुधे बलीबड़े । अनेक रंगरंगते निजै निजै स्वसंगते सुरैं नजीन जंगते खठौरठौर भेखड़े ॥ लखेलगैं भयावने सबैसुक्रोधमें सने लंगूरव्यौम मेंतने उये खशक्र चापसे । असंख्य सन सोरही न जातशेष सोंकही सहैनभार लैमही दबैगनादि दापसे ॥ ६४ ॥

दोहा ॥

अष्टमिउत्तर भाद्रपद रम्यमहूर्त बखान ।
रामलछ्मण विजयहित दललै कीन्हपयान ॥ ६५ ॥
हनुमत अंगदकंध चढ़िराम लछ्मणवीर ।
सतयेदिन सैनासहित पहुंचेजल निधितीर ॥ ६६ ॥

नराच ॥

उहांदशाननै विलोकि दूतकृत्य शोचही । बोलाइ पूछिमंत्रिनै कहौअबै यथाचही ॥ कहैंउपाइ देखिये जुआवसैन बानरी । तुरंत ताहि खाइहैं क्षुधीचमू निशाचरी ॥ ६७ ॥ कहा वहोरि कुंभकर्ण कर्मतैं बुरेकिये । हरेविदेह कन्यका बिचारि मानुखीहिये ॥ रमा रमेश रामसीय जानि भक्ति कीजिये । विनैसमेत प्रीति कै सिया

अबैसु दीजिये ॥ ६८ ॥ सुनापितृव्य बैन मेघनाद भूपसों कही। रजाइमोहिं देवतौ करौं अमानुखी मही ॥ समेत राम लक्ष्मणौ कपोस कीश सायही। अबै प्रहारि आइहौं बहाइ पाय नाथही ॥ ६९ ॥

तोटक ॥

तब आइ विभीषन भक्तमहा। सिरनाइ महीपहि बैठ तहा ॥ लखिकुंभ सुतेघन नादबली। अतिकाय महोदर आदिछली ॥ अरु कुंभ निकुंभऊ पार्श्वमहा। सबसैन प्रहस्त समान तहां ॥ इनको मतितात भरोस करै। हरिआइ मनुष्य शरीर धरो ॥ महिभारं उतारन कारनसो। तुमसे सठकोटि संहारनसो ॥ रनराम नराच गहैंजबहीं। खरसे सबछार करैंतबहीं ॥ तेहिते अबहीं प्रभुपायपरौ। सियदै बिनती बहुभांति करौ ॥ हितहोइ तुम्हार जो चित्तधरौ। असभाखि विभीषण पायपरो ॥ ६९ ॥

नराच ॥

विभीषनं बचंशुभंहितं पवित्र पावनं। निरादरै कठोर भाषि लात मारिरावनं ॥ गयो अकाश मंत्रि लै कहे सभै सुनाइ कै। विरोध रामसों किये मरौ कुलै मराइकै ॥ ७० ॥ महूं छुड़ाइ दोष राम पाद पद्म देखिहौं। बिलोकि मूर्त्ति श्यामलं स्वभाग भूरिलेखिहौं ॥ अनेक भांतिकै मनैमनोरथै सुपावनी। लखी स्वआय मर्कटी चमू महा भयावनी ॥ ७१ ॥ विचारि हांक दीन्हराम चन्द्रपाहि पाहिमैं। विभीषणाख्य नाम रावणानुजं बतायमैं ॥ निरस्त बंधु वर्ग आय आपु शर्न हौं चहा। विलोकि दीन संग्रहो रजाय होत है कहा ॥ ७२ ॥

चौपाई ॥

सुनत विभीषन वचन कपीसा। कहा नाइ रघुनाथहि शीसा ॥ आयो निशिचर खल छल साधी। तुम्है रुचै तौ राखिय बांधी ॥ विहंसि कहातब कृपा निकेता। जग महं सखा निशाचर जेता ॥ सकौं निमिषि मह मारि जियाई। लाइय ताहि चहत शरनाई ॥ बचन सुनत कपीस सुख पावा। लाइ विभीषन प्रभुदरशावा ॥ परयौ दंडवत चरणनधाई। महा प्रीति उर सुखन समाई ॥ पुनिसप्रेम देखा

दोउ भ्राता। नैना नंद दानि विख्याता॥ जलजारुन बिशाल दल लोचन। निरखतुरत ताप त्रै मोचन॥ श्यामगौर सुन्दर सबअंगा। छबि लखि लाजतकोटि अनंगा॥ अस्तुति विविधि बिभीषण गाई मन बच कर्म प्रीति अधिकाई॥ ७३॥

दोहा॥

अहो नाथ निज चरण रति देव कृपा करि मोहिं।
कोटिकाम धुक कल्पतरु समकिहोहि प्रभुतोहिं॥ ७४॥

हरिगीतिका॥

अस यांचि पुनि चरणन पर्‍यो रघुबीर हृदै लगाइ कै। दैभक्ति निज लंकेश कहि शुचिसिंधु सलिल मंगाइकै॥ करि तिलक लक्ष्मण सचिव युत लंकाधिराज बनाइ कै। जब लगि रहै शशि सूर्य महि मम सुयश लोक न छाइकै॥ तबलगि करौ पुरराज अंतहि मोहिं मिलिहौ आइकै। यहि भांति सुनि प्रभु बचन सब कपि गनउठे हरषाइकै॥ पौषै चतुर्थी दिवसभूपति भो विभीषण आइ कै। पंच-मीते दिन चारि लौं मग मांगि सिंधुहिं जाइकै॥ ७५॥

तोमर॥

बिन बारिगे दिन चारि। तब क्रोध कीन्ह खरारि॥ धनु चापि अग्नि नराच। जरै वारि लागत आंच॥ झषमीन व्याकुल झारि। तब सिन्धु भो असुरारि॥ दइरन कीन्ह प्रणाम। मोहि रक्षिये अब राम॥ क्षिति अग्नि जल खंवाउ। जड़ है दइव बनाउ॥ तुम सर्ब बुद्धि अगार। हम जानना करतार॥ कह राम बान अमोघ। तेहि छाड़िये केहि वोघ॥ मम उत्तरे रघुवीर। मल मूल रहै अभीर॥ बधु तौन राम सुजान। मोहिं देत दुःख निदान॥ बधि तौन श्री रघुवीर। शर आव पुनि तूनीर॥ ७६॥

दोहा॥

पुनि रामहिं बिनयो जलधि सेतु उपाय बताय।
छुये कुधर नल नील के सागर रहै तिराय॥ ७७॥

सोरठा॥

भो अदृश्य तत काल। प्रभु बिनती कै वारि निधि॥
बोल्यो राम कृपाल। नल नीलहि आयसु दियो॥ ७८॥

दोहा ॥

हरि बासर दिन दश वदन सुकसारनै पठाय ।
बल प्रताप लखि बज्ररि निज नाथै कहा सुजाय ॥ ७९ ॥

इति श्री मद्रामायणे उमा महेश्वर संवादे ईश्वरी द्विज भाषा
कृते प्रथम चरित्रांत रमत सुन्दरकाण्ड समाप्तः ॥
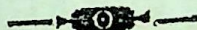
श्रीगणेशायनमः ॥

अथरामविलास

लङ्काकाण्ड ॥

कवित्त ॥

रहत रमत नग नगर नगन तट गजखल कलगर गरल तरल धर।
नगन तगन यश सघन अगन गन अतन हतन तन लसतन कतकर॥
जलज नयन करचरण हरण अघ शरण सकल चरअचर खचर तर।
चहतछनक जय लहत कहत यहहरहर हरहरहर हरहरहर॥ १॥

दोहा ॥

सेतु प्रथम रामेश्वरहि थापि पूजि रघुवीर।
पावै मुक्ति विशेष जो न्हावै गंगानीर॥ २॥

सोरठा ॥

प्रभुआयसु धरि शीश। विसुकर्मा सुतनील नल॥
लावैंगिरि तरुकीश। परसि पानिपानी धरत॥ ३॥

चामर ॥

कोटि कोटि शैल शृंग कीश शीश धारईं। दौरि दौरि नील हाथ राखि सिंधु पारईं॥ धाय धाय सेतु स्वच्छ सोधि कै सुधारईं। लाल पीत श्याम सेत ठौर ठौर ढारईं॥ ४॥

मधुभार ॥

दशमी लगाय। तेरसि बिताय॥ भासिद्ध सेतु। दश योजनेतु॥५॥

दोहा ॥

शत योजन विस्तार त्यहि सुंदर रुचिर सुढार।
हनुमत अंगद कन्धचढ़ि राम लषन गेपार॥ ६॥
चतुर्दशीते दुइजलौं सैना उतरी पार।
सैल सुवेलास्थित भयो श्री रघुवीर उदार॥ ७॥

नराच ॥

उहां सदूत रावणौ प्रसादपै चढ़ो तहां । विलोकि मर्कटी चमू भयावनी सुकै कहां ॥ कहेनतैं वृतांतजैससैन देखि आयऊ । नियोग पायसो प्रताप रामको सुनायऊ ॥ ८ ॥ अपार सैन संग जौनकाकते भयंकरा । विलोकितै जिन्हैंनजात धीरवीरते धरा ॥ सुकण्ठ जाम्बवान अंगदादि वायु नंदनं । नलादि नील केशरी पिशाचनै निकंदनं ॥ ९ ॥ असंख्य सूर वीर अप्रमेय सोभने गने । दिगाष्ट पद्मयूथपौ प्रमाण कानमै सुने ॥ अनेक कोटि कीश एक एक संग राजते । सकै तुम्हैसो जीति एकआपनी समानते ॥ १० ॥ विभीषणौपि नाय पाय पर्शि दीनता कहा । तुरन्त दुःख त्यागि सर्व लंक राजको लहा ॥ समंचि रामजाय मार्ग हेतसागरै कहा । नमानितौ सराग्नि साधि नारिबे सठैचहा ॥ ११ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

विलोकिसो नरायनै । परोसमुद्र पायनै ॥ सकम्प गातसों तदा । सुरत्न भूरि दै मुदा ॥ बताय युक्ति सेतुकै । गयो सभूरि हेतुकै ॥ न मानु राम मानुषं । हरिंवपुःधरा स्वयं ॥ सियान जानिये नरी । रमाश्च आद्र ऐातरी ॥ जगत्पिता चमातरौ । नबैर ताहि सों करौ ॥ अजान सीय लायऊ । प्रसन्न कै क्षमायऊ ॥ भजौ सिया सियापते । विशुद्ध ह्वै महा मते ॥ भलो जो आपनो चहौ । पदाब्ज रामके गहौ ॥ १२ ॥

मालिनी ॥

सुनि गुरुवत बाता रावनै मारिलाता । सुक डरपित गाता गौ जहां जन्मघाता ॥ लखिपद जलजाता कुम्भजै सापपाता । लहिगतिहि हिजाता धाम गोहर्षि गाता ॥ १३ ॥

मधुभार ॥

तृतियालगाय । दशमीबिताय ॥ लंकाघेराय । सबरामराय ॥ १४

प्रमाणिका ॥

सुबेलसैल आसने । बोलाय बानरै घने ॥ पठाय लंकद्वारनै । रोकाय द्वादशौ दिनै ॥ उहां बली दशाननो । ननेक चित्तमें गनो ॥ बोलाय योधनै घनै । नभ्मार युद्धमें गनै ॥ १५ ॥

नराच ॥

इहां खरारि चापलै मशांक अर्धबानते। गिराय कर्णफूल दोउ मदोदरीके कानते ॥ दशास्यछत्रचामरौ किरीटह्व महीपरे। अचर्ज राजमण्डली समस्त पाश्व के डरे ॥ १६ ॥

दोहा ॥

अस कौतुक करि राम सर प्रविशो आयनिषंग।
उहां दशानन विहसि अस देखि सभा रसभंग ॥ १७ ॥
कहासबै गृहजाउ निजगई राति बहुबीति।
तबमदोदरी पायपरि कन्त सुनौयह नीति ॥ १८ ॥

हरिगीतिका ॥

मति मानुपति नरभूप रघुपति विश्वरूप चरा चरं। पाताल पद अजधाम सिर भ्रूभंग काल भयंकरं ॥ निशिदिन निमेख सुनयन रविघन मालकच सबजानिये। जेहिघ्रान अश्विनिसुत बने दशदिसा श्रवन बखानिये ॥ जेहि श्वास मारुत निगम बाणी अनल आनन गाइये। यमदशन रसना अंसुपति दिगपाल बाहु बताइये ॥ जेहि हासमाया अस्थिशैल सुसरित सबन सजालहै। रोमावली बनगण सबै अरुउदर उदधि विशालहै ॥ १९ ॥

दोहा।

उतपति पालत लयकरत जगयह बारंबार।
भक्तबसल भगवान सो लीन्ह मनुज अवतार ॥ २० ॥

छप्पै।

मधुकैटभ कनकाक्ष कनककश्यप जिनमारा। बलिछलि बावनरूप परशुधर क्षितिप संहारा ॥ खइ रघुनंदन जाय प्रथम ताडका सुभुज हति। धनुष भंजि सिय व्याहि युद्ध कीन्हो भृगुपति मति ॥ बधि विराध खरदूषनै खलकबंध कपि बालिये। तिनराम वैर करि कन्त कत निजबल कुलकिमि घालिये ॥ २१ ॥

मालिनी ॥

सुमपति मतिमानौ राममानुष्यराजा। दनुज कुलविदारैं साधते देव काजा ॥ त्रिभुवन भट जेते संग एकै जुरैंसो। रघुपति सरएकै लागि पृथ्वी सुरैंसो ॥ जेहि अति बड़ि सीवां सर्व देवन अपारा।

खहू बनचर नांघैं बांधिलै सिंधुधारा॥ ज्वहू अपरन बोरैं आपु बूडैं सुभाये। त्यहूगिरि गनजाकेहेतु सिंधौ तिराये॥ ज्वहू चटकत तारी भाजि बैठैं पहारा। खहूबनचर सैना गांसि रावन दुवारा॥ ज्वहू मनुजन खाई राचसा घोर तरजैं। त्यहू मनुज प्रचारैं काल सीवां बिपरजैं॥ २२॥

दोहा॥

यहि प्रकार महोदरी लंकेशहि समुझाय।
नाथ देव सीता प्रभुहि नतरु अकाज अघाय॥ २३॥

प्रज्भलिया॥

केहि हेतु प्रिया भय मानिघोर। मम सम योधा को जक्त और॥ दिगपाल दशौ मम बस निदान। अरु काल म्रत्युलों बंदि खान॥ मोहिं कीट सरस नरकीश सर्व। मन समुझि रानि यह आयुखर्व॥ उठि प्रात दशानन सभानाय। पठये सैनप योधा बोलाय॥ २४॥

दोहा॥

तेरसि चौदसि कुहूलों चारिउ द्वारन बीर।
पठये संख्या कै सुभट बहुप्रशंसि रनधीर॥ २५॥

प्रज्भलिया॥

माघे प्रथमै दिन सब बुझाय। गे अंगदराम रजाय पाय॥ सुनु रावनतैं अतिशै प्रवीन। अन जानत जौन कुकर्म कीन॥ सो पायन परि प्रभुसों छमाउ। सब सुत सूरन अपने जिआउ। दै जनक सुता तजि राज लंक। बन जीवसि तैं दुर्मति अशंक॥ सुनि कटुक वचन बोला रिसाय। धरि मारौ कपि जनि जियत जाय॥ सुनतै रज नीचर अमित धाय। कपि मारि तिन्हैं निज कटक आय॥ २६॥

दोहा॥

पुनि माया कृत शीस द्वै सीतै आय देखाय।
बहु विलपी चिजटा तबै दीन्हों भेद बताय॥ २७॥

प्रज्भलिया॥

सुनि अंगद मुख रिपु समाचार। सचिवन बोलाय प्रभु करि विचार॥ कपि कटक चारि यूथप बनाय। गिरि तरु लै द्वारन घेरि जाय॥ नल नील कुमुद गव हनोमान। अंगद गवाच्छ सम

जांव वान ॥ दधि बक्र केशरी सरभ बीर । द्विबिदादि मैंद तारादि धोर ॥ कोटिन कपीशलै तरु पहार । हति नखन निशिचरन करैं संहार ॥ उतरावन सुनि मर्कटन युद्ध । सैनप बोलाय अति कीन्ह क्रुद्ध ॥ सब मंत्रि मित्र सुत बंधु जौन । मम हित कांक्षी सो जाउ तौन ॥ अति काय महोदर अरु प्रहस्त । सुर शत्रु निकुम्भादिकन मस्त ॥ दवान्त कार नर अन्तकार । कोटिन प्रशंसि पठये जुझार ॥ खर महिख सिंह गज वाजि साजि । चढ़ि गये सकल रन भूमि गाजि ॥ शर शूल शक्ति खड्गादि पास । हति विविधि अस्त्र कपिगन विनास ॥ अति सुभट प्रबल कपिभालक्रुद्ध । निशिचरन मर्दि करि कठिन युद्ध ॥ भरि मास रुधिर कर्दम अपार । चलि घोर समरमहि सरित धार ॥ जै चहत परस्पर कपि पिशाच । पै राम सुमुख कपि प्रबल सांचु ॥ २८ ॥

भुजंगप्रयात ॥

लखा मेघनादै निजै सैनहारी । गयोस्यंदना चढ़ व्योमै प्रचारी ॥ घने अस्त्र शस्त्रौघ छांड़े कराला । किया मर्कटो भालु सैना बिहाला ॥ तबै लक्ष्मणै राम ब्रह्मास्त्र मारा । करौं भस्म शत्रून पुरै सोपि भागा ॥ पुनर्बानरी सैन देखा दुखारी । हृदै राम चन्द्रोपि कौ शोच भारी ॥ २९ ॥

दोहा ॥

क्षीर समुद्र समीप अब मारुत सुत तुम जाउ ।
द्रोणाचल औषध सहित कपिदल लाय जिआउ ॥ ३० ॥
प्रभु आयसु करि लायगिरि जिये भालुकपि बीर ।
पुनि पहुंचायोशैल वरक्षीर समुद्रहि तीर ॥ ३१ ॥

प्रज्वलिया ॥

पुनि सिंहनाद करि भट अपार । फेंकै गढ़ पर नाना पहार ॥ सुनिरावण विस्मय लहिअपार । बोलेसमस्त योधा जुझार ॥ जोरहै भवन शत्रुन डेराय । तेहि तुरतडारिहौं सैंमराय ॥ भयत्रस्त जुरेसब समर जाय । ढोलैनिशान तूरन बजाय ॥ मारैं त्रिशूल असि शक्ति बान । शस्त्रौघ अस्त्र नानाविधान ॥ गिरितरु नखदंतन मुष्टि लात । कपिकरै असुर कुलकर निपात ॥ पनगहि महिपटकै भुज उखारि ।

शिरतोरि फोरि कोटिन संहारि ॥ लैकनक खम्भ कोटिन कपीश। करिसकल निशाचर चमूखीश ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

रामलछिमण कीस पति अंगद पुनि हनुमान ।
हतेनिशाचर सैन बहु को करि सकै बखान ॥ ३३ ॥
माघे द्वितीया आदिदै आठदिवस रणबीच ।
रामकृपा कपिदल कुशल मरे निशाचर नीच ॥

भुजंगप्रयात ॥

पुनर्बज्जदन्ता सुरारिं प्रबोधी । अबै मर्कटी सैनमारौं विरोधी ॥
चतुर्धा चमू संग योधा जुझारा । रणै कीशनै देख तैकै प्रहारा ॥
इहांकीश सैनाधिपौ लै पहारा । चमूराछसी युद्ध कैकै संहारा ॥
तहां बज्जदन्ता लखा सैन हारी । हते बानरा वाण दृष्टि प्रहारी ॥
तवैअंगदौ वृक्षपाषाण मारा । लियोछीनि खड्गौशिरौ काटिडारा ॥
गिराबज्जदन्ताजबैप्राणत्यागी । रहोजोचमूलंककोभूमिभागी ॥ ३५ ॥

पज्झवलिया ॥

सुनिबज्जदन्तहति लंकनाथ । दलिदशनअधर रिसमीजिहाथ ॥ पठयोअकंपनभटजुझार । संगदीन्हसूरसेनाअपार ॥ तेकपिनआयकरि द्वन्दयुद्ध । शरशक्ति शूल असिहनै क्रुद्ध ॥ कपियूथपलैलै तरुपहार । रजनीचर दल हति करैं संहार ॥ गजरथ हयबाहन सकलनाशि । रजनीचर भटन पछारि चाशि ॥ लखि धाय अकम्पन भट जुझार । शरशूलन हति सेनपविडार ॥ पुनि हनोमानते लरैलाग । शरशक्ति शूल विविधौघ त्याग ॥ तेहि झपटि पटकि हठिहनोमान । बधलखि अकम्पनिशिचर प्रान ॥ ३६ ॥

भुजंगप्रयात ॥

प्रहस्तै लखा राछसेशं जुझारा । सबैरछसी सैनजाते निहारा ॥
पठायो महा गौरवात् लंकराजा । चतुर्धा चमूलै रणै आयगाजा ॥
इहां मर्कटो युद्ध कांची अपारा । शिला वृक्षलै राछसी सैनमारा ॥
उहां राछसाशूल शक्त्रासिपासै । गदापार्श्व नाराचनै कीशचासै ॥
लखानीलहू कीशसैना दुखारी । शिलापानि लै सो प्रहस्तै प्रहारी ॥

प्रहस्तौ महावीर बाणौघमारा । बढैरक्तमानौगिरिं गेरुधारा ॥ तबै नीलहू छन्नलै शीश मारा । गिरासेनपौ भूमिमानौ पहारा ॥ लखा प्राणत्यागा प्रहस्तं विशेषा । भयात् राक्षसा भागलंकैअशेषा ॥ ३७॥

भुजंगप्रयात ॥

सुना लंकराजा गईसैन मारी । प्रहस्तादि से सैनपो,गे संहारी ॥ हृदय दुःखकै मेघनादै बोलायो । पुरैसौंपि आपौरणै गर्जि आयो ॥ लसैसंग चौरंग सैनाघनेरी । जुझाऊ बजैढोल तूरादि भेरी ॥ इहां भालुकी सौ शिला पाणिलैकै । थकेसो महाघोर संग्रामकैकै ॥ सुकंठादि राजा सबै भूमिपारा । रघौरावणै सर्वसैना विडारा ॥ पुनर्बंधु को देखतै तीक्ष्ण धारा । यमन्दत्त शक्ती हृदय ताकि मारा ॥ ३८ ॥

दोहा ॥

लक्ष्मण तेहि पाछे कियो आपुसही सोसांगि ।
गिरिमूर्च्छि महि तुरतही महातीव्र उरलागि ॥ ३९ ॥

प्रज्वलिया ॥

तबतुरत दशानन दौरि आइ । बड़ बलकरि रहलखनै उठाइ ॥ किमिउठै भुवन सबधरभार । श्रीरामानुज शेषावतार ॥ लखितुरतधाइ तब हनोमान । तेहि मारिलात वज्रप्रमान ॥ महिगिरा मूर्च्छितन सुधिभुलाइ । कपिगयो तबैलक्ष्मण उठाइ ॥ ३९ ॥

हरिगीतिका ॥

लखिबंधुगति राजीव नैननीर रह सरसाइकै । सजितून कटि शर चापकर शिरजटा मुकुट बनाइकै ॥ श्रीराम ह्वै आसीनहनुमत गये रन महँ धाइकै । गंभीर बचन सुनाइ लंकेश्वरहि क्रोध बढ़ाइकै ॥ सुनतेदशास्य प्रहारिमारुति तीव्रशर घायलकियो ॥ लखिसब्रण हनुमतकोपि रघुबर कालरुद्र इवावियो । शरबर्षि धर्षि दशाननै सह सैन्यभूमि गिरायऊ ॥ तेहिवेगि स्यंदनघालि सारथि लंकलज्जित लायऊ ॥ ४० ॥

तोमर ॥

इतराम चंद्रखरारि । रनराक्षसा गन मारि ॥ पुनि आइभ्रात हिदेख । अतिकीन्ह शोच विशेष ॥ कहपौन नंदन जाउ । दिविऔषधै सोइ लाउ ॥ सुनि राम बैन तुरंत । गिरिलेनगे हनुमन्त ॥

उत चारमुख सुधि पाइ । दशमौलिहू अकुलाइ ॥ गृह कालनेमिके जाय । तेहिंदीन्ह ऐसि रजाय ॥ कपि औषधै गयोलेन । तेहिरोंकु छल बल केन ॥ तेहिभांति बहुसमुझाय । नहिंराम मानुष आय ॥ हरि लीन्ह नर अवतार । सोइभंजि है महिभार ॥ तेहिबैर पूरण आइ । तेहि भजे सुख सरसाइ ॥ सियदै करौ अति हेत । छमि है सोकृपा निकेत ॥ दशमौलि ताहि रिसान । सठबेगि कह्नकिन जान ॥ ४१ ॥

प्रज्झलिया ॥

तबकाल नेमिमन कियोतर्क । यहिहाथ मरै मोहि होइनर्क ॥ हैहैं।विशेषि संसारपार ॥ अस समुमोहिमारै जोमारुत कुमार । झिमार्ग मायाउपाइ । सरविमल सलिलरचि कुटीछाइ ॥ महशिष्य बैठमुनि कपट जाइ । चखमूंदि जपै माला दिखाइ ॥ तेहिपौन नंदमुनि कुटीताक । सर विमल सलिल फल फरेपाक ॥ करैइंद्र जागमुनि कपटरूप । शिवपूजा जहंतहंकरै अनूप ॥ मुनिबंदि कहा तहंपौन पूत । भगवन हनुमतमैं रामदूत ॥ औषध निमित्त गिरि लेनजाउं । भयोटषित जलाशयमोहिं बताउ ॥ जल आइ दीन्हकै भूरिभाउ । इतरहै। आजुफल मधुरखाउ ॥ जियलखन भालु कपि कटक साथ । लखि कृपादृष्टि रघुवंश नाथ ॥ मैं जानत सबतपसा प्रभाउ । उठि प्रात तात प्रभु पासजाउ ॥ सुनि स्वल्प सलिलनहिं टषाजाइ । वापीसर मोहिंदीजे बताइ ॥ ४२ ॥

चौपाई ॥

असुर जलाशय दीन्हबताई । चखुमौलि जलपीवहु जाई ॥ पुनि उपदेशदेउं तोहिंभाई । जीवनि औषधनिमि दरसाई ॥ गयोमूंदिचख पीवतपानी । मकरी गहाचरण रिस आनी ॥ ताहि तुरत कपिबदन विदारा ।सरतैदिव्यरूप तेइधारा ॥ तेसबकथा कपीशहि गावा।हतौ असुरमग रोकन आवा ॥ छलिहि बिलोकि पवनसुत जाई । कहतेमंत्र लेवकिन आई ॥ गुरुदक्षिणा प्रथम तुम लीजै । बहुरि मंत्र उपदे शहि कीजै ॥ असकहि मुष्टिक कठिन प्रहारा । युद्ध कियो तेहि निज तन धारा ॥ अस्त्र शस्त्र छलबल बहुमाया । करत निशाचर युद्ध निकाया ॥ छनमहं सबहि संहारि कपीशा । बचेते गयेजहां दश शीशा ॥ ४३ ॥

दोहा।

बहुरि कपीशणार्धं महं द्रोणा चल लै दीन्ह।
ज्यायो लछिमन सैन सब युक्ति सुखेन सोकीन्ह॥४४॥
हरषि भेंटि प्रभु पवन सुत बहुबिधि गौरव दीन्ह।
अनुजहि भुजभरिभेंटि पुनिनिज उरसीतल कीन्ह॥४५॥

नराच॥

सुना दशाननौ हतान्तभूरि शो चपायउ। उपाउकै जगाइकुंभ कर्ण ते सुनायऊ॥ मनुष्य राम चन्द्र भालुकीश सैन संगकै। बंधाय सिंधु आय राक्षसी समानअंग कै॥४६॥ सपुत्रपौत्र बांधवाअकंप से चमूपते। अपार शूर वीरनै प्रचारि कै रनैहते॥ लरोन एक देखिये चमू अपार वानरी। करौ सो बंधु जाइ जो प्रबोध चित्त मेधरी॥४७॥ रिसाइ कुंभकर्ण रावनै सुवैन उच्चरा। भलौ अबौ चहौ विमूढ़ जक्त मातु को हरा॥ न तौ बुझै बताव तो सुना जो नारदै मझुं। सिया समर्पिराम सों क्षमाउ चूक सो तहूं॥४८॥

प्रमाणिका॥

नजानु रामकोनरं। जगत्पितासुरेश्वरं॥ विरंचिप्रार्थं नार्यही॥ मनुष्य देहको लही॥ दशाननादि मारिहैं। महीकलेश टारिहैं। जगत् यशै पसारिहैं। समस्त भक्त तारिहैं॥४९॥

प्रज्ज्वलिया॥

सुनि लंकनाथ बोला रिसाइ। नहिं ज्ञानहेतु तुमको जगाइ॥ नतु निद्रावस सोवो अघाइ॥ लखि ममहित मानो तौ लरौजाइ। नतु निद्रावस सोवो अघाइ॥ लखि कुंभकर्न रावनै रुष्ट। निज मरन हेतु मति ठानिपुष्ट॥ हरिहाथ मरौं बैकुण्ठ जाउं। नत कादर मम सबधरैं नाउं॥ अस समुझि गयो योधा जुझार। जेहिदेखि कपिन भाभै अपार॥ लखि कहा विभीषण प्रभुहि जाइ। दुर्मदघट अतिरन भूमिआइ॥५०॥

दोहा॥

सुनतै रघुपतिपठै भट बानर भालुसमूह।
लैलैगिरि तरु सिखरि सब मारैं अति करिहूह॥५१॥

तोमर॥

हति ताहि शैल बिशाल। फल आक ज्यौं तन ब्याल॥ मनु-

जादहूर न धाइ । कलया कपीशन खाइ ॥ श्रुति नासिका मग तौन । निकशा करैं कपिगौन ॥ सबतैन मारि भगाइ । कपिनाथ कांख दबाइ ॥ गढ़ पै चलाहरषाइ । मतवार देहभुलाइ ॥ कपि राणपाई घात । श्रुतिनाक ताहि निपात ॥ पुनिकूदि आयोबीर । तेहि क्रोध कीन्ह गंभीर ॥ ५२ ॥

छप्पै ॥

प्रबल असुर लै गदा बिकट मर्कटन संहारै । झपटि पदन दह-पट्टि लपटि हठि पटकि पछारै ॥ बहुतन निजतन मीजि मीजि मिलवै महि गर्दै । बहुतन क्रुद्ध बिरुद्ध युद्ध कै भुज बल मर्दै ॥ यहि भांति भालु कपि कटक भट कुम्भ करन बिचलाइ सब । निज दल बिलोकि शर चाप गहि रन रघु नंदन आइ तब ॥ ५३ ॥

नराच ॥

प्रचारि रामचन्द्र तीर तीब ताहि मारेऊ । निशाचरोपि आइ जोरकै गदा प्रहारेऊ ॥ सोदेखतै शशांक अर्ध वानराम तानि कै । गिराइ दाहिनी भुजा गदा समेत भानिकै ॥ ५४ ॥ उपाटि साल इच्च कुंभकर्ण बाम हाथहू । सोऊ गिराइ भूमिशाल जुक्त जक्त नाथ हू ॥ पुनःप्रचारि पादहू दोऊमहान कोहसे । चला पसारि आननौ कराल शैल खोहसे ॥ ५५ ॥

॥ दोहा ।

सो रघुनंदन सायकन मुखभरि शिरकरि भिन्न ।
काया पारि समुद महं पुर द्वारे शिर छिन्न ॥ ५६ ॥

पज्झ्वलिया ॥

पुनिकृपा दृष्टिनिज सैनदेखि । कपिभालु उठेहर्षित विशेषि ॥ सुर सिद्ध पितर गंधर्प ऋषीश । बरषैं कुसुमावलि नाइ शीस ॥ मुनि नारदादि बिनती सुनाइ । निज भवन गये आनंद पाइ ॥ सुनि कुंभकरन बध लंकनाथ । करमीजि रोइ महि धुनत माथ ॥ ५७ ॥

मालिनी ।

दशमुखहि निहारी बंधु शोकाधिकारी । कहिनिज बलभारी बोधकै शक्र आरी ॥ तबरिपुन संहारी बानरी सैन मारी । नहिं जियतपुरारी आइहौं मैंनहारी ॥ ५८ ॥

छप्पै ॥

प्रात होत कपिसैन जाइ लंका गढ़ छेका । उतनिश्चर पतिअनी आइ बहुभांति अनेका ॥ अस्त्रशस्त्र शरशक्ति बिबिध आयुध खलमारैं । दूत गिरि तरुन कपीश निशाचर कटक संहारैं ॥ लखि मेघनाद कपिदल प्रबल रथचढ़िगयो अकाशही । करि माया छल शस्त्रास्त्र शर बर्षि दीन्ह अति त्रासही ॥ ५९ ॥ बहुरि कीन्ह संग्राम राम लछ्मणहिं प्रचारी । नागबान हतिबांधि दीन्हमहि मंडल डारी ॥ अपर कटक कपि भालु समर बधि कहि दुर्बादा । नभते भूतल आइ प्रकट योधा घन नादा ॥ तेहि समय रीछ पति चरन गहि पुनि पुनि पटकि रिसाइ कै । नहिं मरत देखि बरबल असुर गढ़ पर फेंका धाइकै ॥ ६० ॥

दोहा ॥

नौमी को रघुवंश मणि सुमिरि खगेश्वर आइ ।
हरि प्रेरित छन मध्य महं सर्प सर्ब तिनखाइ ॥ ६१ ॥
दशमी हरि बासर भयो तबौ युद्ध अवहार ।
द्वादशि को हनुमंत भट धूम्राक्षै संहार ॥ ६२ ॥

मालिनी ॥

बहुबिलपत राजा कुंभकर्णादिघाते । सिरन करन पीड़े शोक सिंधौप पाते ॥ छगछग मम बुद्धिं चित्तलायो ननेको । अनुजहित करैया ताहि धर्षा अनेको ॥ तेहि करम बिपा के नाश वंशो पिहोई । अस बिधि रचि राखा ताहि मेटै किकोई ॥ लखि त्रिशिर बुझायोभीर मेधीरलैये । तुमनृपति प्रबीनेपौरुषौकै देखैये ॥ ६३ ॥

चौपाई ॥

त्रिशिरा वचन सुनत भट हर्षे । नर अंतक देवांतक मर्षे ॥ महा कायलै पास कराला । धायो महा पार्श्व ततकाला ॥ गज रथ तुरगन भये सवारा । कोटिन भटसंग साहै जुझारा ॥ कज्जल घन इव सोह अकाशा । कुंडलादि जनु तड़ित प्रकाशा ॥ साखा म्टग गिरि तरुलै धाये । निशिचर दल हति भूमि गिराये ॥ गज पर गज रथ पर रथ तोरैं । एक वार द्वै सुभट न मोरैं ॥ यहि बिधि निशिचर कटक संहारैं । अश्व उठाइ अश्व कहं मारैं ॥ अपरबीर

बोरन गहि घीचैं । गिरैं भूमि अरि तन करि नीचैं ॥ निशिचर शूलशक्ति असिमारैं । बानवृष्टि करिकपिन संहारैं ॥ परिघ पाश मुद्गर हति घोरा । देतत्रास कपिकुलहि न थोरा ॥ ६४ ॥

प्रज्वलिया ॥

भारीक्ष राक्षसन कठिन युद्ध । हनिएक एकनहिं करिविरुद्ध ॥ तेहि समै नरांतक पास लीन्ह । यूयप समस्तहति त्रास दीन्ह ॥ कछुबचे सुकंठहि कहाजाइ । नरअन्तक कपिदलहता आइ ॥ सुनतै कपीश करि क्रोध घोर । अंगदैकहा कटुबचनमोर ॥ ये नरअन्तककहं हतौजाइ । धायेअंगद उरक्रोध छाइ ॥ अंगद पुकारि मैं कालतोर । सुनि असुर धावजनु भुजगजोर ॥ अति पास शीस कीन्हेसि प्रहार । सो अंगद उरभै व्यथाभार ॥ युवराज तासुहय मुखचपेट । गिरा अवनितुरंग प्राणन नभेट ॥ ६५ ॥

चौपाई ॥

तब अंगदशिर मुष्टिक मारा । लहाव्यथा पुनि बालि कुमारा ॥ बालिपुत्र करि क्रोध अपारा । नरअन्तकके मुष्टिक मारा ॥ रुधिर बमत महिगिरा अचेता । कहै कौनसुरगन सुखजेता ॥ नरअन्तकहि बालि सुतमारा । अपरअसुर करि हाहाकारा ॥ तिन अंगद कहं घेरा आई । अधरम युद्धकरैं कठिनाई ॥ सो चरित्र जाना हनुमाना । धायोकाल सरिस बलवाना ॥ देवांतकहि युद्ध करिघोरा । मारा रनप्रचारि बरजोरा ॥ नील महोदर रण कठिनाई । लड़ैं युगुल बल बरनि नजाई ॥ सरन मारि कीन्हेसि ब्रणभारी । नील निरखि इकशैल उखारी ॥ झपटि महोदर उरहठिमारा । गिरा अवनि तन प्राण विसारा ॥ ६६ ॥

छप्पै ॥

देखिमहोदर निधन तीनिशिर क्रोधबढ़ायो । लैकरचापनराच वायु सुतपर बरषायो ॥ अतिबल पवन कुमार दृष्चलै सबशरतोरे । रथसारथी समेतमारिहठि चारिउघोरे ॥ तेअपर शक्तिसरकपिहि हति कपिते तोरि फेकायऊ । जसि छीनि निसित छुरधार जेहि त्रिशिरा शिरन गिरायऊ ॥ ६७ ॥

अनुष्टुप ॥

हतंमहोदरंदृष्ट्वा त्रिसिराचचमूपतौ। क्षणेनसहसा बध्वा देवान्तकनरान्तकौ ॥ ६८ ॥ गदापाणिमहापार्श्व विद्रवंमर्कटोचमू। क्रोधेनमहताविष्ठ युगान्ताग्निरिवज्वलन् ॥ ६९ ॥

रूपमालिनी ॥

तेहिसमय बरुणात्मज रिखभसैनप महा बलबीर। आवतैराक्षस हनिगदा कपिगिरा ब्यथितशरीर ॥ पुनिउठि कपीस प्रचण्डअति करि मल्लयुद्ध कठोर। तेहि छीनिगदा प्रहारि निशर प्राण लै बरजोर ॥ ७० ॥

दोहा ॥

महापार्श्व महनादकह ऋषभ हतारनबीच।
अतिहर्षित हरिभट सकललुकत निशाचरनीच ॥ ७१ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

अति कायलखा निज बल बिनाश। पितृव्यबन्धु सब भये नाश ॥ मैं ब्रह्मैबरलै कहा कीन। जो मर्कट सैनन चासदीन्ह ॥ असभाषि सहस हय रथहि जाइ। चढ़ि अस्त्र शस्त्र बिधिवत बनाइ ॥ लखि सुभटन मनअति भाम्भमाव। रनकुम्भ करन यह फेरिआव ॥ जेहि चाप शब्द भयभूरिहोय। तेहि सङ्ग समर करि सकै कोय ॥ कपि यूथ सरन रघुवरकृपाल। यहि राक्षसते रच्छौ उताल ॥ ७२ ॥

चौपाई ॥

सुनि येवचन लषन अति कोपे। साजि शरासन समरहि चोपे ॥ परि प्रभु चरण रजायसु पाई। गये रनहिं संग भट समुदाई ॥ करि को दण्ड शब्द अधिकारी। सुनत बधिर रजनीचर मारी ॥ सुनत निशाचर बान प्रहारा। लछिमन सो निज सरन निवारा ॥ यहि विधि भयो महारन घोरा। लछिमन रावन सुत बरजोरा ॥ छांड़ैं अस्त्र शस्त्र बहुभांती। सकै नयेक एक कह घाती ॥ तब यह पवन सुनायो काना। यहि दीन्हा ब्रह्मा बरदाना ॥ ब्रह्मबान यह मरो सुरारी। लछिमनसो शिक्षा उरधारी ॥ मारा ब्रह्मतेज सरसाधी। लखि राक्षस उपाउ बहु बांधी ॥ मारा शक्ति गदा असि शूला। तदपि न सुरा बान प्रति कूला ॥ ७३ ॥

दोहा ॥

मारि शीस तेहि विलग करि लछिमन वीर प्रचण्ड ।
हरषितअति कपिगनसकल पूजतहित भुजदण्ड ॥ ७४॥

चौपाई ॥

उतरावन सुनियुद्ध हवाला । त्रिसिरादिकन भयो रनकाला ॥ शिरामूर्छि महि शोक अपारा । कपिन महा भट कीन्ह संहारा । मेघनाद विधिते वर पावा । अति अभिमान तासु उर आवा ॥ अस्त्र शस्त्र रथ कवच अभेदा । एक वार मेटै रिपु खेदा ॥ पितै प्रबोध कीन्ह ते आई । अबहि हतौं कपिदल दोउ भाई ॥ अस कहि रथतेहि चढ़ा विशेषा । चतुरङ्गी दल लीन्ह अशेषा ॥ महा क्रोध उर रन विच आवा । विविधि शिषन कपि कटक गिरावा ॥ राम लषण सह महितल आये । महा विषाद बनै नहिं गाये ॥ सब दल व्यथित कीन्ह शक्रारी । सुखी गयो लंकै असुरारी ॥ तबहिं विभीषण कपिन सुनावा । विधि वर मानि राम दुख पावा ॥ ७५ ॥

दोहा ॥

जनि डरपौ कपि भालु सब रघुवर कृपा प्रभाउ ।
होइहि विविधि उपाव अबचास मिटै सब काउ ॥ ७६ ॥

चौपाई ॥

तब हनुमन्त विभीषण जाई । दल देखा निसि बारि उकाई ॥ अङ्ग भङ्ग लोटैं कपि धरनी । व्यथा कठिन कछु जाय न बरनी ॥ आगे चलि विधि पुत्रहि देखा । कहै त्रास जसि तुम्हैं विशेखा ॥ सुनै विभीषण कह रिच्छेसा । इन्द्रजीत सर देत कलेशा ॥ नयनन तुमहिं न देखौं आगे । स्वच्छात् वचन नआवत वागे । कहौ सखा हनुमत कुशलाई । जियत होइ तौ सैन जियाई ॥ कहा विभीषण सुनुऋच्छेशा । प्रभुतजि भजि मारुतिं विशेषा ॥ कहा ऋच्छ कपि जो हनुमाना । जीवत सबके राखीप्राना ॥ जौनहोय तौ दलसमुदाई । जीवत हू हतजानेउ भाई ॥ सुनि ऋच्छेश वचन हनुमाना । चरण परे निज नाम बखाना ॥ ७७ ॥

दोहा ॥

जानि पवनसुत रिच्छपति हर्षन हृदय समाय ।
मृतकदेह जनु अमृत लहिप्राणन भेटेउ आय ॥ ७८ ॥

हरिगीतिका ॥

तब जाम्बवान प्रशंसि मारुत सुवन तुम सब लायकं । अब जाय औषध लाय ज्याउ सकोशदल रघुनायकं ॥ हिमवंत नगतट ऋषभद्रक कैलास शृंग महानहै । तहंधरी देह विशल्य जीवनि भिषज सुरन सुजानहै ॥ यहसुनि तुरन्त प्रणम्य रामहिंझपटि गिरिलायो तहां । तेहि गन्धपरसि विसल्यतन जीवतभयो सबदल महा ॥ जनु जागि सोवतते सकल पुष्टांग हर्ष बढ़ायऊ । रघुबीर आयसु पाय हनुमत नग तहैं पहुंचायऊ ॥ ७९ ॥

चौपाई ॥

तबसुकण्ठ सेनपनबोलायो । बेगवान कपिकुञ्जरआयो ॥ तिनहिं कहालङ्का गढ़जारौ । चहुंदिशिलूक वारि परचारौ ॥ कपिनजाय निशिलङ्का जारा । चहुंदिशिते निशि अनलप्रचारा ॥ गजरथबाजि सार भण्डारा । अस्त्रशस्त्र सरशक्ति अपारा ॥ नाना भांति अमित हथियारा । पटसमूह बहुबस्तु अपारा ॥ जरिजरि बहु प्रसादमहि आवै । नगहि इन्द्रजनु बज्र चलावै ॥ जरैंनिशाचर वृन्द सनारी । बालवृद्धनहिं सकैंसंभारी ॥ लङ्कातेहि छनलखि सब आसा । महा विपतिजनुकीन्ह निवासा ॥ अमित निशाचर सागरनीरा । उलचि बुझावत अनल गंभीरा ॥ कोलाहल सुनि जाग सुरारी । मानौ काल रूप भय कारी ॥ ८० ॥

नराच ॥

निकुम्भ कुम्भ पुत्र कुम्भकर्ण के महा बली । समस्त अस्त्र शस्त्र वित् मयाविहू बड़े छली ॥ तिन्हैं बिलोकि राक्षसेन्द्र भूरिक्रोधकै कहा । हतौन बेगिकीशनै प्रचारि कै जहांतहा ॥ ८१ ॥ जुपाक्ष सोणिताक्ष कम्प नादि सेनपौ घने । चलेसमूह सैनलैजुभार क्रोध से सने ॥ बिलोकि राक्षसीसमाज युद्धहेत आयऊ । बनौकसा हवालसो सुकण्ठते सुनयऊ ॥ ८२ ॥

चौपाई ॥

पुनिसकोप सैनप सबधाये। तरु गिरिलै राक्षसन गिराये ॥ मुष्टिक दन्तन नषनविदारैं। मर्दि, मर्दि शिरभुजन उखारैं ॥ निशिचर सरनशक्ति असिघोरा। मुद्गर पास परिघ हति जोरा ॥ भालुकपिन कह त्रासत भारी। दोउ दल लरत नमानत हारी ॥ तब अङ्गद कम्पनै प्रचारा। आवत कपि शिरगदा प्रहारा ॥ बालि सुवन कम्पनक्षुगाता। मुष्टिकहनि कंपनै निपाता॥ शोणिताक्ष अङ्गद बलदेखा। रथआरूढ़ शरहते विशेषा ॥ तबअङ्गद धनुशर रथतोरा। शोणिताक्ष असि लीन्ह कठोरा ॥ अङ्गद क्षिप्र छीनि सो मारा। गिरा अवनि नहिं देह संभारा ॥ अपर निशाचर कपि कटकाई। द्वंद युद्ध कछु बरनि न जाई ॥ ८३ ॥

रूपमालिनी ॥

लखि कुम्भ निशिचर निधन बज्रआवारथी भयकार। अङ्गदप्रमुख सैनपविपुलसर मारिमहितल पार ॥ तब कपिन जाइ सुनाइ रामहिं कुम्भकटक संहारि। गर्जतमहाधुनि असुररनरक्षिये ताहिषरारि ॥ सुनतै पठै योधा प्रबल सुग्रीव मारुत नंद। रिच्छेससे सैनपन कह तुम दलौ राक्षस द्वंद ॥ ते आइ सैल सिला तरुन हति करत युद्ध अपार। कुंभोपिसर बरषाइ सूलप्रचंड परिघ प्रहार ॥ ८४ ॥

चौपाई ॥

तब सुग्रीव सैल उरमारा। अमित वृक्ष तेहि कीन्ह प्रहारा ॥ कुंभकरन आत्मज बलवाना। निज सायकन सिलातरुभाना ॥ मल्ल युद्ध पुनि भयो अपारा। कुंभ हृदै कपि मुष्टिक मारा ॥ गिरा अवनि तन प्रानन त्यागा। अपरचमू कपि मर्दन लागा ॥ तब निकुंभभ्राता बधदेखा। धायो उरकरि क्रोध विशेषा ॥ परिघ आइमारा हनुमंतै। शतखंडन कपि कीन्ह तुरंतै ॥ हनुमत तेहि शिर मुष्टिक मारा। बज्रघात जनु गिरा पहारा ॥ कुंभकरन सुत कुंभ निकुंभा। हत बिलोकि सुररन अस्तंभा ॥ मारुत सुतबल करैंबखाना। बरषि सुमन प्रमोद उरआना ॥ अपरचमू भागी भय पावा। कथा निशाचर पतिहि सुनावा ॥ ८५ ॥

दोहा ।

कुंभकरन सुतवध सुनत शोकन हृदै समाइ ।
क्रोधवंत अति लंकपति षरसुत निकट बोलाइ ॥ ८६ ॥

मालिनी ॥

षर सुत मकराक्षं को विदं अस्त्र घातं । धनुसरदन विद्या जान योधा विख्यातं ॥ तेहि बहुत प्रशंसा मानकै सैनदीन्हा । रघुपति दल युक्तं मारिहै। पानलीन्हा ॥ ८७ ॥

भुजंगप्रयात ।

तबै स्यंदना रूढ ह्वै जातु धानी । चले क्रोध संयुक्त लै अस्त्रमानी ॥
लखा कीशनौ राक्षसी सैन आई । सिला वृक्ष लै लैगये तच धाई ॥
हतैं लात घूसासिला लै प्रहारैं । रथौ दंतिनै मारि सैना पछारैं ॥
करैं मल्ल युद्धै भुजा पाउ तोरैं । मरोरैं सिरै सोसिला घालि फोरैं ॥
उहां राक्षसा सूल शक्ति प्रहारैं । गदा कुंतलं तोमरं बान मारैं ॥
लरैं बान राजातु धानी बिरोधै । हनैएक एकैभरे सर्वक्रोधै ॥ ८८ ॥

चौपाई ॥

तब मकराक्ष निसित सरमारा । कपि दलमारि भूमि तलडारा ॥ सुनि रघुबीर शरासन साधा । बान वृष्टिकरि निशिचर बाधा ॥ तब मकराक्ष क्रोध करि आवा । बानबरिष पुनि बचन सुनावा ॥ पिता बैर मैं लैहौं तोही । मिल्यौ भलेरन मंडल मोही ॥ असकहि निसित नराच प्रहारा । निजसर राम खंडि सब डारा ॥ अष्टादश सर राम प्रहारा । रथसारथी अश्व सब मारा ॥ देखत मरन महा भय पावा । पैदर राक्षस सूल उठावा ॥ निजसर मारि शूल सो तोरा तब मकराक्ष मुष्टिहति घोरा ॥ पावकसररघुपति तेहिमारा । गिरा असुर गत प्रानन हारा ॥ अपर निशाचर हरि भयमानी । भागि रावनहिं बरन्यौ आनी ॥ ८९ ॥

दोहा ॥

राम प्रताप बिस्तरि उर मूर्च्छित गिरासुरारि ।
निज बलबरनि प्रबोध करि बहुप्रकार शक्रारि ॥ ९० ॥

भुजंगप्रयात ॥

गयो पितते भाषि शक्रारि बानी । जहां कुंभिला सो बिजै

यज्ञठानी ॥ इहां रावना बंधु रामैं कहा सो । पठै योधनै होम नाशौ महासो ॥ ९१ ॥

छप्पै ।

अन्ननीद परिहरै बरषद्वादश नर जोई । तेहिमारै घननाद मरै विधिकह यहसोई ॥ सोलच्चमन सबकीन्ह वेगिकार्मुक करधारैं । हनुमतादि लैसंग चलैं रन असुरहिमारैं ॥ यहसुनत लच्चमण तून-सजि चापबानलै हाथ तब । गवने कपीस गनसाथ लै आयसुदै रघुनाथजब ॥ ९२ ॥ जाइदीख तहंबैठ असुरमख करै अपावनि । छुतैर-क्तकी धार अमित महिखा भिखरावनि ॥ कपिन यज्ञ विध्वंस कीन्ह अतिशै उतपाता । उठान तबहूं बीरहनैं सब मुष्टिक लाता ॥ पुनि इंद्रजीत योधाप्रबल करत्रिशूल बरधारिकै । रनगर्जो प्रलैपयोद सम कीसनसबै विडारिकै ॥ ९३ ॥ बहुरि जाइ घननाद भिरा लच्चमनहिं प्रचारी । जोअनंत भगवंत प्रबल शेषा अवतारी ॥ करैयुद्ध करिक्रुद्ध युगुल बिरदैत वीरबर । निजनिज जैहितलागि हनंशस्त्रास्त्र निशित सर ॥ लखिदेव गंगनविस्मै लहैं कबहु बिलोकैं हर्षकै ॥ षटदिवस घोर संग्रामकै लखन हतातेहि मर्षकै ॥ ९४ ॥ निधन देखि घन नाद भयोदेवन सुखभारी । जयति महारन धीरजयति शेषा अवतारी । जैजैरघुकुल केतुजैति रामानुज लच्छिमन । सुरसब बिनयसुनाइ बर-षिसंतान सुमनघन ॥ बाजैबरुथ नभदुंदुभी गंध्रप किन्नर गावहीं ॥ नटैनाकनदी आनंदयुत बहुबिधि कौतुक लावहीं ॥ ९५ ॥

प्रज्झलिया ।

रनभूमि निधनलखि मेघनाद । सुनि श्रवन गगन देवन विवाद ॥ श्रमविगत भयो सौमित्रिवीर । ज्याशब्द बहुरिकीन्हो गंभीर ॥ सुग्रीव विभीषन हनोमान । अंगदनलादि कपिनाम्ब वान ॥ सब विगतज्वर लच्छिमण साथ । आये अंगद जहंजक्तनाथ ॥ परिप्रेमातुर श्रीरामपाइ । शक्रारिनि धनसब कथागाइ ॥ सुनिहर्षि हृदय अनुजहि लगाइ । सिरसूंघि विपुलबरनी बड़ाइ ॥ ९६ ॥

दोहा ।

पुत्रनिधन सुनिलंकपति गिराअवनि मुरझाइ ।
सुमिरि प्रताप प्रभावतेहि शोकनहृदै समाइ ॥ ९७ ॥

उठिशोकातुर लंकपति निशिचर निकर बोलाइ।
ममसमीप सीतासिरहि छेदिधरौ अबआइ ॥ ९८ ॥

नराच ॥

सुमेध नाम मंत्रि एक रावनै प्रबोधकै । हतै न सूरवीर जोषिता कहूं विरोधि कै ॥ चलौरनै प्रचारि रामलक्ष्मणै संहारिये ॥ समेत कीशनाथ कीशभालु सर्बमारिये ॥ ९९ ॥

दोहा ॥

प्रातहोत दशमौलि तबचमू संगरन आव ।
ज्यौंपतंग पावक शिषै उड़ि उड़िनरै सुभाव ॥ १०० ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

दशमौलि कोपिभे दशचाप तानि। दश बान बेधि रघुबरहि आनि ॥ सुग्रीवै दश सौमित्रि पांच । अरु वायुपुत्र तनदश नराच ॥ पुनि रिपुसै युवराज गात । हितवान लंकपति सातसात ॥ जोअपर चमूरघुबीर संग । हतितीनितीनि शरसर्ब अंग ॥ १०१ ॥

भुजंगप्रयात ॥

त्यजूसर्ब बानावली भक्तत्राता । दियो एकहुंकार भेसिंधु प्राता ॥ दशास्यं कहा कोपकैकै खरारी । सहोशायकैतोहिमारौं प्रचारी ॥ महातीव्रनारा चहीताकि मारा । गिरास्यन्दनै मूर्छिहोतै प्रहारा । गयोसारथी लैपुरै बाइडारा । भयोचित्त ताको महादुःखभारा २ ॥

छन्द ॥

दशकन्धर तबनाइ शुक्रपद बन्दि सुनायो । अच्छत गुरुतोहिपाइ मोहिंनरकपिन सतायो ॥ कुम्भकरण घननाद सरस योधनसंहारा । पुत्रपौत्र बलसकल राम लक्ष्मण हठिमारा ॥ मैंएकरहा यहि समय महंतेहि कछुयुक्ति बताइये। तवकृपा सकल भृगुबंशमणि शत्रुनते जयपाइये ॥ ३ ॥ करौहोम निरबिघ्न पूर कबहू जोहोई । अनलप्रगट रथअश्व चापशर देइहिसोई । सोलहि बैरिननाश कियो आपन मनमाना । सुनिपुनि मंत्रउपायबतायो सहितबिधाना ॥ सोइआइ दशानन कीन्ह तबयज्ञ बस्तु सबलाइकै । सुधिपाइ बिभीषणते प्रभु ब्रह्मासुभट पठाइकै ॥ ४ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

नहिंतज्योध्यानरावण कराल । कोशन लातनहतिकरि बिहाल ॥ तवअंगद मंदिर करिप्रवेश । लायो महोदरि पकरि केश ॥ दशमुख समीप बहुचासदीन्ह । रोवैअनाथ इवशोचकीन्ह ॥ धिक्कारि पतिहि कहि कटुकबैन । ममगति बिलोक किमि मूंदिनैन ॥ सुनिनारि बचन लैखड़्गपानि । उठिहना आइ अंगदैतानि ॥ तेहिछाड़ि कोशहरि निकटआइ । सखध्वन्स चरितसब कहागाइ ॥ ५ ॥

नराच ॥

उहादशाननौ प्रबोधिनारि ज्ञानगाइकै । हतौंसरामलच्छमणै अबै रनैप्रचारिकै ॥ कदापि रामहाथ मैंमरौं तौ मुक्तिपाइहौं । बिसर्जि-तामसी शरीर बिष्णुलोक जाइहौं ॥ ६ ॥

दोहा ॥

कहो यथामति सुनौपिय रामहिं नरमति जानु ।
धरैं देह जनहित बिबिध तिन्हैंबैर जनिठानु ॥ ७ ॥

नाराच ॥

बधार्थ मोहिंन्टप शरीर बिष्णु ढूंढिरालियो । बिचारिसत्य कल्पमैं बिरोधजानि कैकियो ॥ करौं प्रचारि युद्ध कीर्तिसो युगान्त लौंरही लहौं कुटुम्ब युक्त मैं बिशेष मुक्ति को सही ॥ ८ ॥

चामर ॥

बोधिनारि लंकनाथ स्यंदन मगायऊ । अस्त्र शस्त्र धारि ह्वै सवार वेगि धायऊ ॥ साथ राच्छसी चमूअपारलैभयंकरा । ठाढ़ आय भोरभै महान क्रोध सों भरा ॥ ९ ॥

छप्पै ॥

सुनत भाल कपि डरे आवदुर्मद रन रावन । हनुमदादि रनधीर धाय गिरिलै अरिदावन ॥ अतिबल पवन कुमार झपटि मुष्टिक एक मारा । गिरा मूर्छि लंकेश मनौ गिरि बज्र प्रहारा ॥ तब कहा कपिहि राच्छेश उठितो सम कोउन वीर बर । छगमम बलकहु कपि नाथ तेहि जोनमरे तैंअधमतर ॥ १० ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

यहिभांति परस्परयुद्धठानि । दशमौलि कपिहि हतिमुष्टितानि ॥

नहिंमुरेनेक तेहि कहिरिसाय। मममुष्टिक सङ्गपुनि असुरआय॥ लखिप्रबल कोशरावण डेराय। अन्यचगयो तुरतै पराय॥ शरबरषि गिरायेचारि वीर। अंगद हनुमत नलनील धीर॥ करि सिंह नाद गोराम पास। सरबरषिदियो कपिगणनचास॥ रघुनन्दन सरपावक समान। लंकेशहि करि ब्याकुल निदान॥ ११॥

चामर॥

रावणै रथै विलोकि रामभूमि चारही। देवदेव राजशोच सिंधु कै अपारही॥ मातलिंपठाय भूमि स्यंदनै सवारकै। वाजिनै अभेद्य कौच अस्त्रशस्त्र धारिकै॥ १२॥

नराच॥

विनय सुनाइ शक्रको रथै चढ़ाइ रामही। स्वजन्म मानि मातली कृतार्थ पुण्य धामही॥ ताते भयो अपार युद्ध राम रावणै महा॥ यथार्थ और को कहै न जातशेष सोंकहा॥ १३॥ करै करालबाण वृष्टि राक्षसेन्द्र जक्र जित्। जलाग्नि पर्वतौघ सर्प सर्व भांति अस्त्र वित्॥ परास्तकीन्ह भालु कीश राम तीरतेपरे। निपाति अश्वसा-रथी विलोकि देवताडरे १४॥ भयातुरेविलोकिदैवइन्द्रपिटकीशहू। महासक्रुद्ध युद्धमें दशास्य बाहु बीसहू॥ दयार्द्र देखि राघवेश ज्याय अश्वसारथी। चढ़ायचापऐन्द्र बाणकालरुद्रज्योंरथी॥ १५॥ दशास्य विंशतिं भुजा प्रचारि ताहि काटेऊ। भये नवीन ताहिके स्वऊ॥ बहोरि छाटेऊ॥ अनेक वार शीश बाहु रामजू गिरायऊ। तुरन्त ईशकी कृपा निशाचरेश पायऊ॥ १६॥ विभीषणै विलोकि रामचंद्र बैन उच्चरो। मरैन राक्षसेन्द्र ब्रह्मईश सों लियो वरो॥ हमैं अपार विस्मयं कहौ स्वतौन कीजिये। सखा बताय नाभिमें सुधा स्वताहि छीजिये॥ १७॥

पज्झटिका॥

तब रावन करलै शक्तिघोर। निज अनुजै हतिकरि विपुलजोर॥ शरमारि रामतेहि दै घुमाइ। निजभक्त विभीषण को बचाइ॥ पुनि रावण करि माया अपार। शर शक्ति शूल कोटिन प्रहार॥ सो सर्व काटि निजशरणराम। जलअनल गरुड़ बज्जै विराम॥ अष्टादशदिन निशि भरे क्रुद्ध। भा राम रावणहि घोर युद्ध॥ एकतीस तीर तब

(२०)

चापि रोषि । एकनाभि सुधा सबलीन्ह शोषि ॥ पुनितीस बाणशिर भुज गिराय । रघुवीर तूण प्रविशेसी आय ॥ तेहि तेज सूर्य सम निकसि आय । श्रीराम बदनमें गोसमाय ॥ लखि देवन विस्मयलहि अपार । बरषैं प्रसून जैजै पुकार ॥ गावैं किन्नर गंधर्प बरूथ । नाचैं प्रमुदित अप्सरा यूथ ॥ नभ नारदादि यशरद्दे गाय । विनवैं सुरगण दुंदुभि बजाय ॥ १८ ॥

छप्पै ॥

सोहतरथ रघुवीररणरावणसंहारी । जल जारुणबरनयनप्रलंवित भुज धनुधारी ॥ अतुलित बल मृग राज ठवनि बानैत बीरबर । संग भालु कपि कटक अनुज आनन्द प्रेमपर ॥ लखि हर्षि प्रशंसत सिद्ध गण शक्र सहित वृन्दारके । चढि व्योम बिमाननते करैं वृष्टि सुमन मन्दार के ॥ १९ ॥

हरिगीतिका ॥

लखि पौन पुत्र बिभीषणौ अंगद सहित कपि नायकं । रिच्छेस नल नीलादि सुभटन सुमुख कहि रघुनायकं ॥ तुमरे पराक्रम जीतिमैं रन रावनै दुर्मद महा । यह अचल कीरति रही युगयुग कहै सो लहै गतिमहा ॥ तब सुनत महोदरी आदिक नारि आईं धायकै । लखिमृतक पति तन निकट रोवत परीं महि अकुलाइकै ॥ तेहि समय शोक बिभीषनौ करि परे तेहि ढिगजाइकै । रघुवीर अनु॰ जहि पठैबोधा ज्ञानमत समुझाइकै ॥ रघुवीर आयसुते बिभीषन मृतक बंधु क्रिया कियो । कुलरीति सो क्रमते तिलांजल आदि सब बिधिवत दियो ॥ गृहजाइ मंत्रिन सहित रानिन बहुत बिधि समुझाइकै । पुनिआइ राम कृपालपद परसेपरम सुख पाइकै ॥ २० ॥

वसंततिलका ॥

रामोपि लक्ष्मण युतंहनुमान कपीसं । रिच्छेस नीलनल अंगद राक्षसेसं ॥ अन्य समस्त कपिभालु बरूथनाथं । लंकाधिराजनिहत लहि हर्षगाथं ॥ २१ ॥

हरिगीतिका ॥

तबरामचन्द्र खरारि कहिमातलिहि रथ लैजाइये । सुरराज सो परनामयुत मर्मबिनयबहुतसुनाइये ॥ रघुबीरआयसुशीसधरि सारथि

गयोशिरनाइकै ॥ आनंददैइन्द्रादिदेवन कथाअम्रत सुनाइकै॥२२॥

नराच ॥

दियो निदेश लक्ष्मनै पुरै प्रवेश कीजिये । बिभीषनै बिधान युक्त लंकराज दीजिये ॥ गयो तुरन्त पौनपुत्र अंगदादि साथही । सिंहानै पधारि ताहि कीन्ह लंकनाथही ॥ २३ ॥

दोहा ॥

पुरजन मंत्री मित्र सब नानो पायनदीन्ह ।
पुनि लछिमन संग लंकपति प्रभु पद बंदन कीन्ह ॥ २४ ॥

हरिगीतिका ॥

पुनि भेटि राम कृपाल भुजभरि निज सखै उरलाइकै । तवबल बिभीषनको कियो लंकेशशत्रु नशाइकै ॥ तबकहा प्रभुमारुत कुमारै लंकपति संगजाइये । ममचरित सबसीतै सुनावो ताहिसुधि अब लाइये ॥ २५ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

हनुमन्त गयो लै प्रभु रजाइ । लखि जनक सुतातरु मूलजाइ ॥ राक्षसदीन रटै रघुबीर नाम । महिनाइ शीशकपि करि प्रणाम ॥ रावन बधकुलबल सह सुनाइ । जेहिभांति बिभीषन राजपाइ ॥ मोहि खबरि लेन तवपठै मात । जो कहौ तौनि कहौं प्रभुहिबात ॥ लखि रामदूत जानकी जानि । अतिशै अनन्द निज हृदय आनि ॥ कहु कुशलतात सह अनुजराम । हैं सुखी सैनयुत कृपाधाम ॥ २६ ॥

कुण्डलिया ॥

सुनु सुततव प्रियबचन सम हैनकछू संसार । द्वैनसकत केहुभांति मोहि तोहितेप्रत्युपकार ॥ तेहितें प्रत्युपकार बसैशतगुरु उरतोरे । मदाकरैं तोहि छोह राम लछिमण घनेरे ॥ सुनि कपि कह पुलसदाकरैं तोहि छोह राम लछिमण घनेरे ॥ सुनि कपि कह पुलकाइ आजु मैं काह-नपावा । निरखि राम रुदुगात जीति दशमुख दुख दावा ॥ २७ ॥

दोहा ।

अस कहि कीश प्रनाम करि सिया चरण उर लाइ ।
आय बखाना रघुपतिहि सुनत शोकसर साइ ॥ २८ ॥

नराच ॥

विभीषनै समारुतं कहा खरारि जाइये । सवस्त्र भूषणाढ्यकै मही सुता लवाइये ॥ रजाय पायगे इजु बोलाइहृद्ददारती । न्हवाइअंबरादि साजि जानकी सिंगारती ॥ २६ ॥

पज्झटिया ॥

सिय लाये तहँसिविका चढ़ाय । कपिभालु दरशहित चलेधाय ॥ बरजैं अनेक तिन बेत पानि । यह समाचार रघुबीर जानि ॥ कह राम सखा यह कहा मानु । सीतै पैदर मम निकट आनु ॥ देखैं माता जिमि कीश भालु । पति बैन मानि चलि पादचालु ॥ ३० ॥

भुजंगप्रयात ॥

तबै राम माया सिये भक्ति भाषा । प्रतज्ञा चहै पावकै जाहि राखा ॥ तहाँ जानकी सर्व बिश्वास हेतू । जरायो महा काष्ट लै धूम केतू ॥ महा ज्वाल माला जबै व्योम लागी । परि क्रम्य नाथै चली पाइ लागी ॥ प्रवेशीमहा पावकै शुद्ध सीता । जपै रामनामै हृदै सो पुनीता ॥ लखै वृन्द वृन्दारका व्योम छाये । चरित्रं सिया नाथ के तेन पाये ॥ महा पावकै लोप भैछाइछाया । ददर्शी तबै जानकी जोग माया ॥ ३१ ॥

पज्झटिया ॥

तब पावक भूसुर रूप लीन्ह । सिय अंक लाय रामै सु दीन्ह ॥ तुम पुरावने मोहिसौंपि जौन । निर्दोष देवि संगृहौ तौन ॥ सुनि बन्हि वचन मन हर्षि राम । निज अंक लीन्ह सीताऽभिराम ॥ अनलहि अर्ची अतिभक्ति भाव । लखिभालु कपिन उरभराचाव ॥ ३२ ॥

नराच ॥

बिलोकि राम अंक सीय देव राज हर्षते । बजाय दुंदभी घनी समूह पुष्प वर्ष ते ॥ बिमान व्योममेंभरे नचैंअपार अप्सरा । सुराग रागिनी प्रमत्त किन्नरादि उच्चरा ॥ ३३ ॥

भुजंगप्रयात ॥

भजेहं सदाराम इंदीवराभं । सुरानीक दुःखा नलं नीरदाभं ॥ परानंद रूपं प्रपन्नार्तनाशं । प्रसन्नाननं चन्द्रकोटि प्रकाशं ॥ समाधाय अंके सदा शुद्ध सीता । तडित्पुञ्ज आभा सदा सो पुनीता ॥

विराधादि मारा सुरान् सुःख कारी । प्रसीद प्रभो सर्व दुःखौघहारी ॥ ३४ ॥

मालिनी ॥

चढ़ि विमल विमानै पार्वती पार्वतीशं । बहु बिनय सुनाई आइ कै जानकीशं ॥ तब नगर अयोध्या होत राज्या भिषेकं । तब लखि सुख पैहौं भूपलीला अनेकं ॥ ३५ ॥

दोहा ॥

अब दशरथ नृपपितर तवदेखिकरौ आनन्द ।
सुनिशिवबचन सभक्तिप्रभु अनुजसहित पदवन्द ॥ ३६ ॥

मधुभार ॥

तब अवधराय । सुतउर लगाय ॥ शिर सूंघि आय । अति भूरि भाय ॥ मोहिं राम चंद । भव फंद हन्द ॥ हरि करि अनन्द । भे दुःख मंद ॥ ३७ ॥

दोहा ॥

पितै पूजि अज्ञान हरि दीन्हो ज्ञान अपार ।
हिय लगाय हैातनै पुनिगयो सुरेश अगार ॥ ३८ ॥

इन्द्रवज्र ॥

हन्दारकेशं कर जोरि रामा । संग्राम की सौघपरे विरामा ॥ पीयूष बर्षा करि ज्याय दीजै । मेरो निहोरो यह मानि लीजै ॥ देवाधिपं वर्षि सुधा समूहं । रिच्छादि ज्याये न पिशाच जूहं ॥ जीवंति पीयूष स्रताय जीवं । नजीवते मुक्तभये अतीवं ॥ लंकेश्वरं भक्तिपरा अनंदं । दंड प्रनामंकरि रामचंदं ॥ मांगृह्यहे नाथ करौ निवासं । सीता सभ्राता ममधाम वासं ॥ अस्नानादिकै मंगल सर्व कीजै । रत्नौघ बस्त्रादि विशेषलीजै ॥ नाना अलंकृत्य सबंधुसीता । जैयेतबै औधपुरी पुनीता ॥ ३९ ॥

नराच ॥

सुनैासखा अवद्धिवीति जोअवद्ध जाइहैां । नजीवतै भरत्त बंधुको तहांन पाइहैं ॥ कपीशआदि पूजिये सबब्बरत्न लाइकै । विभीषनै खयेकियो विमानसाजि आइकै ॥ ४० ॥

दोहा ॥

बरषै पटमनि लंकपति कपिउठि लेइंउठाइ ।
फारिफारि फेकैं तुरतहसैं सुमुख रघुराइ ॥ ४१ ॥

हरिगीतिका ॥

कपिभालु सैनपबोलि रघुबर सबहिंकह समुझाइकै । तुमरे प-राक्रम जीति मैं दशमुख सदल रण आइकै ॥ अबजाउ निज निज भवनमोहिं सुमिरयौ सदामन लाइकै । सुखसहित रहौसदैव अब सुरपतिऊ भय बिसराइकै ॥ सुनि राम बचन सप्रेमकपि पतिलंक पतिकर जोरिकै । हमसहित चलिये अवधपुर बहुभांति कहा नि-होरिकै ॥ तबसिया अनुजसमेत रघुबरचढ़े पुष्पक जाइकै । सब स-खन सहित मनाइ गणपति शिवा शिव उर लाइकै ॥ सोहत वि-मान सुब्योममें जनु रविउदैभे आइकै । सुर सुमनबरखत अप्सराना-चत मधुर सुर गाइकै ॥ दरशाइ रघुबर जानकिहि लंका विचित्र सुहावनी । रन रावनादिक निधनथल सरिरुधिर परम भयावनी पुनिसिंधु सेतुदेखाइ रामेश्वर शिवहि शिरनाइकै । जो आइइत दरशन करै सोतरै पाप नशाइकै ॥ इतही विभीषन शरन आयो लंक नाथ कहायऊ । सुग्रीव पुर गृह बाटिका किःकिंध आइ देखायऊ ॥ सियप्रीति हित सुग्रीव तहं तारादि रानिन लायऊ । पुनि रीकमूक देखाइजहं कपिराज शुभगति पायऊ ॥ यहपंच बटि-षरत्रिशिर दूषण सैनसह जहं नाशभे । पुनिलखि अगस्त्य सुतीच्ण आदिक ऋषिन परम हुलासभे ॥ यहचित्रकूट अनूप जहं भरतादि भेटन आयऊ । तब भरद्वाज निकेत यमुना निकट बहुरि बतायऊ ॥ एजाह्नवी पावनकरनि येसरजु अवध सुहावनी । सियलषन सहित प्रनामकरि प्रभु विदित बेदन पावनी ॥ बैशाख पच्छ बलच्छ पंचमि पर्णबर्ष चतुर्दशे । भरद्वाजमुनि पदबंदि हरिसिय लखन संयुत तहं बसे ॥ करि बिनय पूछत मुनिहिं रघुबर अवध कुशल सुनाइये । सुभिच्छहै जीवत जननि सानुज भरतगति गाइये ॥ ४२ ॥

पज्झटिया ॥

सुनि राम बचन मुनिवर प्रवीन । कह अवध कुशल तव बिरह दीन ॥ फल असन वसन बल कलन कीन्ह । सबराज सुःखपादुकन

दीन्ह ॥ सहअनुज भरत वसिनंदि ग्राम व्रतकरत मिलैंजिमि लषन राम ॥ तुमदंडक वसिजे कर्मकीन्ह । राक्षसन मारि बैकुण्ठदीन्ह ॥ सो सब जानतुम बिष्णुरूप । विधि बिनै मानि लै भूप रूप ॥ हे रावनारि तव यशहिगाइ । नरतरैं सकल कलिमल नशाइ ॥ अब देव भवन मम करु पुनीत । रुचि असन करौ सबबल सहीत ॥ रुख पाइ रिद्धि सिद्धिन बोलाइ । सियलषन सदल रामहिं जेंवाइ ॥ तब पवन तनय रघुबर पठाइ । मम समाचार भरतहि सुनाइ ॥ मग मित्र निषादहि सर्व गाइ । कहौ भरत कुशल मोहिं बेगि आइ ॥ ४३ ॥

दोहा ।

नर तन धरि हनुमत तबै गुहै कहा सब जाइ ।
आये रावन जीति रन सिया लषन रघुराइ ॥ ४४ ॥

नराच ॥

गयो तुरंत बात जात नंदि ग्रामको तबै । भरत्त शत्रुहासु मंत्रि पौर वासि जे सबै ॥ बियोग रामके भरे मलीन दीन देखिये । यथा निशेष वासरै द्युतिं बिहीन पेखिये ॥ ४५ ॥

अनंगधरशेषर ॥

भरत्त शोक सों भरे कृशं कुशासने परे सुखं रटैं सियावरे स्रवै सुनीर नैनते । समीर सूनुजाइकै बिनै सुशीस नाइकै प्रसंगहू सुनाइकै सुधा समान बैनते ॥ सबंधु राम मैथिली कपीश संग लै बली सुआवते यहैथली बिमान पुष्पकासने । ननेक शोचको करौ अनंद चित्तमें धरौ सुमंगलाय विस्तरौ समूह बेद शोभने ॥ ४६ ॥

इन्द्रवज्र ।

पायोसुधिं वायु सुतं सुबंधुं । रामानुजं मग्न सुख प्रसिंधुं ॥ को हो कहो तात कहांते आये । मेरे स्रुतिं बैन पियूष नाये ॥ ४७ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

हनुमान नामकपि वायुपूत । सुग्रीव सचिव रघुवीरदूत ॥ कहु नरवानर किमिभयो संग । हनुमान कहा क्रमते प्रसंग ॥ रनमारि रावनै दलसमेत । सिय रामलषन आवत निकेत ॥ सुनि भरतहि गोसब दुख भुलाइ । अति हर्ष कपिहि लै उरलगाइ ॥ ४८ ॥

हरिगीतिका ॥

कादेउं यहि संदेश सम जगराज ह्व लखि थोरसो । सिय राम लछिमन कुशल पूछत भरत कपिहि निहोरसो ॥ अति भक्ति बिनय बिलोकि हनुमत प्रभु कथा सब गाइकै । सिरनाइ बहुरि सुनाइ रामहिं भरत गति तब आइकै ॥ सुनिराम लछमन जानकी सुग्रीव आदिबोलाइकै । मुनिबंदि पुष्पक जानचढ़ि गुहग्राम पहुंचे आइकै ॥ सुनतै निषाद सुजाति लैप्रभु पाइ परि हरषाइकै । उर-लाइ ताहि प्रबोधि निज जनजानि सुख सरसाइकै ॥ ४६ ॥

इति श्रीमद्रामायणे उमामहेश्वर संवादे लङ्का काण्डे ईश्वरी द्विज भाषा कृते षष्ठ काण्ड समाप्तम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथरामविलास

उत्तरकाण्ड ॥

कवित्त ॥

जलज लजावन सुपावनहु पावनते पावन सुहावन न जावक बनो है घन। पुरट पञ्जरा वरबिछुवा सुखरतर जड़ीमणी मोद कर विविधि गुणिन गन ॥ पदज नखन जोती कमल दलन मोती शोभा जेती होती तेती कहैकि सहस फन। ईश्वरी सरण मिथिलेश ललीके चरण तापन हरण धन्यनर जाके आवैमन ॥ १ ॥

नराचछन्द ॥

इहांभरतशत्रुहा वशिष्ठपास आयऊ। समेत बन्धुराम सीय आगमै सुनायऊ। पुनः स्वजाय कौशिलादि मातनै कहा जबै। स्रतेपियूष पाय ज्यौं जिये सुखी भई सबै ॥ २ ॥ भई प्रसिद्ध ग्राम बात राम धाम आवते। नरौघ बाल वृद्धलौ सबै महान भावते ॥ सवांरि स्वर्णथार रोचनाक्षतादि गोदही। चले विसारि धाम काम हर्ष जातना कही ॥ ३ ॥ पुजाइ ग्राम देवता शिवार्चनादि कै तदा। पठैसु विप्र बेदपाठ चण्डिका स्तवंमुदा ॥ समेतबंधुराम सीयऔध आजु आवईं। अनन्द मातुभ्रात देखि सर्वसुक्ख पावईं ॥ ४ ॥ बनाइ औधग्राम धाम धाम भांति भांतिके। जड़ी मणी घनी घनी सुरत्न जाति जातिके ॥ पताक तोरनादि केतु ठौरठौर राजते। पुराय चौक मोतिनै सुहार दीप भ्राजते ॥ ५ ॥ स्रदंग तूर भेरिनै निशानहू बजावते। सवांरि आरती घनी सुमंगलाय गावते। रहेन धाम एकहू सनारि वृद्धबाल सा। प्रमोद मत्त मार्ग नात राम दर्श लारसा ॥ ६ ॥ भरत्त पादुका सवांरि शीश राखिकै चले। समातु बन्धु विप्रवृन्द वेद पाठके भले ॥ गजाश्व स्यंदनादि भूरि वाहनानि कोतलं। विलोकि रामचन्द्र को

विमान हीनभोतलं ॥ ७ ॥ इहां कृपाल रामजू अरूढ़ पुष्पका सनै। कपीश लंकनाथ अंगदादि कौशनै भनै ॥ प्रसिद्धलोक वेदमें पुरी विचित्र पावनी । हमैं पियारि जन्मभूमि सर्व पाप दावनी ॥ ८ ॥

दोहा ॥

उत्तर वाशिष्ठी विमल बहै मुक्तिकी दानि ।
जेहिमज्जन ते नेकहूमिटै सकल अघखानि ॥ ९ ॥

भुजंगप्रयात ॥

अतिप्रीय लागैं हमैं ग्राम बासी । सबै धर्ममै सर्वहैं पुण्य रासी ॥ सबै पूर्णनारी दयावान त्यागी । सबैभक्तहैं सर्व कैवल्य भागी ॥ १० ॥

हरिगीतिका ॥

सुनि राम वचन सुजान कपि सब लंकपति हरषित महा । यह धन्यअवध पुरी प्रभाग जोबरनि निजमुख प्रभु कहा ॥ तेहिसमयगुरु जनसहित पुरजन भरतआवत देखिकै । रघुवीर आयसुपायउतरयौ महि विमान विशेषिकै ॥ तेहिपठै तुरत धनेश पहँसोगयो प्रभुरुख पायकै । तबराम लक्ष्मण प्रेमबस गुरुपद परे हरषाय कै ॥ सुनि हृदय लाय अशीशदै पूछा कुशल सुखपायकै । अब कुशल पदपंकज विलोकैबहुरि तवहम आयकै ॥ तबकीन्ह दण्डप्रणाम रामहिं भरत प्रेमाकुलपरे । लखितुरत कृपानिधान भुजनउठाय अनुजहि उरभरे ॥ तेहि समय प्रेमप्रमोद बरनत अगम शेषहुको महा । सुखशील शोभा भक्तिनतिनुति तौनकहिहै कविकहा ॥ पुनिबन्दि सीता चरणभरत सनेह सो न परै कही । लक्ष्मणहि भेटतहृदै सुखजिमि गत मणिहि फिरिफणि लही ॥ सुग्रीव अपर कपीश राक्षश रीछनर तनसबधरे । सनमानि प्रभुहित,जानि सबकह भरत मिलिमिलि उरभरे ॥ ११ ॥

मालिनी ॥

पुनि भरत सभक्तिं भेंट कीन्हों कपीशै । तब बल जयपायो रामजू बाहुईशै ॥ रघुबर चहुबंधूपंच सुग्रीव भाई । यह यश अति भारी लोकचै नायकाई ॥ १२ ॥

दोहा ॥

राम लषण सीता चरण परे शत्रुहन जाय ।
बहु प्रकार सनमानयुत आशिष लहि सुखपाय ॥ १३ ॥

नाराच ॥

बिलोकि रामचन्द्र ग्राम लोग प्रेम ग्रातुरे । मिले यथोचितं अनेक रूपधारि चातुरे ॥ बिशोककैछनाई मेनमर्म कोउपायऊ । भये सुखी नमस्त प्रीतिरीति भूरिगायऊ ॥ १४ ॥ मिले समस्तमातने सबन्धुराम जाइकै । पदारबिन्द परसिशीस धारिभूरि भाइकै ॥ सुमित्रयादि कौशिला अनन्द भूरिपाइकै । अशीस देतहर्षिहर्षि शोकको मिटाइकै ॥ १५ ॥ जाइजानकी मिली सुकौशिलादि सासुसों । प्रीतिजातनाकही पखारिपाउ आंसुसों ॥ देत आशिषासबै रहौ सुहागसों भरी । बार बारही लगावती अनन्दमेंपरी ॥ १६ ॥

चमर ॥

मातुमोदमें भरीमणी समूहबारती । बार बार रामसीय लक्ष्मणै निहारती ॥ स्वर्णधार गोघृतं कपूर युक्त आरती । वेद उक्त रीति मंगलायनं उतारती ॥ १७ ॥

दोहा ॥

सुग्रीवादि कपीश सब भरत शीलव्रतनेम ।
बरनत विविधि प्रकारसों राम चरण दृढ़प्रेम ॥ १८ ॥
धन्य अवधबासी नर नारि बालअरु बूढ़ ।
राम पदारबिन्द मह जिन्हें प्रेमअति गूढ़ ॥ १९ ॥

मालिनी ॥

तब सकल बोलायो राम चन्द्रौ बुझायो । निज गुरुहि बतायो पाइ लागो सिखायो ॥ इनचरण प्रभाऊ मारिमैं बाहुबीशै । तिन महि धरिशीशै बन्दिपायो अशीशै ॥ २० ॥ पुनि रघुबर मातै कीन्ह दण्ड प्रणामं । तिन हरषि अशीशै दीन्हजो मोदधामं ॥ कपिपति नल नीलं जाम्बवान् बातजायो । निशिचर कुलकेतु अंगदादीन् गानयो ॥ २१ ॥

दोहा ॥

भरतपादुका शीशते पहिराई प्रभुपाउ ।
धन्यआजु मम जन्मफल तवदरशन रघुराउ ॥ २२ ॥

हरिगीतिका ॥

तब भरतकह करुणा निधानहिं विविधिबहु बिनतोठयो । मोहिं

सौंपिराज खलीजिये बलकोशसबदश गुणभयो ॥ बड़िप्रार्थना कहि केकईगुरुसहित कहसमुभाइक। तबकीन्ह अंगीकार राज्यहिराम उरसुख पाइकै ॥ सुनु उमानेहि भ्रूभंगते त्रैलोक छनमह नाशई। नेकौ अनुग्रहहोत सुरपति श्रियाबिपुल प्रकाशई ॥ खइराम रमा निवास परमानन्द सचराचर धनो। महि राज तेहि बर्नियें कह ब्रह्मांड जेहि रोमनघनी ॥ निज भक्तहित लीला विविधि बिस्तरत अनुपम ह्वै नरं। जनगाइ जेहि भवनिधि तरैं प्रणमामि रघु सीता वरं ॥ तव शत्रुदमन निदेशते संभार तिलक सवांरिकै। सब द्रव्य शुचि सेवकनराखी विविधि भांति सुधारिकै ॥ रघुवीर आयसुपाइ प्रथमन्हवाइ भरतहिसादरं। सहलवन सिरकचरुचि बनाइ सवांरि पटभूषनवरं ॥ सुग्रीवअंगद हनुमतादिहि लंकपतिहि न्हवाइकै। पहिराइ दिव्याम्बर बिभूषन सेवकन सुख पाइकै ॥ उत कौशिला सीतहिसबिधिवत परम प्रीतिन्हवायऊ। सुन्दर बिभूषन अम्बरन रचिरुचिर अंग बनायऊ ॥ २३ ॥

कवित्त ॥

गौरतन श्यामसारी भूषन विविधधारी सरदेन्दु दुतिवारी आनन अनूपसो। करनांत नैनसोहै नीलकंज खंजमोहै शपाहढ़ जाहि जोहै कढ़ैभव कूपसो ॥ भृकुटि दशन बर बिंबा फल से अधर करुणा अपारपरईश्वरी सरूपसो। बचनपियूष निधिबन्दै हरिहर बिधिदानि रिधि सिधि श्रिया प्रिया रामभूपसो ॥ २४ ॥ जलज लजावन सुपावनऊ पावनतेपावन सुहावन नजाउकबनोहै घन। पुरट पऊटाबर बिछुवा मुखरतरजड़ी मनी मोदकर विविधि गुनिनगन ॥ पदज नखन जोती कमल दलनमोती शोभाजेती होतीतेती कहैकि सहसफन। ईश्वरी सरण मिथिलेश ललीके चरण तापन हरण धन्यनर जाके आवै मन ॥ २५ ॥

दोहा ॥

अपरवानरी सीयसंग तारादिकन सप्रीति।
अन्हवाई भूषन बसन पहिराई रुचिरीति ॥ २६ ॥

नराच ॥

बनाइ शीस केशन्हाइ रामचन्द्रऊ तरै। सजे बिचित्र भूषनंभरत

धानि लै सबै ॥ किरीट कुंडलादि हार कौस्तुभादि भानहीं। समुद्रिकांगदादि अंबरौ सुदिब्यराजहीं ॥ २७ ॥ सुमन्त शत्रुहा नि-देशबाहनौघ लायऊ। गजाश्व पालकी रथौ विचित्रता बनायऊ॥ चढ़ाइ नंदिग्रामसते कपीशसैन अग्रकै। चले अनन्दमार्ग लालसा अवद्धनग्रकै ॥ २८ ॥ ततो रविं द्विती रथंसुसन्त साजि लायऊ। भरत्त सारथीतबै सियापतिं चढ़ायऊ॥ विचित्र श्वेतदण्ड छत्रशत्रु-हा करे धरे। विभीषनौ समीप चामरं शशिं प्रभंढुरे॥ २९॥

पज्झलिया ॥

चले अवधधामरघुबर कृपाल। संगब्यजन डोलावत लषनलाल॥ सियसंग प्रमदा तारादिभूरि। शिविकन चढ़िचलि शोभातिरूरि॥ तेहि समय गगनसुर सुमनवर्षि। नांचैंगावैं सुरनारि हर्षि॥ बाजैं मृदंगभेरी निशान। ऋषिमुनि समूह करैं कीर्तिगान॥ जलजारु-नवर नैना भिराम। प्रमुदितपुर निरखत जातराम॥ मलयज मृग-मद रुचि तिलकभाल। मनिमुक्तन उरशोभा विशाल॥ सुनि सुनि पुरत्रिय मग जातराम। चढ़ि महलन पर तजि धामकाम॥ द्वारन मोतिन चौकै पुराइ। धरे स्वरन कलश रचि रुचि भराइ॥ कर कनकथार आरति उतारि। वारत मनिगन प्रभु मुख निहारि॥ यहि भांति प्रजन मगहै अनंद। नृपद्वारआय रघुवंश चंद॥ ३०॥

तोटक ॥

प्रविशे रघुनाथ निकेतजही। बरविप्रपढ़ैं शुभ शांतितही॥ निज मातहिजाइ प्रणाम कियो। तिनहर्षि उठाइ लगाइहियो॥ पुनि कैकइ आदिजे मातुघनी। सब बंदिसबै रघुवंशमनी॥ दियोआ-शिषभूरि अनंदलहा। तेहिऔसर मो दन जातकहा॥ ३१॥

दोलिका ॥

तब भरतहि समुझाइ प्रभु संपति सह मम धाम। सो सुग्रीवै दीजिये पावै जहां अराम॥ पावै जहां अराम लंक नायक दिन राती। जाइ भरत सोदीन्ह सुखद मंदिर बहुभांती॥ जाइ भरत सो दीन्ह यथारुचि बास कपिन सब। पाइ बिमल बिश्राम राम आयसु निवसे तब॥ ३२॥

छप्पै ।

सुग्रीवैकहि भरत सिंधुको सलिल मगावो। राम तिलक केहेतु बेगचर चारि पठावो॥ जाम्बवंत हनुमान अपर अंगद सुखेन को। कहा सुतुरत कपीश चहुंदिशि नीरलेनको॥ तिनजाइ सर्व सागर सलिलस्वरन कलशभृत पलकमें। भरि ल्याइदीन्ह रघुबर निकटधरे विमलते तिलकमें॥ ३३॥

दोहा।

अपरतीरथन सलिल सब लीन्ह सुमंत मगाय।
द्रव्यअमित औतिलक कीधरी सर्वसो आय॥ ३४॥

नराच।

तहां वशिष्ठ वामदेव जावलिः स गौतमो। अनेक आइ बालमीकसे ऋषै तगौतमो॥ कुशाग्र नीरपुण्यगंध औषधै मिलाइकै। गणेशगौरि आदिदेव पूर्वही पुजाइकै॥ ३५॥

हरिगीत॥

मुनिमांगि दिव्य सिंगासनै मनिरत्नमै रविद्युति तहा। त्यहि बैठ सीता राम द्विजन नवाइ शिर पुलकित महा॥ कुश तुलसि औषध तीर्थजल प्रमुदित ऋषै अभिषेकही। पढ़िवेद बिधिवत मंत्र बर कुलरीति करत अनेकही॥ निरखत बिमानन चढ़े सुरबरखत सुमनसुख पावहीं। इन्द्रादि लोकप हरख बसबहु भांतिबिनै सुनावहीं॥ लिय छत्र पांडुर शुभग शुभ शत्रुहन मन प्रमुदित महा। सुग्रीव लंकेश्वर दुहुदिशि चमर ढोररभैतहा॥ दियोवायु कांचन मणिन मैमाला रुचिर अभिरामही। पहिराइहार मनोहरं सुरराज तब श्रीरामही॥ नभनगर बाजत दुंदुभी नाचतहुलसि हियअप्सरा। गावत मधुर गंधर्व गन अति मोद तब तिहु पुरभरा॥ ३६॥

दोहा।

ऋषि समूह मिलि तिलक करि अवध धाम श्रीराम।
जिमि अमरावति पुरबसुन बासव शिर अभिराम॥ ३७॥

बसंत तिलक।

इंदीवराभ रुचि कोमल शुभ्र गातं। राजीव नेत्र मधुरानन आप जातं॥ हारी हिरण्य मणि कुंडल सोह गंडं। पीताम्बरा हृतकिरटी

सुभाल मंडं ॥ सिंहासनस्थ रविकोटि सम प्रकाशं । लावण्य काम बिपुलं शुकतुण्ड नासं ॥ आजान बाहु सरचाप कटि प्रदेशं । तुन्नीर भक्त न मनोहर शुभ्र वेशं ॥ ३८ ॥

इंद्रबज्रा ॥

बामांक भागे जनकात्मजाया । सर्व्वेश्वरी पूरुबयोगमाया ॥ चंद्रानना भूषन बस्त्र धारी । लावण्य सीवा पति प्राण प्यारी ॥ ३९ ॥

दोहा ॥

निरखि निरखि कौशिल्ला तब उरकरि हरष अपार ।
आरति सीताराम पर वारति बारंबार ॥ ४० ॥
बिप्रन कोटिन दान दै यांचक किये निहाल ।
उमासहित त्रिपुरारि तब बिनै कीन्ह तेहि काल ॥ ४१ ॥

रोला छंद ॥

नील उपलदल श्याम काम कोटिन छबिलाजै । बामभाग मैथिली तप्त कांचन द्युतिराजै ॥ रबि समक्रीट सुभाल श्रवण कुंडलझल हलकै । अंगदादि मुद्रिका हार उर मनि गन झलकै ॥ सिंहासन आसीन राम नरभूप रूप बर । उमासहित उर हरषि बिनै बानी गद गदहर ॥ तुमविधिहरि हरजक्त सृजतपालत संहारत । मत्स्यादिक अवतार धारि सुर बिपति निवारत ॥ ४२ ॥

छप्पै ॥

लीला बिविधि प्रकार करत निज भक्तन हेतू । विवस लेत जेहि नाम होत भव वारिधि सेतू ॥ तुम हौ जग आधार जक्त आतमा चराचर । रविशशि शिखिनिज्ञ तेज तुम्है बरनत सुवेदबर ॥ तुमब्रह्म विरजवानी परे अस्तुति कहंलगि कीजिये । यहसगुणरूप श्रीराम पद भक्ति हमैं निज दीजिये ॥ ४३ ॥

चौपाई ॥

तब सुरपति रामहिं कर जोरा । रावण हरासौख्य सब मोरा ॥ ताहि मारि पठयो निज धामा । तवप्रसाद पायो सुखरामा ॥ अपर देवकहैं सुनो षरारी । रावण हमैंदीन्ह दुखभारी ॥ ब्राह्मण यज्ञकरैं नहिं पावैं । सो विनहम सबसुर दुखपावैं ॥ हत्यौनाथ राक्षस दुख दावा । तुव प्रसाद हमपुनि सुखपावा ॥ पुनि रघुनाथहि पितरमना

वैं । गयापिण्ड प्रभु हैन न पावैं ॥ बध्यौ रावण अति अघरासी । तव प्रसाद हमभये सुपासी ॥ विनवैं प्रभुहि यक्षहै दीना । पुष्पक जान रावण छीना ॥ बध्यौ ताहि अतिशै बलवाना । कृपासिंधु हम बड़ सुख माना ॥ पुनि गन्धर्वन विनती ठाना । हम हरि गुण गन करैं बखाना ॥ ४४ ॥ दोहा ॥

विघनकरै रावण सुभट ताहिसंहार्यौ नाथ ।
तवप्रसाद रघुवंशमणि पुनिहमभये सनाथ ॥४५ ॥

छप्पै ॥

यहि विधि किन्नर सिद्ध पन्नगौमरुत समेता । वसुमुनि खगम्हग धेनु अपर गुह्यादिक जेता ॥ सहित अप्सरा वृन्द प्रजापति से सब लायक । निरखि तिलक उत्साह वंदि रामहिं सुख दायक ॥ निमि सिंहासन रघुवंशमणि सो स्वरूप उर राखिकै । सबदेवगये निजपदहि लहि रामहिं विनती भाषिकै ॥ ४६ ॥

प्रज्झटिका ॥

सुनुउमा कथा अवचित्त लाइ । जब रामभये राजेन्द्र आइ ॥ सब जीवरहैं दिनदिन प्रसन्न । सम्पन्नसदा वसुधा सुअन्न ॥ महिकल्पभौमें सुरतरु सुभाइ । मांगे जलवर्षत मेघआइ ॥ नहिंअल्पम्हत्यु नहिंव्याल त्रास । बिन बैरचरैं गजसिंहपास ॥ अतिवृष्टि अग्निभय सुनिनकान चौरादि दुष्टनहिंहैं जहान ॥ चहुं बरन पतिव्रतवती नारि । पुत्रिनी सबै रूपाधिकारि ॥ वैधव्य रहितनहिं पुत्रशोक । संतुष्टपुष्ट प्रमुदित सलोक । नहिं रोग रोष नहिं वायु त्राश ॥ दुर्भिक्षादिक भय भये नाश ॥ सब सुखी धनी धार्मिक उदार । सुन्दर सुशील गुण निधि अपार ॥ विद्याविवेक श्रीरामभक्त । वैतापरहित सबभयेजक्त॥४७॥

दोहा ॥

निज निज धर्महिं अनुसरैं चारिउ बरण सुजान ।
शतयुग समत्रेता भयो राजा श्री भगवान ॥ ४८ ॥

नराचछन्द ॥

तबै सुकंठ मित्रको विलोकि राम प्रीतिते । अमोल सर्वरत्न युक्त सूर्यसों सुनीतिते ॥ दियोसुमाल मेलिग्रीव आपुभक्तबत्सलं । उतारि बाहु अंगदं सुअंगदै मनोहरं ॥ ४९ ॥

चामर ॥

कोटिचन्द्र कांतिहार स्वर्णरत्न सोधनो । कौस्तुभादि जाहिमें विचित्रहैं जड़ो मनी ॥ जानकोश जानकी महान प्रीतिसों दियो । शेषनासकै बखानि मोद दंपतीहियो ॥ ५० ॥

नराच ॥

उतारिहार कंठते स्वजानकी शशिद्युतिं । बिलोकिकै हरीमनै चितै पुनः पुनःपतिं ॥ प्रिया मनोगतिं बिचारि हर्षिरामजू कहा । प्रसन्न जाहिहोउ ताहि देउ देरहै कहा ॥ ५१ ॥

चौपाई ॥

तब जानकीहार हरषाई । हनूमान कहंदीन्ह बोलाई ॥ हार पहिरि गौरव अति पायो । बार बार चरणन शिरनायो ॥ देखि भक्ति कपिको रघुनायक । बोले बचन परम सुखदायक ॥ हनुमत मैं प्रसन्नअति ताहो । सुर दुर्लभवर मांगहु मोहो ॥ तब हनुमान चरण शिरनावा । नाम तुम्हार मोहिं अति भावा ॥ संतत भजौं ताहि दिनराती । रहै नाम रस मम मति माती ॥ जबलगि नाम रहैसंसारा । तबलगि यहतन रहै हमारा ॥ एवमस्तु तबकहि रघुराई । जीवनमुक्तरहौ सुखपाई ॥ कल्पांतेसजुाज्य मुक्तिसम । पैहौ नहिंसन्देह ताततुम ॥ पुनि सियकहा कपिहि हरषाई । सर्वभोग पावो सबठाई ॥ ५२ ॥

दोहा ।

रघुबर आयसुपाइ तब पदगहि बारंबार ।
तपहित गयो हिमालयं हर्षितपवन कुमार ॥ ५३ ॥

चौपाई ।

तबगुहसन कह कृपा निकेतू । जाउभवन मोहिं राखेउ हेतू ॥ करौ भोगमनमें जनचहिहै । अन्तसरूप मुक्तिमम लहिहै ॥ अस कहि भूषनबसन अनेका । राज बिपुलदै ज्ञान विवेका ॥ कियोबिदा तेहिहर्ष लगाई । गयो भवनसो पद शिरनाई ॥ अपरभालु कपिजे संग आये । भूषन बसन सबहि पहिराये ॥ सहित बिभीषन अरु सुग्रीवा । कियोराम सनमान अतीवा ॥ यथा योगसब पूजिपठायो । गये राम चरणन शिरनायो ॥ प्रभु लछिमनहि कीन्ह युवराजा ।

तेसबकरत राजकर काजा ॥ सेवहिं प्रभुहि कर्ममन बानी । पालैं प्रजन पुत्र समजानी ॥ परमातमा राम नर भूपा । कारन रतपै विमल सरूपा ॥ ५४ ॥

दोहा ॥

स्वानन्दै संतुष्ट प्रभु सकल लोकउपकार ।
अश्वमेध सैकरनकै दैदै खरनअपार ॥ ५५ ॥
सहस एकादशवर्ष प्रभु राज्य कीन्ह जेहिरीति ।
बरनि सुनायो शम्भु सबगिरिजा सों अतिप्रीति ॥ ५६ ॥

चौपाई ॥

जोयह कथासुनै मनलाई । कोटिजन्म अघताहि नशाई ॥ करि जग भोग जाय बैकुण्ठा । लहै मुक्ति सो परम अकुण्ठा ॥ धन सुत अर्थी धन सुतपावैं । रुज आरत करोग नशावैं ॥ राज्य हेतु जो सुनैसप्रीतो । पावैराज्य शत्रुगण जीतो ॥ जोसुनै राम अभिषेका । लहैपुत्र धनधान्य अनेका ॥ वंध्या पुत्रवती ह्वैजाई । अन्त मोक्षपावै सुखदाई ॥ जोपुस्तक पूजैसहप्रीती । जायसकल तेहिपातकरीती ॥ जोनिज सुखयह शिवकृत गैहै । रघुपति कृपा परम पदपैहै ॥ ज्ञान विराग मुक्तिकी दाता । रामायण यह जग विख्याता ॥ सर्व वेद मथि शंभु निकासा । राम सुयश यहजक्त प्रकासा ॥ ४७ ॥

दोहा ।

इहरीतिहिज भाषाबरनि रामचरण रतिहेतु ।
जग उपकार विचारि उर उमै कहा वृषकेतु ॥ ५८ ॥

चौपाई ॥

अपर चरित्र कहौं अवगाई । सिंहासनबैठे रघुराई ॥ देश देश के भूपतिभूरी । दिगिपति मुनिनसभा सबपूरी ॥ भरतादिकभ्राता सुखपावत । चमर छत्र कोउ व्यजन डोलावत ॥ शनकादिक ऋषि इन्द अपारा । विनय करत निजमति अनुसारा ॥ हनुमदादिभट जहं तहं सोहैं । देखि प्रताप इन्द्रमन मोहैं ॥ तेहि अवसर एक कूकुर आयो । धर्म द्वार दुन्दुभी बजायो ॥ सुनि अनुजहि प्रेरेउ रघुवीरा । स्वानहि लषण लायतब तीरा ॥ पूछा प्रभुकेहि तोहि सतावा । आपन चरित स्वान सब गावा ॥ सोवत महि मैं सुनौ

भुवारा । बिनु अपराध विप्र मोहिं मारा ॥ तेहि कारण दुंदुभी बजाई । कहौ तुम्है तसहोय रजाई ॥ ५९ ॥

रोला ॥

सुनतै चारन पठै तुरत सो निकट बोलायो । कहो विप्र केहि हेत स्वान का मारि दुखायो ॥ ब्राह्मण कहा भुवाल स्वान सोवै मग माही । भोजन हित मैं जात मानि भय मारा ताही ॥ ५७ ॥ तब प्रभु पूछा मुनिन कहौ का करिय उपाई । है अदण्ड द्विज ऋषिन कहा जानौ रघुराई ॥ पुनि कूकुरहि सुनाय कहो सो याको कीजै । स्वान कहा हरषाइ इन्है शिव पूजा दीजै ॥ ६० ॥

नराच ॥

स्वान कहा तैसे प्रभु कीन्हा । बहुधन दै मठपति करि दीन्हा ॥ क्षिप्र विप्र भो भूप समाना । भोगन लाग सकल सुखनाना ॥ लखि विस्मय सबके मन आई । यह परिनाम स्वान कहौ गाई ॥ सारमेय निज कथा सुनावा । जेहि प्रकार कूकुर तन पावा ॥ सुनौ सकल यहिकर परिनामा । मठपति एक धनी एक ग्रामा ॥ ताके बहुत पाहुने आयो । पाक करण मम पितहि बोलायो ॥ तिनहिं जेवाइ आय निज गेहा । मोहिं गोद लीन्हा करि नेहा ॥ दूधभात तुरतै मंगवायो । सानि मोहिं निज करन खवायो ॥ मठपति घृतपितु नखते द्रयऊ । तात दूधते ममसुख गयऊ ॥ तेन दोषपरि नरकन जाई । बहु योनिन भरम्यौ रघुराई ॥ ६१ ॥

दोहा ।

मोहिं दीन्ह ये दण्डलघु यहि मैं बड़दुख दीन्ह ।
छमिये प्रभु अपराध मम याते मठपति कीन्ह ॥ ६२ ॥

नराच ॥

गिरिजा सुनौ अपर इतिहासा । लवना सुरहि मुनिन लहि त्रासा ॥ भार्गव च्यवनादिक द्विजवृन्दा । आये सब जहँ रघुकुलचंदा ॥ विधिवत पूज्यौ रघुकुलकेतू । पूछा कुशल कीन्ह अतिहेतू ॥ आयसु देउ करौं मैं सोई । द्विज समान प्रियमोहिं न कोई ॥ यह सुनि सकल उठे हरषाई । बोले च्यवन सुनौ रघुराई ॥ सतयुग एक दैत्य मधुनामा । भूसुर सुरसेवक अभिरामा । अतिधर्मज्ञ विप्रहित

कारी । ताहि शूलइक दीन्ह पुरारी ॥ कहे वचन असतेहि शशि भाला । जबलगि रहिकर शूलकराला ॥ तबलगि शत्रुसामु है आवै । कैसो प्रबल नाशकहं पावै ॥ ताकर सुत लवनासुर घोरा । पीड़त द्विज देवन बरजोरा ॥ ६३ ॥

दोहा ॥

तासु त्रास बस विप्रसब आयेतब शरनाय ।
करिये रक्षा दीन लखि दयासिंधु रघुराय ॥ ६४ ॥

नराच ॥

सुनि विप्रनके वचन कृपाला । अभयहोउ कहवचन रसाला ॥ तब अनुजन बोलेउ रघुराई । लवनासुरहि बधै को जाई ॥ भरत कहामैं असुरहि मारौं । प्रभुआयसु निज शिरपर धारौं ॥ तबशत्रुहन नाइपद माथा । प्रभुहि कहाकरि सपुट हाथा ॥ नाथ साथ लछिमन रिपुमारा । भरतकीनित तपकीन्ह अपारा ॥ मैंअबलवनासुरहि संहारौं । प्रभुप्रताप यशजग विस्तारौं ॥ सुनिशत्रुहन वचन रघुराई । भुजभरि हृदैलाइ लघुभाई ॥ मागा जलतब तीर्थअनेका । मथुरा राज्य राम अभिषेका ॥ दीन्ह एकसर रघुकुल केतू । लवनासुरहि संहारन हेतू ॥ सैन संग चतुरंग अपारा । अपररघौ अरु सुभट जुझारा ॥ ६६ ॥

दोहा ॥

पठवा शिषदै शत्रुहै मानौ बचन हमार ।
शूल पूजि घर जाइ धरि प्रविशै विपिन अपार ॥ ६७ ॥

चौपाई ॥

बानर बाघ बराह कराल । भक्षन कहमहिषादिक भालू ॥ प्रात अखेट जाइ उठि नितई । आवै घरै मध्यदिन बितई ॥ यह आचरन सदा तेहि केरो। तुमकरि यतन जाइ पुरघेरौ ॥ ठाढ़ रह्यौ चरमाधि दुवारा । आवतही तेहिकि हेउ प्रहारा ॥ प्रभु पदपरसि चलेरिपुहंता । सोहत संगसैन बलवंता ॥ यहिप्रकार कछु दिवस बितावा । यमुना तटमधुपुरी घेरावा ॥ इत लवनासुर खेलि अखेटा । पुरहि आवरिपु हंतहि भेटा ॥ कहा नृपति तुम कहा भुलाने । मोहिं न जानत आइ तुलाने ॥ कह रिपुहन तेहि मारन हेतू । आयों मैं

अब होसि सचेतू ॥ असकहि युद्ध परसपर ठाना। देखत सुर नभ चढ़े बिमाना ॥ ६८ ॥

दोहा।

महाबली दनुजाधि पति कीन्हों युद्ध अपार।
रिपुहंता लखि तासु उर रघुबर बान प्रहार ॥ ६९ ॥

चौपाई ॥

गिरा अवनि रघुपति सरलागा। शुभगति पायोनिज तनत्यागा ॥ वृंदारक दुंदुभी बजाई। नाचैं हरषि अप्सरा गाई ॥ भूनभ सुरमुनि जैजै बानी। रिपुहंता यशकहैं बखानी ॥ प्रमुदित संगसैन समुदाई। टिकै शत्रुहन जै यशपाई ॥ बहुरि बसायो ब्राह्मण वृंदा। दानमान सोंकिये अनंदा ॥ अपर प्रजा रिपुहन बलपाई। बसेनगर सुखबरनि न जाई ॥ मथुरापुर सबभांति बसाई। रत्नाहित तहंकटक टिकाई ॥ सबहि प्रतोषि आपु रिपुनाशन। आइ रामपदगहे ज्ञलासन ॥ अति आदर प्रभु हृदै लगाई। दीन्हमान कछु बरनि न जाई ॥ यहि बिधि महि मंडल सबकाला। राम नरेश सबहि प्रतिपाला ॥ ७० ॥

नराच ॥

पुना गिरीन्द्र कन्यकै कहा गिरीश गाइ कै। चरित्र रामचंद्र के अनूप चित्त लाइकै ॥ सहाय आपनी लिये युधा जितौ बोलायऊ। गये भरत सैन लै नियोग नाथ पायऊ ॥ ७१ ॥

हरिगीतिका ॥

गये भरत जब ननिहार तब अति मातुलन लखिसुख लहा। पञ्च-नाइ बिपुलप्रकार करिपुनि शत्रुशालन सबकहा ॥ सुनतै अरुनदृग कोपवस भुजफरकि भूपकिशोरके। जाग्यौ मनोकरि शब्दते केशरि सुभट शिर मौरके ॥ ७२ ॥

मालिनी ॥

तबसाजि दल चतुरंगगज रथ बाजि सुभटअपार। गहिअस्त्रशस्त्र समूह गवने भरत कीन्ह नवार ॥ सुनतै तुरत गंधर्व पतिलै सुभट कोटिन संग। कियोयुद्धकुद्ध बिरुद्धसो नहिं जातबरनि प्रसंग ॥ भयो घोर समरकठोर करके दंडकठिन चढ़ाइ। अति भीम बिक्रम भरत तिनहि निपाति सरबरषाइ ॥ जैपाइ पुष्कलको कियोपुष्करावतिको भूप। लघुपुत्रलक्ष्यहि दीन्ह तक्षसिला सुराज अनूप ॥ ७३ ॥

दोहा ।

सुतन सैन्य चतुरंगिनी सुहृद संपदा दीन्ह ॥
नीति सिखैं निज भरत तवगवन राम पहंकीन्ह ॥ ७४ ।

चौपाई ॥

पुनि लछ्छ मनहि कहा श्री रामा ॥ पश्चिम देश महा अभिरामा ॥ बसै मल्ल मानुष अघ धामा ॥ तिन्है जाइ जीतौ संग्रामा ॥ निज पुत्रन संग लेउ लवाई । राज देउतहं नगरबसाई ॥ गये लषन प्रभुआयसु पाई । संगउभै सुत दल समुदाई ॥ जाइ पछाह मल्लदल मारा । रचेनगरद्वै सुखद अपारा ॥ जेठ पुत्र अंगद जेहिनामा । कीन्ह भूप इक पुर अभिरामा ॥ लघुसुत चित्र केतु कहंराजा । कीन्ह उभै पुर साजिसमाजा ॥ दीन्ही द्रव्य अनेक प्रकारा । सुहृदसैन संगकीन्ह अपारा ॥ लछिमन आइराम पद सेवा । और न जानैंदूसर मेवा ॥ ७५ ॥

दोहा ॥

यहि प्रकार रघुबंश मणि कीन्हे चरित अपार ॥
कविन अगम जेहिशेषह्लु नेक न पावै पार ॥ ७६ ॥

चौपाई ॥

पुनि गिरि सुता विनय जग दीशै । सम्पुट कर करि महि धरि शीशै ॥ नाथ कहौ रघुपति गुण गाथा । निशिचर बधि सुर कीन्ह सनाथा ॥ अवध राजबैठे सुखपाई । कीन्हजो अपरचरित रघुराई ॥ परमातमा ब्रह्म नरवेषा । कतिबरषे महि रहे विशेषा ॥ गये धाम जिमि दीनदयाला । कहौ मोहिं सब शंभुकृपाला ॥ सुनिशिव शिवा वचन हितमाना । करनलगे हरि चरित बखाना ॥ रावनादि निश्चर रण मारी । राज्य बैठि किया प्रजा सुखारी ॥ आये कुम्भजादि ऋषि नाना । पूजि तिन्हैं विधिवत भगवाना ॥ करिदंडवत सुआसन दीन्हा । कुशलपूछि प्रतोष बहुकीन्हा ॥ अवहमरे कुलकुशल अपारा ॥ तुमरण रावणादि संहारा ॥ ७७ ॥

दोहा ॥

मारयौघन नादै प्रबलसबते अधिक कराल ।
अभैदान सुरमुनिन दैसब बिधि कियो निहाल ॥ ७८ ॥

चामर ॥

छाड़ि रावणादि कुम्भकर्णसे महाबली । मेघनादको प्रशंसि विस्मयं हमैंभली ॥ जन्मकर्म पौरुषं समस्तके बखानिये । कुम्भजात रामसो कहा सुनौ प्रमाणिये ॥ ७९ ॥

हरिगीतिका ॥

पूरुष पुलस्त्य विरंचि सुततप करतमेरु समीपहो । करैविघन सुर गंधर्व कन्या सहित सुता महोपहो ॥ सुनिकहा अबमम नैनगोचर जौनि गाइहि आइकै । होइजाय गर्भसमेत सो सबगईं तुरत डेरा इकै ॥ तृनविंदु भूपति कन्यकानिरभय पुनः आवत भई । मैगर्भवन्ति विवर्णतन पिपास सो शंकितगई ॥ लखिभूप रमित द्विति सुताधरि ध्यान हृदय विचारिकै । तेहि लाइदीन्हो मुनिबरै सबव्याह रीति सुधारिकै ॥ विख्यात लोकपुलस्त्य सुत विश्रवा जनमे आइकै । तेह भरद्वाज मुनीशहू निज सुता व्याहो लाइकै ॥ तिनते सुपुत्र कुबेरभे करितपविधिहिपुष्पक लहा । निवसेसोलंकापुरप्रसिद्धसुवर्णमेंमंदिर तहां ॥ जे हविश्वकर्मारचीनिजकरराक्षसौघबसायऊ । तेसर्वभागि पतालग अति विष्णु न भयपायऊ ॥ एकसमय कन्या सहसुमालीदैत्य आयो भूतलं । लखिवैश्रवं पुष्पक चढ़े ऐश्वर्य सहयक्षन बलं ॥ ८० ॥

नराच ॥

सुमालिहू विचारि चित्तकै कसों कहा तबै । छपाय जाति काम विश्रवैबरौ सुता अबै ॥ धनेश भ्रातृतोर पुत्र ज्यौं लखौ सुनैनसों । पितै प्रबोधि सोगई ऋषैचितै सुनैनसों ॥ ८१ ॥ अधोमुखी सलज्जया समेत भूलिखै तहां । विलोकि पूंछि विश्रवा सुभामिनी चलीकहां ॥ रही स्वपाणि जोरि बैन आननैन उच्चरा । मनोभिलाष ताहि को ऋषीश ध्यानमोपरा ॥ ८२ ॥

तोमर ॥

मुनि कीन्ह रति तेहि साथ । सुतभा प्रकट दशमाथ ॥ उठिहाखि भूतेहि काल । लखि बीसबाहु कराल ॥ पुनि कुम्भकर्णन गाम । सुत कैकसी कहलाभ ॥ तेहि कन्यकाभइ और । अतिसूर्पनखा कठोर ॥ पुनिभे बिभीषणभक्त । यशजाहि नाहिरनक्त ॥ जब प्रौढ़भे दुहुभाइ । दुखदै मुनीशन जाइ ॥ ८३ ॥

दोहा ॥

यहिविधि सुनिकुलजनमि भे राक्षस कठिनकराल ।
कुंभकरन रावणबली बीसबाहु दशभाल ॥ ८४ ॥

नराच ॥

धनेश एकबार पितृ दर्शनार्थ आयऊ । बिलोकि कैकसी बिभी षपुत्रनै सुनाय ॥ करौ स्वजाय ऐसहू तुम्हौपदार्थ कोलहौ । हमैस-मेत सर्वबंधु ज्यौंसदा सुखीरहौ ॥ ८५ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

सुनि मातुबचन दशमौलि कोपि । सुनुसत्यबचन कहिप्रणहि रोपि ॥ शतधनदहुते मेंहोंउबेश । असकहिगे सबगोकरनदेश ॥ अतिकीन्ह उग्रतप तिहूंभाइ । पदएक ठाढ़ निरसन बनाइ ॥ दशसहस वर्ष तप करि कराल । तबशीर्ष शिखिनिर्वारि उठी ज्वाल ॥ तबकाटि शिर न-हुति बहिदीन्ह । तप कीन्ह कठिन असकेहु न कीन्ह ॥ बिधि कहा आइ रावणहिबात । मैंतोहि प्रसन्न बरमांगुतात ॥ हममरैन काहु के हाथ आइ । सुरअसुरादिक पै नरबराइ ॥ कहि एवमस्तु बिधि कहा और । शिरबहिहुतेते होइ तोर ॥ ८६ ॥

हरिगीतिका ॥

पुनि गे भीषणतीर बिधि बरमांगु पुत्रजो चितचहै । तेहि मांगि धर्म सनेह ममम त दिवसनिशि सन्ततरहै ॥ तेहिएवमस्तु बिरंचि कहि अरु अमराम सबयुगरहौ । श्रीरामपद पाथोजपावन भक्ति बर अविचललहौ ॥ ८४ ॥

छप्पै ।

कुम्भकरण कहदेखि बिधिमन बिस्मै आयो । गिरागिरै बैठारि ताहि छल बचनसुनायो ॥ मांगमाहिं बरदान सोपि परबसहै मांगी । सोवों मैंषटमास एकभोजनदिन जागी ॥ दैब्रह्म बरहि निजभवन गे निशिचरमन शोचत भयो । मैंप्रेम बिबस मांगा कुरुचि तप समुह बिरथागयो ॥ ८५ ॥

चौपाई ॥

सुनि सुमालि रावण बरपायो । निशिचर गनलै भूतलआयो ॥ मिल्यौ रावणहिं अंकमलाई । परमानन्दनहृदय समाई ॥ हरिभयते

छांडी हमलङ्का । तव प्रसाद पुनिभयों असङ्का ॥ अब धनपतिहि छीनि सो लीजै । लङ्काराज अचल ह्वैकीजै ॥ कह रावन यहमत नहिं नीका । बित्तेश्वर ममगुरुबरटीका ॥ कह प्रहस्त युगयुगचलि आई । राजहेतु नहिंभली सगाई ॥ देवदनु जकश्यप के जाये । राजहेतु रहैं बैरबढ़ाये ॥ सुनिप्रहस्त बानी दशभाला । लङ्का गढ़ घेराततकाला ॥ सुनिधनपति पुष्पक बरसाजी । तुरतगये कैलासहि भाजी ॥ तपकरि शिवहितेौषि दिगपाला । ह्वै अलकापुर बसे नि· हाला ॥ ८६ ॥

रोला ॥

जब रावन बलवान राक्षसेन्द्रै पदपायो । सुहृदबन्धु सहबसे लंक गढ़ सुखसरसायो ॥ महोदरि अस नामसुता मयदानव केरी । सो रावनहिं बिवाहि रूप की राशि घनेरी ॥ बैरोचन दौहित्रि हत्त- ज्वाला असनामा । कुम्भकरन कहब्याहि नारिसोपरम ललामा ॥ गंधर्पसुता सुबामनाम सैलूखानाही । अनुज बिभीषण धर्म सहित तेहि दीन्ह बिवाही ॥ ८७ ॥

दोहा ॥

महोदरी प्रसूत सुतमहा वीर बलधाम ।
घनवत गरजा जन्मतै मेघनाद तेहि नाम ॥ ८८ ॥
कुम्भकरण कहगिरि गुहारचि रुचितहां सोवाय ।
आपु गदालै लंकपति सुरमुनि चासैजाय ॥ ८९ ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

तवबरजि धनद दूतनपठाय । सुरमुनिन चासयह भलनआय ॥ सुनि क्रोधित अलका पुरीजाय । बलसों पुष्पक लावा छडाय ॥ तबरावण धायोपाताले । उरगण बसकीन्हो ततकाले ॥ यमवरुनहिं रणजीता प्रचारि । सुरलोक गयो तुरतै सुरारि ॥ तजभयो देवतन प्रवलयुद्ध । चिदशेश्वर तेहि बांधा सक्रुद्ध ॥ सुनि मेघनाद तहं तुरत जाय । रण जीति सुरपतिहि बांधि लाय ॥ दशमुख बंधन निज पानि छोरि । आयो लङ्कागढ़ सो बहोरि ॥ ९० ॥

चौपाई ॥

मणिपुर दैत्य महा बलवाना । तिनहिं लरा एक बरष प्रमाना ॥

दुहुन कीन्ह विधिआय मिताई । तिनमाया रावणहिं पढ़ाई ॥ वरुन नगर घेरा पुनि जाई । इन्दयुद्ध करितहं जयपाई ॥ तबरावण बलि द्वारहि आवा । हरिहि देखि तहं तेहि भय पावा ॥ महा कराल कालते बांके । कम्पत गातजात नहिंताके ॥ तिनते पूछि कहां बलि राजा । मिलिहौं तिन्हैं मोर कछु काजा ॥ यहैनिकेतपूछु निजकामा । दानी महा महाबल धामा ॥ देखि जाय लङ्केश भुवारा । हंसिदनुजेन्द्र निकट बैठारा ॥ कहु लंकेश करौं मन भायो । जौनि मनोरथ करि इतआयो ॥ ९१ ॥

नराच ॥

कहाप्रकोपि लङ्कनाथ विष्णुबंधनेपरे । छुड़ाइहौंतुम्हैं तिन्हैंप्रहारि सुन्नरे सरे ॥ बिचारि चित्तदानवेन्द्र ताहि बैन उच्चरे । यहै प्रतिष्ठते दुवार ह्वै हमार किंकरे ॥ ९२ ॥ हिरण्यकश्यपादि जे महान मानते भरे । बरप्रभाउ कालमृत्यु आपने करेकरे ॥ कियो महूर्तमें विनाश कैटभादि जेपरे । हिरण्यअक्षसे बली खऊ विरोधकै मरे ॥ ९३ ॥

प्रमाणिका ॥

इन्है विरोधनाभलो । ममादि कोटिनै छलो ॥ भजैंते मोद पावते । भुवादिनै गनावते । सुनासुबैन रावनै । भयोस्वचित्त भावनै ॥ प्रचारि विष्णुते लरौं । मरौ भवार्णवं तरौं ॥ कदापि जीति पाइहौं । जगत् यशै बढ़ाइहौं ॥ विचार चित्त पुष्टते । गयो स्वयच तिष्टते ॥ ९४ ॥

दोहा ॥

रावण मनरुचि जानिकै हरिभे अन्तरध्यान ।
मानुष करते यह मरीविधि दीन्हों बरदान ॥ ९५ ॥
बावन रावणते दुरेरावण मनहरषाय ।
आयो जीति पतालते मेरुहि निवसो जाय ॥ ९६ ॥

चौपाई ॥

तेहि अवसर प्रताप बलधामा । अवध राज अतिशै अभिरामा ॥ सप्तद्वीप भुजबल बसनाही । अतिप्रतापको सकैसराही ॥ मान्धाता वर अवधनरेशा । रथअरूढ़ जनुअपर सुरेशा ॥ आवत दीखदशानन जबहीं । यांचायुद्ध देउनृप हमहीं ॥ एवमस्तु कहि दोउ भटमानी । करैं समरनहिं जाय बखानी ॥ शुकसारण प्रहस्त सम योधा । महा-

बदर अकम्प करिक्रोधा ॥ वरषै अस्त्रशस्त्र सब आसा । निजसायकन न्टपति कियोनाशा ॥ तब भूपति उरकोप बढ़ावा । तीव्रशरण राक्षसन परावा ॥ मुद्गर वज्रसमान प्रहारी । लंकेश्वरहि दीन्हमहिडारी ॥ दशकंधर लहिव्यथा अपारा । कीन्ह निशिचरन हाहाकारा ९७ ॥

॥ रूपमालिनी ॥

अरु अपर निशिचर कटकसब न्टप बल विलोकि परान । जैपाय अवधनरेश रथ आरूढ़ मनहरवान ॥ चिरकाल मुर्छाजाग दशमुख स्यंदनै चढ़िधाय । शरशक्ति शूलप्रहारि न्टपनिज सरन सर्व गिराय ॥ यमशक्ति निसित चलाय रावण लागि मुर्छि न्टपाल । अति शीघ्र उठि शरवर्षि धर्षि निशाचरन तेहि काल ॥ तह रोम हर्षन समर नर राक्षसन भा भयदाइ । तब वरजि आइ पुलस्ति गालव भूपनै समुझाइ ॥ ९८ ॥

दोहा ॥

कीन्हमिताई दुहुन तब लङ्कनाथ अवधेश ।
ब्रह्मलोक तब मुनिगये भूपहु निजनिज देश ॥ ९९ ॥

चौपाई ॥

तब रावण शुभटन लै साथा । पुष्पक चढ़िगा जहं निशि नाथा ॥ असी सहस योजनलै गयऊ । ऊरध सीत विकल सब भयऊ ॥ कह प्रहस्त रावणै पुकारी । यहसीतांशु देतदुख भारी ॥ कम्पत तनमुख आवन बाता । करिय यतन कछु निशिचर ताता ॥ तबरावण मनभै अतिब्रीड़ा । शरहति दियो शशांकहि पीड़ा ॥ तहंविधि आइकहा लंकेशै । मति सुतदे पीड़ा राकेशै ॥ यह शशांक त्रिभुवन सुखकारी । जाउभवन मम वचन विचारी ॥ मंत्र देउं तुमको अभिरामा । पैहौ जयजपि जेहि परिनामा ॥ अष्टोत्तर शत शिवबर नामा । जपौपाइ-हौ जय अभिरामा ॥ शशिछुड़ाइ विधिगे निजधामा । दशमुख हरै लागपर बामा ॥ १०० ॥

दोहा ।

देव दनुज गन्धर्व नरकिन्नर नागन यक्ष ।
त्रियन कीनि लायो भवन लखि सुन्दर सुखअक्ष ॥ १ ॥

चौपाई ॥

एक समय रावण बलवाना। सचिवन लै पुष्पक चढ़ि जाना॥ पश्चिमउदधि मध्य एकद्वीपा। महापुरुष लखिगयो समीपा॥ तपत सुवर्णकूटसम देही। अरुण नयन विशाल भुजजेही॥ सर्वदेव तेहि तन दरशावैं। अप्रमेय बल बरनि न आवैं॥ तिनहिं दशानन याँचा युद्दै। हते विविधि शर शक्ति सक्रुद्दै॥ नेकन खेद पुरुषके गाता। मुष्टिक हति रावणै निपाता॥ जब रावन अचेल महिआवा। महापुरुष पाताल सिधावा॥ जागि लङ्कपति तेहि मगधावा। सैन किये तेहि पुरुषहि पावा॥ विपुल रमासम सेवत बामा। तिनहि देखि रावण बसकामा॥ देविन गहन पसारी बाहा। जागेतब त्रिभुवन नरनाहा॥ २॥

दोहा ॥

अट्टहास प्रभुकीन्ह तब सुनत गिरा दशभाल।
यथामूल विनतरु महा विह्वल विकल बिहाल॥ ३॥

चौपाई॥

कहप्रभु उठु लंकेश भुवारा। तोहि मृत्यु नहिंहै यहि बारा॥ जियसि जाइविधिते बरपाये। मरिहैं तोहि सुऔसर आये॥ उठि रावण करि संपुटपानी। विनय कीन्ह उरअति भयमानी॥ को तुम महावीर्ज भय कारा। प्रलय अनल इवतेज अपारा॥ मोहिं दीन्ह ब्रह्मावर जोई। मृषातौन केऊ किहे न होई॥ जोकदापि तव करबर मरऊं। तौविशेषि भवसागर तरऊं॥ कह प्रभुहसैं देवतुम जानौ। सब करिसकौ बचन परिमानौ॥ पुनिनिज तन त्रिलोक दरसायो। सचराचर सरि समुदगनायो॥ देवदनुज किन्नर नरनागा। रुद्रादितिबसुपितर विभागा॥ विधि हरि हर समेत दिगपाला। रविशशि शिषिनि तेज घन माला॥ ४॥

दोहा।

व्योमनषत ग्रह धरनि गिरि राक्षश निकरपताल।
देखिखिन्न तन मुर्छिमहि गिरा तुरत दशभाल॥ ५॥

तोटक॥

मुर्छा गतरावण जागजबै। निजमंत्रिन के ढिग आइतबै॥ जबपूर्व

प्रभाउ अगस्ति कहा । सुनिकै रघुवीर अचर्य लहा ॥ सुनिको वह पूर्ब महानगती । कह कुम्भज आपुविनान अती ॥ भरिमोद समाजरही सगरी । एकएकन ते जगमें बगरी ॥ ६ ॥

आरिल्ल छन्द ॥

सुनिरघुवीरपाणि करिसंपुट कुम्भज मुनिहिं बखाना । रावनकुम्भकरण घननादिक बलप्रताप सब जाना ॥ दूतकपि कटक सिंधु लखि सीदत तबहि वीर हनुमाना । कूदि निमिषिमें पारगयो शतयोजन जौन प्रमाना ॥ ७ ॥ लङ्कापुरिहि धर्षिलघु बपुधरि भवन भवन प्रति शोधा । पाइ अशोक विपिनि महसीतै सुदरी दीन्ह प्रबोधा ॥ बन उजारि निशिचर दलदलि विधि विशिष बंधने पायो । लंकेश्वर को मानमर्दि पुरजारि पारयहि आयो ॥ ८ ॥ जोकर्मन हनुमन्त कीन्ह दुस्तरहरिशक्रौ काले । ज्यहिबललषण जनकजापायो जयथश राज्य विशाले ॥ बालिलास ब्याकुल सुकण्ठतम कीन्हन मित्रसहाई । जन्म ते कथा पवनसुतकी रघुबरहि मुनीश सुनाई ॥ ९ ॥ मेरुबसत केशरी कोशपति तासुअंजनी बामा । तेहिते पवन प्रसूत पुत्रएक महावीर बलधामा ॥ मातागई फलनहित कानन भूषोबाल विचारी । जननि वियोग छुधार्त रुदनकरि शिशुसुभाउते भारी ॥ १० ॥ तेहि औसर बालार्क उदित फललोभ कूदि बलवाना । करगहि रविहि मेलिमुख लखि सुरमुनिन अचम्भौ माना ॥ शिशुपन पौन पुत्रके यहबल योवन केहि विधि होई । गरुड़ वायु मनवेगन असजस कपि शिशु के तन सोई ॥ ११ ॥ लखि यह चरित भयार्त राहुसुरनाथहि जाइ सुनायो । अपर महाबल राहु प्रकट विन पर्व रबिहि धरिखायो ॥ सुनि संभ्रम अशुको आगे करि गज चढ़ि बासव धायो । रुष्ट पुष्ट सिंहिका सुवन कह पकरन पवनज आयो ॥ १२ ॥ भाग भयार्तइन्द्र गजपाछे आतुर जाइ लुकाना । तब कपि ऐरावत परधायो ब्याकुल साज पराना ॥ देखि महाबल शिशुहि इन्द्रतहं सत्वर बज्र प्रहारा । गिरे अवनि भहराइ पवन सुत तनभै ब्यथा अपारा ॥ १३ ॥ सुत बधलखि प्रकोपि मारुत तब त्रिभुनजीव उदार्न । रोधन कीन्ह चराचर ब्याकुलभे सब मृतक समानं ॥ सुरमुनि आदि प्रजापतिके ढिग आतुर बैनउचारे ॥ रक्षिय प्रनन पवन रुण्द्वि दुखआर्य सरन तुम्हारे ॥ १४ ॥ तबबिधि

कहा सुरा सुरते यह कारण तुम सब जानौ। राऊ बचन प्रमान करि सुरपति पुत्र अनिल को भानो॥ सो जीवै तब जग सुख पावै पवन चासनहिं होई। अस कहि ब्रह्मादिक सबआये जहां म्टतक सुतसोई॥ १५॥ सुत उठाइ बिधि परसि पानि निज पानी बदन पखारा। जियो पुत्र लखि गंधु बाह तह पायो मोद अपारा॥ तवसब प्राणिन को उदान अवरोधन चास मिटायो। सुर गंधर्ब नारि नर किन्नर सुख सब जीवन पायो॥ १६॥ तब बिधि कहा सकल देवन ये शिशु को हित अब कीजै। दै बरदान अमोघ निवाजौ सर्ब दुःख गन छीजै॥ कहा इन्द्र मम बज्र अभय कपि अपर खेद नहिं होई। हनुबिच चोटसही प्रथमैं हनुमान कहै सब कोई॥ १७॥ ह्वरन दीन्ह अंशशतगुन निज सर्ब शास्त्रगति भूरी। यमऔ बरुन कुबेर अभय करि अमर होइ सुखपूरी॥ हरिकह मम आयुध अवध्य यह संयुग खेद न पावै। शिवबर सर्ब ब्रह्मदण्डनते चासन कबऊ सतावै॥ १८॥ कहा बिश्वकर्मा मम निर्मित आयुध विविधि घनेरे। संयुग परे अफल सब ह्वैहैं आवन कपिके नेरे॥ बिधिबर दीन्ह दीर्घजीवी यह महा महात्मा होई। शत्रुन चास करै मित्रन सुख अजय होइ शिशु सोई॥ १९॥ रावण मद मर्दन यह करिहै रघुबर भक्त अपारा। धीर बीर गंभीरन यहि सम बीर्य प्रताप अगारा॥ बरदै ब्रह्मादिक सुरगन सब निज निज धाम सिधाये। लहि आशिष अमोघ इसुरी मारुत मनमोद बढ़ाये॥ २०॥ लै मारुत सुत दीन्ह अंजनिहि बरजिमि सुरन सुनायो। शिशु सुभाउ मुनिचीर कमंडल हनुमतजाइ फेकायो॥ कह भ्टगुलवहि भूलै कपि निज बल जबलगि मिलै न रामा। कीन्ह न मित्र सहाइ साप बस यथा सिंहपिज रामा॥ २१॥

दोहा॥

इन्द्र जीतते इन्द्र कह ब्रह्मौ दीन्ह छड़ाय।
बऊ प्रकार बरदान दै बऊप्रकार समुझाइ॥ २२॥

तोमर॥

एकबार रावण जाय। हरशैल लीन्ह उठाय॥ लखि नन्दि सुर भे क्रुद्ध। नरहाथ मरुकरि युद्ध॥ २३॥

हरिगीतका॥

पुनि गयोहै है राज जीतन असुर अभिमानी महा॥ सो सुनत आइप्रचारि बाध्यौ गयोलै मन्दिर जहा॥ लखिचिसित पौत्र पुलस्त्य मुनितेहि दीन्हतहां छुड़ाइसो। तबबालि बांदरसों लरातेहि कांख लीन्ह दबाइसो॥ कौतुकी कीश घुमाइ तेहि सबसिंधु सलिलदेखाइ कै। परिहासि बज्रदशकन्धरै निजपुरहि छाड़ा आइकै॥ अरुअपर जग सब जीति रावण स्वबसकीन्ह बनाइकै। सो सर्व जानत रामतुम किहि भांति कहैां सुनाइकै॥ तुमब्रह्म अज अद्वैत परमानन्द पर जग मिश्रितं। जिमि अलख रहत सदैव जोगहि पाइ पयघृत निश्रितं॥ त्यों जलपिनै सरबज्ञ सो संसारकथा बखानिकै। सो क्षमिय करुना सिंधु आपन अज्ञजन मन जानिकै॥ २४॥

पज्झटिका॥

अब अपर कथा सुनु धर्म सेतु। सीतहि रावन हरि जौन हेतु॥ पूरब सतयुग सनकादि पाइ। दश मुख पूछा एकान्त जाइ॥ बड़ विनय सहित महिशीस नाइ। का देव प्रबल मोहिं कह बुझाइ॥ जेहि अश्रित जय सुर सदा पाव। योगींद्र मुनिऊ केहि भक्तिभाव॥ सुनु वत्स विष्णुसम सुरन आन। जेहि योगी मुनि जनकरैं बखान॥ जेहि नाभिकमल ब्रह्माप्रसूत। सुरसुखी होततेहि पाइबूत॥ सचराचर मय सब जक्तनाथ। ब्रह्मादि देव जेहि नाव माथ॥ जिन दैत्यन बधकियो चक्रपानि। तिनकी गति सुनि मोहिंकऊ बखानि॥ २५॥

दोहा॥

दशकन्धर के वचन सुनि कहा सुनिन सुखपाय।
मरे असुर हरिहाथ जे तरे परम्पद पाय॥ २६॥

चैापाई॥

तबरावण उर चिन्ता आई। हरिसन जूझब कवनि उपाई॥ कह सुनि जनिकरुशोच भुवारा। चेताहरि लेहैं अवतारा॥ विश्वरूप सचराचरईशा। शंकरादि जेहि नावहिंशीशा॥ सोरघुबीर प्रणतहित कारी। ह्वै है अवध भूप सुखकारी॥ नील इन्द्रमणि अंग सुहावन। आछत पीतांबर रुचिपावन॥ सुवरण बरण रमाबर बामा। जक्तमातु छबिअति अभिरामा॥ सो सिय अनुज सहित रघुराई। पितुआयसु

दण्डक वनआई ॥ तब तुम्हारि पूरिहि मनकामा । भजौ सदा सिय लछिमण रामा ॥ सुनिमुनि गिरा दशानन ज्ञानी । हरिमय जगहि बयरमन आनी ॥ ताशै सुरमहि सुरअस गाई । बधैमोहिं हरिजेहि हित आई ॥ २७ ॥

दोहा ।

तब कर कमलन ते मरन बाञ्छा कीन्ह मुरारि । तेहिते जननी जानि मनहरी बिदेह कुमारि ॥ २८ ॥

मालिनी ॥

एकसमय मुरारी पुष्पका रूढ़धायो । प्रतिभट जगमाहीं खोजिसो पैनपायो ॥ मग सुरमुनि पाई पूछिसो शीशनाई । कहबल अधिकाई मोहिदीजै बताई ॥ २९ ॥

तोटक ॥

लखि नारद रावण मानमहा । पठयो बर श्वेतसुद्वीप तहा ॥ हरि भक्तसबै हरि हाथमरे । तेइ जन्मि तहां सुख मै सगरे ॥ विजई नर नारि सुरा सुरते । बलवान सबैन केहूडरते ॥ सुनतै दशकन्धर जात भयो । तेहि तेजन पुष्पक जानगयो ॥ ३० ॥

छप्पै ॥

प्रविशत पुर एकनारि धरादशकन्धहि धाई । कौनकहांते आइ कौन हित कहै। बुझाई ॥ चलैन तासों बूत करै परिहास घनेरा । छूटलीश सो भाग कीन्ह जबबल बहुतेरा ॥ मनसमुझि असुर चढ़ि कहा यशप्रभु प्रभावइत सोपिहै । हरिहाथ मुक्तिमैं ज्यौंलहैां करिहै। सो हरि कोपिहै ॥ ३१ ॥

पज्झटिया ॥

दशकन्धर असमन करि विचार । जगजननि जानि सीतैउहार ॥ सोसब जानत तुम रामदेव । सरबज्ञ चराचर हृदय भेव ॥ मैं मेघनाद रावण प्रतापु । बलज्ञाति बरनिपै जानै आपु ॥ सुनि मुनि मुख रावण महावीर्य । गिरेमुर्छि रामनहिं होतधीर्य ॥ मैं नारिहेतद्विज कुल संहार । अघकीन्ह महाअतिशै अपार ॥ पूनाप्रणाम हित विप्र होत । मैंघरन मारितिन नाशिगोत ॥ तीरथहू सकलजे जगमाहि । मोहिं तारनको समरत्थनाहिं ॥ व्रतदानतपादिक विपुलजज्ञ । द्विज

द्रोहते येसगरे अशक्त ॥ यहिभांति हृदय प्रभुकरि विचार । कमललाचनते बहै नीरधार ॥ तब बक्कत प्रभुहि कुम्भज प्रतोष । ईश्वरहि होत कैसेक्कन दोष ॥ ३२ ॥ दोहा ॥

तुम ईश्वर धरि मनुज तन हरन हेतु महिभार ।
मारे असुर अधर्म रत जग धर्महिं बिस्तार ॥ ३३ ॥

चौपाई ॥

कवन ऐस अघ जगत अपारा । जो न नासि सकै नाम तुम्हारा ॥ ते तुम नाथ ग्लानि मन आई । कीजे वाजि मेध सुखदाई ॥ कीन्ह शत क्रतु जेहि हित लागी । लहा इन्द्रपदवी बड़ भागी ॥ कहप्रभु मोक्कं कहै। सो करक्कं । जेहि प्रकार यह पातक हरक्कं ॥ तबमुनीश हय मेध प्रकारा । रामहिं कहा सहित बिस्तारा ॥ तब प्रभु यज्ञ वस्तु मगवावा । अश्व समेत मुनिहि दिखरावा ॥ बोले बक्करि न्टपीश्वर टन्दा । आये जनु सदेह श्रुति छन्दा ॥ बामदेव बशिष्ठजावाली । कश्यपादि कोटिन तप साली ॥ बालमीक हरीत मुनि नारद । अपर बिपुल हय यज्ञ विसारद ॥ राम प्रनाम सबन कहं कीन्हा । कुशल पूछि वर आसन दीन्हा ॥ ३४ ॥

दोहा ॥

धेनु बसन मणि गन स्वरन हरषि सबहि प्रभु दीन्ह
यज्ञ हेतु सब मुनिनते आयसु आशिष लीन्ह ॥ ३५ ॥

छप्पै ॥

यज्ञ हेतु व्रत नेम साधि रघुवंश बिभूषण । हल हाटक निज हाथ शोधि महि करि निर दूषण ॥ शिल्प कार बोलवाइ रचीवेदी श्रुति शासन । पूजि विप्र चक्कंवोर दीन्ह सुन्दर वर आसन ॥ देत विविधि प्रभु दान नित असन बसन धन धाम सह । किय सकल अयाचक यांचिकन पूरे तिन मन कामतहं ॥ ३६ ॥ श्याम करणहय श्वेत लाल मुख पुच्छ पीत जेहि । कीन्ह अलंक्तत बस्त्र रत्न अनमोल लाय तेहि ॥ स्वरन पत्र लिखि भाल ताहि बांधा गुरु ज्ञानी । रावण हति श्रीराम अवध पुर हय मख ठानी ॥ अति बीर धनुर्द्धर शत्रुहन चातुरंगिनी स्वसैन्य सह । हय संग फिरत जीतत जगत जेहि बलैं होय सोधरै तहं ॥ ३७ ॥

कुण्डलिया ॥

यहि प्रकार लिखि पत्र सिर बांधि पूजि बरघोर । निरतत प्रमुदित अप्सरा शंख शब्द चहुंवोर ॥ शंखशब्द चहुंवोर करैं सुनिगन समुदाई । पढ़ैं वेद वर मंत्र विविधि मंगल अधिकाई ॥ पढ़ैं वेदवर मंत्र छोरि बाजिहि औसर तेहि । बोलि सौंपि शत्रुहै जाइ रक्षा करियो यहि ॥ ३८ ॥

तोमर ॥

संग सैनदै चतुरंग । गजस्यंदनौघ तुरंग ॥ पदचार कोटिन धाय । कवि कोसकै त्यहि गाय ॥ बहु भांति नीति सिखाय । पर नारि नै अरगाय ॥ हरि भक्त नै सिरनाय । दियो दान भूसुर पाय ॥ शरणा गतै अपनाय । तेहि रक्षियो सुखपाय ॥ मदमान जौन नरेश । तिन मारि छीनेउ देश ॥ जोइ आवशीशनवाय । अपनाय ताहि बसाय ॥ महि जीति चारिउ आस ॥ तब आइयो मम पास ॥ ३९ ॥

दोहा ।

यहि प्रकार भ्रातै कहा जीतौ महि सब जाय ।
बिदा कीन्ह सनमान करि रघुबर हृदै लगाय ॥ ४० ॥

चौपाई ॥

तब रघुवीर लीन्ह कर बीरा । सुभटन देखि कहा गंभीरा ॥ जग जीतन कर जेहि अभिमाना । सो मोहिं आय लेइ किन पाना ॥ भरततनै पुष्कल बरबीरा । लीन्ह पान कहि गिरा गंभीरा ॥ तव प्रताप जीतब रघुराई । करिहौं मैं शत्रुहन सहाई ॥ ताहि प्रशंसि कहा रघुराई । जाय करौ शत्रुहन सहाई ॥ पुनि रघुवर सौंपेउ हनुमानै । अनुज सैन सब लखि बलवानै ॥ पुनि सुग्रीव विभीषण राजै । पठयो सैन सहित निज काजै ॥ अपर भूप कोटिन बलवाना । सैन सहित संग कीन्ह पयाना ॥ प्रतापाग्र रिपु तापन बीरा । लक्ष्मी निधि समान रनधीरा ॥ नील रत्न उग्रास भुवाला । चले राम पदनाइ खभाला ॥ ४१ ॥

नराच ।

चली अपार सैन भूमि बार बार हालई । गिरै गिरीश शृंगसिंधु ऊपरै उछालई ॥ धरैनधीर कोलकच्छ शेस शीस हालई । दिगीश बौंडेरात नाहि और काहि चालई ॥ ४२ ॥

छप्पै ॥

प्रथम पञ्चांह सभाइ जाइ कुरुक्षेत्रहि देखा। पांचाल पुनिगयो भूपति तहंमनौ धनेशा ॥ पुनि दक्षिण दिशिगयो सुनत रघुबर यश पावन। रावनादि संहार अपर देवन सुकृतावन ॥ यहि विधि जहं जहं शत्रुहन गये तहां के ईश सब। लैलै भेटैं मिलतभे चरणनवावैं शीस सब ॥ ४३ ॥

चौपाई

पुनि हय गयो परम अभिरामा। अहि छत्रापुर सुंदर ग्रामा ॥ चहुं दिशि तहां विपिनि समुदाई। नंदन बन जेहि लखि लजाई ॥ पूछि सुमंतहि रघुकुल दीपा। कहौ कौन इत बसै महीपा। कहा सुमंत कथा सबगाई। यह पुरवैरिन लीन्ह छड़ाई ॥ तब नृप सुमद जाइ तपठाना। ताहि देखि सुरराज डेराना ॥ कामहि पठै भंग तप हेतू। कीन्ह यत्न बहु जलचर केतू ॥ डग्यो न भूप बचन मन काया। तब कामद प्रकटी हरि माया ॥ बरंब्रूहि कहि नृप पहिचानी। चरणनपरि विनती बहुठानी ॥ राज्य अकंटक याचहुतेही। अक्षय मोक्ष देहु पुनि मोही ॥ कह देवी मोसन वरलीजै। राज अकंटक निज पुर कीजै ॥ ४४ ॥

दोहा ॥

परब्रह्म नर रूप धरि रावण वधि सुर हेत।
अश्वमेध करिहैं सुखद रघुबर कृपा निकेत ॥ ४५ ॥

चौपाई ॥

अनुज तासुमख तुरंग सहाई। महि विचरत जब तुव पुरआई ॥ तिनहिं मिलेउ कीन्हेउ सेवकाई ॥ सैन सहित तेहि कियो सहाई ॥ जायो अवध राम मुख देखी। पैहौ अक्षय मुक्ति विशेषी ॥ अस कहि देवी अन्तर ध्याना। भई भूप मन महं सुख माना ॥ शत्रुन बधि निज नगर छड़ाई। करै राज्य भूपति सुखपाई ॥ सुनि शत्रुहन बहुत सुखपावा। कामाक्षादेविहि शिर नावा ॥ वहां सुमद भूपति बलवाना। बैठ सभानिज शक्र समाना ॥ तहां चार यह खबरि जनायो। स्वरन पत्र शिर हय इक आयो ॥ रक्षक विपुल सुभट तेहि संगा। नाथ न जानिय और प्रसंगा ॥ सुनि चर चतुर बोलाय पठायो। समाचार लै सोफिर आयो ॥ ४६ ॥

दोहा ॥

सैन सहित हयकी कथा दूतन नृपहि सुनाय ।
रघुबर बाजी सुनतही हरषन हृदय समाय ॥ ४७ ॥

सोरठा ॥

तब नृप सचिव बोलाय । प्रमुदित यह सिखवत भयो ॥
रचौ नगर सबजाय । ध्वज पताक मंगल सहित ॥ ४८ ॥

चौपाई ॥

कन्या साहस गजन चढ़ाइ । लावो भूषण बसन सजाई ॥ ते बरषैं मुक्ता निज हाथा । मिलन चलौ सब पुरजन साथा ॥ चला भूपसब साज बनाई । रघुबर मिलन हृदय हरषाई ॥ परेउ जाय चरणन अतुराई । लियो शत्रुहन तेहि उरलाई ॥ सुमद बरनि देवी बरदाना । भयो आजु सब भांति प्रमाना ॥ करि बिनती लवाय निज गेहा । गयो शत्रुहन सहित सनेहा ॥ देखा नगर मनोहर ताई । कहि न जाय सब भांति सुहाई ॥ अरघादिक नृप पूजन कीन्हा । सिंहासन बर आसन दीन्हा ॥ राज्य ससंपति कुटुम्ब समेता । कीन्ह समरपन रघुबर हेता ॥ शत्रुदमन तेहि लखि अति हेता । टिके तीनि दिन सैन समेता ॥ ४९ ॥

हरिगीतिका छंद ॥

तब सुमद पुत्रहि राजदै पुनि आपु चमू अपारलै । बहु बिनय करि शत्रुहन संग आयो अवध आगारलै ॥ आयौसु अश्व पयस्वनी तट च्यवनमुनि आश्रम जहां । खगमृग बिहाय स्ववैर बिचरत करत तप मुनि गनतहां ॥ लखि चरित अद्भुत शत्रुहन पूछा सुमन्तहि आइकै । तिन च्यवन कथासमस्त विधिवत कही नृपहि सुनाइकै ॥ इकबार संध्या समै भृगुमुनि समिधिहित बनको गयो । तेहिसमय निशिचर दमन मुनि तिय पकरि दारुन दुख दयो ॥ तेहित्रास बस गिरि गरभ भूतल शिखिनि ज्वाल समानसो । कियो भस्म असुरहि शापदै रच्छा जननि अपमानसो ॥ ते च्यवन नाम प्रसिद्ध जग रेवानिकट तिन तप कियो । तेहि सरि निकट सरजात मनु रुह सैन्य तहं आवत भयो ॥ नृपसुता तहं बांबीसमुझि कुशमूल बिलहि प्रवेशकै । लखि रुधिर अति मन शंक धरि आश्रमहि बैठि अ-

देखकै ॥ उतपात बिपुल अरम्भ तबते सैन्य मध्य महाभये। धरि ध्यान कन्या दोष लखि नृपनाय मुनि चरणन नये ॥ छमिये अजानत चूक कृपा समुद्र आयसु दीजिये। तव सुता अंधक फोरिगै सो आइ मोकहं दीजिये ॥ मुनिवरहि कन्या ब्याहि भूपति भवनअपने पुनि गये। बहु काल बाम समेत ऋषि आश्रमहि तेहि निवसत भये ॥ ५० ॥

प्रज्ज्वलिया ॥

असुनी सुत तहं इकबार आय। मुनि चरणबंदि निवसे सुभाय॥ मुनि नारि कीन्ह सेवा अपार। बर मांगु कहा असुनी कुमार ॥ सुनि घरनि बचन बोली प्रबीन। मम पतिते चख पावैं नवीन ॥ सुर बैद्यन कह हम करब सोय। मम सुरन मध्य मख भाग होय ॥ मुनि कहा भाग मख देब तोहिं। पै प्रथम करौ पुष्टांग मोहिं ॥ वैदन औषधि मैं सर बनाय। पतनी समेत मुनि कीन्हवाय ॥ भे दम्पति रुचिर नवीन देह। सुरवैदजुगे अति करि सनेह ॥ त्रिय रुचि विचारि रचि रुचि विमान। दियो भोगताहि नानाबिधान ॥ ५१ ॥

दोहा ॥

शत संव्वत लगि जान चढ़ि निज घरनिहि सुखदीन्ह।
बहुरिपयम्बुनि निकट मुनिआय विमलतपकीन्ह ॥ ५२ ॥

चौपाई ॥

अपर कथा अब सुनौ रसाला। यज्ञ कीन्ह सरजात भुआला॥ मनु महीप निज सचिव पठाये। बाम समेत च्यमन मुनि आये॥ तपी देखत मुनिवर रूप अगाधा। पुत्रिहि भूप दीन्ह अपराधा ॥ तपी बृद्ध मुनि कहा बुलाये। जार पुरुषते रुचि उपजाये ॥ तब कन्या कहि कथा सुनावा। सुर बैदनते जिमि तन पावा ॥ तब सरजात कीन्ह मुनि पूजा। बहु आदर करि भेटि तनूजा ॥ कीन्ह यज्ञ सर जात सुहाई। विधिवत बेदन मे जिमि गाई ॥ जे सुर यज्ञ भागनहिं पावत। प्रथम च्यमन मुनि तिनहिं देवावत ॥ वासव निज अपमान विचारी। मुनि बधहेत बज्र करधारी ॥ मारन हेत उठायो हाथा। हुंकारी दीन्हीं मुनि नाथा ॥ उपरै हाथ रहा नहिं घूमा। कील अहि मंचन जिमि भूमा ॥ ५३ ॥

दोहा ॥

लखि प्रताप मुनि च्यमन कर वासव विनय सुनाय।
गये भवन मख भागलै निज अपराध छमाय ॥ ५४ ॥

मधुभार छन्द ॥

सुनि च्यमन कथा। शत्रुघ्न यथा॥ हय सहित जाय। सिर चरण नाय॥ रघुवंश जाय। लघुराम भाय॥ मुनिसों सुनाय। निज नार गाय॥ श्रीराम राय। मख कथा गाय॥ सुनि सुनि प्रवीन। आशीस दीन॥ ५५ ॥

चौपाई ॥

तब भृगु बर बिसमै मन आनी। राम कथा मुनिवरन बखानी॥ रावण बध अघ हृदै विचारी। नरद्रुव हरि हय मख बिस्तारी॥ जासु नाम सुमिरत अघसूला। जरै तुरत जिमि पावक तूला॥ सो प्रभु द्विज कुल रच्छा हेतू। जग उपदेशत रघुकुल केतू॥ रिपु सूदन कह मुनिहि विनीता। करिय जाय हरि यज्ञ पुनीता॥ तब मुनि राम प्रेम रस पागे। दरश हेत अति मन अनुरागे॥ कुटुम्ब समेत मुनिन संग भीरा। अवध चले सुमिरत रघुबीरा॥ लखिमुनि कमल चरण हनुमाना। ह्वै दयाल रघुबरहि बखाना॥ मुनि दुख लहि है मग श्रमपाई। कहौ तौ आवौं अवध पठाई॥ लै आयसु निजपीठ चढ़ायो। मुनिहि कुटुम्ब सह अवधहि लायो॥ ५६ ॥

दोहा ॥

मुनिहि देखि श्रीराम उठि विधिवत पूजा कीन्ह।
बन्दि चरण पूछी कुशल सुन्दर आसन दीन्ह ॥ ५७ ॥

चौपाई ॥

चरण बंदि प्रभुके कपिराई। आयो शत्रुदमन पहंधाई॥ पियो तुरंग पयश्वनि वारी। चला उताल तबै अधिकारी॥ पीछे बिपुल अश्व असवारा। पुष्कलादि सब समर जुझारा॥ अस्त्र शस्त्र नाना बिधि काछे। अपर सैन धाई तेहि पाछे॥ विमल नाम जेहि रह्या अनूपा। रतन तटाख्य नगर कर भूपा॥ सुनि सो आव राम मख वाजी। भेट समान बिपुल तेहि साजी॥ दशहजार हय करिसै साता रथ हजार लै हरषित गाता॥ आइ परा रिपुहनके पाई। बहुप्रका

तेहि बिनै सुनाई ॥ रिपु हन्तङ्क तेहि करि सनमाना । सुतहि राज दै संग पयाना ॥ यहि प्रकार बहु भूपति नाना । शत्रु दहन संग कीन्ह पयाना ॥ ५८ ॥

दोहा ॥

हय पाछे हरषात मन देखि विमल गिरि एक ।
कनकरजत मनिशिषर जेहि शोभा बिपुलअनेक ॥ ५९ ॥
पूछि सुमन्तहि शत्रुहन यहि कर करौ बखान ।
प्रमुदित गंधप देव मुनि विहरत यहि अस्थान ॥ ६० ॥

चौपाई ॥

सुनि सुमन्त हरषित हिय कहई । नील सयल पुरुषोत्तम रहई ॥ जगन्नाथ जिन कर शुभ नामा । शंकरादि सुर करैं प्रनामा ॥ महा पुण्य पूरुष जो होई । इन कर दरश लहै शुभ सोई । सुमिरत जासु नाम एक बारा । होय घोर भव सागर पारा ॥ रतन ग्रीव कांची पुर राजा । पाय दरश बैकुण्ठ बिराजा ॥ निज तन वृद्ध निरखि महि पाला । सुतहि राज सौंप्यौ तेहि काला ॥ आप तीर्थन को मन लायो । सोवत सपन बिप्र दरशायो ॥ सोद्विज भोरहोत गृहआवा । जटा मुकुट तप पुञ्ज सुहावा ॥ ताहि पूजि आसन नृप दीन्हा । ती- रथ हेत प्रश्न वर कीन्हा ॥ जगत देव तीरथ तुम जाना । मोसन सब कर करौ बखाना ॥ कहा गये मम मोक्ष बिशाला । द्वैहै भा- खहु दीन दयाला ॥ ६१ ॥

दोहा ॥

सुना भूपके बैन वर कहा बिप्र सिर मौर ।
सीतापति रघुनाथ बिन मुक्ति दान नहिं और ॥ ६२ ॥
सो प्रभु रहै यहि नील गिरि जगन्नाथ विख्यात ।
पावैं मुक्ति विशेष तहं दरशन हित जेजात ॥ ६३ ॥

चौपाई ॥

अपर तीर्थ देखे मैं सगरे । एक ते एक मुक्ति प्रद अगरे ॥ अवध आदि मथुरा अरु माया । काशी सेइ तजै जो काया ॥ अवंतिका द्वारा वति कांची । सातौ पुरी मुक्तिदा सांची ॥ नंदिग्राम औ शा- लिग्रामा । संभरि मैं हरि मंदिर नामा ॥ तीनि ग्रामये भूतलधामा

मुक्ति दानि अतिशै अभिरामा ॥ पै तुम भूप नील गिरि माह्न । होइ-हि तुम्हैं परमपद लाह्न ॥ दण्डक सैंधव पुष्कल गाये ॥ न्यर्बुद औ हिम-वान गनाये ॥ जंबूमार्ग नैमिषारन्या । कुरु जंगल गुप्तल व्रतधन्या ॥ दण्डकादि नव वनये गाये । मुक्ति दानि सब भांति सुहाये ॥ महा काल कालिंजर काली । सूकर रेनुक सेत पसाली ॥ बटे श्वरं का-लेशं काशी । नव ऊखलये मुक्ति प्रकाशी ॥ ६४ ॥

दोहा ॥

कोका कुब्जा अर्बुदा मणि कर्णिका प्रयाग ।
लोहार्गल मथुरा गया कोट खस्वामि विभाग ॥ ६५ ॥
सूकर शालिग्राम सर औ निष्क्रमण प्रभास ।
अपर बद्रिका श्रम सहित तीरथ मुक्ति निवास ॥ ६६ ॥

चौपाई ॥

अपर सुनौ नृप नर उद्धरई । शालिकराम सिलार्चन करई ॥ षोड़स विधि जिमि गायो वेदा । कटै ताहि भव बन्धन खेदा ॥ तदपि बिनाश्रम विना उपाई । लखौ चतुर्भुज सुख सुखदाई ॥ मैंभी लन मुख सुना हवाला । नीलाचल तट गयो उताला ॥ गंगा सागर जाइ नहायो । जगन्नाथ पद दरशन पायो ॥ बिष्णु स्वरूप लख्योतत-काला । करु प्रतीति लखि मोहि भुआला ॥ सुनि सुनि बचन हरष उर राजा । प्रजाकुटुम्ब समेत समाजा ॥ चलेउ हरषि नृप शंख ब-जाई । जगन्नाथ पद चित्त लगाई ॥ कोश साच चलि चौर कारयो । लै सन्यास द्वारिकहि आयो ॥ करि गंडकी नदी असनाना । अति पुनीत जेहि वेद बखाना ॥ ६७ ॥

दोहा ॥

चौबिस शालिकराम सिल चक्र गोमती एक ।
लै पूजै नृप प्रीतिसों षोड़स विधि करि टेक ॥ ६८ ॥

चौपाई ॥

यहि प्रकार भूपति सुख पाई । गंगासागर पहुंचो जाई ॥ पूछा मुनिहि बिनै करि भूरी । रहा नील गिरि केतिक दूरी ॥ सुनि बि-समय पाई मुनि बैना । नृप निरखत काहेन हरि ऐना ॥ आगे तव यह शैल बिशाला । परै देखि नहिं तोहि महिपाला ॥ गंगासागर

जाय नहैये । बिनवो प्रभुहि दरश जिमि पैये । सुनि द्विज वचनभूप दुख पायो । गंगासागर जाय नहायो ॥ अति आरत नृप मन अनु-रागे । प्रभुहि प्रशंसत सब छल त्यागे ॥ यदपि दरश लायक मैंनाहीं । तदपि आइ सरनागत पाहीं ॥ सकृत नाम सुमिरि प्रभु तोरा । मिटै समूह जनम अघघोरा ॥ यहि विधि पांच दिवस विनवारी । शरण शरण निशि द्यौस पुकारी ॥ ६९ ॥

दोहा ॥

तब संन्यासी रूपधरि नृपहि सुनायो आइ ।
काल्हिदरश मिलिहै तुम्है तजौ शोच समुदाइ ॥ ७० ॥

नराच ॥

यती प्रवैन ज्यौं सुने महीश पायनै परा । विनय अनेक भांति सों सनेह साथ उच्चरा ॥ तुम्हार दर्शपाइमैं मिलेमनो जगत्पते । सराहि भाग बारबार आपनो महामते ॥ ७१ ॥

हरिगीतिका ॥

सराहि छितिप स्वभाग प्रभु अनुराग जेहि मनमें महा । निशि सोव सपने दीख निजतन विष्णु सादृश ह्वै रहा ॥ पुनिदीख लक्ष्मी-कांत चऊंभुज शंख चक्रगदा लिये । राजीव नैन विशाल बर मणि मालकल हलकत हिये ॥ शिरक्रीट कुंडल ललित छविकर कंकनां-गदराजही ॥ कटिसूच कलकलधौत किंकिणि पगननूपुर भ्राजही ॥ पटपीत सुन्दर लशत तन बामांक श्रीशोभा महा । जनुइंद्र मणिकन कोत्तमांग सो बरणिहै बानी कहा ॥ ७२ ॥

दोहा ॥

यहिविधि दरशन पाय नृपकहा सुनीशहि जागि ।
सुनिऋ प्रशंसा कीन्ह तेहि धन्य २ तवभागि ॥ ७३ ॥

चौपाई ॥

गंगासागरन्हायो प्राता । जगन्नाथ दरशन मनराता ॥ कबमध्याह्न दरश मैं पावों । कोटि जन्म कर कलुष मिटावों ॥ तेहि छण नील अचल दरशायो । तपत स्वर्ण इव शुभग सुहायो ॥ करिदण्डवत हरष मन आनी । दरशहेत गवने नृपरानी ॥ दुन मंची तंतुक एक साथा । पांचौ मुदित गये रघुनाथा ॥ दीखजाय प्रभुकी प्रभुताई । ब्रह्मादिक-

पूजत मनलाई ॥ करैं रसोई रमा सुहाई । अस्तुति करैं देव समुदाई ॥ कीन्ह दंडवत पांचौ धाई । प्रेम विवस तन दशा भुलाई ॥ जगत मातु पितु छविबर वेषा । प्रथमै जिमि सपने न्टप देखा ॥ पुनि कीन्ही अस्तुति अति भूरी । पांचऊ की मन इच्छापूरी ॥ ७४ ॥

दोहा ॥

पांचऊ खाइ प्रसाद पुनिपाय विष्णुको रूप ।
मणिमय विमल विमान चढ़ि गे बैकुण्ठ अनूप ॥ ७५ ॥

चौपाई ॥

पुरबासिन लखिजात विमाना । प्रभुहि वन्दिकरि न्टपहि बखाना ॥ तिन मइं एक तपी द्विज ज्ञानी । ग्लानि मानि हरिमें मति आनी ॥ सोऊ तहां परमपद पायो । अपर घूमिसब मन्दिर आयो ॥ यह सब सुमन्त कहा समुझाई । जगन्नाथ महिमा अधिकाई ॥ जगन्नाथ गिरिनील विहारी । तेतव बन्धु राम सुखकारी ॥ जेयेइ श्रीलक्ष्मी जगमाता । तेहैं जनकसुता विख्याता ॥ सुनि शत्रुहन परमसुखपावा । महि दरशहेत उतसाह बढ़ावा ॥ तबलगि जात भयो तहंबाजी । महि तृण चरत मरुत गतिभाजी ॥ मंत्रीसहित शत्रुहन गयऊ । गंगासागर मज्जत भयऊ ॥ नीलाचलहि चढ़ि हरषाई । जगन्नाथ पदपरस्यौ जाई ॥ ७६ ॥

दोहा ।

पूजिवेद विधि विनयकरि प्रभुप्रसाद बरपाइ ।
बहुरि शत्रुहन अश्वपहं आये सनहरषाइ ॥ ७७ ॥

प्रज्वलिया ॥

पुनिचला वाजि अतिसै उताल । धायेसंग शुभटऊ भुजविशाल ॥ सजि अस्त्रशस्त्र नानाप्रकार । अतिसमर शूररिपु दवनहार ॥ पुष्कल लक्ष्मीनिधि उग्रवाऊ । इनसे कोटिन सेना अगाऊ ॥ चक्रांकित नगरैगयो वाजि । रतनाढ्य कनक शिर पत्र साजि ॥ तेहि नगर वसै राजा सुवाऊ । तेहि पुत्रदमन मनभरि उछाऊ ॥ निज सुभटन सन बोलाबोलाइ । यह बाजि धरौ जनि भाजि जाइ ॥ तेजाइ बाजि लाये अजोरि । दमनऊ बांचा शिरपत्र छोरि ॥ अवधेश राम रघुवंश केतु । मारा लंकेशहि सुरन हेतु ॥ सो पाप समुझि हय मेध साजि । महि

जीतन हित छाड़ा खवाजि ॥ जोसुभट होइ निज भुजन जोर। सो धरै वीरहहि मोर घोर ॥ ७८ ॥

दोहा ॥

जोबांधे तेहि मारि रनखेहैं सुभट छुड़ाइ।
नतरु मान तजि शत्रुहन पाइ पखारै आइ ॥ ७९ ॥

चौपाई ॥

पत्रहि बांचि दमन मन कोपा। सुभटहि समर हेत मन चोपा ॥ बांधौ हय यहसुभटौ जाई। हतौ समेत सैन रघुराई ॥ जानत नहिं समचल अधिकाई। कालविवस सेना चलिआई ॥ सजी सैन चतुरंग अपारा। सुभट एकतें एक जुझारा ॥ हय सेवक हय खोजन लहेऊ। जाइ प्रताप अग्रसों कहेऊ ॥ महाराज हय हम नहिं पावा। नहिं जानत केहिदुष्टचोरावा ॥ तहांअपर नृपसेनादेखा। लीन्हाइनहिन वाजि विशेषा ॥ पठयो चतुर चारतेहि पाहीं। मख वाजिहि तुम बांध कि नाहीं ॥ दमन कहा बांधा हमघोरा। लेइन रन देखाइ बर जोरा ॥ चारआइभूपतिसे भाषा। चलाप्रतापअग्र मनमाषा ॥ करि को दण्ड कठिन टङ्कोरा ॥ अरुन नयन भुज फरकत घोरा ॥ ८० ॥

दोहा ॥

उहां दमन लखिशत्रुदल आवत कीन्हें कोप।
चलासुभट करचापगहि समर भूमिपद रोप ॥ ८१ ॥

चौपाई ॥

शंखबजाइ धनुष टंकोरा। चला प्रताप अग्रकी ओरा ॥ तब भूपति तेहि बहु समुझावा। तैं बालक हठि रण किमि आवा ॥ रावणादि जिन ते रण हारे। कहा कीट मानुष वपुरारे ॥ ते श्रीरामचंद्रकर बाजी। देउ जाउ अपने घर भाजी ॥ सुनत वचन कह दमन रिसाई। जो नहोइ बल जाउ पराई ॥ हम जची ठानी रण क्रीड़ा ॥ तिनहिं सिखावत होत नव्रीडा। अस कहि तेहि बहु विशिषप्रहारे। तिल समानते भूप निवारे ॥ विपुलवान तेहि बहुरि प्रहारा। विकलकीन्ह सबसैन अपारा॥ तबभूपति करि क्रोध अपारा। दमनहिं दश नराच शिर मारा। कीन्हों विरथ हतेसब घोरा। तदपि न मुरा दमन बर जोरा ॥ ८२ ॥

दोहा ॥

अपररथै चढ़ि दमन तब लैकर चाप कराल।
बाण दृष्टि करि कठिन अति कीन्हीं सैन बिहाल ॥ ८३ ॥

नराच ॥

बहोरि घोर क्रोधकै कराल बाण मारेऊ। हृदय प्रताप अग्रको बिदारि भूमि पारेऊ ॥ बिलोकि सूतभूप मूर्छि लैरथै पधारि कै। गयो तुरंत शत्रुहै कथा कही प्रचारि कै ॥ ८४ ॥

मालिनी ॥

सुनिरिपुहनबानी क्रोधकीन्हो अपारा। करभर धनुलैकै स्यंदनै भे सवारा ॥ संग सुभट बरुत्थै अस्त्र लै सर्व धाये। चढ़ि गजरथ घोरे युद्ध की भूमि आये ॥ तब दमनहिं देखा निर्भयं सैन साथा। बररथ परसोहै चापनाराच हाथा ॥ निज सुभटन हेरा पुष्कलौ धाइ आयो। प्रणकरि रघुनाथै बंदि बानी सुनायो ॥ ८५ ॥

दोहा ॥

जौन दमौ मैं दमन को दल समेत यहि बार।
तौ लागैं मोको कुटिल बिपुल पाप के भार ॥ ८६ ॥

छप्पै ॥

भरततनै प्रभु बंदि दमन कह जाइ प्रचारा। गहौ चाप नाराच काल मैं आउं तुम्हारा ॥ कह सुबाहु सुत तिन्हैं हमैं कछु संक न होई। करै जाहि हरिकृपा जीतिहै रनमें सोई ॥ अस भाषि कठिन को दण्ड लै सर प्रचण्ड मारत भयो। पुनि भटनमुंड भुज दण्ड युत गजन शुंड पारत भयो ॥ ८७ ॥ निज दल बिकल बिलोकि भरत सुत बिस्मै माना। अग्नि वान संधानि चाप श्रवनन लौ ताना ॥ मारि जारि तेहि सैन सुभट गज रथ औ घोरा। परे दग्ध रन भूमि त्रास अति पाइ कठोरा ॥ जिमि लंका दही समीर सुत निशिचर गन व्याकुल भये। तिमि पुष्कल अनल नराच ते दमन सैन भट सब हये ॥ ८८ ॥ दमनहु हृदै बिचारि कठिनकोदण्ड चढ़ायो। बरुनबान संधानि तपत पानी बरसायो ॥ निज जल अग्नि बुझाइ शत्रुदल उपल कठोरा। बहुरि सीत सर छांड़ि बिकल करि भट गज घोरा ॥ तब सरितावही अपार तहं बिपुल बीर बोरे महा। यहि भांति सुभुज

सुत बल निरखि धन्यधन्य शूरन कहा॥ ८९॥ पुनि पुष्कल करिक्रोध पवन नाराच चलायो। मेघ जाल तेहि काल गगन ते सकल उड़ायो॥ बहुरि बज्र सर साधि दमन उरतकि सो मारा। गिरा अवनिमह-राइ रहा नहिं नेक संभारा॥ तेहि घालि रथै सारथी बर कोशमाच भाजत भयो। अरु अपर बीर निज प्रभु निधन निरखि सुभुज पच्छ सो गयो॥ ९०॥

दोहा॥

पुष्कल रनहति दमन कहं हरष सहित तेहि काल।
मिले जाइ रिपु सूदनहिं ते अति भये निहाल॥ ९१॥

नराच।

उहां सुबाहु हाल पाइ सैन साजि आयऊ। अपार पुत्र शोक पाइ क्रोध चित्त छायऊ॥ समेत बंधु औतनै उभै जुझार संग में। प्रवीन अस्त्र शस्त्र सर्ब युद्ध के प्रसंग में॥ ९२॥

चौपाई॥

इहां शत्रुहन रिपु शशि राहू। सुना कि आयो समर सुबाहू॥ चतुरंगिनी सैन ललकारा। पुष्कलादि योधन पर चारा॥ लक्ष्मी निधि रिपु तापन बीरा। नील रत्न अरि मर्दन धीरा॥ उग्रासादिक समर जुझारा। पठयो सुभटन समर अपारा॥ क्रौंच व्यूहरचिन्रपति सुबाहू। जीतै कौन बीर बर बाहू॥ लक्ष्मी निधि कह व्यूह सँहारों। सैन शत्रु अबहीं रनमारौं॥ धाये अस्त्र शस्त्र लै बीरा। पाछे रिपुं सूदन रनधीरा॥ बीर प्रचारि भिरे दुउ वीरा। बनैन वरनत समर-कठोरा॥ लक्ष्मी निधि सुकेतु न्टपभाई। लरैं सुभट बल बरनि न जाई॥ बान दृष्टि करि गदा प्रहारे। मल्ल युद्ध करि कोउन हारे॥ ९३॥

दोहा॥

बहै रुधिर दुहुं जनन के फूटि गये सब गात।
धर्म युद्ध करि परस पर लक्ष्मी निधि न्टप भ्रात॥ ९४॥

चौपाई॥

भूप सुवन चित्रांग कठोरा। पुष्कल रन कीन्हा अति घोरा॥ हतै प्रबल सर निकसि सरीरा। गिरै अवनि मह मुरै न बीरा॥ बायु बानपुष्कलतेहिमारा। भ्रमेउगगन रथ सहित अपारा॥ बहुतकष्टते

सो महि आयो। बानमारि पुष्कलहि भमायो ॥ पुष्कलहू कष्टन महि आयो। रथ धनु तेहि कर खंडि गिरायो ॥ चढ़ा अपर रथ सो बर वीरा। छांड़े बहु पुष्कल पर तीरा ॥ भरत तनै तब लै इक बाना। प्रलै कालकी अनल समाना ॥ जो यहि बानन मारौं तोही। बहु प्रकार अघ लागै मोही ॥ कह चित्रांग खंडि सर डरिहौं। नतरु सप्रकार अघ लागै मोही ॥ ... हुंबहु दोष न परिहौं ॥ तब पुष्कल सुमिरयो श्रीरामहिं। प्रणतपाल बिरदावलि धामहिं ॥ ९५ ॥

दोहा ॥

छांड़ा विशिष कराल सो पुष्कल श्रुति लगि तानि ।
आवत जानि सुबाहु सुत निज सरते सर भानि ॥ ९६ ॥

चौपाई ॥

पुष्कल सर भेजे दुइ खंडा। एक धाय चित्रांगहि संडा ॥ गिरा धरनि चित्रांगहु गाजी। प्रभु हत निरखि सैन तेहि भाजी ॥ लखि सुबाहु बिलपत तेहि तीरा। गद गद कंठ नयन भरि नीरा ॥ तहां विचित्र दमन द्वौ भाई। पितै बंदि बहुविधि समुझाई ॥ धन्य सुभट चित्रांग अनूपा। रन तजि देह भयो सुररूपा ॥ अब देखौ पुरुषारथ मोरा। करिहौं बहुत कहत सुख थोरा ॥ अस कहि सैन सहित चतुरंगा। भिरे एकएकन रन रंगा ॥ दमन अपर रिपु ताप भुवाला। हतैं परस परबानकराला ॥ नीलरत्न विचित्र तेहि काला। भिरे युगल भुजदंड कराला ॥ नृपसुबाहुकर लै को दंडा। भिरा जाइ रिपुदमन प्रचंडा ॥ ९७ ॥

दोहा ।

रिपुहन निकटै ठाढ़ कपि अतिविशाल बलबुद्धि ।
पवन पुत्र गरज्यौ तबै किये अरुन दृगक्रुद्धि ॥ ९८ ॥

चौपाई ॥

सो सुबाहुपहं सत्वर धायो। कह नृप प्राण देन कपि आयो ॥ कहौ मोहिं कह रिपुहन वीरा। कहां राम अतिशै रनधीरा ॥ आजु सिखाबन रन महं देहौं। सुत कर बैर आपनो लेहौं ॥ कह कपि इतलवाना सुरहंता। राजै अवध राम भगवंता ॥ करत यज्ञ सचराचर ईशा। धरत जासुपद अनशिव शीसा ॥ तेहि सेवक मैं पवन कुमारा। करौं

तोहिं सहसैन्य संहारा ॥ मोहिंजीति रनमें बरिआई । कीन्हीसमर उनकुंते जाई ॥ सुनिकटु बचन सरासन ताड़ा । दश शायक कपीस परछांड़ा ॥ बीचहि गोंचिकीश सरतोरा । सिंह समान गर्जि अति घोरा॥पुंछहिं रथलपेटि बरजोरा । नृपसारथी सहित सब घोरा ९९॥

दोहा ॥

जाइ स्मनायो गगनमह कपिकौतुक अतिकीन्ह ।
सरबङ्ग हने सुबाङ्गतब डारिपास बसदीन्ह ॥ १०० ॥

चौपाई ।

चढ़ा अपर रथ तुरत भुवाला । मारे कपिहि नराच कराला ॥ तबहि समर कोप्यो हनुमाना । हन्यौलात तेहिबज्र समाना ॥ गिरा अवनितन सुधि बिसराई । रुधिर बमत मुरछित अधिकाई ॥ अपर चमूचतुरंग अपारा । हनुमत करैलाग संहारा ॥ लखिसुबाङ्ग कह मुरछा आई । भागितासु सेना समुदाई ॥ मुरछहि मध्यसपन नृप देखा । सरयू तटबसे अवध बिशेषा ॥ सकल कनक मनि बिरचित धामा । एकते एकरुचिर अभिरामा ॥ तहांनृपति रघुपति श्रीरामा । सुबरसीय सोहात सुबामा ॥ अतसी सुमन खरन छबिवारी । लाज मदनरति रूप निहारी ॥ सरयू निकट यज्ञ तिनठाना । तहां शिवा-दिक सुरगन नाना ॥ १ ॥

दोहा ॥

नारदादि अस्तुतिकरैं सुरपति सरस प्रनाम ।
मुनिआवृत रघुवंशमनि करैंयज्ञ अभिराम ॥ २ ॥

चौपाई ॥

कपिपद परस पुनीत सुहाई । भयोसपन दरशन रघुराई ॥ तेहि प्रभाव भयोशुद्ध नरेशा । नागिबंधु पुनन उपदेशा ॥ येअवधेश भूप जनिजानौ । परब्रह्म अखिलेश्वर मानौ ॥ मोहिं शापबस गयो भुलाई । सोसब कथाभूप मनिगाई ॥ एकबार असितांग मुनीशा । निकटगयो मैंपद धरिशीशा ॥ बिनयकह्योंमोहिदीन दयाला । परमतत्वबरण्यौ यहि काला ॥ कहमुनि परब्रह्म श्रीरामा । आदि शक्ति सीता तेहि बामा ॥ तेनिजभक्त उधारन हेतू । भये अवध भूपति श्रुतिसेतू ॥ ता-

छिभजैं शिव अजदिशि चाता । सुनिजन सहित वेदविख्याता ॥ परम तत्वजानो नृपसोई । इनते परईश नहिं कोई ॥ जासु नाम विवसऊ मनआवै । अतिअपार भवपारहि पावै ॥ ३ ॥

दोहा ॥

बिहसि कहामैं सुनिहिं तबकहैा मोह तजिबैन ।
जो निरगुन कर्महि रहित सोकि आवभव ऐन ॥ ४ ॥

चौपाई ॥

कोपि मुनीश्वर बोलेमोहीं । ममवचनन बिश्वास नतोहीं ॥ तैंश्री-रामहिं नरकरि जाना । तातेमूढ़ होसि बिन ज्ञाना ॥ तबमैं चरण परों अकुलाई । शाप अनुग्रह करु मुनिराई ॥ कहमुनि सुनुभूपति परि नामा । रामचन्द्र मख हय अभिरामा ॥ जब बांधिहि तब सुत निजधामा । होइहि तबैघोर संग्रामा ॥ रामभक्त कपि तबउरलाता । मारिहि तबतुम ह्वैहौज्ञाता ॥ सोसब भयो मऊं अब जाना । सपने दीखरामभगवाना ॥ तातेअश्वसहित नबराजू । करौसमर्पन रामहि आजू ॥ असकहिमनिगनरवरनअपारा । गजरथ बिपुलभरालेभारा । अपरअश्वरथ शुभगहजारन । सजेभेंट हितआगिनितवारन ॥ ५ ॥

हरिगीत छन्द ॥

गजबाजि स्यंदन साजिनृप रिपुहनहिं भेटेउ जाइकै । परिवार पुत्रसमेत बऊविधि बिनै करि हर्षाइ कै ॥ ममउर परसिकपि पाउ निजतब ज्ञान भो मोहि आइकै । श्रीरामपद पाथोज देख्यौं स्वपनमें सुखदायकै ॥ यहिभांति साधु समागमन अगमऊ सुगमता को सदा । सुनि बचन पवन कुमार भूपहि मिले सकुचत मन मुदा ॥ पुनि भूप मखबाजी समेत सराज सकल समाजही । परिपाइ बिनय सुनाइ अ-र्पन कीन्ह कोशल राजही ॥ ६ ॥ अबसुनिय करुणासिंधु जेहिबिधि रामपद रजमैंलहैां । सब भांति मनक्रम सेइहैां परिवार युत जूठनि चहैां ॥ अनजान ममसुत कीन्ह यहसोचूक सर्ब विसारिये । जननानि अपने संगलै श्रीराम पायन डारिये ॥ सुनिनृपति बचनबिनीतरिपु-हनहिय लगाइ प्रबोधकै । अनुचित नयहच्ची क्षत्रहि प्रतिभटहि रन मह योधकै ॥ अब जाइ दमनहिं राजदीजे सैन तुम मम संग चलौ । सहबाजि श्रीरघुबीर मखथल देखिये अतिशै भलो ॥ ७ ॥

दोहा ॥

जसआयसु रिपुदमनहै तैसहि भूपतिकीन्ह ।
विपुलसैन चतुरंगलै हयसंगमारग लीन्ह ॥ ८ ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

तबैशत्रुहंता सबाजी छुड़ावा । चला वेगतेपौनके गौन धावा ॥ चतुर्धा चमूताहि लागी पछारी । लखेजाहि लाजैदिगीशादि भारी ॥ परेमार्गमेंदेशभूपाल केते । परे पायनै भेटदैसर्बतेते ॥ गयोहयपुनः सत्ववान्भूप ग्रामै । धनीधर्म मैराजते लोगजामै ॥ महानीति मान् भक्तिमान् भूपत्यागी । सियाराम पादार विंदानुरागी ॥ करै विप्रके द्वंदयज्ञो घनेरी । परैनाधुवां छांहते सूर्यहेरी ॥ ९ ॥

दोहा

देवधामलखि विविधतहं सुवरनमै अभिराम ।
कल्पवृक्ष समवृक्ष सबसोहत सुभग अराम ॥ १० ॥

चौपाई ॥

पूछिसुमंतहि तबरिपु दूषन । कोनरेश इहं विश्व विभूषन ॥ कहा सुमंतकथा सबगाई । ऋतंभर कीरति अधिकाई ॥ सबप्रकार संपति सुखकारी । सुतविहीन नृपपरम दुखारी ॥ एकसमय आये जाबाली । तेहि गृहमुनि अतिसै तपसाली ॥ पुत्रहेतु नृपबिनैसुनायो । गोसेवन विधिऋषै बतायो ॥ नृपषट मास चरायोगाई । निशिदिन सेवततन मनलाई ॥ एकदिवस नृप रहा पछारी । कानन गो पंचानन मारी ॥ देखिभूप मनमानि गलानी । जाबालिहि विनयो पुनि आनी ॥ गो-अघहोइ नाथमम भंगा । सुतहित व्रतपूरै सबअंगा ॥ कहऋतु परन भूपपहं जाहू । जसकहै तसकीजे नरनाहू ॥ ११ ॥

दोहा ॥

सुनिमुनि बचन ऋतुम्भरऊ गे ऋतुपरनहिं दीन ।
कहेबचन जेहिभांति मम होइगऊ अघखीन ॥ १२ ॥

छप्पै ॥

ऋतंभरके बचन सुनत ऋतुपरन भुवारा । बरनीकथा विशेष जनक गेजिमि यमद्वारा ॥ योगयुक्ति तनत्यागि जबै बैकुण्ठ सिधायो । दैव योगतिन जानग गन तेहिमारग आयो ॥ नृपगात परसि पावन पवन

पापिन लागी जाइकै । ह्वै पुष्ट निकरि सब नरकते भागे बंध छुड़ाइकै ॥ ७६ ॥ जयति जनकयश धन्यजासु हसपरसि समीरा । निकरि नरकते कठिन मिटी तनकी सबपीरा ॥ पाहि पाहि हम सर्व साथ अपने अबलीजै । शरणागत अवलोकि छांड़ितिनको मतिदीजै ॥ अस-वचन सुनत मिथिलाधिपति फेरिनान तहं आयऊ । लखिपुण्य पयोधि नरेशको रविसुत वचन सुनायऊ ॥ १३ ॥

चौपाई ॥

तब रविसुतयह विहसि सुनायो । महाराज तुमकिमि इत आयो ॥ इहांरहत पापी अतिघोरा । गोद्विज हिंसक परतिय चोरा ॥ ऐसा हि जगमहं पाप निकाया । कामी क्रोधीलोभि अदाया ॥ ऐसे पापिन ममगन घोरा । डारैं रवरवादि बर जोरा ॥ करैं जीव इह निज अघभोगा । जनसैं जगत तहां लहैं रोगा ॥ तुमसमान हरिपद रत-जेई । इहां न आवत सपनेहु तेई ॥ ताते जाइ स्वर्ग सुखलीजै । ये-पापिनकर संगनकीजै ॥ कहन्नप अबमोहिं कछु न सोहाई । छांड़िय ये पापी समुदाई ॥ धर्म्म राज तबवचन उचारा । रामनाम सुमिरन इकबारा ॥ जो तुमदेउ दयाकरि इनहीं । मुक्त होहं पापीयहि छिनहीं ॥ १४ ॥

दोहा ॥

एवमस्तु तबभूपकहि पापी सब मुकुताइ ।
लहापरंपद तुरत सब बिमल जनक जसगाइ ॥ १५ ॥
पूछाबहुरि कृतांतते हमकोंह अघ इतआइ ।
नाथ कृपाकरि मोहिं अबकहौ सकल समुझाइ ॥ १६ ॥

तोमर ॥

सुनु भूप तैं इक बार । रहे ठाढ़ बाजिन सार ॥ तित इबहारित रंग । चरै धेनु एक सुअंग ॥ तुम दीख चित्तन भाव । तेहि दोषते इत आव ॥ द्विज धेनु साधुन देखि । प्रनवैं न जौन विशेषि ॥ तेइ आवते यहि भौन । अरु पातकी खलजौन ॥ पुनिभूप रामहि ध्याइ । हरि धाम गेहरषाइ ॥ १७ ॥

कवित्त ॥

नाम बल शिव विष पियो दियो अमीफल अजामील की छुड़ाई

चास यम ग्राम को। उलटे बरण जपि वालमीक वह्म मिले गनि-काऊ पाइ गई गति अभिराम की॥ पदरज परसत गौतम कि तिय तरी सभा मध्य राखी पति पंडु सुत बाम की। तुलसी कहत बेद विधिऊ अगम सोमैं कहांलौं बड़ाईकरौं सीताराम नाम की॥ १८॥

सवैया।

गीध अजामिल गज गनिकादिक येतो तप अधिकैया है। तुलसी सखा विभीषन कपि पति जे पर नारि रमैया है॥ निःछल प्रीति रीझ रघुनंदन जन औगुन बिसरैया हैं। जेतने अघहारि हरिबे लायक तेतने कौन करैया है॥ १९॥

कवित्त॥

दाता देवद्रुम कहा जौन दीन दुखियन देखिकै दुराइ जाइ देव लोकमें रहा। तथा कामधेनु अरु बलिऊ पताल गये; अपरन कहा चलीकौनी गनती कहा॥ इनऊ ते कोटि गुने प्रभु हैं उदार सोऊ रहत अलभ्य दुरलभ मिलिबो महा। याते तुलसी बिचारि चारि फल दानि जानि हरिते अधिक हरि नाम हेत कै गहा॥ २०॥

चौपाई॥

कह ऋतुपरन सुनो नृप येहा। राम नाम जपु सहित सनेहा॥ स्वरन गऊ पुनि बर बनवाई। दीजे बिप्रहि मन हरषाई॥ सुनि नृप बचन ऋतुं सरराई। राम नाम सुमिरयौ मन लाई॥ तुरत भयो अघ रहित भुवाला। स्वरनगऊ दै द्विज प्रति पाला॥ पुनि सो ब्रतसाध्यौ महि पाला। सेयउ गाइहि महि दुख जाला॥ ह्वै प्रसन्न गो दै बर दाना। लहौ पुत्र नृप धरम निधाना॥ सुनि बर भूप महा सुखपाये। सत्य वान भयो औसर आये॥ राम नाम सुमिरन अधिकारा। श्रुति सारग जेहि सदा पियारा॥ सत्य वान नृप गऊ प्रसादा। सो इत राजत रहित विषादा॥ यहि; बिधि सुमति कथा तेहि गाई। सुनत तुमहिं मिलिहैं रघुराई॥ २१॥

दोहा॥

तेहि औसर महि पाल ह्वै बैठ सभा निज साजि।
दूतन खबरि सुनाइ तहं प्रभु आयो मख बाजि॥ २२॥

चौपाई ॥

सुनि चर गिरा भूप कहजाई । आवउ देखि कहा कर आई ॥ गये चतुर चर देखि तुरंगा । पाछे भूरि चमू चतुरंगा ॥ सकल कथा सुनि ते पुनि आये । समाचार सब नृपहि सुनाये ॥ महाराज कोशलपति रामा । रावणादि जीतेसंग्रामा ॥ सरशपथनिजयश लिखि भाला । बांधि बाजिसंग चमू बिशाला ॥ अनुज तासु रिपुसूदन नामा । रक्षत अश्व महाबल धामा ॥ सुना दूतमुख बचन रसाला । महा मुदित मन भयो नृपाला ॥ सन्तत भजत रहौ रघुराई । आजु मोरिभै सुकृत सहाई ॥ भूरिभेंट सजिचल्यौ भुवाला । सहित समाज मुदित तेहिकाला ॥ शत्रुदमनपदअति अनुरागा । परगौभूप बरणत निजभागा ॥ २३ ॥

दोहा ।

सत्यवान कहं शत्रुहन लीन्हीं हृदय लगा ।
प्रीति सहित पूछी कुशल गवने संङ्ग लवाय ॥ २४ ॥

भुजंग प्रयात ।

चले शत्रुहन्ता सबै सेन साजी । महावेग धायो तबैयज्ञबाजी ॥ अकस्मात भो व्योम भूअन्धकारा । नसूझै कहूं आपनो ना परारा ॥ भईवृष्टि रक्तौघ मज्जादि भूरी । रहीठौर ठाढ़ी चमू त्राश पूरी ॥ तबै काम गाजान पैद्ये सवारा । विदुन्मालि राक्षेश वाजीजहारा ॥ २५ ॥

हरिगीतिका ॥

अति घोर सैनअपार त्यहिसंग बाजिलै व्योमहि गयौ । तब कीन्ह माया तम निवृत्त अकाश भू निर्मल भयौ ॥ दूत शत्रुहन संभ्रम सहित पूछा भटन मख है कहां । तिन देखि दूत उत नभ निरखि देखा निशाचर दल तहां ॥ अति घोर दुर्मुखबिकट तन शस्त्रास्त्रयुत भयङ्करा । दरशाइ बीरन व्योम त्यहि यहिनाथ छलकरि हयहरा ॥ लखि अरुण नयन सकोप रिपुहन सकल सुभट बोलायऊ । हनुमन्त पुष्कल सरस बरसव सौह करिकरि धायऊ ॥ २६ ॥

चामर ॥

बिलोकि राक्षसेस वीर आइ युद्ध हेतही । कहा विनिन्दि जाउ घूमि आपने निकेतही ॥ रहौ निराश अश्वते न पाइहौ कबौं हमैं । समेत राम लक्ष्मणै ससैन्य खाइहौं तुम्हैं ॥ २७ ॥

दोहा ॥

विद्युन्माली नाम मम बसत रहौं पाताल ।
बदला रावण सुहृदको मैं लैहौं यहि काल ॥ २८ ॥

नराच ॥

सुना सुरारि बैन पुष्कलौ प्रचारिकै कहा । वृथा प्रलापि शूरवीर वीरता कहूं लहा ॥ बलात राम अश्व आजु कैसहू न पाइहौ । दशास्य ज्यौं कृतांत भौन त्यौं तुम्हौ सिधाइहौ ॥ २९ ॥

चौपैया ॥

सुनि विद्युन्माली अति बलसाली मारा शक्ति प्रचण्डा । पुष्कल बर वीरावौ धनुतीरा ताहि कीन्ह वैखंडा ॥ पुनिसो निशिचारी शूल प्रहारी भरत सुवन सो काटा । निज बान अपारा अरि उर मारा विकल कीन्ह तेहि डाटा ॥ ३० ॥

चौपाई ॥

विद्युन्मालि त्रास जब पावा । रिस करि मोगदर लै सो धावा ॥ पुष्कल हृदय मांझसो मारा । गिरे मुर्छितन दशा विसारा ॥ सत्वर पुष्कल उठे सम्हारी । साजि कठिन को दंड सुधारी ॥ पावक सरस बाण तेहि मारा । गिरा असुर महि देहविसारा ॥ उग्रदन्त ताकर लघु भाई । लक्ष्मी निधिसों करै लराई ॥ भ्रातहि पतति देखिसो धावा । कालग चढ़ि सत्वर सो आवा ॥ कहा पुष्कलै वचन रिसाई । बंधुहि हति कहं जाउ पराई ॥ सुनतै दशसर पुष्कल मारे । अंगन बहिचले रुधिर पनारे ॥ रिसकरि मुष्टिक दैत्य प्रहारा । जिमिगज हृदय अङ्कफल मारा ॥ महातीक्ष्ण सर पुष्कलमारा । भयोदैत्य तेहि विकल अपारा ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

तब असुराधिप शूलहति पुष्कल हृदय कराल ।
गिरे मूर्छि रथपर तुरत कम्पित तनत्यहि काल ॥ ३३ ॥

चामर ॥

मूर्छितं विलोकि बातजात पुष्कलैजबै । घोरक्रोध कै हते निशाचरौ घनै तबै ॥ दन्त मुष्टि पाद घात सर्व सैन्य मारेऊ । कामजान तोरणादि तोरिफोरि डारेऊ ॥ ३४ ॥

तोमर ॥

हनुमन्त बीर कराल। करि सैन्य सर्व विहाल॥ लखि उग्रदन्त वरिष्ट। हति शूल तेज गरिष्ट॥ कपि बीचही सुख मेलि। करि चूर दंतन ठेलि॥ हनुमन्त ताहि रिसाइ। मुखपै चपेट लगाइ॥ गिरे दन्तभू खहराइ। अति भै व्यथा उरआइ॥ बलवान कीशहि जानि। तब कीन्ह मायहि ठानि॥ बरषै अमेध्य अपार। रुधिरादि श्टंग प-हार॥ तसभा न प्रथमै पीन। नसराम दल अब दीन॥ ३५॥

दोहा ॥

निजदल विकल विलोकि तब रिपुहन परम कृपाल।
मोहनास्त्र छांड़ातबै सुमिरि राम तेहि काल॥ ३६॥

प्रज्ज्वलिया॥

सर निकर रहेते व्योम छाइ। रबि सम प्रकाश बरनो नजाइ॥ मिटि गई असुर माया कराल। भये सैन्य सुभट सगरे निहाल॥ लखिपरा व्योम निशिचर विमान। त्यहि चूर्णकीन्ह हतिलच्छ बान॥ लखि प्रबल शत्रुसूदन प्रताप। करिक्रोध असुर सन्धानि चाप॥ शत सरमारे शत्रुहनगात। बहरुधिर शूरशोभा लखात॥ पुनिरामानुज सर छांड़ि वाइ। निशिचर नाथै नभमें भ्रमाइ॥ ह्वै विकल असुर पसुपति नराच। हतिकीन्ह प्रकट कोटिन पिशाच॥ ते लिये करन करतरि कपाल। पियैं रुधिर भटन शिरहति उताल॥ रिपु भंजन निज दल विकलदेख। नारायण सर छांड़ा विशेष॥ त्यहिसर पशु-पति सरप्रभव दोष। नारा तुरन्तकरि प्रबलरोष॥ लखि विद्युन्माली क्रोधकीन्ह। मुदगरप्रचंड निज हाथलीन्ह॥ धावा रिपुसूदन हनन हेतु। सरचापि तबै रघुबंश केतु॥ ३७॥

दोहा॥

अति सत्वर तेहि शीश भुजदीन्हा अवनि गिराइ।
कटक सहित रघुवंशमणि ठाढ़ेरण सुखपाइ॥ ३८॥

छप्पै॥

बंधुहि म्टतक विलोकि उग्रदंतै रिसबाढ़ी। मुष्टिकप्रबल प्रहारि शत्रुसूदन उरगाढ़ी॥ रिपुहन हनि सर निशित तासु शिर अवनि गिरायो। अपर निशाचर कटक वर्षि नाराच नशायो॥ कछु अनु

गरे निशिचर नाशके बचेदियो हय आइकै । यहि भांति शत्रुहन दल सहित ठाढ़े जययश पाइकै ॥ ३९ ॥

दोहा ॥

मारे असुर प्रचारि कै सुरन दुखद बलवान ।
लक्ष्मी निधि पुष्कल सहित शत्रुदमन हरषान ॥ ४० ॥

भुजंगप्रयात ॥

विजैपाइ राना चलेसैन साजी । गयो बेगरेवानदी तीर बाजी ॥
ऋषै मंडली तब शत्रुघ्न देखा । तपोधर्म मै वेदकी मूर्त्तिलेखा ॥ ४१ ॥

दोहा ॥

पूछा मंत्रिहि न्टपति तब कहैा काह अस्थान ।
तिनआरण्य कथाकही राम भक्त जगजान ॥ ४२ ॥
कोटिन अघ नाशै तुरत इनकर दर्शन पाय ।
सुनि रिपुहन कछु लोगलै गये तहां हरषाय ॥ ४३ ॥

हरिगीतका ॥

सौमित्र पुष्कल सचिव सुमद सुबाहु लक्ष्मी निधि गये । हनुमन्त न्टपति प्रताप अग्रसमेत सुनि चरणन नये ॥ सुनि देखि दीनअशीस विधिवत पूजि फल भोजन दियो । अति हेत पूंछी कुशल न्टप दूत आगमन केहि हितकियो ॥ न्टपपाइ रिपुहन सुमति सकल प्रसंग ऋषिहि सुनायऊ । श्रीराम अवध नरेश मख हय साथये दूतआ-यऊ ॥ हंसि कहा सुनि सुनि यज्ञ लघु फल देत दुस्तर श्रम किये । यह अज्ञता बस बनिज विरचत इन्द्र विधि सुख चहि हिये ॥ अति सुलभ सुमिरत राम नाम अपार अघहरि भवतरै । तेहि छांड़ि नर अज्ञान बस व्रत दान यज्ञन श्रम करै ॥ मैं पूर्ब ब्रह्म विचार रतजग तीर्थ विपुल सभायऊ । पै राम भजन विहीन मन सन्तोष नेक न आयऊ ॥ निजभाग बस मारग विषे लोमश ऋषीशहि पायऊ । कालीन अति योगीश चरणन भक्ति सो सिर नायऊ ॥ पुनि पूंछि करतल जोरि छपा समुद्र मोहिं बताइये । नर देहते भव सिंधु दु-स्तर पार केहि विधि पाइये ॥ तब कहा सुनि मोहिं बिप्र सुनु सह श्रद्धया मन लाइकै । संयम नियम व्रतदान तीरथ योग यज्ञ गना-

हूकै ॥ निरबिघन पूरै जोपिये सुरलोक सुखसब दानिहै । श्रीराम नामहि सुमिर तैं संसृत कलुष दुख भानिहै ॥ ४४ ॥

दोहा

कोटिन मख व्रत योगते राम नाम अधिकार ।
जाके सुमिरत मिटत है जन्म मरण व्यवहार ॥ ४५ ॥

चौपाई ॥

तजतहि प्राण राम जो कहई । अघ दहि तुरत परंपद लहई ॥ जे सप्रेम रघुबर गुण गावैं । अक्षय मोक्ष लहैं सुख पावैं ॥ तातेद्विज तुम निश्चय मानी । परमातमा राम कहँ जानी ॥ मन क्रम वचन भजौ रघुराई । पैहौ मोक्ष अक्षै सुखदाई ॥ जाकर सुमिरत नाम उदारा । गोपद तुच्छ होत संसारा ॥ तबमैं बिनय कहा मुनिनाथै । केहि प्रकार सुमिरौं रघुनाथै ॥ कह ऋषि नगर अवध अतिपावन । मणिमै मन्दिर रुचि मन भावन ॥ पारिजात तेहि मध्य विराजा । रत्न सिंहासन तेहितर भ्राजा ॥ तेहि आसीन राम वैदेही । कोटि काम रति लाजत जेही ॥ घन चपला द्युति तन छबि राजे । अंगअंग प्रति भूषन साजे ॥ ४६ ॥

दोहा ॥

शरद इंदु निन्दक बिमल मुख छबि परम अनूप ।
बिम्बाधर लोचन कमल दाड़िम दशन अनूँप ॥ ४७ ॥

चौपाई ॥

श्रुति अनूप नाशिका सुहाई । मधुर हास चितलेत चोराई ॥ काम कलभ भुजबल अधिकाई । बक्षस्थल भृगु चरण सोहाई ॥ त्रिवलि उदर रुचि नाभि बिशेषा । चरण तलन कुलिसादिक रेखा ॥ सुमिरौ नाम ध्यान अस रूपा । पूजौ चंदनादि सुरभूपा ॥ नमस्कार करु प्रीति बढ़ाई । यहि प्रकार भजु बिप्र सदाई ॥ पुनि आरण्यक बचन उचारा ॥ परब्रह्म किमि नर अवतारा ॥ सो चरित्र सबकहो बुझाई । जेहि प्रकार मम संशय जाई ॥ पुनि लोमश कहि बचन बिशेषा । निरयसमुद्र मगनजगदेखा ॥ तबकृपाल मानुष तनधारा । निज यश विमल अवनि बिस्तारा ॥ सो यश गाइ प्रणत भवतरई । कृपासिन्धु जनहित तन धरई ॥ ४८ ॥

बसंत तिलका ॥

आदित्य वंश अवधेश गृहेवतारी । रामाभिराम घनश्यामल कांति हारी ॥ राजीव नेत्र शरदेंदु सुख प्रकाशं । बाहु प्रचंड बल भंजन दास त्राशं ॥ पित्राज्ञया प्रथम राम समेत भ्राता । दांतौधनुर्द्धर बरौ मुनि यज्ञ त्राता ॥ पादाब्जपर्सि मुनि नारि सिला उधारा । भंजा पिनाक नृप औघ मदप्रहारा ॥ पंचादशाब्द बयसेतव रामजानौ । षट वार्षिकी जनक राज सुता बखानौ ॥ मार्गे निवृत्त समये भृगु मान गंजा । सीता समेत है सुःख पितै प्रपुंजा ॥ ४९ ॥

दोहा

द्वादश बरषै भवन बशि पितु आयसु धरि शीस ।
अनुज जानकी सहित तब बिपिनि गये जगदीश ॥ ५० ॥
तीनि दिवस जल पानकरि चौथे दिन फलभोग ।
चित्रकूट पचये न्हिबशि साधे मुनिब्रत योग ॥ ५१ ॥

चौपाई ॥

तेरहो बरष लखन रघुबीरा । पंचबटी गौतमि सरि तीरा ॥ सूर्पनखै तहँ कीन्ह कुरूपा । पाई सुधि यह निशिचर भूपा ॥ छल करि मृग बनाइ मारीचा । मार्ग शुक्ल अष्टमि दिन नीचा ॥ माया सियहि हरा सो आई । गीध जटायु युद्ध गति पाई ॥ अगहन सुदि नौमी दिन सीता । बसी अशोक बिपिनि अति भीता ॥ गये मास दश बिन सुधि पाये । मार्ग शुक्ल दशमी दिन आये ॥ सम्पातिहि सुनि खबरि कपीशा । एकादशिहि नांघि बारीशा ॥ द्वादशि निशि सीतहि मिलिकीशा । तेरसि बिपिनि सैन्य कियो खीशा ॥ चौदसि दिन लंका पुरजारा । पुरनि माहिं आयो यहिपारा ॥ पांच दिवस मारगहि बिताये । षष्ठी दिन मधुबन फल खाये ॥ सीता बिपति सप्तमी गावा । रघुबर अष्टमि कटक चलावा ॥ ५२ ॥

दोहा ॥

सतये दिन सागर निकट पहुंचे श्रीरघुराय ।
सुदी परीवा तीजलौं टिकी सैन फलखाय ॥ ५३ ॥

चौपाई ॥

चौथिहि मिले बिभीषण आई । लंका दीन्ह ताहि रघुराई ॥

पंचमि नौमीलग रघुराई। मग मांगी सागर सोंजाई॥ दशमी ते तेरसिलौं सेतू। बंधवायो तहं रघुकुल केतू॥ चौदशि दुइज लगेदल साथा। टिके सुवेलशैल रघुनाथा॥ सुदि द्वादशिहि कीशदलमाखा। शुक रावणहिं बरणि सबभाषा॥ कुहुनिशि प्रभुनिज शायकमारा। दशमुख मुकुट अवनि सब डारा॥ माघ प्रथम परिवा उजियारा। अंगद रिपु पुर में पगधारा॥ दुइज अष्टमी लगि रण भारी। कपि राक्षसन भयो भयकारी॥ पाशबन्ध नौमी दिन गावा। दशमी गरुड़ सर्प सबखावा॥ तीनि दिवस महं हनुमत योधा। धूम्राक्षहि मारा करिक्रोधा॥ ५४॥

दोहा॥

शुक्ल चतुर्दशि माघ की कृष्ण परेवा ताइ।
नील प्रहारि प्रहस्त कहं सैन सहित तेहिठाइ॥ ५५॥

चौपाई॥

दुइज चतुर्थी तक रघुराया। मूर्छि दशमुखहि भवन पराया॥ तब लंकेश हृदय भय पावा। चारि दिवस महं अनुज जगावा॥ नौमी चतुर्दशी तक घोरा। कुम्भकरण रण कीन्ह कठोरा॥ तब रघुबीरताहिरणमारा। तनतजि सोबैकुण्ठसिधारा॥ रावण उरभा शोक अपारा। माघ अमावस भा अवहारा॥ फागुन आदि चारि दिनताई। सेनप पांचबधे बरिआई॥ पंचमि आदि सप्तमीप्रमाना। लक्ष्मण हति अति काय के प्राना॥ अष्टमि आदि द्वादशी अन्ता। कुम्भ निकुम्भ जूझ बलवन्ता॥ तेरसि ते दिन चार मझारा। गिरा अवनि मकराक्ष जुझारा॥ फागुन कृष्ण दुइज निशि पाये। शक्ति लागि लक्ष्मण महिआये॥ ५६॥

दोहा॥

औषध लाये पवन सुत ज्याये लषण कुमार।
तृतिया ते सप्तमी लगु तव भा रण अवहार॥ ५७॥

चौपाई॥

इन्द्रजीत षट करि संग्रामा। मारा लक्ष्मण तेहि बल धामा॥ चौदशि कुहू तबहु अवहारा। दशमुख शिचा हित पग धारा॥ चैत आदि दिन पांच विताये। सेनप घोर पांच बधि पाये॥ पुनि

पाश्वादि तीनि दिन माहीं। मारेगये समर महि माहीं॥ चैत्रशुक्ल नौमिहि असुरारी। लक्ष्मण हृदय शक्ति सठ मारी॥ कीन्ह क्रोध श्रीराम अपारा। दशसुख तन सब सरन विदारा॥ द्रोन गिरिहि लायो हनुमन्ता। परसत लक्ष्मण उठे तुरन्ता॥ दशमी दिन तब भा अवहारा। राति मरकटन पुनि पुरजारा॥ एकादशि दिन शक्र पठावा। हरि हित रथ मातलि लैआवा॥ अष्टादश दिन रण दिन राती। राम रावणहि भा बहु भांती॥ ५८॥

दोहा॥

चैते कृष्ण चतुर्दशी रामचन्द्र रणधीर।
शरन मारि हति रावणै कियो कोप गम्भीर॥ ५९॥

चौपाई॥

सत्तासी दिन समर मझारा। तेहि मा पन्द्रह दिन अवहारा॥ अमा तिथिहि दश सुखतन दाहा। महोदरि विलाप बहु काहा॥ बैशाखादि तिथिहि श्रीरामा। कियो सुवेला पर विश्रामा॥ दुदूज विभीषण राज्य गनावा। तृतिया सिय प्रभुमिलन सुनावा॥ सुदी चतुर्थिहि कपिन समेता। पुष्पक चढ़ि प्रभुचले निकेता॥ पंचमि भरद्वाज गृहआये। पूर्ण चतुर्दश वर्ष बिताये॥ षष्ठी भरत मिलाप गनावा। अति प्रमोद पुर बासिन पावा॥ सुदिसप्तमि युत मंगल भूरी। रामराज बैठे सुखपूरी॥ बरष बयालिस वयरघुराया। तेंतिस वरष जनक नृप जाया॥ सिया राम वियोग अति पावा। दशदिन चौदह मास गनावा॥ ६०॥

दोहा॥

अति प्रमुदित नर नारि सब देवपितर गन्धर्व।
श्रीरघुवीर प्रतापते मिटाजक्त दुख सर्व॥ ६१॥

चौपाई॥

मानि अगस्त्य वचन रघुवीरा। हय मख करत सारयू तीरा॥ आइहि हय सोइ सैन समेता। मुनिवर सुनु तब परम निकेता॥ रामकथा यहतिनहिं सुनायो। पुनिसुनि तुमहुं अयोध्यहि जायो॥ देखि शदर राजीव विलोचन। तब तुम्हार होइहि भव मोचन॥ असमोहिं कहि लोमस विज्ञानी। गये जहां निजरुचि मन आनी॥

मैं सदु रूप ध्यान मनलायों। रामनाम पर प्रीति बढ़ायों॥ सुनि कर कहासत्य सबजाना। बहुप्रकार निजभाग बखाना॥ आरण्यक के वचन सोहाये। सुनि शत्रुहन आदि सुखपाये॥ धन्य सकल हम तव पद देखा। को सुकृती हमसरिस विशेषा॥ प्रथम राम पदकमल निहारे। मष हय संग ऋषि भवन सिधारे॥ सुनि सुख सुनि रघु-पति गुण पांती। भये कृतारथ हम सब भांती॥ ६२॥

दोहा॥

सुनत नृपन के वचनवर सुनिवर परम हुलास।
हनुमानहिं भेटा प्रथम जानि रामकर दास॥ ६३॥

चौपाई॥

पुनि शत्रुहन संग जे आये। मिले सबहि ऋषि प्रेम बढ़ाये॥ रामानुज नर जाग बनाई। सुनिहि अवध पठयो सुखपाई॥ देखा अवधपुरी अतिपावन। मणिमय सकल निकेत सुहावन॥ सरयूतट वेदिका अनूपा। जहं मख करत राम सुर भूपा॥ इंदीवर मृदुअंग सुहावन। नयनसरद राजीव लजावन॥ यज्ञसाज अंग अंगसुहाये। सुनि मण्डली मध्य छवि छाये॥ अनुज तनूजनसह रघुराई। दीनन दानदेत समुदाई॥ यहिविधि सुनिवर रामहिं देखा। कहिन जात नस प्रेम विशेषा॥ आवत सुनिहिं देखि रघुवीरा। ज्वलत अगिनि जनु धरे शरीरा॥ सहसा उठिचरणन शिर नायो। सुनिवर प्रभुहि हरषि उरलायो॥ ६४॥ दोहा॥

सुनिनाथहि रघुनाथ तब पूजि सुआसन दीन्ह।
आये मम गृह चरण तब यज्ञ सफल यह कीन्ह॥ ६५॥

हरिगीतिका॥

पुनि धोइ सुनिवर चरण पंकज राम अनुजन सहपियो। चन्दन सुगंध लगाइ शिर गोदान विधिवत करि दियो॥ निज भाग विपुल सराहि प्रभु मृदुबचन बहु सुनिसों कहे। तव पाउं पावन परसि ममतन पूत अति द्विज अघदहे॥ ६६॥

प्रज्झटिया॥

सुनि राम बचन सुनिवर सुजान। कह बिहंसि सुनौ करुणा निधान॥ तुम कहत विप्र अघ मोर नाश। कियो याग सफल सो

परम हास ॥ तव नाम सुमिरि पापी प्रचंड । अघ छूटि लहैं मोक्षहि अखंड ॥ अस कौन पाप जग बीच घोर । जो नाशै नहिं प्रभु नाम तोर ॥ यह रीति सदा तुमको सुहाय । लघु आपु होत विप्रन बढ़ाय ॥ मम सम न और सुकृती महान । जेहि चरण धोइ हरि कीन्ह पान ॥ बहु भांति राम गुण कीन्ह गान । ब्रह्मांड रन्ध्र गत कीन्ह प्रान ॥ सायोज्य मुक्ति मुनि तुरत पाय । बरषैं प्रसून नभ सुर सिहाय ॥ ६७ ॥

दोहा ॥

आरण्यक सम जक्ष महं भयो न द्विज वर और ।
करत बतकही रामसों मुक्ति लही तेहि ठौर ॥ ६८ ॥

पज्झटिका ॥

पुनि शेष मुनीशहि कथा गाय । रेवासरि गो बाजी समाय ॥ लखि रक्षक विस्मय लहि अपार । थकि पौरुषजित तित करि विचार ॥ तहं आइ शत्रुहन पूछि बात । केहि कारन तुम सब विकल गात ॥ तिन कहा बाजि मख जल समान । नहिं नाथ अपर हम मरम जान ॥ सुनिकै रिपुहन सचिवहि बोलाय । का करिय तात यहि कर उपाय ॥ तब कह सुमन्त्र रिपु दमन वीर । पुष्कल हनुमत संग लेउ धीर । प्रविसौ रेवासरि जल गंभीर ॥ यहि लायक है नहिं अपर वीर ॥ पै हो बाजिहि रघुबर प्रतापु । जनि करिय तात संताप आपु ॥ ६९ ॥

कुण्डलिया ॥

सुनत शत्रुहन पुष्कलौ पवन पुत्र बलबीर । सुमिरि राम प्रविशत भये रेवा सरि गंभीर ॥ रेवा सरि गंभीर मध्य यक नगर निहारा । अति उतंग छबि धाम कनक मणि सर्ब अगारा ॥ अति उतंगछबि धाम विपुल आराम तहां पुनि । विहरैं खग मृग वृन्द होत आनंद शब्द सुनि ॥ ७० ॥

चौपाई ॥

पुर प्रविसे छबि देखि अनूपा । लखी सुनारि एक रति रूपा ॥ विपुल सखी त्यहि चमर डुरावैं । कोउ व्यंजन कोउ पान खवावैं ॥ भूषण बसन अंग अंग साजे । मणि पर्यङ्क बाम सद्र राजै ॥ नि-

कट खम्भ मध तुरग बंधायो । लखि शत्रुहन परम सुख पायो ॥ आ-
वत पुरुष तीनि तिन देखा । अति सुन्दर मनसिज के बेषा ॥ तिल-
क देखि हरि भक्तिनि चीन्हा । ताहि प्रणाम तिन्हन तब कीन्हा ॥
कह भामिन आयुध उतधारो । तब मम आश्रम आइ पधारो ॥
कहौ नाम निज केहि हित आयो । सुर दुरलभ मम धामसुहायो ॥
सुनि त्रिय बचन कहा हनुमाना । अवध नाथ श्री राम सुजाना ॥
करैं यज्ञ सचराचर राया । बिजय हेतु हय जगत पठाया ॥ ७१ ॥

दोहा ॥

तेहि रक्षाहित शत्रुहन अस्त्रशस्त्र धरबीर ।
श्रीरघुबीर प्रतापते समर निडर सब तीर ॥ ७२ ॥

चौपाई ॥

तजौ अश्व जनि करौ अयानी । क्षमा हमहुं तोहि त्रिय जिय
जानी ॥ निरभय बचनसुनत कहबामा । अयुतवर्ष मैंकरिसंग्रामा ॥
अश्व न देउं तदपि यह सुनिये । राम चरण रत मोहिं मन गुनिये ॥
जिनकर हय तिनकी मैं दासी । तासु यज्ञ किमि करौं बिनाशी ॥
ताते राम अश्व हय लीजै । मम हित प्रभुसों विनय करीजै ॥ अन-
जानत यह चूकहमारी । क्षमियेनाथ प्रणतहितकारी ॥ अबमोसन
मांगौ बरदाना । सुनत बचन बोले हनुमाना ॥ नाथकृपा हमपूरन
कामा । राम भक्ति यांचिय अभिरामा ॥ एवमस्तु कहि कहा बहो-
री । अपर सुनौ बानी बर मोरी ॥ आगे तुमहिं बीर मणि राजा ।
धरिहि बाजिलै सुभट समाजा ॥ ताके परमशंभु हितकारी । अति
कठोरतहं होइहि रारी ॥ ७३ ॥

दोहा ॥

तेहि जीतन हित बानये देउं लेउ हरषाइ ।
बाढ़ै तेज प्रताप तन मिलै शत्रु उरखाइ ॥ ७४ ॥

चौपाई ॥

सुनि शत्रुहन आचमन कीन्हा । उत्तर मुखह्वै तेहि शरदीन्हा ॥
तुरतै बढ़ीतेज तनभारी । मानौ अमितसूर्य द्युतिहारी ॥ पाइ तुरंग
सुनि बिनय अपारा । आयो पुनि निज कटक मझारा ॥ देखि अश्व
सह तिन्हबलवाना । धन्य धन्य सब करैं बखाना ॥ तब मारुत सुत

कथा सुनावा । जेहि प्रकार जलमें हय पावा ॥ बहुरि निशान शंख सहनाई । बाजे करि उत्सव समुदाई ॥ रामानुजपुनि तुरंगछुड़ा- वा । चला प्रचण्ड मरुत गति धावा ॥ पहुंचाजाइ बीरमणिग्रामा । अतिशै रुचिर देवपुर नामा ॥ अति उतंग अस्फटिक निकेता । हर गिरि सरस महा छविसेता ॥ नगर निकट शंकर अस्थाना । अति बिचित्र नहिं जाइ बखाना ॥ ७५ ॥

दोहा ॥

भूप बीर मणि सुवन जेहि रुक्मांगद असनाउं ।
त्रियन सहित क्रीड़त फिरत महा मुदित तेहि ठाउं ७६ ॥

चौपाई ॥

मणिमय घर सोपान सकूपा । उपवन रुचि नन्दन अनरूपा ॥ निरखत फिरै मदन मनछावा । तेहि अवसर तुरंग तहं आवा ॥ पकरि तुरंग पत्र तेहि बांचा । राम प्रताप पढ़त रिस रांचा ॥ मम पितु सरस सुरासुर नाहीं । रामचन्द्र केहि लेखे माहीं ॥ जासुकरैं शंकर रखवारी । गणन समेत शूल करधारी ॥ असकहि हय समेत पितु पासा । गयो तुरत सब कथा प्रकाशा ॥ सुनत बीरमणि दुख अति पावा । नाहक पुत्र बाजि यह लावा ॥ भूप जाइ शिवपदशिर नावा । अश्व कथा सब बरणि सुनावा ॥ कहशिव तवसुत कीन्ह नि- कामा । अखिलेश्वर स्वामी मम रामा ॥ तिनकर हय रक्षक रिपु- हन्ता । लवनासुर जिन हति बलवन्ता ॥ ७७ ॥

दोहा ॥

पैअब भूप समाज सजि करौ घोर संग्राम ।
करिहौं भूरि सहायमैं जब लगि आवैंनराम ॥ ७८ ॥

चौपाई ॥

सुनि शिव गिरा भूप हरषाई । समर हेत सब सेन सजाई ॥ इत हय पालन खबरि जनाई । गयो तुरंग यहि बन रघुराई ॥ तेहि अवसर नारद तहं आये । परे शत्रुहन चरण सुहाये ॥ बिधिवत मु- निहिं पूजि रघुराई । आसन दीन्ह हरष उरछाई ॥ कहौ नाथ र- घुबर मख बाजी । गयो कौन दिशि केहि पुरभाजी ॥ कहमुनिदेव- पुरी यह आगे । भूपबीरमणि सुत भय त्यागे ॥ ते बांधा हठि बाजि

तुम्हारा। सेनसाजि रण ठाढ़ अपारा॥ ह्वैहै तहां घोर संग्रामा। पैतुमह्वीं जितिहौ परिणामा॥ असकहि गयोगगन मुनिराई। इत रिपुहन निज दल समुदाई॥ तुरत कठिन दृढ़ व्यूह बनावा। युद्ध हेत सब काहु जनावा॥ ७६॥

हरिगीतका॥

उत बीरमणि सहबंधु पुत्र समेत सेन भयंकरै। रण आय प्रथमै युद्ध हित उर सुमिरि गिरिजा शंकरै॥ इतशत्रुहन लखि खल,कट-कहि क्रोध अति उरछाइकै। पुष्कल प्रमुख योधन पठै तिन हता शर बरषाइकै॥ कियोभिन्नखण्डनमुण्ड कोटिनचरण भुजधरयुगपरे। कछु भाग रुकमांगदहि टेरयो चाहि कहि उर भयभरे॥ सुनिभूप सुत धायो तुरत कोदण्ड कठिन चढ़ाइकै। शर बरषि गरजत भयो रण रघुबीर दल बिचलाइकै॥ तब आइपुष्कल सुभट बर तेहि कहे बचन रिसाइकै। अब होउ समरसचेतमैं तवकाल पहुंचोआइकै॥ असकहि परस्पर युद्ध क्रुद्ध बिरुद्ध उर सरसाइकै। हनैंबान एक-हि एक तीक्षण परम बिस्मय दाइकै॥ ८०॥

चौपाई॥

तब रुकुमांगद कोपि अपारा। भ्रम सायक पुष्कल कहँमारा॥ योजन भरि रथ नभै उडायो। बड़े कष्टते फिरि महि आयो॥ तब पुष्कल मन में सकुचाने। भ्रम सायक श्रवणन लगि ताने॥ मारा रुकुमांगदहि रिसाई। रथ समेत नभ लोक भ्रमाई॥ सूर्य तेज रथ आयुध जारा। परा अवनि शिव नाम पुकारा॥ देखि ताहि रन मुरछा आई। अपर सैन भागी भय खाई॥ सुनि सुत घात बीर मणि धावा। भूरि कटक लै सत्वर आवा॥ देखि पवन सुत अति कटकाई। पुष्कलसों बोले हरषाई॥ तात जाउ शत्रुहन समीपा। मैंदल सह मरदब यह भूपा॥ तब पुष्कल बहु कीन्ह ब-ड़ाई। नृप बंधुहि तुम मारौ जाई॥ बीर मणिहिमैं सैन समेता। प्रभु प्रताप करि सकौं अचेता॥ ८१॥

दोहा

सुनि हनुमत पुष्कल बचन बीरसिंह परकोपि।
लक्ष्मी निधि सुभ अङ्गदै करै समर पदरोपि॥ ८२॥

छप्पै

बीरसिंह सुत सुमद भूप रन लरैं प्रचारी । अपर बीर सबतीर भिरैं अतिसै भयकारी ॥ भूप बीरमणि प्रबल भल्ल सिर सों हू विधेसा । अक्षमाल उरलसै शैव गनती में लेखा ॥ तेहि आवत देखा भरत सुत सम्मुख रथहि चलायऊ। उत नृपहू निरखि पुष्कल भटहि क्रोधित बचन सुनायऊ ॥ ८३ ॥ भाजुभाजु तैंबाल समर नहिं काम तुम्हारा । लागि दया लखि मोहिं यदपि सुत को रनमारा ॥ कहा भरत सुत नृपहि हमैं बालक मति मानौ । निशित नराच नमारि लेउं अबही तब प्रानौ ॥ हम सदा निडर रघुबर कृपा शिव सुरेश लौं डर नहिं । रण पायलरैं हम कालसों नर पतङ्ग सम गनैं तोहिं ॥ ८४ ॥ तब प्रचारि दौ बीर निशित सायक बर छांड़ैं । रथ बरूथ गज यूथ अश्व सुभटन गन छाड़ैं ॥ करैं परस्पर युद्ध सुरासुर बिस्मै दायक । प्रविशि अङ्ग वहि पार गिरैं धरनीबहु सायक ॥ यहि भांति भरत सुत वीरमणि लरैं न नेकौ मन मुरैं । क्रिय सुगड़ बिगत कोटिन सुभट रुधिर धार सरि रुर भरैं ॥ ८५ ॥

चौपाई ॥

तब पुष्कल मन कीन्ह विचारा । भूपबीर मणि महा जुझारा ॥ अति तीक्ष्ण सर तकितकि मारा । निज बाननसों भूप निवारा ॥ तब पुष्कल सुमिर्‍यो रघुबीरहि । धरा कराल चाप पर तीरहि ॥ छांड़ा भूप हृदयसो लागा । गिरा अचेत धरणि तन त्यागा ॥ पौन पुत्र तब मुष्टि प्रहारा । बीरसिंह नृप अनुजहि मारा ॥ मुरछा गत रुक्मांगद बीरा । अपर शुभांगद अति रण धीरा ॥ बाणदृष्टि तिन कीन्ह घनेरा । बहुरि शत्रुहन दल मुखफेरा ॥ पवन पुत्रपर पहुंचे धाई । सर समूह हति कीन्हें घाई ॥ तब हनुमान लंगूर प्रहारा । रथ समेत दौ अवनि पछारा ॥ सुमद नरेश युद्ध करि घोरा । बल मिनहि मारा बर जोरा ॥ ८६ ॥

दोहा ॥

अपर बीर मणि कटक कह पुष्कल कीन्ह विनाश ।
पाइ बिजै करि शङ्खधुनि ठाढ़े परम हुलाश ॥ ८७

नाराच॥

उहां महेश भूपको संहार कान ज्यौं सुना। बोलाइ वीरभद्र भैरवादि कोप कैघना॥ चढ़े रथै पिनाक तून खड्ग शूल धारिकै। कराल काल ज्यौंरनै गये जटा सुधारिकै॥ ५५॥ लसै सुभालचन्द्र बाल लाललेन कोपते। भुजङ्ग भूति अङ्ग बेष्टि शीसगङ्ग ओपते॥ कटि प्रदेश द्वीप चर्म धर्म वर्म राजही। कपाल मालहो लसै गनौघ सङ्ग भाजही॥ ५६॥ चढ़े मयूर वृष व्याघ्र सिंह बाजि वारनै। स-मूह भूत प्रेत राक्षसादि ले अपारनै॥ हलै दिगीश देखि सो न जात घोर कोधरा। सकै न शीसपै सम्हारि शेषङ्ग वसुन्धरा॥ ८८॥

चौपाई॥

इत रामानुज शिवकटक आई। लखी प्रबल पुष्कल परछाई॥ साजि प्रबल दलकोप बढ़ाये। अति सत्वर शिव सन्मुख आये॥ उहां शंभु पुष्कलहि पुकारा। जिन मम सेवक बरबस मारा॥ रामसियापद यहि मनसाही। तेहिते यहि मम जग भटनाहीं॥ असकहि बीर-भद्र तन हेरा। शिव रुख लखि पुष्कल कहं घेरा॥ पुनि हनुमा-नहिं नन्दी घेरा। लक्ष्मी निधिहि प्रचण्डहि पेरा॥ भृङ्गी गण नृप सुभुज लराई। चण्ड नाम सुमदहि कठिनाई॥ यथा योग यहि विधि सब वीरा। लरैं प्रचारि समर गंभीरा॥ रुण्ड मुण्ड कोटिन महि पाटे। गज रथ अश्व अमित रन काटे॥ वीर भद्र पुष्कल द्वौ योधा। लरैं परस्पर अति करि क्रोधा॥ ८९॥

नाराच॥

लरैं सरोष अस्त्रशस्त्र वीर द्वौ प्रहारते। गनैं नएकएकको मनैन हारि मानते॥ घने छतांङ्ग शरीर बूड़ि रक्त सोंगये। कठोर चारि राति द्योसमाल युद्धलौं भये॥ ५९॥ हनैं प्रचारि मुष्टिका नखौघ दन्त लातनैं। करैं प्रहार वीर द्वौस पाइ आपु घातनै॥ कहूं अ-काश भूकहूं न जात युद्ध सो कहा। सिहात देव देखि देखि धन्य धन्य ह्वै रहा॥ ९०॥

दोहा॥

वीरभद्र दिन सातयें लैकर शूलकराल।
पुष्कल शिर हति बिलगकरि गरजतभे तेहिकाल॥ ९१॥

नराच ।

भगी सशोक सैनसर्व पुष्कलौ सलीपते । बखानि जाइहालतौन शत्रुहा सहीपते ॥ सुनातभै अचेतह्वै गिरेरथै हहाइकै । प्रबोधशंभु कीन्ह वीरभद्र कीर्ति गाइकै ९२ ॥

छप्पै ॥

प्रथम प्रजापति यज्ञ एकक्षन माझ विनाशा । त्रिपुर प्रबलदल घोरसमर हठिजेहि कियो नाशा ॥ जबजबमैं प्रलयान्त करौंतिहु लोक संहारा । तबतब मैं यहि गणैकरौं निजसैनअगारा ॥ तेहि कियो कठिन रण सातदिन धनिधनि पुष्कल वीरवर । नहिंशोच योग्य अस सुभट जग चलीह्वै गतिलहि समर ॥ ९३ ॥

चौपाई ॥

सुनि शिववचन शत्रुहन वीरा । करनलगे रण पुनि गम्भीरा ॥ विपुल बाण शिवके तिनमारा । करैं परस्पर युद्ध अपारा ॥ बज्रहि कराल छांड़ि एक बाना । देखि उमापति विस्मय माना ॥ साजि पिनाक छांड़ि एकबाना । गगन लरैं दोउ सर बलवाना ॥ तिनते अनल प्रकट अति भारी । देखि देवगण विस्मय कारी ॥ अस्त्रशस्त्र दौसुभट प्रहारैं । सुरन कोटि ते धरनि नैवारैं ॥ दिशि विदिशिहु रहे सायकपूरी । कम्पत बसुधादिगपति भूरी ॥ गेरहदिवस समर यहि भांती । कीन्ह शत्रुहन पुर आराती ॥ बरहें दिवस ब्रह्मसर साधा । चहत शत्रुहन शंभुहि बाधा ॥ ब्रह्म सरहि कियोपान पुरारी । भै रिपुहन उर विसमै भारी ॥ ९४ ॥

सोरठा ॥

शंकर रिसउर आनि । महानिशित सरचाप धरि ।
हनि अरिउरसो तानि । गिरे शत्रुहन मुर्छिरथ ॥ ९५ ॥

दोहा ॥

सुमद सुभुज लक्ष्मीनिधिहु गेसब समर निपाति ।
प्रभुदल भाज्यौ जित तितैह्वै अनाथ बिलखाति ॥ ९६ ॥

छप्पै ॥

सुनि शत्रुहन संहार आइ हनुमत तेहि वारा । पुष्कलरथ पौढ़ारि कीन्ह बज्र भट रखवारा ॥ आपु शंभु सन जाइ कहे दुर्वचन

घनेरा । राम भक्तन्हि इथा बात स्रुति संतन टेरा ॥ जेहि कीन्ह स्वामि दलभङ्ग सब परहित अधरम ठानिकै । जेकाल बाहि योधा प्रबल तिनहिं लरायो जानिकै ॥ ९७ ॥

चौपाई ॥

सत्यकह्यौ तुम कपिकुल केतू । मैं अनरथ करि निज जनहेतू ॥ छमिहैं मोहिं कृपानिधि सोऊ । राम सरिस अस स्वामिन कोऊ ॥ सुनि अतिकोप्यौ पवनकुमारा । गिरिविशाल एकशिवहि प्रहारा ॥ रथ सारथी समेत तुरङ्गा । ध्वज पताक युत भा रुव भङ्गा ॥ पुनि शिव भयो वृषभ असवारा । पुनि कपीश उर शिला प्रहारा ॥ तब शिव कोपि त्रिशूल चलावा । देखि पवनसुत तोरि फेकावा ॥ पुनि शिव शक्ति कोपि उरमारा । मुर्छि गिरे तब पवन कुमारा ॥ उठि बहोरि एक बिटप उपारा । बारबार तब शिवहि प्रहारा ॥ तब शिव मूशल दण्ड चलावा । कूदि कपिन्द्र निज अङ्ग बचावा ॥ सो महि बेधिगयो पाताला । कपिबहोरिलैवृक्ष बिशाला ॥ अति लाघव हठि कीन्ह प्रहारा । शिला शृंगकोटिन हठि मारा ॥ ९८ ॥

कुण्डलिया ॥

नन्दी सहगिरि नाथ कह बज्जरि लपेटि लंगूर । पटका महि बहुबार तिन कियेअङ्ग सबचूर ॥ किये अङ्गसबचूर शिलातरु विपुल प्रहारी । भेप्रसन्न वृष केतु देखि तेहि विक्रम भारी ॥ भेप्रसन्नवृष केतु मांगुबर जो चहौ मन । कहकपि रिपुहन कटक सहित रक्षौ तुम सहगन ॥ ९९ ॥

चौपाई ॥

जबलगि इन्हैन देउं जिलाई । तबलगि रच्छहु ईशगोसांई ॥ एव मस्तु कहि शिव कपि पाहीं । राम भक्त तो सम कोउ नाहीं ॥ हरषि पवन सुत तुरत सिधारे । मन मारुतहि लजावन वारे ॥ क्षीरसिंधुतट गिरिहिउपारा । लैगिने जब पवन कुमारा ॥ तेहि रक्षक सुरगण सब धाये । अस्त्र शस्त्र तिन विपुल चलाये ॥ निरखि कपीश युद्ध करि इन्द्रा । हनहि दलाइन्द्रारक वृन्दा ॥ कछु घायल सुरपतिहि सुनावा । नाथएक बलनिधि कपिआवा ॥ तौन आइ गिरिद्रोन उखारा । सुरन अस्त्र तेहि कोटिन मारा ॥ सुरान सो

बलनिधि कपि घूमा । सुर दल सब दलि डारिसि भूमा ॥ सुनि सुरेश सुरकटक पठावा । सत्वरपौन पुत्रपहं आवा ॥ अस्त्रशस्त्रतिन आइ प्रहारा । कै ति कपीश तिनहुं संहारा ॥ १०० ॥

दोहा ॥

बहुरि पठायो सुर सुभट तिनहुं हता हनुमान ।
तापुरेश गुरुपद परसि कियउ कपिचरित बखान ॥ १ ॥

चौपाई ॥

ता वागीश ध्यान धरि जाना । आयो आवध हित हनुमाना ॥ कथा सकल सुरपतिहि सुनाई । जेहि प्रकार मख करै रघुराई ॥ मखहय धरा वीर मणि ग्रामा । ताहि हता पुष्कल संग्रामा ॥ निजजन हित शिवगण लैसंगा । आय कीन्ह रघुपति दलभङ्गा ॥ शिवहि धरषि कपि शैल प्रहारी । बहलै राखि कटक रखवारी ॥ आयो यहां सजीवन हेतू । यहां कटक रचत वृषकेतू ॥ विनय सहित गिरि देहुय ताही । कपिहि बैर कीन्हें भल नाही ॥ सुनि गुरु बचन सुरेश डेराई । परे जाइ कपिचरणन धाई ॥ दीन्ह औषधै विनय सुनायो । तब सुरेश निजलोकहि आयो ॥ इत कपीश औषधि लैआयो । प्रभुहि सुमिरि सब कटक जियायो ॥ २ ॥

दोहा ॥

देखि चरित शिवगणन युत कपिहि जानि शिरमौर ।
रामभक्त औ सुभट अस हैन तिहुंपुर और ॥ ३ ॥
वीरमणिहि दल सहित शिव दीन्हा तबै जियाइ ।
सजि सजि वाहन अस्त्रनिज खड़े समर बिचआइ ॥ ४ ॥

चौपाई ॥

इहां शत्रुहन दलचतुरङ्गा । विविध अस्त्र सजि इहत निखङ्गा ॥ पुष्कलादि भट सबरथ साजो । शिवसन्मुख धाये रणगाजी । देखा शिव रिपुहन कटकाई । युद्धहेत आई रणधाई ॥ यथा योग प्रति भटरण चीन्हा । वीरभद्र पुष्कल रण कीन्हा ॥ रिपुहनसङ्ग वीरमणि राजा । नाना अस्त्रशस्त्रधरि बाजा ॥ महा घोर रण भयो प्रचण्डा । गिरे सुभट कटिकटि तन खण्डा ॥ बहुरि शत्रुहन स्यन्दन घोरा । भंजा भूप वीरमणि जोरा ॥ अपर यान चढ़ि रिपुहन वीरा । छां-

ड़ा प्रबल महा नल तीरा ॥ जरे सारथी रथ बृष घोरा । प्रकटी अनल सरस सब वीरा ॥ देखा भूप बिकल कटकाई । जल शर हति सब अनल बुझाई ॥ ५ ॥

दोहा ॥

यहि बिधि रिपुहन बीरमणि कीन्हों युद्ध कराल ।
ब्रह्मबाण तब भूपले छांड़ा अति बिकराल ॥ ६ ॥

चौपाई ॥

लखि शत्रुहन बाणजनु काला । योगिनिशरछांड़ा तेहिकाला ॥ ब्रह्म शरहि कीन्हेसि युग खण्डा । नृपउर लाग मनौ यम दण्डा ॥ सहित तेहि शरते प्रकटे बहुबाना । वीरभद्र आदिक गण नाना ॥ सहित भूपदलभट समुदाई । गिरे अवनि सबप्राण बिहाई ॥ शिव नृपदल हति योगिनि बाना । हरपद परसि स्वामि निज नाना ॥ देखा नृतक कटक निज शङ्कर । रथ चढ़िआये समर भयङ्कर ॥ शिवरिपुहन प्रचण्ड दौबीरा । लरैं परस्पर युद्ध गंभीरा ॥ अस्त्र शस्त्र छांड़े बिकराला । प्रलय होन चह जनु यहिकाला ॥ रामानुज मन तब अस आवा । परब्रह्म शिव कहं स्तुति गावा ॥ कोटिन युगलौं करै प्रहारा । तबौ न शिवसन पावैपारा ॥ ७ ॥

हरिगीतिका ॥

अस जानि रिपुहन सुमिरि रामहिं प्रेम युत मनलाइकै । जेहि भांति तब सब होइपूरन करिय तौन उपाइकै ॥ तेहि समय श्री रघुबंशमणि प्रकटे समर महं आइकै । शोभा अपारन जात कहि सब दिशि प्रकाशहि छाइकै ॥ जेहि बेष कोशलपुर मखाश्रमदेखि रिपुहन आयऊ । तेहिबेष शङ्कर संगरण महं रामदरशन पायऊ ॥ विसमय सहित सब शोच तजि पायन परे हरषाइकै । रघुवीर अनुजहि देखि कीन्हप्रबोध हृदय लगाइकै ॥ पुनिपवन सुत तबपरेउ चरणन बिनय बिपुल सुनाइकै । अब जीतिहौं शङ्करहि रण महं नाथतवबलपाइकै ॥ पुनि आइलक्ष्मी निधिसुभटसबपुष्कलादिकसुभट । पदबन्दि बिनय सुनाइ आयसु पाइ सब इत उतखरे ॥ तेहि समयशंभुबिलोकि राजिव नैनशोभा धामको। कमनीयकोटिनमदन छबि इंदीबर द्युति श्यामको ॥ गहिपाणि उर हरषाइ प्रेम बढ़ाइ

निजप्रभु जानिकै। करि बिनय गदगद कण्ठशिव रघुवंश मणिहि सुनाइकै ॥ ८ ॥

बसन्ततिलका ॥

इन्दीवराभ तन श्यामल पीतवासं। राजीव नेत्र शरदेन्दु मुख प्रसन्नं ॥ आजानबाहु शरचाप बलौघ गेहं। कन्दर्पकोटि कमनीय अनूपदेहं ॥ पादारविन्द जेहि लालति नित्यपद्मा। सोहं अस्मरामि सततं निज चित्तसद्मा ॥ शाश्वत्स्वमेव रघुपुङ्गव ब्रह्मरूपं। भक्तानुकूल करिवेष अनूपरूपं ॥ मोचाहिनाथ करुणामय दीनबन्धो। कोजन्मजन्म समदोष अगार सिन्धो ॥ तैमैं समस्त निज भक्तन हेतुकीन्हें। स्वामी सुभाव तवएव सदैव चीन्हें ॥ ७९ ॥

दोहा ॥

कोटिन अघ वोघन हरैं नाथ बिमल तवनाम।
मखकृत द्विज अघ समुझि मन सोच सूच संग्राम ८० ॥

चौपाई ॥

तदपि लोक शिचाहित कीन्हा। ईश्वर कबहुं होतअघलीन्हा ॥ अपर विनय सुनिये यह देवा। कीन्ह बीर मणि मम पद सेवा ॥ पूरुब मैं तेहि तेवर हारा। स्वामि सैन तेहि हित संहारा ॥ तापर कृपा करौ रघुराई। भूपहि शरण देउ अपनाई ॥ सुनत वचन कह राम सुजाना। तुम सम मोर भक्त नहिं आना ॥ जो तुम कहौ करौं मैं सोई। प्रियन मोहिं तुम सम जगकोई ॥ मम उर तुम तुम उर मम बासा। भेद करै तेइ नरक निवासा ॥ सुनि प्रभु बचन शंभु सुख पावा। भूपहि कटक समेत जियावा ॥ पुनि निजगनन जियाव महेशा। उठेसकल मिटिगयो कलेशा ॥ शिव प्रेरित सुत धन समुदाई। भूप समर्प्यौ रामहिं आई ॥ ८१ ॥

दोहा ॥

चरनन परि मष वाजिदै निज अपराध छमाय।
रिपुहन आदिक बीरनै मिले परम सुख पाय ॥ ८२ ॥

चौपाई ॥

सकल वस्तु रघुबर अपनाई। नृपहि दीन्ह परितोषि बनाई ॥ अन्तरध्यान भये रघुराई। लखि सब के उर बिसमै आई ॥ हम श्रीरामहिं नर करि जाना। परब्रह्म जेहि वेद बखाना ॥ शिवगे

गनन सहित कैलाशा। सुमिरि राम पद परम हुलाशा॥ रिपुहन बिजै पाइ हरषाई। उत्सव कीन्ह निशान बजाई॥ सैन सहित चतुरङ्ग अपारा। मणिमय स्यंदन ह्वै असवारा॥ लखहु तुरंग छाड़ा तेहि काला। धावा पवन बेग तत्काला॥ नृपवीरन्ह अखिल सैन समेता। चला सङ्ग शत्रुहन उपेता॥ रिपुहन सैन सहित हयपाछे। पहुंचे हिमगिरि तट बन आछे॥ तहां बाजि ठाढ़ै रहि गयऊ। लखि सुभटन मन विसमय भयऊ॥ ८३॥

दोहा॥

हांकि थके सब सुभट तेहि उठान बाजी पाउ।
यह सुनि रिपुहन जाइ तह कीन्हे विपुल उपाउ॥ ८४॥

कुंडलिया॥

॥ तब पुष्कल रिपुहन सम अङ्गद अरु हनुमान। बल करि तुरग उठावते उठै न तिलक प्रमान॥ उठै न तिलक प्रमान देखि विसमै मन आई। पूछि सुमन्तै जाइ कहैं। का करिय उपाई॥ तिन तब कहा बखानि सौनक जै सुनि मतअब। तिनको आयसु पाइ उपाउ कीजिये तुम तब॥ ८५॥

चौपाई॥

तब शत्रुहन सुनि न अस्थाना। खोजहेत पठये चर नाना॥ शौनक ऋषिहि देखि एक आवा। रिपुसूदनहि कथा सब गावा॥ तब शत्रुहन सुमन्त सुजाना। पुष्कल लक्ष्मीनिधि हनुमाना॥ लै लघु जन गे मुनिवर धामा। देखि शौनकहि कीन्ह प्रणामा॥ अति आदर आसन मुनि दीन्हा। कारण कौन गौन बन कीन्हा॥ अखिल कथा सुनाइ रिपुहंता। सुनि धरि ध्यान सुजान तुरंता॥ सुनो शत्रुहन नृपवरबीरा। गौड़देश कवेरिसरि तीरा॥ सात्विक नाम विप्रवर एका। करै उग्रतप सहित विवेका॥ तहां एक विमान वर आवा। सहित अपसरन परम सुहावा॥ चढ़ा विप्र तेहि पर हरषाई। मेरुशृंग निवसा सुखपाई॥ ८६॥

दोहा॥

करै भोग अपसरण संग ज्ञान गयो बिसराइ।
काम विवस मनमत्त ह्वै मुनिगण नीरै जाइ॥ ८७॥

नाराच ॥

सुनीश एकबार ताहि शाप घोरको दयो । पिशाच होसि जाइ भूसुरोपि पाइपै नयो ॥ विनै सुनाइ वारबार मोहिंसो अनुग्रहो ॥ दयार्द्र है ऋषीश्वरोपि वैन ताहि सों कहो ॥ १८ ॥

प्रज्ज्वलिया ।

सुनु सात्त्विक ये शुभ वचन मोर । जब असिहौ रघुबर यज्ञघोर ॥ तब सुनिहौ श्रीरघुबर चरित्र । ह्वैहौ तुरतै अतिशयपवित्र ॥ सात्त्विक मखहय सो असा आइ । कहि राममंत्र लीजै छुड़ाइ ॥ यहिबिधि शौनकजब कहा गाइ । आयोतब पवनकुमार धाइ ॥ हयकान सुनायो राममंत्र । सुनतै भिजनिज भेहौ स्वतंत्र ॥ हय पवन वेगधायो सुभाइ । द्विजमुक्त भयो शापैनशाइ ॥ १९ ॥

चौपाई ॥

सुनि रिपुहन बिसमै मनमाना । करम कथा तबरिषैबखाना ॥ बिधि प्रपंच सब करमन सानी । जोयश करै पाव तस प्रानी ॥ रमै काम बस नारि परारी । सोनर अवशि नरक अधिकारी ॥ लोभ विवस पर द्रव्य चोरावै । सो यम लोक विविधि दुखपावै ॥ जौन खाद हित जीवन मारै । महाघोर नरकन मह पारै ॥ सुरमहिसुरगो गुरु अपवादा । करैतौन लहै नर्क विषादा ॥ यहि प्रकार जगपाप अपारा । सुमिरत रामहिं होत उधारा ॥ जोअघ कोटि मखहु नहिंजाई । रामनाम सोसकै छुड़ाई ॥ सुनि शत्रुहन परम सुख माना । मुनिहिं वन्दि तब कीन्ह पयाना ॥ विपुल भूप संग सैन बनाई । चले शत्रुहन अति सुख पाई ॥ २० ॥

दोहा ॥

सात मास यहि भांति गतजीते विपुल नरेश ।
राम अश्व संग शत्रुहन पायो जै सब देश ॥ २१ ॥

मालिनी ॥

हिमिगिरि तट आयो यज्ञबाजी सुभाये । सुरथ नगरशोभा देव लोकोपमाये ॥ जहं सब नरनारी राम पूजाधिकारी । मनतन वच मानौ धर्मकी देहधारी ॥ रघुपति पदरुवी पुत्रसंयुक्त राजा । निशि दिन हरि नामै जो जपै छांडि काजा ॥ गुण निधि नर-

नाहैपाप बातीन भावै । यमगण सपनेहु तासु ग्रामै नआवै ॥ २२ ॥

छप्पै ॥

एक बार यमराज विप्र को वेष बनायो । राम भक्त नरनाह ताहि वंचन पुरआयो ॥ देखि मुनीशहि सुरथ बन्दि पदपूजि विशेषा । उत्तम आसन दीन्ह धन्य अति आपुहि लेषा ॥ तब कहा ऋषीशहि भूपमणि रामकथा मोहिं गाइये । जोसुनत पाप पर्वत कठिन संसृत कलुष नशाइये ॥ २३ ॥

चौपाई ॥

सुनत वचन विहंसे मुनिराई । तब भूपति मन विसमै आई ॥ कहौ नाथ हसिबे कर कारन । मम संदेह होइ जेहि वारन ॥ कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना । यहजग सकल कर्म आधीना ॥ जोकरि ब्रह्मादिक हरिईशा । भेअखिलेश चराचर ईशा ॥ कीन्ह शतक्रतु यज्ञ समाजा । लहि सुरलोक भये सुरराजा ॥ करैविहार अमरन सङ्गा । मनबांछित सुखलहै अभङ्गा ॥ तातेमखन करौ हरषाई । लहौभूप सुखसहितबड़ाई ॥ तुममोहिं कहाराम गुनगावो । सो सुनि कहा बड़ाई पावो ॥ सुनिसुनि गिरा कोपि नर नाहा । तुरत उठाइ दीन्हगहि बाहा ॥ करौ अनत तुमयज्ञ बड़ाई । राम भजन सम मोहिन सोहाई ॥ २४ ॥

दोहा ॥

विधि या सबसुख तुच्छ अतिनाशै कालहि पाइ ।
अक्षय मोक्ष लहै हरिभगत भुवसे विपुल गनाइ ॥ २५ ॥

चौपाई ॥

देखि राम सेवक दृढ़भूपै । प्रकटकीन्ह यम तब निजरूपै ॥ सुनु नृप अति प्रसन्न मैं तोहीं । मन बांछित वर मांगहु मोहीं ॥ कह नृप हमहिं देव वरदीजै । रामहिं हमहिं समागम कीजै ॥ तुमते त्रास कबहुं नहिं होई । रुचै मोहिं यह वरप्रभु सोई ॥ धर्मराज भूपहि तब भाषा । करिहैं तोरि राम अभिलाषा ॥ भये तबहि यम अन्तर ध्याना । भूपति परम हृदय सुखमाना ॥ २६ ॥

छप्पै ॥

एक समय निज सभा बैठ भूपति सुखपाई । तेहि अवसर एक

दूत अश्व लखि कथा सुनाई ॥ महाराज अवधेश राम रघुवंश विभूषन । तिनकर मखहय आवपुरै तत्रसङ्ग रिपुदूषन ॥ यह सुनत सुरथ प्रमुदित हृदय सुभटन कहा सुनाइकै । अति लाभ समुझि परिनाम मन बाजिहि लावो जाइकै ॥ २७ ॥

हरिगीतिका ॥

तिनजाइ मखहय लाइ भूपहि दीन्ह अतिसुख पाइकै । बधवाइ विमल निकेत तेहि सेवत विविधि मन लाइकै ॥ तत्रसुर सुत सब बोलि नरपति कहा यह समुझाइकै । चम्पकरु मोदक रिपुञ्जय दुर्वारसे रन लाइकै ॥ २८ ॥

चौपाई ॥

परतापी बलमोदक तेऊ । हर्यचहि समेत सहदेऊ ॥ भूरिदेव अरु तापन वीरा । सुनिये दशौ पुत्र रणधीरा ॥ तब लगि अश्वन रिपुहनपावै । जबलगि राम न ममगृह आवै ॥ रचौसकल मिलि युद्ध समाना । रथ चढ़ि आपु चले रण राजा ॥ आछत चतुरङ्गिणी सोहाई । देखत दिगपति जाहिं सकाई ॥ इहां शत्रुहन सुभट बोलाई । पूछा यज्ञवाजि कुशलाई ॥ तिनतब कहानाथ हमजाने । यहि पुर हयलै सुभट पराने ॥ सुनि रिपुहन कियो कोप अपारा । मानौपुरहि कीन्हचहै छारा ॥ सुमतिहिबोलि पूछि तेहि काला । कहौ कौस यहिपुर महिपाला ॥ कर्म धर्म बलसब समुझाई । केहि प्रकार तेहि करिय लराई ॥ २९ ॥

दोहा ॥

कुण्डल पुरपति सुरथ नृप शुणगण धर्म निधान ।
राम भक्त सुत सैन्य सह नीति निपुण बलवान ॥ ३० ॥

चौपाई ॥

प्रथमहिं दूत बूझितेहि आवै । रामचन्द्र प्रताप यशगावै ॥ जो नहिं आज्ञा करै तुम्हारी । तौन्दप ताहि करौ हठि रारी ॥ सुनि सुमन्तबाणी रिपुहन्ता । पटै अङ्गदहिबलबुधिवन्ता ॥ दीखनाइ कपि सुरथ समाजै । वीर हन्द चहुंदिशि तेहि गाजै ॥ पूछा भूप कौश कह आयो । रिपुहन दूत नाम निज गायो ॥ रामचन्द्र अवधेश खरारी । रावणादि निशिचर संहारी ॥ करैं अश्वमखते रघुराया

हय रच्छाहित अनुज पठाया ॥ हय जो तुमबांधा अनजानै। देउ तो चूक न रिपुहन मानै ॥ नतरु तोहिं नृप सैन समेता। जनहिं मारि करिसकै अचेता ॥ अङ्गद सत्यकह्यौ मोहिं पाहीं। पै रिपु- हन संका कछु नाहीं ॥ ३१ ॥

दोहा ॥

जब मम ग्रामहि रामनिज पद दरशैहैं आइ।
तब सुत सम्पति सहित हय दैहौं प्रीति बढ़ाइ ॥ ३२ ॥

प्रज्वलिया ॥

कह अङ्गद सुनु भूपति सुजान। प्रभुबाजि देउकरै मखप्रमान ॥
तुमसाथजाइ हरिचरणदेखि। ह्वैहौ कृतार्थ अतिशैविशेषि ॥ ३३ ॥

चौपाई ॥

तब रिपुहन प्रताप कपि गावा। तदपि भूपउर नेकन आवा ॥ तब अङ्गद निज दलहि सिधाये। समाचार रिपुहनहिं सुनाये ॥ अङ्गद वचन सुनत रिपुहन्ता। पुष्कलादि भटपठै तुरन्ता ॥ देखत चम्पक वीर विशाला। पुष्कल सों रण रचा कराला ॥ मोदक लक्ष्मीनिधि बलवाना। सुरथ भूपसंग भटहनुमाना ॥ रिपुह्नये नृप विमलहि जोरा। दुरबारन सुबाहु रण घोरा ॥ परतापिहि प्रताप नलयोधा। बलमोदकपर अङ्गदक्रोधा ॥ नीलगल हरयक्ष जुझारा। सत्यवान सहदेव कुमारा॥ भूरिदेव सुवीरमणि बाजे। अरितापन उग्रासङ्ग गाजे ॥ लरैं सुभट जोरी सनजोरी। सकैंनवीर वीर मुख मोरी ॥ ३४ ॥

दोहा ॥

शक्ति शूल मोगदर परिघ बाण वृक्ष गिरि लात।
परसु खड्ग शस्त्रास्त्र वित हनैं पाइ निज घात॥ ३५ ॥

चौपाई ॥

कह पुष्कल सुनु राजकुमारा। पितु समेतका नाम तुम्हारा ॥ चम्पककहा तुम्हैका कामा। युद्धसमय का करिहौ नामा ॥ तदपि सुनौ मैं कहौं बुझाई। मम पितु मातु सुहृद रघुराई ॥ रामदास ममनामहिं जानौ। चम्पकाख्य जग विदित बखानौ ॥ वीरमतौ अरु सुरथ भुवारा। मातु पिता मम राजकुमारा ॥ रणमहंपौरुष करौ

अपारा। नहिंबातनते होइ उबारा ॥ तब पुष्कल बज्रबाण प्रहारा। शरन खण्डि चम्पक सब डारा ॥ चम्पक कोटिन शायक छाड़ा। भरत सुवन कीन्हें शतखांड़ा ॥ अस्त्रशस्त्र छांड़ें द्वौबीरा । तदपि अधिक पुष्कल रणधीरा ॥ देखि प्रबल रिपु चम्पक योधा। राम बाण छांड़ा करि क्रोधा ॥ ३६ ॥

दोहा ॥

सोपुष्कल उरलागतै गिरे धरणि मुरझाइ ।
रथपर धरि चम्पक सुभट निजपुर दीन्ह पठाइ ॥ ३७ ॥

चौपाई ॥

यह कौतुक देखा हनुमाना। धायो काल सरिस बलवाना ॥ कोटिन सर तब चम्पक मारा। चूरकीन्ह सब पवन कुमारा ॥ महाद्रुम हनुमन्त उपाटी। मारा सुरथ सुवनकहं डाटी ॥ सोतरु चम्पक तिलकरि डारा। अपर शैल गज हनुमत मारा ॥ सुरथ सुवन सब काटि गिरावा। बिसमै सहित पवन सुत धावा ॥ पकरि ताहि लैगगन उड़ाना। बाहु युद्ध तहं द्वौभट ठाना ॥ हनैं परसपर मुष्टिक लाता। हनोमान तेहि अवनि निपाता ॥ उठा बहुरि चम्पक बलवाना। पदगहि पुनिपटका हनुमाना ॥ सुरथ सुवन कहं मारि गिरावा। पुष्कल बन्धन तुरत छुड़ावा ॥ देखि सुरथ चम्पकहि निपाता। धावा प्रबलबीर विख्याता। ३८ ॥

दोहा ॥

महा शोक सन्तप्त नृप कपिहिं पुकास्यो आइ ।
सुनत बीरबर पवन सुत सनमुख पहुंचे धाइ ॥ ३९ ॥

चौपाई ॥

कहनृप धन्य बीर हनुमाना। निशिचर करि केशरी समाना ॥ राम पदारबिन्द रति जाही। केहि प्रकार तेहि कहौं सराही ॥ चम्पक हति दुख दीन्हेसि मोहीं। ताते बन्धन करिहौं तोहीं ॥ सुनत पवन सुत गिरा उचारी। तुम श्रीराम भजन अधिकारी ॥ जो कदापि तुमको जैदेहैं। आइ छुड़ाइ हमैं प्रभुलेहैं ॥ तेहिछण भूपवान बहुमारा। पवन तनय तन रुधिर पवारा ॥ बहुरि कराल बाण सन्धाना। झपटि छीनि तोरे हनुमाना ॥ नखन बिदारि भूपके अङ्गा। बहुरथ धनुशर कीन्हे भङ्गा ॥ जबरथ चढ़ि नृपले धनु

बाना। सत्वर सोइ तोरै हनुमाना ॥ तब कराल नृपशक्ति प्रहारा। मुरछि गिरे महि पवन कुमारा ४० ॥

छप्पै ॥

उठि कपीश बलवान सहित स्यन्दन भूपालै । लै उड़िगयो अकाश परिघ नृप हनि तेहि कालै ॥ पवनज अङ्ग बचाइ ताहि पटका हठिधरनी । यहि प्रकार बहुबार जातनहिं कपिगति बरनी ॥ यहिभांति धनुष शर अश्वयुत तोरे रथ बोंचास जब । तब हनोमान बल निरषि नृप भईमहा उरत्रास तब ॥ ४१ ॥

चौपाई ॥

पशुपति अस्त्र भूपतेहि मारा । व्यथित भयो तब पवनकुमारा ॥ रामहिं सुमिरि बाण सो तोरा । भूपहिं युद्ध कीन्ह पुनि घोरा ॥ तब नरेश ब्रह्मास्त्र चलावा । ताते हनुमत देह बचावा ॥ रामहिं सुमिरि भूप तेहि काला । रामबाण छांड़ा ततकाला । निज प्रभु शरजब लखि हनुमन्ता । बन्धन बस तब भयो तुरन्ता ॥ सुनु नृपमोहिं नीतिके लायक । रहैन कोउ बिनशर रघुनायक ॥ पुनि भूपति पुष्कलपर धावा । नाना अस्त्र शस्त्र बरषावा ॥ पुष्कल भटते काटि नेवारा । निजसर विपुल भूप उरमारा ॥ महा अस्त्र कोविद दोउबीरा । तुमुल युद्धठाना गम्भीरा ॥ सरसमूह छाये सब आसा । देखैं सुरनभ युद्ध तमासा ॥ ४२ ॥

दोहा ॥

महा तीव्र शर सुरथ तब बेधा पुष्कल गात ।
वीर शिरोमणि भरतसुत मूर्च्छित अवनिनिपात ॥ ४३ ॥

चौपाई ॥

पुष्कल पतित देखि रिपुहन्ता । रथचढ़ि नृप पर चले तुरंता ॥ महति कर्म तैं कीन्ह भुवारा । जो हनुमत पुष्कलहि प्रहारा ॥ अबजनि भाजि जाउ महिपाला । सहौ मोरसर कठिन कराला ॥ सुमिरि रामपद सुरथ भुवाला । रिपुसूदनहिं कहा तेहिकाला ॥ हनुमतादि मैं किये अचेता । अबहीं तुमहिं निपातौंखेता ॥ अस कहि विपुल नराचप्रहारा । रिपुहन अगिनि बाणतेजारा ॥ जरत सुरथ निज दलहि विचारा । वरुण सरहि जल बरषि निवारा ॥

योगिनि दत्त बाण रिपु हन्ता । मोहनास्त्र पुनि हता तुरन्ता ॥ ते सर सुरथ भक्षि महि डारा । विस्मय रिपुहन लह्यो अपारा ॥ लवणासुर घाती सरमारा । रामभक्त लखिसो महिपारा ॥ ४४ ॥

दोहा ॥

रिपुभञ्जन उरकोप करि मारा बाण कराल ।
लागतहो अतिविकलह्वै गिरासुरथ महिपाल ॥ ४५ ॥

चौपाई ॥

उठा तुरन्त सुमिरि रघुराई । चाप कठिन सर एक चढ़ाई ॥ रिपुभञ्जनहिं कहा गोहराई । ममआगे जनिनाउ पराई ॥ अस कहि तीव्रबाण उरघाता । रिपुहन रथ पर भये निपाता ॥ लखि सुग्रीव महानग धारी । सुरथ नृपहि रण मध्य प्रचारी ॥ मारा गिरि आवत नृप देखा । सरन मारि रज कीन्ह विशेषा ॥ पुनि सुग्रीव शिलातरु मारा । नखन नोचि नृपगात विदारा ॥ तब नृप राम बाण वर साधा । कपि नायकहि मारि रण बाधा ॥ पायो विजै सुरथ महिपाला । पुरहि चलाले सुयश विशाला ॥ पौनपुत्र कह संगलवाई । सभाबैठि बोला तबराई ॥ सुनौ पवन सुत वचन हमारा । सुमिरौ रामहिं कृपा अगारा ॥ ४६ ॥

दोहा ॥

बन्धन मोचन आइ तब करिहैं कृपा निधान ।
नाहिंतौ आयुत वर्षलौ नहिं छांड़ौं हनुमान ॥ ४७ ॥

मालिनी ॥

सुनि नरपति बानीमौनह्वो बात जातं। बङ्गशरन बिदाराबन्धना चासगातं ॥ मन सुमिरि सुभाये रामचन्द्रं कृपालं । निजजन प्रति पालं मोचमे बन्ध जालं ॥ सुरकुल हितकारी दीनबन्धो खरारी । मोहिं प्रणत बिचारो रक्षिये रावणारी ॥ सियबर बरकान्तिं श्यामलं बारिजातं । अरुणकमल नेत्रं सोवलावण्य गातं ॥ ४८ ॥

कवित्त ॥

हाथिहु कि हांकदीन्ह सुनतहि दादिदीन्ह बरण नवीन कबि गवन कृपालको। चंचलै चटक बायु बैनतेयके खटक अटक मटक न भटक तेहिकालकी ॥ उपमा न आन पाइ ईश्वरी कहैकि गाइ

लीकसी लगाइ बर इंदीवर मालकी । गाजसेगये रिसाय गजराज को बचाइ ग्राहको गलौरीकै कराल काल गालकी ॥ ४९ ॥

चौपाई ॥

सोबल विद्यमान रघुराई । ममहित कहा अबारलगाई ॥ नाथ मही मैं विकल बिहाला । सुरथहि मोहिं छुड़ाउ कृपाला ॥ सुनि आरत बानी जनगाई । नभमहं निरखि परे रघुराई ॥ चढ़े बिमान अनुज मुनिसङ्गा । महा प्रकाश होत तमभङ्गा ॥ देखु भूप स्वामी मम आवहिं । तव बन्धनते मोहिं सुकुतावहिं ॥ देखत सुरथ प्रेम रसपागे । दण्डप्रणाम करनतबलागे ॥ परमभक्त भूपहि प्रभुजाना । हृदय लगाइ कीन्हसनमाना ॥ धन्यभूप तोसम नहिंआना । जेहि रण बांधि प्रबल हनुमाना ॥ कपि बन्धन प्रभु आपु छुड़ावा । मुर-छित भट रण जाइ जिआवा ॥ रामचन्द्र पद कमल निहारी । भये बिगत ज्वर सुभट सुखारी ॥ ५० ॥

दोहा ।

तबहि सुरथ निज राजसुत मख हयलीन्ह संगाइ ।
पायन परि बहु बिनय करि रामहिं अरप्यो आइ ५१ ॥

चौपाई ॥

मिलैं परसपर भट हरषाई । लखि प्रभु सुमुख बैर बिसराई ॥ सुरथ नृपहि सब करैं बखाना । छत्रधर्म प्रभुसों रणठाना ॥ तीनि दिवस तहं रहि भगवाना । अवध चले चढ़ि कामग जाना ॥ राज सौंपि चम्पकहि भुवाला । रिपुहन संग चले ततकाला ॥ रिपुहन मख हयपाइ अनन्दा । चलेसंगलै सुभटन वृन्दा ॥ भेरि मृदङ्ग शंख धुनि पूरी । अश्वसाथ कीन्हें भट भूरी ॥ मगमहं नृपति मिले बहु आई । दैदै भेंट करत सेवकाई ॥ पहुंचे बालमीक अस्थाना । करैं यज्ञ जहं मुनिगण नाना ॥ समिध लेन लव बालन संगा । आइदीख तहंयज्ञ तुरंगा ॥ स्वनर पत्रसोहै बर भाला । रतन अमोलग्रीवमनि माला ॥ ५२ ॥

छप्पै ।

कौतुकही लवजाइ अश्व सिर पत्रहि बांचा । रावणादि संहारि अवध में हय मखराचा ॥ सूर्यवंश अवतंस राम राजेंद्र सीस मनि ।

नमतसुरासुर जासु पद्म पद विनय भूरि भनि ॥ अस रत्न धनुर्द्धर बीरवर कौशल्या संभूत सुत । अति सुभट महा जेहि बाहुबल सब प्रकार ऐश्वर्य युत ॥ ५३ ॥ तासु अश्व के संग करै रक्षा रिपुहंता । जग बिजयी बिख्यात लवहि जिन मारि तुरंता ॥ अपर सैन चतुरंग सुभट पुष्कल सम गाजै । जिनहिं बिलोकत धीर बीर दिगपति लौ लाजै ॥ जेहि होइ बाहुबलमान मद सो हय बांधै आइ कै । तेहि मारि शत्रुहन छीनि है यमपुर पठवै धाइ कै ॥ ५४ ॥ बांचतही रिस रांचि बांधि तरु मूल तुरंगै । भये अरुण द्वौ नैन बिकट भृकुटी भइ भंगै ॥ कहा राम रणधीर कहा बपुरा रिपुहंता । को जानकी प्रसूत बीर कुस सों बलवंता ॥ अस भाषि सरासन सानि सर समर भूमि शोभित भये । तेहि समय आव चतुरंग दल देखि न मन छोभित भये ॥ ५५ ॥

दोहा ॥

तेहि औसर दुन बालकन समुझायो बहुबार ।
राम चंद्र दल प्रबल अति लवछांड़ो मष घूार ॥ ५६ ॥

चौपाई ॥

कह लव तब सब बालन पाहीं । तुम छत्री बल जानत नाहीं ॥ द्विज भोजन करिबे के लायक । छत्री सहैं समर छत सायक ॥ तब द्विज बालक भागे दूरी । लवपहं कटक आव अति भूरी ॥ कहैं सुभट हय मष केहि बांधा । जैहै को कृतांत के राधा ॥ कह लव हम बांधा मष घोरै । करौं निपात सुभट जो छोरै ॥ सुनत बचन हय छोरन धाये । तिन सुभटन लवमारि गिराये ॥ सुनि लवबल बाल्मीकि-यन भाषा । शेषहि मोहिं सुनिबे अभिलाषा ॥ केहि कारन सिय कानन आई । कुश लव जनम करम कहौ गाई ॥ शेष तबहि मुनि-वरै सुनाई । किये जे अपर चरित रघुराई ॥ एक समय जानकी समेता । राजत प्रभु निज रुचिर निकेता ॥ ५७ ॥

दोहा ॥

गरभवती सीतहि निरखि कहा बिहंसि तब राम ।
कवन भोग इच्छा तुम्हैं सो मोहिं कहिये बाम ॥ ५८ ॥

चौपाई ॥

कह सीता सुनु कृपानिधाना । तव प्रसाद पाये सुख नाना ॥

बिषय भोग इच्छा मोहिं नाहीं। मुनि पूजा लालच मन माहीं॥ जो तुम्हार अनुशासन पावों। पट पहिराइ ऋषीशन आवों॥ तब प्रभु सीतहि कहा सराही। प्रात तपिन पूजौ बन चाही॥ अस कहि सैन कीन्ह रघुराया। पुरबार्ता हित चार पठाया॥ गये चार घर घरन छपाई। सुनत फिरैं श्री राम बड़ाई॥ सब सिय पतिहि ब्रह्म करि जाना। निशि दिन प्रभु यश करैं बखाना॥ रजक बधू यक पर घर जाई। रही रूठि पतिते अरगाई॥ सासु ताहि लाई समुझाई। पति तेहि मारि बहुरि बहिराई॥ तैं मोहिं राम नृपति सम जाना। रावण मारि सियहि घर आना॥ ५९॥

दोहा।

प्रभु निंदा जब चार सुनि तेहि बध हित असि लीन्ह।
तदपि राम भय मानि तिन क्रोध छमापन कीन्ह॥ ६०॥

चौपाई॥

सब चारन मिलि अस मत ठाना। जनि यह बात परै प्रभु काना॥ प्रात न्हाइ शिव पूजन कीन्हा। स्वरन दान महि देवन दीन्हा॥ सभा मध्य तब बैठ भुवाला। सुत वत प्रजन करै प्रतिपाला॥ आतपत्र लछ्मण कर साजे। चमर भरत शत्रुहा बिराजे॥ बैठ वशिष्ठ सरस तप पूरे। सुमति सभाल नीति रस रूरे॥ तेहि औसर आये सब चारा। करत दण्डवत राम निहारा॥ पूछा तिनहिं यकांतहि जाई। कहैं ते तव जग होइ बड़ाई॥ तव यश बिमल करैं सब गाना। पावन जिमि सुर सरित समाना॥ रहा बिमल यश तिहुं पुर छाई। धवल कोटि शशि ते अधिकाई॥ छठें चरहि बूझि भगवाना। जिमि तुम युत तस करो बखाना॥ ६१॥

दोहा॥

सो न दृथा कछु कहि सकै पूछत प्रभु बहुबार।
जोन सत्य अब भाषिहौ पैहौ शाप हमार॥ ६२॥

चौपाई।

भय बस चार सुना तस गावा। रजक बात सुनि प्रभु दुख पावा॥ भरतहि बोलि दृत्तान्त सुनावा। चाहत मैं यह कलुष मिटावा॥

कहा भरत स्वामी सुनि लीजै। यहि कर हृदै दुःख जनि कीजै॥ अनलहि दह्यौ प्रथम जग जाना। बहुरि पितामह शुद्ध बखाना॥ त्रिभुवन पूज्य कीर्ति जेहि छाई। पति व्रता मनि सियहि गनाई॥ करौ राज्य सिय सह रघुनायक। रजकहि रसना छेदन लायक॥ कहा राम मैं सब यह जानौं। अति पवित्र जानकी प्रमानौं॥ तदपि लोक अपवादहि डरऊं। यहि कारणसीतै परि हरऊं॥ और बात जनि भाषौ भाई। बधौ मोहिं तौ कहौ सोहाई॥ पुनि लक्ष्मण रिपुहन समुझावा। रामहृदय कछु बोध न आवा॥ ६३॥

दोहा॥

अति पवित्र सीतै समुझि त्यागा किमि रघुराइ।
शेष कहौ विस्तार युत मम संदेह नशाइ॥ ६४॥

चौपाई॥

शेष सुनीशहि कथा उचारी। पितुगृह जबरहै सिया कुमारी॥ खेलत सखिन संग सुखपाये। तहं शुकसुकी मधुर सुरगाये॥ अवध नगर नृप दशरथ नामा। तिनके चारिपुत्र अभिरामा॥ अतिसुन्दर सुख बरणिन जाहीं। जेठ राम सब भाइन माहीं॥ ते कौशिकहि यज्ञ करवैहैं। मुनि संग जनक नगर तब ऐहैं॥ तोरि पिनाक नृप-नमदमोरी। बरिहैं तिनहिं विदेह किशोरी॥ सीता पर्मसुन्दरिहि पाई। करिहैं अवधराज रघुराई॥ सीता तिनकहं युगुति समेता। पकरि सुकिहि पूछत अति हेता॥ को तुम दोउ कहांते आये। कौन राम सिय जो तुम गाये॥ बाल्मीक गंगा तट बासी। तिन रामायण कथा प्रकासी॥ दशरथ सुत विदेहजा सीता। सुना ति-नहिं हम कथा पुनीता॥ ६५॥

दोहा॥

सुनौ सुकी जब मिलैं मोहिं रामचन्द्र भरतार।
तबलगि तुम्हैं न छाड़िहौं पालौं सहित पियार॥ ६६॥

चौपाई

कह सुकसुनु विदेहजा सीता। पिंजरन परिहमहोब सभीता॥ तातेहमैं छांड़ि तुमदेहू। सत्य कहौं रहिहौं तुवगेहू॥ बहुप्रकार कहि सुक समुझावा। तदपि सिया उर नेकन आवा॥ जब सिय

होउ गरभ संयोगा । राम तुमहिं तब परै वियोगा ॥ असदै श्राप दोऊ मरि गयऊ । रजक स्वआइ अवधपुर भयऊ ॥ तब लछमणहिं कहा रघुवीरा । उतरुदिहै अघ लहै गंभीरा ॥ लै जानकिहि विपिनि तजिआवो । जग अपकीरति जाइ मिटावो ॥ सुनिलछमण उरदुःख अपारा । सीतहि स्यंदन करि असवारा ॥ तब सीता निज भागबखानी । बसन आभरण लै रुचि मानी ॥ गंगनिकट मुनिआश्रम तीरा । बब्बुलादिजहं बनगम्भीरा ॥ जाइ जानकिहि लषण उतारा । कहे वचन उरशोक अपारा ॥ ६७ ॥

दोहा ॥

मानि लोक अपवाद भय तुम्हें तजा रघुनाथ ।
मोर दोष कछु मातु नहिं कहि असनायो माथ ॥ ६८ ॥

भुजंगप्रयात् ॥

गिरी मूर्छि सीता तबै भूमि माहीं । कियो बास सो लछ्मणौ वायु छाहीं ॥ जगी जानकी ईश सों ऐस मांगै । सदा राम पादाब्ज मो चित्त लागै ॥ लसै देह मेरे थपी नाथ थाती । डरौं नर्क कैनासकौं सो निपाती ॥ कहा लछ्मणौं मातुही धीर लैथे । यहै बालमीकाश्रमं तत्र जैये ॥ परिक्रम्य दै लछ्मणौ घूमि आये । गिरी मूर्छि सीता हृदै शोक छाये ॥ नभै मेघ मालाकिये छाइ छाहीं । करैं सिंह सर्पादि रक्षा सुताहीं ॥ ६९ ॥

दोहा ॥

तेहि औसर बटु बिपुल मिलि आये समिधन हेतु ।
जाइ सुनायो मुनि वरै सीतै देखि अचेत ॥ ७० ॥
समाचार सुनि बटुन मुख बालमीक तहं जाइ ।
देखा त्रिभुवन श्रियमनौ गिरीबिपिनि महि आइ ॥ ७१ ॥

नराच ॥

बिलोकि बालमीकही तपो निधान जानकी । दुखार्त रोवतै सभक्ति भाव सो प्रणाम की ॥ कहा मुनीशहू पतिं समेत दीर्घ जीजिये । पुनः तनै द्वऊ निहारि भूरि सुःख लीजिये ॥ ७२ ॥ प्रतोषि जानकी त्वपै चले लवाइ आश्रमै । बखानि पुत्रि पालते छुड़ाइ कै महा भ्रमै ॥ समूह तापसी सियै सप्रीति साथ सेवती । प्रपूजतीं

सुरांगना यथासु बिष्णु देवती ॥ ७३ ॥ जपै हृदै सुराम नाम प्रीति भक्ति सो नितै । रूपीश पाद अर्चती कछूक बासरै बितै ॥ प्रसूति पुत्र द्वैतबै मनोहरं सुभावही । सिया समेत राम चंद्र क्रांति को जनावही ॥ ७४ ॥ किये रूषीश जात कर्म बेद मंत्र गाइकै । कुशं लवं बखानि नाम भूरि हर्ष पाइकै ॥ समौ सुपाइ दै जनेउ बेदको पढ़ायऊ । अपूर्व शस्त्र अस्त्र मंत्र युक्त सों बतायऊ ॥ ७५ ॥ अभेद्य क्रौंचनै दियो अच्छै इषुं सतर्कसी । नराच भांति भांति चाप पुष्ट शब्द कर्कसी ॥ अकुंठ खड्ग बर्म धर्म युक्त सो धनुर्द्धरौ । अशोक जानकी तनै बिलोकि द्वौ मनोहरौ ॥ ७६ ॥

प्लवलिया ॥

यहि भांति शेष मुनीश सो सीता बियोग सुनाइ । पुनि शत्रुहन लव समर अति बरनन लगे मन लाइ ॥ भुज दंड खंडित बिपुल भटगे समर भूमिपराइ । बिह्वल बचन बिसमै सहित निज प्रभुहि कहा सुनाइ ॥ एकबाल लघुवय ललित छवि श्रीरामके अनुहारि । हय बांधि धनुसर साधि सैनप सुभट सकल संहारि ॥ सुनि बाल विक्रम शत्रुहन रिस कीन्ह उर गंभीर । दलि अधर दशनन अरुण दृग लखि कालजित रणधीर ॥ सेनेशलै चतुरंग दल गजबाजि स्यंदन साजि । आयोजहां लवसुभट मणिरहे महाआजि विराजि ॥ लखि राज सदृश काल जित कहियों दया उर धारि । हे बाल हठ तजि छांड़ु हय अति विकट कटका निहारि ॥ हंसि कहा लव तुमजाइ रामहिं कहैा हय बंधान । तुमसे करोरिन सुभट नै सैं काल की अनुमान ॥ अस भाषि धनु टङ्कोरि लवउर सुमिरि सुनिवर पाइ । पुनिजानकी चरणारबिंदन बंदिस युग सुभाइ ॥ ७७ ॥

भुजंगप्रयात ।

सुना बैन ज्यौं कालजित् क्रोध धारा । महा तीच्ण बाणावलीकै प्रहारा ॥ सबै बान सो जानकी सूनुकाटा । सुबाजी रथौ ताहि को भूमि पाटा ॥ तबै कालजित् बारनै ह्वै सवारा । पुनःसप्तनाराचकै क्रोध मारा ॥ तबै जानकी पुत्रकै कोप घोरा । निजै बाणसे आवतै बाणतोरा ॥ पुनःबारणै मारिपृथ्वी गिरावा । गदापाणि सेनाधिपौ

कोपि धावा ॥ लवो ताहि देखा कियो रोष आयो। हृदय मारि बाणे महीमें गिरायो ॥ ७८ ॥

दोहा ॥

कालजीत बध निरखतै सकल सैन एकबार।

अस्त्र शस्त्र बहु भांति सब लागे करन प्रहार ॥ ७९ ॥

चौपाई ॥

सबके अस्त्र शस्त्र लव नाशा। कोटिन निजनाराच प्रहारा ॥ क्षण महं कटक कीन्ह सब भंगा। भिन्न छिन्न करि वीरन अंगा ॥ बही रुधिर सरि महा भयावनि। मज्जा मै लखिपरै अपावनि ॥ कछुक भागिगे जहं रिपुहन्ता। कहैं नाथ बालक बलवन्ता ॥ कालजीत कहँ सैन समेता। क्षणमहं मारि निपातिसि खेता ॥ सुनि रिपुहन मन विस्मय आई। कटक सहित तेहि घेरेउ जाई ॥ सातवर्तिकरि वीरन घेरा। चहुंदिशि बाण वृष्टि बहु तेरा ॥ मध्य एक लव सुभट विराजै। जिमि करि गण महं केशरि राजै ॥ करै प्रहार वीर सब आशा। लवनिज सरन अस्त्र सब नाशा ॥ तृण समूह जिमि पावक जारा। तिमि लव सकल कटक संहारा ॥ ८० ॥

दोहा ॥

तब पुष्कल दुर्मद सुभट लवहि प्रचारा आइ।

लेउ सुभग रथहमैं तुम चढ़ौ ताहि सुखपाइ ॥ ८१ ॥

चौपाई ॥

तेहि चढ़ि करौसमर मोहिं भारी। पैदर पाइ पिराइ तुम्हारी ॥ तब लव कह सुनु राज कुमारा। पतिगृही सोहि विप्र विचारा ॥ हमक्षत्री पैदर रण ठानैं। तुमसे कोटि भटन नहिं मानैं ॥ सुनिपुष्कल निज चाप चढ़ावा। देखतही लव क्रोध बढ़ावा ॥ करते चापकाटि महि डारा। पुष्कल दूसर धनुष सुधारा ॥ पुनि लव चाप सहित रथ खण्डा। तब पुष्कल पैदर रणमण्डा ॥ करैं परस्पर युद्ध अपारा। लव पुष्कल दोउ समर जुझारा ॥ उभै धनुर्द्धर वीर प्रचण्डा। करैंयुगुल अरि अस्त्रन खण्डा ॥ देहन भेदि बाण वहि पारा। गिरैं चलै तब रुधिर पनारा ॥ तबबिकराल बाण लवसाधा। बलकरि भरत सुवन उर बाधा ॥ ८२ ॥

दोहा ॥

मूर्छि गिरे पुष्कल सुभट देखि पवन सुत धाइ ।
अङ्क लाइ शत्रुहन पहं तुरतै गये लवाइ ॥ ८३ ॥

चौपाई ॥

लखिरिपुहन उरशोक बढ़ायो । लववधहित हनुमतहि पठायो ॥ कोपि पवन सुत विटप उपारा । कुशअनुजहि लखि कीन्ह प्रहारा ॥ अति सत्वर लव चाप चढ़ाई । सरन खण्डितरु दीन्हगिराई ॥ अपर वृक्ष बहु हनुमतमारे । सरनकाटि लव अवनि पवारे ॥ तबविशाल गिरि एकउपारा । लवसिर परहठि कीन्ह प्रहारा ॥ सिया सूनुसो तिल तिल काटा । सरन मारि मारग महि पाटा ॥ तब हनुमान कोप अतिकीन्हा । लवहि लपेटिपूंछसों लीन्हा ॥ पूंछमध्यलवविकल कदम्बा । सुमिरेउ हृदय जानकी अम्बा ॥ तब लव पवि सम मुष्टि प्रहारा । छांड़ा कपिलहि विथा अपारा ॥ बहुरि कराल बाण लव मारा । मुर्छि गिरे महि पवन कुमारा ॥ ८४ ॥

दोहा ॥

तब रिपुहन निजसैन लखि मुर्छित निपट ब्यहाल ।
मणिमै रथ आरूढ़ ह्वै लवहि लखा तेहिकाल ॥ ८५ ॥

प्रज्वलिया ॥

एकवार प्रथमै शत्रुहन लवनासुरै रण मारि । मुनि बालमीक निकेतनिकटहि बसे निशा निहारि ॥ बहुभांति आदर कीन्हऋषि फलकन्द मूल खवाइ । तेहि समय सीता सुवन युगल प्रसूत कथा सुनाय ॥ ८६ ॥

चौपाई ॥

नील कमल दल दुति अभिरामा । मानहुं अपर रूपधरि रामा ॥ करवर बान सरासन सोहै । रनमंडल बिचरत मनमोहै ॥ सिया-सूनुजाना मनमाहीं । इनहिंजीति मोहिंशोभानाहीं ॥ पूछाकोतुम बालक अहहू । निजपितु मातु नाम मोहिं कहहू ॥ तिनसमभाग्य-वान नहिंकोई । तुम अस सुवन लहा जिन सोई ॥ रामराज राजेंद्र खरारी । जगविख्यात जासु यशभारी ॥ तासु अश्व बांध्यौ अनजाना । छांड़ौ त्यहि हम छमब अयाना ॥ चलौ मिलौ तुमहूं रघुराई । देहैं

विपुल राज्य मनभाई ॥ कह लव करौ हमहिं संग्रामा । तुम्हैं कहा यश कुल पितु नामा ॥ रामबंधु तुमअति बलवीरा । कीनौ ह्यकरि रण गंभीरा ॥ ८७ ॥

चामर ॥

जानकी कुमार चापवान तीव्र साजिकै । शत्रुहै प्रहारि आजि मध्यवीर गाजिकै ॥ कोपि भूपह्न सरासनै सरै करालकै । ताकिकै हनाहिये प्रचारि सीय बालकै ॥ ८८ ॥

नराच ॥

लवो बिलोकि तीव्रबान आवतै खकाटिकै । अपारबान अन्यवर्षि व्योम भूमि पाटिकै ॥ नराच पिंजरै प्रवेशि बूतहै न बातकै । सहस्र बानसाधि शत्रु अश्व सर्व घातकै ॥ ८९ ॥ लवो समस्त आपने नराच भग्न जानि कै । महीप चाप खंडिकै निसीत बानतानिकै ॥ सशीघ्र अन्य कार्मुकै रिपुं प्रभंजनो लियो । सियातनै रथौ समेत नाशता- हिको कियो ॥ ९० ॥

दोहा ॥

कै औरथ चढ़िशत्रुहन हाथ सरासन लीन्ह ।
अति लाघव लव सरनसों भंगतुरततै कीन्ह ॥ ९१ ॥

चौपाई ॥

तबलव चारि नराच चलायो । नृपतन कवचऊ मुकुट गिरायो ॥ महाघोर रणबरणिनजाई । जो लखिदेवन विस्मयपाई ॥ अर्द्धचंद्रसर हति लववीरा । मूर्छिगिरे रिपुहन रणधीरा ॥ देखिसुरथ धायो त- तकाला । अपर वीरमणि बिमल भुवाला ॥ सुमद सुबाहुआदि बल- वाना । कियो युद्ध नहिंजाइ बखाना ॥ तिनहिं सबहि लवसमर सं- हारा । परे अवनि सुरथादि भुवारा ॥ तेहि औसर रिपुहन रन- जागे । लवसों आइ बचन पुनिबागे ॥ धन्यधन्य तुमसम भट नाहीं । जिनमोहिं मुरछित करि रनमाहीं ॥ अब सचेत ह्वैकर धनुलेहू । सहोमोर सरतीक्षण येहू ॥ असकहि सर लवनासुर घाती । कठिन हना लवकी तकिछाती ॥ ९२ ॥

दोहा ॥

कुशहि सुमिरि सरलागतहि मुरछित भयो बनाइ ।
रथपर धरि शत्रुहनन्टप गवने लवहिं लवाइ ९३ ॥

चौपाई ॥

बहुरि छोराइ लीन्ह मख बाजी । चले शत्रुहन निज दलसाजी ॥ यहां विप्र बालक गृह आयो । सीता सों रण कथा सुनायो ॥ एक भूपसंग दल अति भारी । आगे मख हय अतिसुखकारी ॥ सोमख अश्व बांधि लवलीन्हा । हम सब मिलि तब बरजन कीन्हा ॥ नहिं मान्यौ बहु भांति सिखायो । तब लगि भूप कटक चलि आयो ॥ भयो युद्ध हय हेत अपारा । लवसबभूप कटक संहारा ॥ मुरछागत भूपति जब जागा । लवसों युद्ध करन पुनिलागा ॥ लवहि मारि रथ धरि लैगयऊ । सुनि सीता मन अति दुखभयऊ ॥ करै विलापलेत लव नामा । कुशहि सुमिरि सीता परिनामा ॥ कुश उज्जैन गयोते-हिबारा । महाकाल पूजा अनुसारा ॥ ९४ ॥

दोहा ॥

पाइ रुचिरबर आइ गृह दीख जानकी मात ।
पुत्र शोक सन्तप्त अति परी अवनि अकुलात ॥ ९५ ॥

रूपमाला ॥

केहिहेतु जननी शोकवस किनकहौ मोहिं समुझाइ । जेहिभांति तेसुख पाइहौ करिसकौं तौन उपाइ ॥ कुशवैन सुनिसिय नैनखोले लवकथा सबगाइ । सुनतै अरुण दृग भुज फरकि रिस बीरता उर आइ ॥ हेमातु यहिक्षन लाइहौं मैं लवहि शत्रुन मारि । नर बापुरे की काकथा बधिसकौं यमहि प्रचारि ॥ अस भाखि सजिसर त्रान कवच अभेद कटिकर बाल । तुन्नीर अक्षय तीर चापहि गहि गये जनुकाल ॥ ९६ ॥

नराच ॥

पदारबिंद मातु के प्रणम्यलै असीसही । तुरंतही विलोकि जाइ शत्रुहा महीशही ॥ प्रहारि बाण वृष्टि सैन्य व्याकुली कियो महा । घुमाइ स्यंदनौ न्पपौ कुशं निहारि कै कहा ॥ ९७ ॥

चामर ॥

कौनहौ महाबली बिराज विप्रवृंदमें । अस्त्र शस्त्रवित् अपारदक्ष द्वंदयुद्ध में ॥ मातुतात को तुम्हार नामआपनो कहौ । अश्वबांधियो कहाकहा पदार्थ कोचहौ ॥ ९८ ॥ मैथिलेश की सुतासिया पतिव्र-

तामहा। तासु पुत्रहै कुशंलवं खनाम है कहा॥ बांचि पत्र छत्र धर्म जानि बांधि राखेऊ। लेनहेतु जै तुम्है सुबीर युद्ध कांधेऊ॥ ९९॥

चौपाई॥

तब शत्रुहन जानि मनमाहीं। येसीता सुत संशय नाहीं॥ अति बिसमय मनलहि रिपुहंता। सद्यसरासन करि गुनवंता॥ निसित विपुल सरकीन्ह प्रहारा। कुशनिज सरनभंजि महिडारा॥ कुश श-त्रुहन समर अतिघोरा। छाये नभमहि शरचहुं ओरा॥ बायु अस्त्र कुशन्नृपहि चलावा। रण सरहति न्नृपकटकबचावा॥ बज्रबाणकुश भूपहिमारा। निजसरते न्नृपताहि नेवारा॥ पुनिकुश नारायण शर मारा। रामनाम रिपुहनहिं उबारा॥ यहि बिधि भयो महा रण घोरा। कुश शत्रुहन दोउ बरजोरा॥ तब सिय चरण ध्यान कुश कीन्हा। अतिकराल सायक करलीन्हा॥ साधिचापकीन्हो उरघाता। लागत रिपुहन भये निपाता॥ १००॥

पज्झटिका।

रिपुहन मुरछित लखि सुरथ बीर। आयो समीप कुश सुभटतीर॥ देखत सीतासुत बाणलीन्ह। भूपहि तुरत रथहीन कीन्ह॥ बहु अस्त्र शस्त्र जै चलाइ। कुशसरन मारि दीन्हे गिराइ॥ भयोरोमहर्ष अति तुमलयुद्ध। जानकी तनै सुरथहि प्रक्रुद्ध॥ कुश कालानल सम बाण मारि। भूपहि मुरछित महिदीन्ह डारि॥ लखिसुरथ समन मारुत कुमार। धायोतरुलै अति बलअगार॥ देखत सत्वर कुशसरसंधानि। करते गिराइतरु भूमिभानि॥ संहार अस्त्रपुनि कुशप्रहार। गिरे तुरत मुरछि मारुत कुमार॥ अरुअपर सैन्यसब सरनमारि। मुरछित करि सुभटन भूमिपारि॥ लखिमहत करम कपि पति रिसाइ। कुश हृदयहना लांगूल आइ॥ तब लव अग्रज उर क्रोध पाइ। बसु बाण बेधिकपि पतिहि आइ॥ सरपीडित कपिपति तरुउखारि। कुशपर प्रहारिउर कोपधारि॥ पुनि बरुणबाण कुशचाप साधि। सुग्रीवै लै रनमध्य बांधि॥ यहि भांति शत्रुबल सकल तोरि। तबजाइ बंधुबंध-नहिं छोरि॥ १॥

दोहा॥

मिले परस्पर बंधुद्वौ हर्षनहृदय समाइ।
निरखत द्वतउत समरमहि विजइन तेजअपाइ॥ २॥

छप्पै ॥

तेहि औसर कौवीर जाइ रण अवनि निहारी। सुरथकीट मणि रुचिरताहि लवलीन्ह उतारी॥ रिपुहन अंगदछोरि पुष्कलै मुकुटहि लीन्हा। अस्त्रविशेष उठाइ आपने तरकस कीन्हा॥ सुग्रीव प्रभंजन सुवनको पूछ पकरि गवनत भयो। अतिभक्ति कुशल कुशलव सहित जननीके चरणन नयो॥ ३॥ निरखि जानकी उभै सुवन शिर सूंघि गोद धरि। परसि पानि मृदु गात दुकुन सत्वर श्रम करि॥ बहुरि चीन्हि हनुमान सहित बंधन कपि राजहि। अध मुख नैनन नीर गड़त जनु लाज समाजहि॥ सुत मुंच शीघ्र सुग्रीव ये सर्ब कपिन के कंतहैं। ममहेत लंकगढ़ दहा इन महाबीर हनुमंतहैं॥ ४॥

दोहा ॥

केहि हित इन्हैं प्रहारि कै धरि लायो मम पास।
कीन्हों केहितुम भूपतिहि सैन सहित रणनास॥ ५॥

रूपमाला ॥

मषबाजि सिर सजि पत्र लिखि निज बीरता श्री राम। कोउ सूर जो यहि बांधितेहि रिपुहन हनै संग्राम॥ सो मैं निरखि मुनिकुटी तट तरु मूल बांध्यौं आइ। तेहि हेत रामानुज कटक सह कीन्ह रण अति आइ॥ कुश सरन सों सब मंहिपरे कपि लाइ कौतुक हेत। लव बचन सुनि लाघव सिया महि परी मुरछि अचेत॥ हा तातकीन्ह कुकर्म तुम निज कुल कटक संहारि। केहि भांति निरदै ते बचौ काकिन सोहाग निवारि॥ सुनि सिय वचन कुश लवो भे अति दीन विह्वल गात। रघुवंश में अवतंस मोहिं कबहुं न बतायो मात॥ तुम पढ़े रामायण सकल मैं कहौं किमि समुझाइ। रघुवीर सुतबिन औरको शत्रुहन तेजय पाइ॥ अस भाखिसीता सुवनलै सुग्रीव मारुतनंद। रणभूमिजाइ विलोकि यो परे वृंद सुभट निकंद॥ तबसुमिरि जानकि जक्तपति श्रीरामपद मनलाइ। निष्कपट तौतुरतै जियै यह सैनसब सुखपाइ॥ ६॥

दोहा॥

सीताजूके कहतहो सैन्यजिई ततकाल।
अस्त्रसकल भूषण मुकुटमख हयदै तेहिकाल॥ ७॥

प्रज्वलिया॥

लखि सूरता अति सिसुनकी शत्रुहन विसमथ आनि। सबवीर मणि सुरथादि भूपन ग्लानिमानि बखानि॥ पुनि साजि दलचतुरंग मणिमै रथनह्वै असवार। मखअश्व सहकारि यतन सुरसरि उतरि आयोपार॥ यहिभांति सैनसमेत निजपुर निरखि अवध अनूप। कलधौतमणि मै महल सब अमरावती अनरूप॥ यहबात सुनिरघुनाथ पुष्कल लेघ बाजि समेत। संयुक्तदल शत्रुहन आये अवध नगर उपेत॥ ८॥

हरगीतिका॥

तब हरषि राम सुजान लक्ष्मण बोलि कह तुलजाइये। सनमान करिन्टप नीतिसों ममनिकट अनुगहि लाइये॥ तेजाइ साजिसमाज बंधुहि भेटिअति सुख पायऊ। अरु अपर भूपन साथलै रघुवंशमणि पहँआयऊ॥ लखि न्टपन आवत अनुज आवत राम उठि मिलिबे चहा। तबलगि सुमित्रानंद सत्वर स्वामिपद पंकज गहा॥ भुजभरि उठाइ कृपानिधान सनेहसों उरलाइकै। करकमल परसि शरीर आव्हणकियो अति सुखपाइकै॥ यहिभांति पुष्कलहू मिलेहनुमंत पुनि कपिनायकं। अंगद समेत बिनीत अति सनमान करि रघुनायकं॥ अरुअपर लक्ष्मीनिधि सरिसभूपाल सब पायनपरे। न्टपवीर मणिविमलादि सुरथ सुबाहु सुमदहि उरभरे॥ ९॥

कुण्डलिया॥

प्रतापाग्र रिपुवारनौ सत्यवान सेवीर। हरिपद पावन परसिकै मानलहागम्भीर॥ मानलहा गंभीर सुमतिसंगी मिलिराजहि। पूंछे तेसब कहा अजानत भूप समाजहि॥ पूछे ते तबकहा यशाहयजिन करिदापा। लीन्ह शत्रुहन जीतितिन्है तवचरण प्रतापा॥ १०॥

दोहा॥

शिवसेवक न्टपवीरमणि तवपद बारिज भृंग।
सुरथचरित आयो निरखि जानौसकल प्रसंग॥ ११॥

चौपाई॥

अपरचरित अबसुनो महीपा। बालमीक मुनिकुटी समीपा॥ तहँ शिसुयक तवबपु अनुहारी। बयदश बरष बान धनुधारी॥ पत्रबांचि

हयतरु तेहिबांधा । साजि सरासन हठिरन कांधा ॥ पुष्कलादि सब कटक संहारा । रहानतेहि संग समर जुझारा ॥ मुरछागत जागे रिपुहंता । महाकष्ट तेहिमुरछि तुरंता ॥ रथ धरितांहि लीन्ह मख बाजी । चले शत्रुहंता दलसाजी ॥ तबदूसर बालक यकआवा । सब सैनभट अवनि गिरावा ॥ भूषण हय कपीस हनुमंतै । बांधि भवन निजगये तुरंतै ॥ पुनिकरि कृपाकपिन द्वौछोरा । भूषन सहितदीन्ह मख घोरा ॥ ज्याइ कटक पुनि गे निज धामा । अस कौतुक तहं भा श्रीरामा ॥ १२ ॥

कुंडलिया ॥

सुमति बचन प्रभु सुनतही पुत्रआपने जानि । बालमीक सों पूछि तब को शिशु कहौ बखानि ॥ को शिशु कहौ बखानि जौन मम तुल्य सरूपा । विद्याबल समुदाइ धनुर्द्धर परम अनूपा ॥ विद्याबल समुदाइ शत्रुहन हनुमतसे अति । सैन सहित जिनमारि तिन्हैं मोहिं कहौ उग्रमति ॥ १३ ॥

तोमर ॥

सुनुरामबुद्धिनिधान । तुमसों नचै पुरआन ॥ बरनौं यथाममबुद्ध । तुमत्यागि सीतहि शुद्ध ॥ बनरोवती कुररीव । दुखभार चित्त अतीव ॥ सुनि आर्त बैन बिशाल । गृह लैगयों ततकाल ॥ अवधेश रानिहिं जानि । प्रतिपालि पुत्रिहि मानि ॥ तिन पुत्रजाय अनूप । जिनसों न है सुरूप ॥ १४ ॥

दोहा ॥

जात कर्म मैं कीन्ह सबयथा वंश व्यौहार ।
प्रौढ़ भये विद्या सिखय सांगोपांग अपार ॥ १५ ॥

चौपाई ॥

वेद व्याकरण आयु विचारा । सर्बशास्त्र धनु विद्यासारा ॥ जालंधरि बिद्या सांगीता । गान कुशल द्वौबंधु पुनीता ॥ ज्ञान भविष्य योगगति जानैं । रामायण तव सुयश बखानैं ॥ स्वरगंधार खर्जमध्यमगति । पणव मृदंगबजाव वीन अति ॥ तिन्हैंदीन्ह सबशस्त्र बिशेषा । अरि दल दलि सकैं छनहिं अशेषा ॥ बिद्याबल प्रताप अधिकारे । निरखि जिन्हैं दिशिपाल सुखारे ॥ अति संतोष जितेंद्रिय भूरी ॥

सब गुणनिधि जिन तनरहे पूरी ॥ मातुचरण सेवक द्वौभाई । जिनते सिद्धिनहु सिधिपाई ॥ तुम भगवान भगवती सीता । जक्त जननि सब भांति पुनीता ॥ और कहांलगु करौं बखाना । तवदल जिन ज्यायो जगजाना ॥ १६ ॥

दोहा ॥

वीरप्रसूता जानकी पतिव्रता शुचिधाम ।
तेहिमहिमा देवन अगम त्यागयोग नहिंराम ॥ १७ ॥

चौपाई ॥

करौ राम सुत अंगीकारा । विद्याबल गुनशील अगारा ॥ जिन सम लोकपाल कोउनाहीं । और भूपकेहि लेखेमाहीं ॥ तुमसमानसब भांति सुहाये । कोटिकाम छबि जिनहिं लजाये ॥ मान सहित बोलिय सुतदोई । पैबिन मातुन ऐहैंसोई ॥ तातेसीता सहित कृपाला । आनिभवन यशलेउ विशाला ॥ अनृत बचन कहौं नहिंगाई । सीता सदाशुद्ध रघुराई ॥ सुनिसुनि गिरा गरब जियजाना । लक्ष्मणसों कह कृपा निधाना ॥ स्यंदनलै अब तुम चलि जैये । सुतन समेत सियहि लैऐये ॥ गयेलषण प्रभु आयसु पाई । बालमीक आश्रम हरषाई ॥ रथते उतरि अवनि पगदीन्हा । सीतहि जाइदंडवत कीन्हा ॥ १८ ॥

रूपमाला ॥

लखिसिया लषणहिं करकमल सिरपरसि तुरत उठाइ । आशीस दैपूंछीकुशल सहअनुज औरघुराइ ॥ ममसुरति कबहुं करतकोऊ । कौशिलादिक मात । तुमआइयो इतकौनहित मोहिं कहिसुनावो बात ॥ कुशलात सब तुम बिना रघुपति रहत निशि दिन दीन । अति राजसुक्ख समेत तनहूं आपु मुनिव्रतलीन ॥ मोहिंपठै तुमहिं बोलाइबे चलिकरौ निजपुर राज । सुत संहित औरघुवंशमणि कहं होइ सुक्ख समाज ॥ १९ ॥

चौपाई ॥

भरत शत्रुहन कह्यौ प्रणामा । दीन्ह अशीश गुरू गुरु बामा ॥ कौशिल्यादिक मातु घनेरी । कहा अशीश तुम्हैं बहुतेरी ॥ रथचढ़ि भूषण बसन बनाई । कुश लव गजनचढ़ैं हरषाई ॥ कुण्डलक्रीट छत्र शिर राजैं । चमर ढुरै भट बहुं दिशि भ्राजैं ॥ यहि विधिचलि रघु-

राजहि भेंटौ । लहौ सुयश दुखमन कर मेटौ ॥ सुनि लक्ष्मण के वचन बिनीता । नयननीर भरि बोली सीता ॥ मैं नहिं नेक सुयशके लायक । दोषसमुझि परि हरि रघुनायक ॥ तबते पानि गहन की सूरति । सदारहैं निज हृदय बिसूरति ॥ बैयश निधि मोकहं गृह लैहैं । बहुरि जन्ममहं सो कह पैहैं ॥ तातेतनै आपने लेहीं । मोहिं बिपिनि तपसाधन देहीं ॥ २० ॥

दोहा ॥

सूर शिरोमणि धनुर्द्धर विद्या बल आगार ।
लालति रहियो इन्है अति अंकुरे वंश तुम्हार ॥ २१ ॥

चौपाई ॥

असकहि सुतनसिखायो सीता । भजौजाइ निज पितहि पुनीता ॥ सिय आयसु अशीश बरपायो । लक्ष्मण संगदोउ सुवन सिधायो ॥ प्रथमहिं अवध आइ मुनिपाई । परेलषण सह कुश द्वौ भाई ॥ बालमीक आशीश सुनाई । गये लवाइ जहां रघुराई ॥ लक्ष्मण राम चरण शिर नावा । सीताकर संदेश सुनावा ॥ सुनतहि मुर्छि गिरे रघुराई । उठेअनुज जबकीन्ह उपाई ॥ पुनि लक्ष्मणहिं कहारघुराई । लावहु सीयहि करि चतुराई ॥ कहिये जाइसंदेश हमारा । निज इच्छा उन बन पगधारा ॥ पूजन मुनि मुनिवधू सोहाई । गई बिपिनि मणिवसन भराई ॥ पूजि मनोरथ निजगृह आवो । पति आयसु किमि प्रिया मिटावो ॥ २२ ॥

दोहा ॥

याग योग जप दान ब्रत तीरथादि फल जौन ।
पति सेवा तिय लहैसो तोषै सुर शिवतौन ॥ २३ ॥

चौपाई ॥

कहियो जाइ संदेश हमारा । मम तोषन भल होइ तुम्हारा ॥ सुनि लक्ष्मण प्रभु पद शिरनायो । चढ़िरथ जनक सुता पहंधायो ॥ बालमीक शुभ अवसर जानी । कुश लवसों बोले मृदु बानी ॥ तात करौ रामायण गाना । स्वर संयुक्त बीन गति नाना ॥ सुनि आयसु दोउ बंधु सुहाये । बीन बजाइ मधुर सुरगाये ॥ सुनतगान मोहे नर नारी । रामादिक तनदशा बिसारी ॥ दिविदेवता बिमानन छाये ।

किन्नरादि मुर्छित सहिआये ॥ रविशशि सहित पवनगति हारी । भये अचेत अपर तन धारी ॥ लखिहौ सुवन राम सुख पावा । देन खरन द्वै कोटि मंगावा ॥ तबकुशलव माखेमनमाहीं । विहसि वचन बोले मुनि पाहीं ॥ २४ ॥

तोमर ॥

यह भूप होत अयान । मोहिं दीन्ह चाहत दान ॥ अस विप्रनै अधिकार । लहै क्षत्रिपाप अपार ॥ ममदीन्ह भोगत राज । तबहूं न लागतलाज ॥ सुनिबैन परमकठोर । ऋषिबर्जि सीय किशोर ॥ तुम्हरे पिता यइ राम । जनि बात भाषहु वाम ॥ सुनि बंधुहौ सुखपाइ । परसा पिता पद धाइ ॥ २५ ॥

दोहा ॥

रघुनंदन निज सुतन तव हर्षिहृदय भरि लीन्ह ।
मानो सीता पतिव्रत प्रकट उपस्थित चीन्ह ॥ २६ ॥

चामर ॥

जानकी बिलोकि लक्ष्मणौपि पाद बंदिकै । रामचन्द्रको संदेशहू कहा अनन्दिकै ॥ बेगि मातु यानपै सवार ह्वै अबै चलो । भूप को तुम्हैबिना न लागतो कछू भलो ॥ २७ ॥ सीतहू कहा बहोरि कौनि भांतिजाइये । त्यागि मोहिं काननौपि नाथकीर्ति गाइये ॥ लक्ष्मणौ कहा तुम्है सुधर्म रीति जानती । नाह दोषको पतिव्रता चियान मानती ॥ २८ ॥

चौपाई ॥

लषण वचनसुनि सिय सकुचानी । अवधआइबे मति उर आनी ॥ वंदि तापसिन मुनिपद जाई । विदामांगि अतिप्रेम बढ़ाई ॥ भूषण सजि रथचढ़ि हरषाई । सुमिरत रामचरण सुख दाई ॥ सरयू सरि समीप मष शाला । मुनिन सहित आसीन कृपाला ॥ रथते उतरि लक्ष्मण साथा । हरिपदकमलन नायोमाथा ॥ हर्षि वचनबोले रघुराई । सफल यज्ञ मम जो सियआई ॥ बालमीक पद बंद्यो सीता । अपर मुनिन शिर नाइ बिनीता ॥ मिलीसकल सासुन बैदेही ॥ परसत चरण भाव अतिजेही ॥ देतअशीश मुदित सब सासू । पतिपुत्रन सह रहौ हुलासू ॥ भरत शत्रुहन सिय पदबंदे । लहि अशीशउर भये अनंदे ॥ २९ ॥

दोहा ॥

सुनि अगस्त्य मन मुदित तब सुबरण पुतरी टारि।
प्रभु समीप शोभित कियो सीतहि राम विचारि ॥ ३० ॥

नराच ॥

विदेहजै समुन रामचन्द्र तीर देखिकै। अनन्द मातु भ्रात विप्र-वृन्दभे विशेषिकै ॥ तहां गुरू सुमंतसों कृपाल बैनयोंकहा। बताइये हमैं अबै जो होन यज्ञमें रहा ॥ ३१ ॥

हरगीतिका ॥

सुनि राम वचन वशिष्ठमुनि पुनिकहा रामकृपानिधे। अबविप्रनै-सन्तोषिये सनमान दानन सर्वविधे ॥ तब भूप परम सुजान सुबरण रत्न विपुल मगाइकै। प्रथमै गुरूपद पूजि विधिवत भक्ति भूरिबढ़ाइकै ॥ पुनि कुम्भजै पत्नी सहित व्यासादि च्यमनादिक सबै। ऋत्विजन दीन्हा लक्ष लक्ष सुबरण एकन प्रतितबै ॥ भूषण बसन गो ग्राम गज अजगन कहांलौं कोकहै। सबदीन धनपति समकिये लखि देव विसमय मनलहै ॥ ३२ ॥

छप्पै ॥

तब अगस्त्य मनहर्षि दीन्हआयसु रघुबीरै। चौंसठि नृपसहरानि लाव सरयूबरनीरै ॥ सुनत रामसिय भरत लषण पुष्कल रिपुहन्ता। सुरथ बीरमणि सुभुज सुमदसे नृप बलवन्ता ॥ प्रतापाग्र उग्रासुसे नीलरत्न कपिपति विमल। सहबाम स्वर्णघट लै चले लक्ष्मी निधि से लेन जल ॥ ३३ ॥

चौपाई ॥

पढ़ैं मंत्र बशिष्ठ अभिरामा। सरयू जल नृप भरैं सबामा ॥ मख बाजिहि अन्हवावहिं आई। रानिन सहित भूप समुदाई ॥ मंत्रित करै अगस्त्य मुनीशा। परसे निज कर हय कच शीशा ॥ तेरे तन तिष्ठित सब देवा। ह्वै प्रसन्न देखिय यहसेवा ॥ बाजी सह मोहिं करौ पुनीता। कहैं वचन अस रघुबर सीता ॥ यह सुनि सकलभूप मुनि मोहैं। ऐसेवचन प्रभुहि किमि सोहैं ॥ जासुनाम पावक अनु-हारै। कोटिजन्म अघ सुमिरत जारै ॥ मंत्रित कुम्भज कीन्हकृपाना। लीन्हसो करवर राम सुजाना ॥ जब प्रभुसों हयशीश छुवावा। पशु

ले दिव्य रूप तेहि पावा ॥ देखि सबहि विस्मय भै भारी । पूछा तेहिसों तबहिं खरारी ॥ ३४ ॥

दोहा ॥

को तुम हय तनते रहे अब पायो सुर रूप ।
मोहिं सुनावो चरित सब कौतुक परम अनूप ॥ ३५ ॥

चौपाई ॥

तुम सरवज्ञ नाथ सब जानौ । पूछातब तुमसहुं बखानौ ॥ मैं ब्राह्मण सरयू असनाना । करि सुरपितरन दै जलदाना ॥ तहां विपुल नरभूपति आये । तिनहिं देखिमै दंभ बढ़ाये ॥ चित्रितवसन चहुं दिशितानी । अग्निहोत्रमख तेहिबिचठानी ॥ दुर्वासाऋषि तहंचलि आये । देखा मोहिं बक ध्यान लगाये ॥ मैं सुनि कर स्वागत नहिं कीन्हा । दंभ विचारि शाप मोहिं दीन्हा ॥ सरयूतटतैं दंभ बढ़ाई । होसिजाइ परबस पशुजाई ॥ सुनत शाप परस्यौं सुनि चरणा । करौ अनुग्रह तब मैं शरणा ॥ तब मुनिकहा राम मख घोरा । होसिजाइ मिटिहै दुख तोरा ॥ सो सब भयो नाथ मनभावा । तव करते दुर्लभ गति पावा ॥ ३६ ॥

दोहा ॥

अस कहि आयसु मांगि परि पाइ प्रदच्छिण दीन्ह ।
चढ़ि बिमान धरि विष्णुवपु बास विष्णुपुर कीन्ह ॥ ३७ ॥

चौपाई ॥

यहचरित्र लखिमुनि सबकाना । रामहिं मुनिन ब्रह्म करिमाना ॥ विस्मय सहित परस्पर गाये । पावा हरिपद कपट बढ़ाये ॥ जोसप्रेम रामहिं मन लावै । सो सायोज्यमुक्ति फलपावै ॥ तब गुरुसन पूछा रघुराई । यज्ञ शेष सब देउ बताई ॥ जेहि विधि तृप्त देव समुदाई । होइ तौन मैं करौं उपाई ॥ सुनि प्रभु वचन गुरू सुखपावा । शेष यज्ञ विधिवत करवावा ॥ करि आवाहन देव बोलाये । ब्रह्मा हरि शिवआदिक आये ॥ पतिन सह कुटुम्ब संगलीन्हे । रामतिनहिं बर आसन दीन्हे ॥ विधिवत पूजि दीन्ह मख भागा । खातहव्य

सुर अति अनुरागा । यज्ञ भाग सब देवन पायो । अतिप्रसन्न निज पुरन सिधायो ॥ ३८ ॥

रूपमाला ॥

पुनि विप्रवृन्द बोलाइ रघुबर छ रस असन जेंवाइ । दियो दक्षिणा रुक्मादि रतन अशीश अभिमत पाइ ॥ तब कीन्ह पूर्णाहुति मुनी-श्वन कहै मनहरषाइ । बरषै सुबासिनि सुमनवर सियरामपर समुदाइ ॥ अरु अपर हरदी कुंकुमादि सुगंध मण्डितरंग । छिरकतचलै सरयू निकटलै भूप कोटिन संग ॥ नाचत मुदित मन अप्सरा गन्धर्व किन्नर गान । बाजत मृदंगादिकन गति सहनाइ शंख निसान ॥ यहिभांति सीता राम मुनिगण भूपगण सब साथ । रानिन सहित यज्ञांत मज्जत पुण्य सरयू पाथ ॥ छिरकैं परस्पर विमल जल क्रीड़त अनेक प्रकार । शोभा समाज प्रमोद अनुपम कहै कौन अपार ॥ यहिभांति सहित विदेहजा प्रभु तीनि हयमख कीन्ह । दैदान कोटिन जक्तमें यश देव दुर्लभ लीन्ह ॥ यह शेष बात्सायन मुनीशहि बरणि कथा अनूप । जो सुनै गावै प्रेम सो नहिं परै सो भव कूप ॥ ३९ ॥

चौपाई ॥

अश्वमेध प्रभु सुनै जोगावै । सोनर भुक्तिमुक्तिवर पावै ॥ गो द्विज अघछूटै तत काला । अपर पापसब कटैं कराला ॥ सुनैअपुत्री पुत्रन पावै । जो कुलदीपक कीर्तिबढ़ावै ॥ अधनी धनपावै समुदाई । रोगिन रोग शोक मिटिजाई ॥ बंधुवा बंध मुंचि सुख पावै । जो यह राम अश्वमख गावै ॥ जनम मरनसंकृत दुखभारी । छूटि मोक्षगति लहै सुखारी ॥ सियाराम यश जेहि प्रिय लागी । सुरदुर्लभपद तौन विभागी ॥ सुवरण प्रतिमाकरि सियरामा । बसनआभरणरचि अभिरामा ॥ दम्पति द्विजहि प्रीति सों देई । तीनिउ लोकदान फललेई ॥ रामनाम जो नर अनुरागै । त्यहि सम धन्य विरंचिन लागै ॥ ४० ॥

दोहा ॥

ईश्वरी रघुबर नाम जो सुमिरै करि विश्वास ।
सत्य सत्य भवतरै सो बिनतप मख अनयास ॥ ४१ ॥
यज्ञांते जनकात्मजा धरती गई समाइ ।
पुत्रन दीन्हा राज सुख भोग तजा रघुराइ ॥ ४२ ॥

चौपाई ॥

गिरिजै सकल कथा हरगाई । कीन्ह जो अपर चरित रघुराई ॥ आत्म निरूपत बैठ एकांते । ध्यान निरत निशिदिन मन शांते ॥ एक समय कौशल्या रानी । रामहिं परब्रह्म पहिचानी ॥ आइ भक्तियुत वचन सुनावा । परमातमा तुमहिं श्रुति गावा ॥ नहिं तव आदि मध्य अवसाना । शिव ब्रह्मादि जनक जगजाना ॥ सो मम पुण्यप्रभाव अपारा । जेठरजासु हरि धरि अवतारा ॥ अब उपदेश मोहिं सो दीजै । भवबन्धन छूटै सो कीजै ॥ सुनिकृपाल कौशल्याबानी । जननी जानि दयाउर आनी ॥ माता सों नपरै भव कूपा । करम भक्ति जो ज्ञान निरूपा ॥ सबते भक्ति मोहिं अति प्यारी । चारि प्रकार भक्त अधिकारी ॥ तामस राजस सात्विक नीके । भेद बखानि कहौं सब-हीके ॥ ४३ ॥

दोहा ॥

तामस भक्तचहै सदानिज शत्रुनको नाश ।

यशधन पुत्रकलत्र सुखराजस भोग विलास ॥ ४४ ॥

चौपाई ॥

सात्विक जगसब हरिमय जानै । भेदबुद्धि कछुमनहिं न आनै ॥ भजैमोहिं सबकाम बिहाई । मन क्रम बचन सप्रीति दृढ़ाई ॥ षट विकारते सदा विरागी । संतत मम चरणन अनुरागी ॥ जे वेदांत बचन अधिकारी । सतसंगति ममकथा पियारी ॥ तिनहिंदेउं कैवल्य अनूपा । निजसा लोक्य समीप सरूपा ॥ ममसेवा तजि सोपिन चाहैं । तेमोहिं भक्तपियार सदाहैं ॥ ममसुमिरन दरशन बंदनवर । पूजा अस्तुतिकरै प्रेमपर ॥ करम ज्ञानतेसुनु महतारी । सबतेभक्ति सुलभ अधिकारी ॥ करैयज्ञ आदिक जेकरमै । लहैस्वर्ग सुखते नर-परमै ॥ आत्मबिचार सोज्ञान कहावै । जोनिबहै तौपरंपद पावै ४५ ॥

दोहा ॥

ज्यौंसुगन्ध वहैवायु बस गहैप्रान सबलोग ।

मोहिंमिलै करिकर्म त्यौं ज्ञानभक्ति संयोग ॥ ४६ ॥

चौपाई ॥

मोर अंशसब जीवन जानै । जीव आत्मा मोहिं पहिचानै ॥ ताते

भेदन काउहि आनै। समताकरै ईशमय जानै ॥ यहिप्रकार मम-भक्त सुभाऊ। भजैमोहिं संतत चितचाऊ ॥ तुममोहिं मातुपुत्र करि जाना। सेयोसदा यथानिजप्राना ॥ योगभक्ति यह दृढ़उरतोरे। पैहौमोक्ष अनुग्रह मोरे ॥ सुनि असबचन परम सुखपावा। कौशल्या हरिपद मनलावा ॥ रामहिं सुमिरि तजानिज देहा। लहापरंपद सहित सनेहा ॥ भक्ति योग हरि मुखहि पवित्रा। सुना अपर केकई सुमित्रा ॥ गाइविमल यशधरि उररामहिं। तनतजि मिली पतिहि सुरधामहिं ॥ रामराज्य नररामहिं ध्यावै। तनतजि सकल परंपद पावै ॥ ४७ ॥

दोहा ॥

यहिप्रकार हरियश विमल गाइतरै नरनारि।
अपर चरित्र पवित्र अतिसुनु गिरिराज कुमारि ॥ ४८ ॥

चौपाई ॥

विधिआयसु ऋषिवर वपुधारे। आयो अवधकाल प्रभुद्वारे ॥ लक्ष्मणसोंकहि गिरा सोहाई। मोहिं श्रीरामहिंदेउ मिलाई ॥ लषण जाइ प्रभुपद सिरनावा। ऋषि बर कर आगमन सुनावा ॥ तबअनुजहि कहकृपा निधाना। लाइय ऋषिहि सहित सनमाना ॥ सुनिहि लषण गृहगयो लवाई। महातेज तनवरणिनजाई ॥ रामहिलखि जयबचन उचारा। पूजि मुनिहिं रघुबर बैठारा ॥ अति आदरकरि कृपानिकेतू। कहौऋषे आयो केहिहेतू ॥ पूजैंसब अभिलाख तुम्हारा। सुनिऋषीश पुनिबचन उचारा ॥ जो मैंतुमहिं कहौंरघुराऊ। और नसुनैकहौ जनिकाऊ ॥ जाके श्रवण परै यहबाता। करौताहि निज कर तुमघाता ॥ ४९ ॥

दोहा ॥

सुनियह अनुजहि कहाप्रभु तुमतिष्ठौ गृहद्वार।
जो ऐहै तेहि मारिहौं है प्रण सत्य हमार ॥ ५० ॥

चौपाई ॥

सुनि लक्ष्मण आये उठिद्वारा। मुनिहिंराम पुनिबचन उचारा ॥ जोरुचि राखिमोहिं पहंआये। कहौतौन मैंकरौं सुभाये ॥ असमुनि मुनिबहु विनै बखानी। अखिलेश्वरहि कहा बरबानी ॥ प्रथम पुत्र सतोर कृपाला। माया संभवजगहरकाला ॥ तुम कलपांत जलार्णव

देना । माया सगं कीन्हा सुखसैना ॥ पुनि जनहित इच्छा उर लावा । नाभिकमल ब्रह्महिं उपजावा ॥ पुनि मधुकैटभको उपजावा । तेदूनौ विधिको चहैं खावा ॥ तब बिरंचि हरिशरण पुकारा । तुमदूनौ असुरन तबमारा ॥ तिनमज्जा मेदिनी अपारा । रचासकल यह सहित पहारा ॥ तबबिधि तव अनुशासन पाई । सकल सृष्टियह रची सो हाई ॥ ५१ ॥

दोहा ॥

तुम पालासुर संतनर धरिमत्स्यादि शरीर ।
दुष्टअसुर संहारि रणहरा सकल भवपीर ॥ ५२ ॥

रूपमाला ॥

अब रावणादि संहारि महि हित धरा मनुज शरीर । नर आयु आयुत बरषकी दशशत अधिक रघुबीर ॥ प्रभु जो मनोरथ पूरतौ सुरलोक करियश नाथ । असकहि पठायो विधि हमैं निजरुचि करौ रघुनाथ ॥ सुनि कालबैन बिचारि हरि मुसुकाइ कहि यह बात । विधिकी मनोरथ इष्टतरमोहिं औरकाहुन सोहात ॥ त्रैलोक रक्षक हेतुमैं नरभूप रूपहिलीन्ह । सुरथापि अवनिज लोकको चलिबेमनोरथकीन्ह ॥ यहिभांति अंतक रामसों संवाद परम उदार । तेहिसमय दुर्वासा ऋषेश्वर आइपहुंचे द्वार ॥ कहिलषण सों दरशाइये मोहिं रामकाज विशेष । सौमित्रिकह करिसकौं मैंतव हेम नाथ अशेष ॥ यहिसमय श्रीरघुवंशमणि कछु राजकाजहि लीन । सुनतै तुम्हैंदूत आइहैं तुम नाथ परम प्रवीन ॥ सौमित्रि बचनन अकनि भनि करि हृदै क्रोध अपार । यहि छन न मिलिहैं राम तौ रघुवंश करिहौं क्षार ॥ सुनिरुख निरखि लछिमण आतुर पुष्टकरि यह बात । अब जाइ सब कुल रक्षिये निज प्राण करिये घात ॥ तब जाइ अत्रिजकी कथा श्री राम सोंकहि गाइ । सुनि शीघ्र कालहि बिदाकै ऋषिको मिले रघुराइ ॥ ५३ ॥

दोहा ॥

चरण परसि सनमान युत कहकर जोरि बहोरि ।
आयसु दीजै नाथ अब करिहौं मैं रुचितोरि ॥ ५४ ॥

प्रज्वलिया ॥

मुनि मुदित कहा सुनि राम बैन । गत सहस्र बरष किय असन मैन ॥ सो दीजेजो कछुसिद्ध होइ ॥ भोजनकराइ रघुबीरसोइ ॥ ५५ ॥

चौपाई ॥

भोजन करि मुनिगे निजधामा । निज प्रणहेत दुखी अतिरामा ॥ अधमुख चितवत नैनन आंसू । बारबार लै ऊरध स्वासू ॥ रघुपति दशा लषण अस देखा । सम सनेह दुख लहा विशेषा ॥ कहा नाथ उर शोक न मानौं । निज प्रण राखहु सोहिं अब मानौ ॥ जो सनेह नहिं तोरहु मोरा । तौ मोहिं नरकहोइ अति घोरा ॥ तब रघुपति गुरुसंचि बोलावा । निज प्रणकर सब चरित सुनावा ॥ दीजे कहुई उचित उपदेशा । कहा बशिष्ठ सुनहु अवधेशा ॥ बध अरु त्याग दुहू समताई । तजौआसु अनुजहि रघुराई ॥ सत्य प्रतिज्ञा तव भगवाना । तौहैसब जगकर कल्याना ॥ यहसुनि अनुजहि कहा खरारी । जाउ जहां रुचि होइ तुम्हारी ॥ ५६ ॥

दोहा ॥

असकहि रघुपति शोच बस गिरे अवनि मुरझाइ ।
चरण बंदि लछिमण उठि गयो तुरत रुखपाइ ॥ ५७ ॥

चौपाई ॥

पहुंचे जाइ सरयू तीरा । कीन्ह आचमन भजि रघुबीरा ॥ नवो द्वार रोकातेहि काला । खैंचि प्राण राखा निज भाला ॥ ब्रह्मवासुदेवहि धरि ध्याना । शीर्ष मार्ग निकासि निज प्राना ॥ भै अलक्ष्य सो प्राकृत देहा । सुमन दृष्टि सुर करैं सनेहा ॥ शक्र लवाइ गये निज धामा । पूजा बिबिधि भांति अभिरामा ॥ सिद्ध लोकगत योगिन ध्यावा । बृह्मादिक मिलि अति सुख पावा ॥ तब निज शेष रूप दरशायो । हरि चतुरांश जो बेदन गायो ॥ जबते अनुजहि तजि रघुबीरा । भये शोकबस शिथिल शरीरा ॥ गुरुसंचिन बोलाइ अस भाषा । अवध राज भरतहि अभिलाषा ॥ मैं लक्ष्मण समीप अब जैहों । आन उपाउ नमन सुख पैहों ॥ ५८ ॥

प्रज्वलिया ॥

सुनि राम बचन भरतादिदीन । महिगिरे यथा द्रुम मूलछीन ॥

कहअनुज सपथकरि सुनज्ञराम। तुम बिनमहचै मोहिं राज काम॥ कुशलवहि करौ कोशल भुवाल। मोहिं लेउ आपने संग कृपाल॥ सुनिकुशहि कियो कोशल नरेश। लवकोदीन्हों उत्तर सुदेश॥ तब भरत दूत सत्वर पठाइ। शत्रुहै जाइलावो लवाइ॥ प्रभु चहतकीन्ह सुरलोक गौन। सुनि वचन मोर आइये भौन॥ ५९॥

चौपाई॥

यह सुनि प्रजा सकल अकुलाने। राम नरेश सबहि सनमाने॥ करिये कहाकहौ किनभाई। सबमिलि कहासुनिय रघुराई॥ तव सनेह बससब रघुनाथा। चाहिय रहन तुम्हारे साथा॥ तपबनग्राम अपर सुर धामा। जाउ जहां संग लेइय रामा॥ अस दृढ़मतकरि प्रजा सुखारी। सकल कुटुम्ब बन्धु सुत नारी॥ गये दूत रिपुहन के तीरा। अवध चरित्र बरणिमति धीरा॥ काल आगमन पुनि दुर्बा-सा॥ लक्ष्मण कर सब चरित प्रकाशा॥ कुशलव यथा राज्य बैठारे। आपु चहत सुरलोक सिधारे॥ सुनि शत्रुहन शोकअति पावा। दुज्ञ पुत्रन कहं तुरत बोलावा॥ मथुरा अधिपति कीन्ह सुबाज्ञ। जूपकेतु बिदशा नरनाज्ञ॥ ६०॥

दोहा।

सैन सुहृद संपति बिपुल सुतन शत्रुहन दीन्ह।
बज्ञ प्रकार न्रपनीति कहि गौन राम पहं कीन्ह॥ ६१॥

चौपाई॥

आपु अवध आतुर उठि धाये। राम दरशलालसा बढ़ाये॥ देखा आइ तेजकी राशी। शांत श्याम छबि परम प्रकाशी॥ युगुल दुकूल अनूप सुहाये। ऋषि आहृतब्रत मुनिन लजाये॥ कीन्ह प्रणामशत्रु-हन धाई। पाणि जोरि बज्ञ बिनय सुनाई॥ प्रभु सुरलोक गमन सुनि पायों। सुतन राजदै मैं द्रुत आयों॥ मैं प्रभुतव चरणन अनु-गामी। लेइयसंग नत्यागिय स्वामी॥ रघुपति अनुज बुद्धिदृढ़जाना। होउ तयार होत मध्याना॥ तेहिक्षण भालु कीश सब आये। काम रूपतन धरे सुहाये॥ अपर बिभीषणादि निशिचारी। आये काम रूप तनधारी॥ सब राक्षसन कपिन अरु रिक्षा। राम संग चलिबे की इच्छा॥ ६२॥

कुण्डलिया ।

करि प्रणामसुग्रीव कहि दै अंगदको राज। मैंआयों जनिल्यागिये लेउसंग महराज ॥ लेउसंग महराज सुनानि:छल जनबैना । करौ भोग सब आइ परमउत्तम ममऐना ॥ करौभोग तुमपरम विभीषण एक कल्पभरि। अन्त मोचगति लहौ रहौ मेरो आयसु करि ॥ ६३ ॥

चौपाई ।

तुम हनुमान ज्ञानगुण ऐना । चिरंजीव मम ध्यान बैना ॥ द्वापरांत तक तुम रिछेशा । रहौ धरणि नहिं लहौ कलेशा ॥ तुम्हैंयुद्ध करिहौं कछु हेतू । कहेवचन अस कृपा निकेतू ॥ अपर रिछ राक्षस कपि धीरा । चलौ संग मम कह रघुवीरा ॥ बहुरि बशिष्ठहि कहि रघुराजा । चलै अग्रमम यज्ञसमाजा ॥ तबबशिष्ठ अनुशासन मानी ॥ यज्ञादिक प्रथमै प्रस्थानी ॥ चौम बसन पवित्र कुश हाथा । महा प्रयान कीन्ह रघुनाथा ॥ पदुम विशाल नयन सिय बामा । दहिने अरुण कंज कर श्यामा ॥ शास्त्र शस्त्र धनु बाण समेता । तन धरि चलि रघुबीर उपेता ॥ मुनि गण सहित वेद धरिदेहा । चले राम संग सहित सनेहा ॥ ६४ ॥

दोहा ॥

प्रनव व्याहृतिन सहित तन धरि गवनी श्रुति मात ।
कुटुम्ब सहित अनुचर चलेमोदन कछु कहिजात ॥ ६५

चौपाई ॥

भरत शत्रुहन संग सुबामा । चले अनुचरण सह प्रभु धामा ॥ चारिउ वरण ग्राम नर नारी । चले राम पथ सकल सुखारी ॥ पशु खगकृमिजेचिनन शरीरा । जड़चेतन जीवन रघुबीरा ॥ सुमिरिसबहि पावा तिन प्रानिहु । जोगति अगम महा मुनि ज्ञानिहु ॥ गये राम सरयू सरि तीरा । कीन्ह आचमन पावन नीरा ॥ तहं ब्रह्मादि देव सब आये । सिद्ध पितर ऋषि नभ तल छाये ॥ चढ़े विमानन परम प्रकाशा । ज्योतिर्मय होइ रहा अकाशा ॥ वरषैं सुमन सकल सुर माला । गावैंकिन्नर गीत रसाला ॥ बहै सुहावनि त्रिविधि बयारी । सुरनर सब जीवन सुखकारी ॥ तेहि अवसर विधिमन अनुरागे । सिय रघुनाथहि बिनवन लागे ॥ ६६ ॥

हरगीतिका ॥

कर जोरि रामहिं विनय विधि तुम ब्रह्मपर अखिलेश्वरं । जय विष्णु परमानन्द पूरण विश्वमय सीतावरं ॥ हे भक्तवत्सल दीनबन्धु कृपालमां रच्छाकरौ । कोटिन नमस्तेनाथ अब दुखहरौ प्रनत भवभय हरौ ॥ तुम बंधु वर्ग समेत वैष्णव एक आदि जगत्पते । देवाधि देव प्रसीद मेमम वचन परिपालन कृते ॥ सुनि प्रार्थना चतुरास्यकी लखि देवगण नभ तल भरे । कछु भेदकोउ नजान प्रभु भुजचारि आयुध युतकरे ॥ भे शेष लच्छमण तल्पवर दर भरत ह्वै दरसावते । शत्रुहन चक्रसो सियारामोपि विष्णु सोहावते ॥ सह अनुज पूरब देहधरि लावण्य परम प्रकाशते । इन्द्रादि सुरसब सिद्धऋषि प्रणमामि रमा निवासते ॥ ९७ ॥

दोहा ॥

तबहरि कहा बिरंचि सों येसगरे ममदास ।
आवतहैं बैकुण्ठ को दीजै सुखद निवास ॥ ९८ ॥

हरगीतिका ॥

सुनि वचन विधि करजोरि कह हरिचरण परशिर नाइकै । तव दाससब सन्तान बन सुखकरै अच्चय जाइकै ॥ तवनाम जानअजा- नहू कहि तजतजे नर देहको । पावत परंपद विनश्रमहि को कहै सहज सनेहको ॥ कपिरीछ राच्छस हर्षि सकल नहाइ सरयूनीरही । जोरहा पूरब अंश सुरतेहि मिलात्यागि शरीरही ॥ सुग्रीव आदित में मिले अरु अपरपूरब रूपही । नरन्हाइ तनतजि चढ़ि विमानन होत हरि अनरूपही ॥ यहि भांति पशुखग त्रिजग योनि जड़ादि जीवन गतिलहा । श्रीरामचन्द्र कृपाप्रभाउ नजात शेषहु सों कहा ॥ बरना शिवा प्रति शंभु सकल चरित्र पावन रामको । जो सुनै गावै पढ़ैहै सो परंपद अभिराम को ॥ को कहै कोटिन जन्म जेहिके पाप च्चय संचय रहै । ते अघन सुनतै प्रेम सों श्रीराम यश पावक दहै ॥ जेहि हेतु रामायण सुनै सो हेतु निश्चय पाइहै । सुत दार भूभण्डार लक्ष्मी सुख सकल सरसाइहै ॥ ९९ ॥

यह कथा श्रीरघुनाथ की ऋषि बालमीक जोगायऊ ।
व्यासादि मुनि बहु भांति कहि शिव शिवासों समुझायऊ ॥
तेहि बरणि भाषा छंदनै कश्यप कुलोद्भव द्विज बरे ।
इश्वरी त्रिपाठी बसत सारावतीसरि तट सुखभरे ॥ ७० ॥
लछिमण पुरते पंच योजन पीरनगर निवासहै ।
बरणि रामायण कलुषहर नाम रामबिलास है ॥
रसचन्द नव शशि अब्द मधुसुदि रामनौमी मानिकै ।
हरि प्रेरन ते प्रकट कीन्ही जक्त निजहित जानिकै ॥ ७१ ॥

दोहा ।

धरमधुरंधर वैश्यवर मुंशीनवलकिशोर ।
रामायण प्रतिमाविपुल छापि दीन्हि चहुंवोर ॥
रामायण भाषा बरणि ईश्वरी मति अनरूप ।
दीजि देउ मोहिं राम सिय निजपद भक्ति अनूप ॥ ७२ ॥

इति श्रीमद्रामायणे उमा महेश्वर संवादे ईश्वरी द्विज भाषा कृते उत्तर चरित्रोत्तरगत रामाश्वमेध संयुक्त समाप्तम् ॥

इति